# شمس التواریخ

حصہ اوّل ( جلد اوّل )

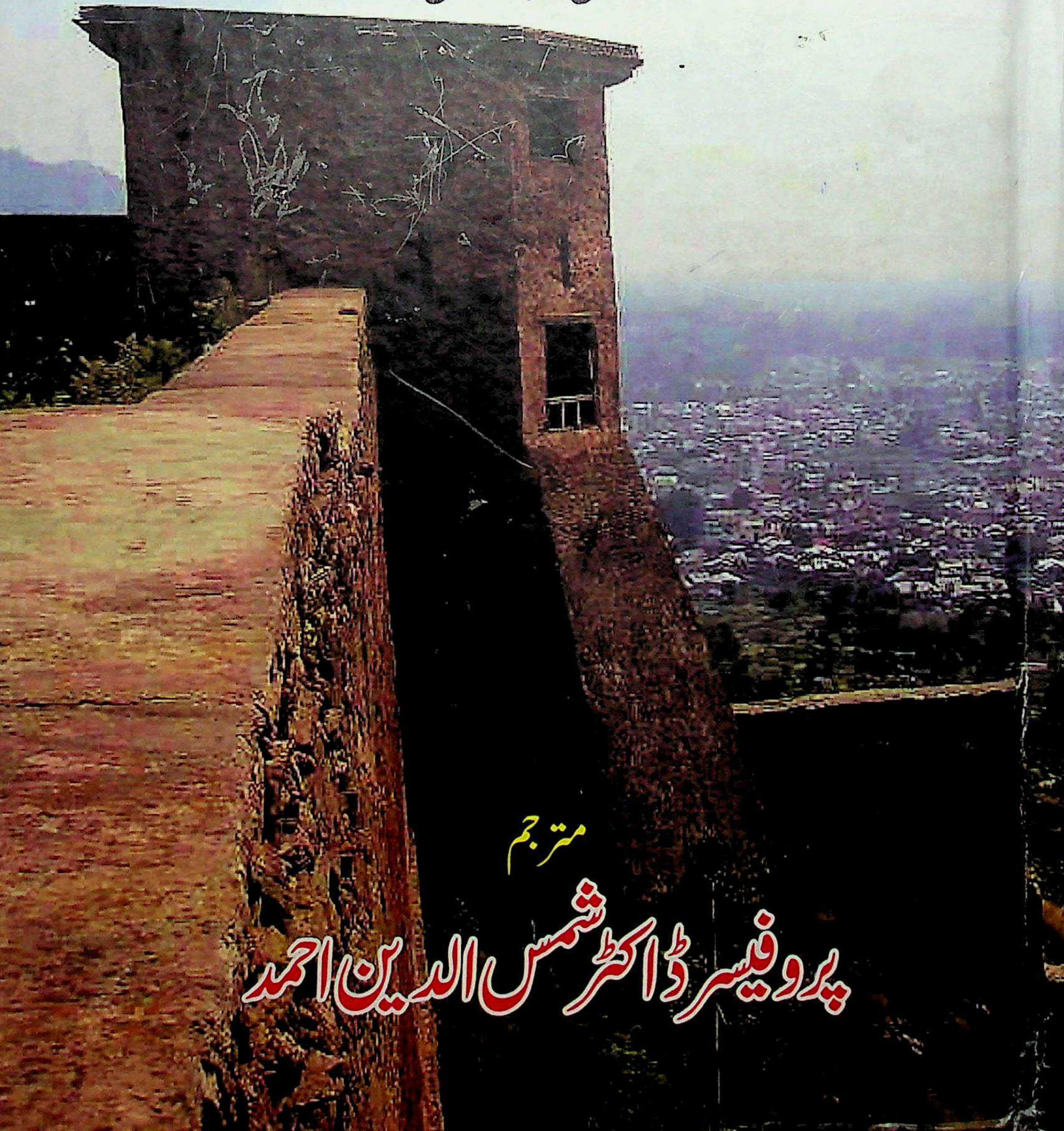

مترجم

پروفیسر ڈاکٹر شمس الدین احمد

ACC, NO:- 76156

Vol 21

8/10/24

# شمس التواریخ

جلد اول (حصہ اول)

مترجم

پروفیسر ڈاکٹر شمس الدین احمد

حاجی شیخ غلام محمد اینڈ سنز تاجران کتب

مائسمہ بڈشاہ چوک، سرینگر کشمیر

922.97
ک
529 ش

جملہ حقوق بحق ناشر محفوظ ہیں



| | | |
|---|---|---|
| نام کتاب | : | شمس التواریخ (جلد اول) (حصہ اول) (فارسی تاریخ حسن کا اُردو ترجمہ) |
| مصنف | : | حسن شاہ کھویہامی |
| مترجم | : | پروفیسر ڈاکٹر شمس الدین احمد |
| سن اشاعت | : | 2019 |
| صفحات | : | 357 |
| زیر اہتمام | : | شیخ محمد فیاض |
| I.S.B.N | : | 978-93-84019-41-9 |

# عرض ناشر

ریاست جموں و کشمیر کے کُتب فروشوں میں اوّلین نام مرحوم شیخ عبدالغفار کے طور پر جانا جاتا ہے۔ مرحوم نے پہلی بار آزادی ملک سے پہلے اپنی فرم وادی کے علاقہ چھتہ بل سرینگر میں قائم کر کے تشنگانِ علم کیلیے چشمہ درصحرا کا کام انجام دیا۔ پہلی بار **اوراد فتحیہ** کو لاہور سے چھاپ کر ریاست کے مسلمانوں کیلیے راحت کا سامان بہم پہنچایا۔ اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم سے اُن کے فرزند مرحوم حاجی شیخ غلام محمد صاحب نے تجارتی مرکز مہاراج گنج میں میسرز **شیخ غلام محمد تاجران کُتب** کے نام سے اس فرم کی از سرِ نو بنیاد ڈالی۔ مرحوم حاجی صاحب نے کئی نادر اور نایاب کتابوں کو حاصل کر کے تشنگانِ علوم کیلیے مہیا کر کے اور ھندوستان و پاکستان کے علاوہ عرب ممالک سے کتابیں لاکر ریاست کے لوگوں کو بہم پہنچائیں۔ مہاراج گنج میں کام کی وسعت اور جگہ کی تنگی کے باعث اُنہوں نے سرینگر کے مشہور مرکزی علاقہ مائیسمہ بازار بڈشاہ چوک میں اپنی دکان "**حاجی شیخ غلام محمد اینڈ سنز**" کے نام سے شروع کی۔ جہاں اُنہوں نے تفسیر قرآن، حدیث شریف، تاریخ، سیرت رسولؐ وغیرہ کے علاوہ مروجہ تعلیمی نصاب کی کتابیں بیرون ریاست سے منگا کر مہیا رکھی۔ ریاست کے کئی ادبی، تعلیمی، ثقافتی مراکز کیلیے ان کتابوں کو ہمیشہ وافر اسٹاک کر کے اداروں سے وابستہ دانشوروں، محققوں اور طالب علموں کیلیے راحت جان کا سامان کیا۔

حاجی صاحب خود بھی علمی ذوق کے حامل انسان تھے۔ اُنہوں نے خود بھی کئی کتابیں مرتب کر کے شائع کیں۔ اور ریاست کے ادبی اور علمی شخصیتوں کو ایک پلیٹ فارم عطا کر کے اُن کی لکھی ہوئی کتابیں چھاپ کر ریاست اور بیرون ریاست اُن کو متعارف

کرایا۔ مرحوم نے ہمیشہ معیار کو پیش نظر رکھا۔

حاجی صاحب نے کئی اہم اور تاریخی کتابیں چھاپی ہیں۔ جن کو کافی پذیرائی حاصل ہوئی۔ یہ کتاب بھی اسی سلسلہ کی ایک کڑی ہے۔

اُمید ہے کہ اس کتاب کو زیادہ پذیرائی حاصل ہوگی (انشاء اللہ) قارئین کو اگر کوئی خامی یا کمی نظر آئیں تو ہمیں مطلع فرما کر مشکور فرمائینگے۔

والسلام

شیخ محمد فیاض

مالک میسرز حاجی شیخ غلام محمد اینڈ سنز

# شمس التواریخ

(فارسی تاریخ حسن کا اُردو ترجمہ)

## جلد اول (حصہ اول)

مترجم

## پروفیسر ڈاکٹر شمس الدین احمد

# فہرست مطالب


| شمار | عنوان | صفحہ |
|---|---|---|
| ۱ | سخن مترجم | |
| ۲ | تعارف | |
| ۳ | آغاز | 1 |
| ۴ | حضرت رسول کریم ﷺ کی مدح میں | 4 |
| ۵ | خلفای راشدینؓ اور ائمہ مومنین کی منقبت میں | 6 |
| ۶ | اپنے مرشد کے اقتدار کی بلندی اور منقبت کے اظہار میں | 8 |
| ۷ | مقدمہ | 19 |
| | بعض آسمانی حالات اور زمین کے پیکر کی بعض علامتوں اور آثار، نیز افلاک کی تفصیل کے بیان میں | 19 |
| | سات آسمانوں کے تعین کے خیال کے بارے میں | 20 |
| | زمین اور سیّارے کی کیفیت | 23 |
| | زمین کی روزانہ حرکت | 25 |
| | زمین کی سالانہ حرکت | 26 |

| | | |
|---|---|---|
| 27 | موسموں کا تغیر و تبدل | |
| 28 | زمین کے دائرے کا محیط | |
| 28 | سورج | |
| 29 | چاند | |
| 30 | عطارد | |
| 30 | زہرہ | |
| 30 | مریخ | |
| 31 | مشتری | |
| 31 | زحل | |
| 31 | دُم دار سیارہ | |
| 31 | نپٹون | |
| 32 | سیاروں کے اجرام | |
| 32 | اندرونی اور بیرونی سیاروں کے بارے میں | |
| 33 | بحر محیط کی وضاحت | |
| 34 | براعظم امریکہ کی شہرت کی حقیقت | |
| 38 | زمین کی لمبائی اور چوڑائی | |
| 39 | حصہ ہفت اقلیم | |
| 40 | دنیا کی آبادی چار حصوں میں | |

| | | |
|---|---|---|
| | یورپ کی سلطنتوں کی وضاحت | 40 |
| | عظیم برطانیہ کی سلطنت | 41 |
| | سلطنت فرانس | 41 |
| | سلطنت بلجیم | 41 |
| | سلطنت ہالینڈ | 42 |
| | سلطنت پرشا | 42 |
| | سلطنت آسٹریا | 42 |
| | جرمنی کے چھوٹے ممالک | 42 |
| | سلطنت سوئزرلینڈ | 43 |
| | حکومت ڈنمارک | 43 |
| | سویڈن کی متحدہ سلطنت | 43 |
| | ناروے | 43 |
| | سلطنت روس | 44 |
| | سلطنت روم | 44 |
| | یونان | 44 |
| | لوبک ہمبیر۔ بریمن | 45 |
| | بوریا | 45 |
| | رومانیا | 45 |

| | | |
|---|---|---|
| 45 | سرویا | |
| 45 | مانٹ نگر | |
| 46 | حکومت اٹلی | |
| 46 | اسپین | |
| 46 | پرتگال | |
| 46 | پولینڈ | |
| 46 | سیکنی | |
| 47 | حصہ ایشیا کی سلطنتیں | |
| 47 | روسی ایشیا | |
| 47 | رومی ایشیا | |
| 47 | تاتار | |
| 48 | وسط ایشیا | |
| 48 | سائبیریا | |
| 48 | چین | |
| 48 | جاپان | |
| 49 | جزیرہ نما ممالک | |
| 49 | مشرقی افغانستان | |
| 49 | ہندوستان | |

| | | |
|---|---|---|
| 50 | جزیرہ لنکا | |
| 50 | ایران | |
| 50 | عربستان | |
| 50 | افریقہ کی تفصیل | |
| 51 | بربر | |
| 51 | الجیریا | |
| 51 | ٹیونس | |
| 51 | ترپولیا | |
| 51 | صحرائے اعظم | |
| 52 | مصر | |
| 52 | نوبیا یعنی خرطوم اور مشرقی سوڈان | |
| 52 | ابی سینا | |
| 52 | زنگبار | |
| 52 | مغربی افریقہ | |
| 53 | جنوبی افریقہ | |
| 53 | جزائر افریقہ | |
| 53 | براعظم امریکہ کے ممالک کی تفصیل | |
| 53 | گرین لینڈ | |

| | | |
|---|---|---|
| 54 | روسی امریکہ | |
| 54 | کناڈا | |
| 54 | صوبہ جات متحد | |
| 54 | میکسیکو | |
| 54 | وسطی امریکہ | |
| 55 | مغربی ہند کے جزائر | |
| 55 | گنی | |
| 55 | ڈنی زوپلا | |
| 55 | کولمبیا | |
| 55 | اکونڈر | |
| 55 | پیرو | |
| 56 | بولویا | |
| 56 | برازیل | |
| 56 | پراگو | |
| 56 | آرگوے | |
| 56 | چلی | |
| 57 | آرکن ٹین لاپلاٹا کی | |
| 57 | بحرالہند کے جزایر | |

| | | |
|---|---|---|
| | سنڈیا جزیرے | 57 |
| | فلی پائن جزیرے | 57 |
| | سلیب | 58 |
| | بورنیو | 58 |
| ۸ | دنیا کے ملکوں کی مردم شماری، زبان کا اختلاف اور کرۂ زمین کی وسعت | 58 |
| ۹ | کشمیر کی جغرافیہ کے بیان میں اور اس کی کمیت و کیفیت اور متفرق و مربوط حالات کے بارے میں | 65 |
| ۱۰ | کشمیر کا خطہ دل پذیر | 65 |
| ۱۱ | کشمیر کی اُونچائی | 66 |
| ۱۲ | کشمیر کا طول و عرض | 66 |
| ۱۳ | ہندو مورخین کے بقول اس کی وجہ تسمیہ | 67 |
| ۱۴ | کشمیر کی خصوصیات | 73 |
| ۱۵ | پہلا باب<br>قدرتی مقامات و علامات کی تفصیل کے بیان میں | 85 |
| ۱۶ | کشمیر کی آب و ہوا | 85 |
| ۱۷ | کشمیر کا موسم | 87 |
| ۱۸ | کشمیر کی ہوائیں | 91 |

| | | |
|---|---|---|
| | باددُور | 92 |
| | بادشمال | 92 |
| ۱۸ | کشمیر کے پہاڑ | 93 |
| | ہرموکھ پہاڑ | 93 |
| | کوثر پہاڑ | 95 |
| | کاجی ناگ پہاڑ | 95 |
| | ہوکھ سر پہاڑ | 96 |
| | گوشہ براری | 96 |
| | براربال پہاڑ | 97 |
| | افروٹھ پہاڑ | 97 |
| | مہادیو پہاڑ | 97 |
| | امرناتھ پہاڑ | 98 |
| | پہاڑی ٹیلہ پیر پیچال | 98 |
| | پہاڑی ٹیلہ بانہال | 99 |
| | پہاڑی ٹیلہ مربل | 99 |
| | پہاڑی ٹیلہ مرگن | 100 |
| | پہاڑی ٹیلہ رازدان آنگن | 100 |
| | پہاڑی ٹیلہ زوجہ بال | 100 |

| | | |
|---|---|---|
| 102 | نستہ چھنو | |
| 103 | تخت سلیمان | |
| 103 | پاری پربت | |
| 104 | آھک ٹینگ | |
| 105 | داراش | |
| 105 | کشمیر کے سبزہ زار | ۱۹ |
| 105 | تفصیل | |
| 106 | سبزہ زار گل مرگ | |
| 107 | سبزہ زار سونہ مرغ | |
| 107 | سبزہ زار ووشنہ سر | |
| 108 | کنہ مرغ | |
| 108 | گنگہ بل مرغ | |
| 108 | ناگہ مرغ | |
| 109 | منہ مرغ | |
| 109 | وجہ مرغ | |
| 109 | مہالشہ مرغ | |
| 110 | سالن مرغ | |
| 110 | سبزہ زار بنگس | |

| | | |
|---|---|---|
| | توسہ مرغ | 110 |
| | نُنہ مرغ | 111 |
| | زجہ مرغ | 111 |
| | سبزہ زار رای نیور | 111 |
| | فامرمرغ | 112 |
| | سبزہ زار مرگن | 112 |
| | بڈمرغ | 112 |
| | زبہ مرغ | 113 |
| | سبزہ زار سنگِ سفید | 113 |
| | استھان مرغ | 113 |
| ۲۰ | کشمیر کے ٹیلے | 114 |
| | مٹن ٹیلہ | 114 |
| | نونگری ٹیلہ | 115 |
| | زینہ پورہ ٹیلہ | 116 |
| | بیج بہاڑہ ٹیلہ | 116 |
| | بابا پور ٹیلہ | 117 |
| | خام پور ٹیلہ | 117 |
| | ناگام ٹیلہ | 117 |

| | | |
|---|---|---|
| | دامُو درُوڈر | 118 |
| | کھوشی پورہ ٹیلہ | 119 |
| | ہانجک ٹیلہ | 119 |
| | ٹیلہ بڈگام | 119 |
| | ٹیلہ چُھند پورہ | 119 |
| | ٹیلہ مکھ ہامہ | 120 |
| | ژیوۃ وُڈر | 120 |
| | ٹیلہ پٹن | 120 |
| | کریری ٹیلہ | 121 |
| | ٹیلہ اشکورہ | 121 |
| | ٹیلہ واگب | 121 |
| | ٹیلہ بنڈہ پورہ | 122 |
| | ٹیلہ صفاپورہ | 122 |
| | ٹیلہ کرہامہ | 122 |
| | واج وُڈر | 123 |
| | ٹیلہ پاندچ | 123 |
| | ٹیلہ چندی | 123 |
| | ٹیلہ دیوہ پور | 124 |

| | | |
|---|---|---|
| | گوس وُ ڈر | 124 |
| | ڈڈوُ ڈر | 124 |
| | ٹیلہ پانپور | 124 |
| ۲۱ | کشمیر کی زمینیں | 125 |
| ۲۲ | کشمیر کے غار | 127 |
| | غار منڈا | 127 |
| | غار آری رای | 127 |
| | غار امرناتھ | 129 |
| | غار بازارھوی | 130 |
| | غار کپوارہ | 130 |
| | غار بیروہ | 130 |
| ۲۳ | کشمیر کے پتھر | 131 |
| | سنگ بلور | 131 |
| | سنگ موسیٰ | 131 |
| | سنگ چقماق | 131 |
| | سنگ نلچین | 132 |
| | سنگ دالم | 132 |
| | سنگ شیشہ وکانچ | 132 |

| | | |
|---|---|---|
| | سنگ کچ | 132 |
| | سنگ چونہ | 133 |
| | سنگ سماق | 133 |
| | سنگ فرشی | 133 |
| ۲۴ | کشمیر کی کانیں | 134 |
| | زمرد کی کان | 134 |
| | سونے کی کان | 134 |
| | چاندی اور مس کی کان | 135 |
| | لوہے کی کان | 135 |
| | گندھک کی کان | 136 |
| | سُرمے کی کان | 136 |
| ۴۵ | کشمیر کے پہاڑی چشمے | 137 |
| | پرموکٹہ گنگا | 137 |
| | کانہ سر | 137 |
| | نندکالو | 138 |
| | کولوسر | 138 |
| | اش فیر | 138 |
| | ستہ سر | 139 |

| | | |
|---|---|---|
| | ڈوڈھ سر | 139 |
| | پرآن گنگ | 140 |
| | مَس ٹھوکر | 140 |
| | برہمہ سر | 140 |
| | کرشنہ سر | 140 |
| | وشنہ سر | 141 |
| | پرنگ سر | 141 |
| | گاڈہ سر | 141 |
| | یم سر | 141 |
| | ستانی سر | 142 |
| | کڈوری سر | 142 |
| | سارن سر | 142 |
| | شیرا سر | 142 |
| | دودھ سر | 143 |
| | کم سر گر سر | 143 |
| | نیلہ سر | 143 |
| | نیلہ بون | 144 |
| | تلاوبل | 144 |

| | | |
|---|---|---|
| | سالن سر | 144 |
| | یمل سر | 144 |
| | کم سر | 145 |
| | نیلہ سر | 145 |
| | مرناگ | 145 |
| | ژہن ژہن ناگ | 146 |
| | ستک کل ناگ | 146 |
| | کیسہ ناگ | 146 |
| | چہار چشمہ | 147 |
| | گورچن ناگ | 147 |
| | نیلہ پش ناگ | 148 |
| | وانگن واس | 148 |
| | ایلہ پتھری | 148 |
| | سُک ناگ | 148 |
| | دمامہ سر | 149 |
| | دودھ سر | 149 |
| | انوٹ ناگ | 150 |
| | رام سر | 150 |

| | | |
|---|---|---|
| | کریم سر، تان سر، مان سر | 150 |
| | نندن سر | 150 |
| | چندن سر | 151 |
| | وتہ سر | 151 |
| | کوثر ناگ | 151 |
| | ژھر سر | 153 |
| | کوثر سر | 153 |
| | سر بل | 153 |
| | ہوکہ سر | 153 |
| | کھلن ناگ | 154 |
| | کالو سر | 154 |
| | ژھر ناگ | 154 |
| | سونہ سر | 155 |
| | شیشرم ناگ | 155 |
| | زامتر ناگ | 155 |
| | تار سر | 157 |
| | مار سر | 157 |
| | چندرہ سر | 158 |

| | | |
|---|---|---|
| ۲۶ | ملک کشمیر کے چشمے | 158 |
| | ویرناگ | 159 |
| | اچھہ بل | 161 |
| | مچھ بون | 161 |
| | اننت ناگ | 162 |
| | لوکھ بَون | 162 |
| | ککرناگ | 162 |
| | پانزت ناگ | 163 |
| | واسُک ناگ | 163 |
| | پھلوناگ | 164 |
| | چشمہ رزُلو | 164 |
| | ملک ناگ | 165 |
| | چشمہ وتھ وترو | 165 |
| | چشمہ کانو | 165 |
| | سُند براری | 166 |
| | پونہ سند | 167 |
| | لُدرہ سند | 167 |
| | گنگہ براری | 168 |

| | | |
|---|---|---|
| | ہلدو | 168 |
| | چشمہ ہیہ مال | 169 |
| | چشمہ ناگی ارجن | 169 |
| | چشمہ پاھہ ہارون | 169 |
| | اڑپل ناگ | 169 |
| | مہاپدم ناگ | 170 |
| | چشمہ زیون | 170 |
| | نیلہ ناگ | 170 |
| | نیلہ ناگ دوم | 171 |
| | چشمہ کرمیشور | 171 |
| | نراین ناگ | 172 |
| | عینُ العفونت | 172 |
| | چشمہ تتہ دان | 172 |
| | گپت گنگا | 173 |
| | وچارناگ | 173 |
| | چشمہ کھیر بھوانی | 173 |
| | وترگنت | 174 |
| | ناران ناگ | 174 |

| | | |
|---|---|---|
| | شنگہ پال | 175 |
| | پچھ ناگ | 175 |
| | پاپ چھن | 175 |
| | چکریشور | 176 |
| | زلیشور | 176 |
| | انت ناگ | 176 |
| | لچھمن ترت | 176 |
| | ہرناگ | 177 |
| | شیوہ ناگ | 177 |
| | شومہ ناگ | 177 |
| | چشمہ زیتی شاہ | 177 |
| | چشمہ منزہار | 178 |
| | ناران ناگ | 178 |
| | بُرناگ | 178 |
| | سیدگنگا | 178 |
| | رام کنڈ۔ سیتا کنڈ۔ لچھمن کنڈ۔ ہنومان کنڈ | 178 |
| | گوتم ریشی ناگ | 179 |
| | چشمہ شاہی | 179 |

| | | |
|---|---|---|
| | نیلہ ناگ | 180 |
| | کپال موچن | 180 |
| | سوکھ ناگ | 180 |
| | کوٹھیر ناگ | 181 |
| | چشمہ شمہ ہال | 181 |
| | عین العفونت | 181 |
| ۲۷ | کشمیر کے دریا | 182 |
| | ساندرن | 182 |
| | برنگی | 182 |
| | آرہ پتی | 182 |
| | لدریالمبودری | 183 |
| | ویشو | 183 |
| | رنبی آرہ | 185 |
| | رامشی | 186 |
| | لولہ برین ندی | 187 |
| | دُودھ گنگا | 187 |
| | آہج دریا | 187 |
| | کانہامہ دریا | 188 |

| | | |
|---|---|---|
| | ننگل دریا | 188 |
| | ہارون دریا | 188 |
| | امراوتی | 190 |
| | کرانکہ ندی | 190 |
| | سندلار | 190 |
| | ارنی دریا | 194 |
| | مدمتی | 194 |
| | نالہ پہرو | 195 |
| | کرشنہ گنگا | 196 |
| | ساندرن دریا | 196 |
| | کٹہ کل | 199 |
| | سونز کل | 199 |
| | نالہ شادی پور | 199 |
| ۲۸ | کشمیر کی جھلیں | 200 |
| | جھیل اولر | 200 |
| | جھیل ڈل | 203 |
| | آنچار سر | 205 |
| | خوشحال سر | 206 |

| | | |
|---|---|---|
| | مانسر | 206 |
| | ہاکورسر | 207 |
| | پماسر | 207 |
| | تان سر | 207 |
| ۲۹ | کشمیر کے بطائح | 208 |
| | بمنہ نمبل | 208 |
| | برار نمبل | 209 |
| | تولہ مولہ نمبل | 209 |
| | مال گام نمبل | 210 |
| | در نمبل | 210 |
| | نمبل کانسپور | 211 |
| | پت گام پور نمبل | 211 |
| | بالاہامہ نمبل | 211 |
| | ایٹھ کھرو نمبل | 212 |
| | مرہامہ نمبل | 212 |
| ۳۰ | کشمیر کی پیداوار | 213 |
| | کشمیر کی ادویات | 213 |
| | کشمیر کی سبزیاں | 225 |

| | | |
|---|---|---|
| | کشمیر کے گرم مصالحہ جات | 228 |
| ۳۱ | کشمیر کے ریاحین | 229 |
| ۳۲ | کشمیر کے کدُ و اور مولیاں | 230 |
| ۳۳ | کشمیر کے پھول | 232 |
| ۳۴ | کشمیر کے پہاڑوں کے بے پھل درخت | 235 |
| ۳۵ | کشمیر کے چمن زاروں کے بے پھل درخت | 236 |
| ۳۶ | کشمیر کے پھل | 237 |
| ۳۷ | کشمیر کے غلہ جات | 241 |
| ۳۸ | کشمیر کے روغنی حبوبات | 243 |
| ۳۹ | کشمیر کے پرندے | 245 |
| ۴۰ | کشمیر کے آبی پرندے | 247 |
| ۴۱ | کشمیر کے حیوانات | 247 |
| ۴۲ | کشمیر کے کیڑے | 248 |
| ۴۳ | کشمیر کے کاٹنے والے کیڑے | 250 |
| ۴۴ | کشمیر کے آبی کیڑے | 250 |
| ۴۵ | کشمیر کے جنگلی جانور | 251 |
| ۴۶ | کشمیر کے پالتو جانور | 252 |
| ۴۷ | کشمیر کے راستے | 253 |

| | | |
|---|---|---|
| | مظفر آباد کا راستہ | 253 |
| | مان سر سے راولپنڈی تک | 255 |
| | کوہ مری کا راستہ | 256 |
| | تیسرا راستہ پونچھ سے جموں تک | 257 |
| | چوتھا راستہ شوپیان کا راستہ | 258 |
| | پانچواں راستہ بانہال سے جموں تک | 259 |
| | چھٹا راستہ لداخ کا راستہ | 261 |
| | یارقند کا راستہ | 263 |
| | لداخ کے راستے سے اسکردو تک | 265 |
| | لاسہ کا راستہ | 266 |
| | ساتواں راستہ گلگت کا راستہ | 267 |
| | گوریز قلعہ سے حصورہ تک ایک اور راستہ | 269 |
| | آٹھواں راستہ اسکردو کا راستہ | 270 |
| | نواں راستہ توسہ میدان کا راستہ | 271 |
| | دسواں راستہ دُبجن کا راستہ | 272 |
| | گیارہواں راستہ دارہال کا راستہ | 272 |
| | بارہواں راستہ بدلی کا راستہ | 272 |
| | تیرہواں راستہ ہمسان کا راستہ | 273 |

| | | |
|---|---|---|
| | چودھواں راستہ کھڑی کا راستہ | 273 |
| | پندرھواں راستہ کھل نارہ واؤ کا راستہ | 275 |
| | سولہواں راستہ ڈوڈی کا راستہ | 275 |
| | سترھواں راستی مربل کا راستہ | 276 |
| | اٹھارھواں راستہ فامر کا راستہ | 277 |
| | انیسواں راستہ تھمرن کا راستہ | 277 |
| | بیسواں راستہ مرگن کا راستہ | 278 |
| | اکیسواں راستہ امرناتھ کا راستہ | 278 |
| | بائیسواں راستہ تلیل کا راستہ | 279 |
| | تئیسواں راستہ چیلاس کا راستہ | 279 |
| | چوبیسواں راستہ کرناہ کا راستہ | 280 |
| | پچیسواں راستہ دراوہ کارتہ | 280 |
| | چھبیسواں راستہ گل مرغ کا راستہ | 281 |
| | ستائیسواں راستہ فیروز پور کا راستہ | 281 |
| ۴۸ | کشمیر کے مضافات | 282 |
| | تبت کلان | 282 |
| | یہ ہے عہدنامہ کی نقل | 289 |
| | تبت خورد | 290 |

| | | |
|---|---|---|
| | گوریز اور تلیل | 292 |
| | حصورہ | 292 |
| | گلگت اور پونیال | 293 |
| | دراوہ اور کرناہ | 297 |
| | شاردا | 298 |
| | دارُدو | 298 |
| | دچھنہ اور کھاورہ | 299 |
| | دچھنہ کے راجے | 300 |
| | کھاورہ کے راجے | 306 |
| | پنوچھ کا علاقہ | 308 |
| | راجور کا علاقہ | 310 |
| | بانہال کا علاقہ | 310 |
| | کھُل | 311 |
| | مرواڑون | 311 |
| | کشتواڑ | 312 |

# سخنِ مترجم

تاریخ حسن پیر غلام حسن شاہ کھویہامی کی چار جلدوں پر مشتمل فارسی تصنیف ہے۔ اس تاریخ اور اس کے مصنّف کے بارے میں تعارف کے عنوان کے تحت پہلے ہی تسلی بخش حد تک صاجزادہ حسن شاہ صاحب اسسٹنٹ ڈائریکٹر محکمہ تحقیق واشاعت جموں وکشمیر نے تفصیل کے ساتھ کلام کیا ہے۔ یہ تعارف صاجزادہ موصوف نے، جو میرے استاد ہونے کے علاوہ ایک جیّد عالم اور معروف محقق اور مُورخ ہیں، طبع شدہ کتاب میں انگریزی زبان میں لکھا ہے اور میں نے کتاب کے مترجم کی حیثیت سے اس کا بھی اُردو میں ترجمہ کیا ہے۔ اس تعارف کو پڑھ کر قارئین میری اس بات کی تصدیق کریں گے کہ صاجزادہ حسن شاہ صاحب نے احسن طریقے پر اور موجز انداز میں مصنف اور کتاب کے متعلق بعض تواریخی خصوصیات کے ہمراہ ہمیں آگاہ کیا ہے۔ بالخصوص مصنّف کی خاندانی داستان سے مربوط تحقیقی اطلاعات لائق صد ستائش ہیں کہ اس بارے میں وہ ایک محقق کو مزید تحقیق سے بہت حد تک بے نیاز کردیتی ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ میں نے ان سنگلاخ راہوں سے پھر سے تلاش و جستجو کرنے کے سفر کو نظر انداز کیا ہے۔

مجموعی طور تاریخ حسن ایک اچھی تاریخ ہے جو ہمیں کشمیر کے قدرتی مناظر کی دلکشی، دلفریبی اور اس کے ظاہری حسن و جمال کے علاوہ ان تمام واقعات و حوادث سے، خواہ وہ خونین جنگوں، ذاتی تعصّبات یا امن وخوشحالی کے دور سے مربوط ہوں یا قدرت کے نازل کردہ قہر وعتاب کا نتیجہ ہوں، واقف کراتی ہیں اور اس لحاظ سے یہ تاریخ نہ فقط تاریخ سے

دلچسپی رکھنے والوں کیلئے اہمیت کی حامل ہے بلکہ عام لوگوں کے لئے بھی مفید ہے اور میرا عقیدہ ہے کہ ایک تاریخ کو لذت بخشنے کے ساتھ ساتھ نہ فقط فائدہ مند بلکہ فائدہ مند ہونے کا پہلو لذت بخشی کے پہلو پر غالب ہونا چاہئے۔ تاریخ حسن بیشک کشمیر کی تاریخ کو، اس کی فارسی شعر اور شعراء کی زرخیز روایات کے ہمراہ، فہم وادراک کرنے کی کشمیر کی فارسی تواریخ میں ایک اہم ترین اور ایک بہترین تاریخ ہے جس کا پڑھنا کشمیر کے قدیم چہرے کو دیکھنے کے برابر ہے اور حقیقت میں مؤلف غلام حسن شاہ کا مقصد بھی یہی تھا۔ مؤلف نے کشمیر کے ماضی کے چہرے کے ان تمام خدوخال کو اور پست و بلند کو شرح و بسط کے ساتھ ہمارے سامنے پیش کر دیا ہے۔ جیسے کہ وہ تھے۔ اور اس سلسلے میں اس نے نہ بُرے خدوخال کو چھپانے کی کوشش کی ہے، نہ ہی دلکش اور دلآویز لطافتوں میں مزید آب و رنگ بھرنے کی۔ یہ کشمیر کی صحیح تاریخ ہے جو ہمارے سامنے ہے۔

مؤلف نے یہ تاریخ چار جلدوں میں لکھی ہے۔ پہلی جلد جغرافیہ کشمیر ہے۔ دوسری جلد ہے کشمیر کی سیاسی تاریخ، تیسری کشمیر کے اولیاء کرام اور چوتھی کشمیر کے فارسی شعراء پر مشتمل ہے۔ یہ ایک واقعی عظیم کام ہے جو مصنّف نے انجام دیا ہے۔ بالخصوص ایسی زبان میں جو نہ فقط اکتسابی تھی بلکہ جس کے ایک علمی طریقے پر پڑھائے جانے کی وہ تسہیلات مہیا نہ تھیں جو آج ہیں یا اگر قدیم روایات کے تسلسل میں موجود تھیں تو زوال آمادہ تھیں۔

میں نے اس اہم تاریخ کشمیر کو لوگوں تک پہنچانے کی نیت سے اُردو کا لباس پہنایا ہے تاکہ کشمیر کا ماضی کا چہرہ ہمارے سامنے رہے اور ہم جان پائیں کہ اس چہرے کی خوبصورتی اور دلکشی کو قائم رکھنے کیلئے کشمیر دوست محبانِ وطن کو کتنا سخت جہاد کرنا پڑا ہے۔ خدا کرے کہ ہم اس دور میں بالآخر اس کے ظاہری اور باطنی حسن و جمال کو قائم رکھنے میں

کامیاب ہوں۔آمین۔

حاجی شیخ غلام محمد صاحب نے مجھے اس اہم فارسی تاریخ کشمیر کا اُردو میں ترجمہ کرنے پر اُکسایا تاکہ اس سے فائدہ اٹھایا جا سکے۔ان کی خواہش کی تکمیل میں ترجمہ پیش خدمت ہے۔

فارسی کی طرح اُردو زبان بھی میرے حق میں غیر مادری زبان ہے۔مجھے نہ فارسی شناسی کا دعویٰ ہے اور نہ ہی اُردو دانی کا۔بس ایک شوق ہے جو بقول ڈاکٹر اقبالؒ میری لے میں، میری نے میں اور میری رگ و پے میں ہے۔اور جو چیز میری رگ جان کو چھو کر صداؤں سے نغمہ زن کر دے میں اسی کا ہو جاتا ہوں۔اسی جنون میں میں نے بعض اہم اُردو ترجمے بھی کئے اور بعض کشمیری ترجمے بھی۔

اللہ تعالیٰ سے میں انتہائی عاجزی کے ساتھ دعا مانگتا ہوں کہ وہ اس ترجمے کو اپنے حضور میں شرف قبولیت بخش کر مجھے سرخروئی سے نواز دے اور علم شناس و غیر متعصب ادب دان حلقہ ہائی ذوق میں میرے اس ترجمے کو پسندیدہ بنا دے۔آمین۔

میں حاجی شیخ غلام محمد صاحب مالک فرم حاجی شیخ غلام محمد اینڈ سنز تاجرانِ کتب مائسمہ بازار سرینگر کا مشکور ہوں جنہوں نے تاریخ حسن کا اُردو ترجمہ کرنے پر مجھے نہ صرف شوق دلایا بلکہ اسے چھاپ بھی دیا۔

۱۲ر رجب المرجب ۱۴۱۸ھ

جمعرات

۱۳ر نومبر ۱۹۹۷ء

پروفیسر ڈاکٹر شمس الدین احمد

بُرج بخت آور

آستان پور روڈ، راول پور، سرینگر (کشمیر)

# تعارف

وادی کشمیر کے شمال مغرب میں ایک چھوٹا مگر خوش منظر گاؤں گامرو واقع ہے جہاں سے ولر جھیل نظر آتی ہے۔ بانڈی پور سے قریب ڈیڑھ میل کی دُوری پر ہے اور یہ گلگت اور وسط ایشیا کا ایک خوشحال تجارتی مرکز رہا ہے۔ اسی گاؤں میں ہمارا مصنّف پیر غلام حسن عرف حسن شاہ سال ۱۲۴۹ھ (۱۸۳۳ء) میں پیدا ہوا۔ اس کا باپ حافظ غلام رسول شیوا (وفات ۱۲۸۸ھ = ۱۸۷۱ء) خود فارسی اور عربی کا ایک اچھا عالم اور اسلامی تصوف اور ادب میں دلچسپی رکھتا تھا۔ اس کا شعری اور ادبی ذوق اس کی مجموعہ شیوا (۱) نام کی لمبی نظم سے معلوم ہو جاتا ہے۔ اسی نظم میں شیوا اپنے خاندان کی ابتدائی تاریخ کی طرف اشارہ کرتا ہے اور اپنے نسب کو گنیش کول دتاتریہ یا غازی الدّین کول سے ملاتا ہے جو کشمیر کے نامور اولیاء حضرت مخدوم شیخ حمزہؒ (وصال ۹۸۴ھ = ۱۵۷۶ء) کے دست مبارک پر مسلمان ہو گیا تھا۔ شیوا کا بیان اس کے خاندان کی بعد کے عملی روایات اور تقویٰ کو بھی اُجاگر کرتا ہے۔ غالباً اس خاندان کا ممتاز ترین فرد شیخ محمد فاضل تھا (وفات ۱۱۵۰ھ = ۱۷۳۷ء) جسے مغلوں نے جاگیر دی اور سرینگر میں زونی مر محلے میں آ کر بسا۔ اعجاز غریبہ میں ہمارا مصنّف اسکی طرف اشارہ کرتے ہوئے کہتا ہے۔

بعہدِ　خودسہ　اوُسی　شیخ　کشمیر
زشاہانِ　چغت　تس　اوس　جاگیر

(اپنے زمانے میں وہ شیخ کشمیر تھا۔ مغل بادشاہوں کی طرف سے اسے جاگیر ملی تھی)

لیکن سکھ دور میں اس خاندان کو برُے دن دیکھنے نصیب ہوئے اور اسے کھویہامہ پرگنہ کے گامُروگاؤں میں ہجرت کرنی پڑی جیسا کہ وہ خود کہتا ہے۔

سکھوں ییلہ بند کور جاگیر سونی
لوٗگی در کھو یہامہ بابہ میوٗنی

(سکھوں نے جب ہماری جاگیر چھین لی تب میرے والد کھویہامہ کی طرف چلے گئے)

شیوا اپنے بیٹوں کے حق میں بااستعداد فرزند بن جانے کے لئے بڑے فکر مند تھے۔ یہ بات اس کے مجموعہ میں صاف نظر آتی ہے جس میں آخر پر وہ ان کو نصیحت کرتا تھا۔

پیر غلام حسن نے ابتدائی تعلیم اپنے والد کے پاس مکمل کر لی اور پھر اس نے طب یونانی پڑھی جس نے اسے اپنے آبائی پیشہ طبابت اور ایک دینی معلم کے کام کو اختیار کرنے کے اہل بنا دیا۔ اپنے خاندانی مشایخ حضرت مخدوم شیخ حمزہؒ کا وہ سخت معتقد تھا جنہوں نے اسکے خاندان کو حلقہ اسلام میں لایا تھا جیسا کہ وہ خود اعجاز غریبہ (۲) میں کہتے ہیں۔

سُہ اوسم از سعادت جان تقدیر
جناب شیخ حمزہ چھم پُنن پیر

(سعادتمندی تھی یہ کہ میری تقدیر اچھی تھی۔ جناب شیخ حمزہؒ میرے پیر بزرگوار ہیں۔ انہوں نے ہی میرے جدّ بزرگ کے سر پر دین اسلام کا تاج رکھا اور اپنی عنایت سے اس کا نام شیخ غازی مقرر کیا)

ہمارا مصنف بہرحال بعد میں خواجہ محمد تاشقندی کی وساطت سے اسلامی تصوف کے نقشبندی سلسلے میں داخل ہو گیا۔ ہمارے مصنف نے پنجاب اور افغانستان کے علاقوں

میں دُور دراز سفر کئے اور اس عہد کے معروف بزرگوں سے ملاقات کی جیسا کہ وہ خود اعجاز غریبہ میں کہتا ہے۔

میہ کور سیر وسیاحت ہر کرانہ
اسبٹھاہ ڈیٹھم بزرگان زمانہ

(میں نے تمام اطراف میں سیر وسیاحت کی اور بہت سے بزرگانِ زمانہ سے ملاقات کی)

سیر وسیاحت کے ان ہی ایام میں اس نے سلطان زین العابدین کے دربار کے ملک الشعراء علّامہ احمد کی کتاب وقائع کشمیر کی ایک نقل موجودہ مغربی پاکستان کے ایک ضلع راولپنڈی کے پنڈوری گاؤں کے رہنے والے افغانی باشندہ ملا محمود سے حاصل کی۔ یہ سنسکرت زبان میں لکھی گئی رتناگر پوران نام کی تاریخ کا (فارسی) ترجمہ ہے۔ اس میں انتیس بادشاہوں کا ذکر ہے جنھوں نے پانچ ہزار سال پہلے کشمیر پر حکومت کی اور ان سات بادشاہوں کا بھی جنھوں نے دوسری صدی کے اواخر سے چھٹی صدی کے اوایل تک بادشاہت کی۔ تاریخ میں یہ ذکر گم ہو چکا تھا (۳)۔ ہمارے مصنف نے قدیم کشمیر کے بیان میں اس کتاب سے استفادہ کیا جیسے کہ آگے معلوم ہوگا۔

پیر غلام حسن نے یکساں سہولیت کے ساتھ فارسی اور کشمیری دونوں زبانوں میں لکھا ہے۔ موجودہ تصنیف کے علاوہ اس نے مندرجہ ذیل کتابیں لکھیں:

۱. **گلستان اخلاق** ...... ایک لمبی نظم فارسی میں سال ۱۲۸۳ھ میں لکھی ہے جو ابھی چھپی نہیں ہے۔ ہمارے مجموعے میں اس کی ایک نقل موجود ہے۔

۲. **خریطۂ اسرار** ...... تقویم، نجوم اور طبّ پر ایک فارسی تالیف ہے جسے سال ۱۲۸۶ھ میں ترتیب دیا ہے۔ اس کا ایک قلمی نسخہ مصنف کے وارثوں کے پاس گامُرو میں موجود ہے۔

یہ کتاب بھی ابھی نہیں چھپی ہے۔

۳. **اعجاز غریبہ** ...... یہ کشمیری زبان میں ایک لمبی نظم ہے جس میں پیغمبر اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے معجزات کا ذکر ہے اور آخر میں اپنی سوانح کا بیان پیش کیا ہے۔ اسے سال ۱۲۹۹ھ میں (۱۸۸۲ء) ترتیب دیا اور سال ۱۹۱۱ء میں امرتسر کے مطبع مجددی میں اس کی سنگی طباعت ہو چکی ہے۔ نیز سال ۱۹۳۸ء اور ۱۹۴۳ء میں غلام محمد نور محمد ناشران کتب سرینگر نے بھی اسے طبع کیا ہے۔

اپنی زندگی میں ہی ہمارے مصنف کے علم و فضل، حسن خلق، وسعتِ نظر اور ذہنی ادراک کی وجہ سے خاصی قدر دانی ہوئی۔ ان اوصاف نے اسے اپنے وطن کی مکمل تاریخ کی تالیف میں بڑی مدد کی۔ اپنے وطن اور اپنے وطن کے لوگوں سے عمیق محبت کا اظہار اسے بہتر نہیں ہوسکتا جو اس نے اعجاز غریبہ میں اپنی دعا میں کیا ہے۔

خدا وندا! ژ رچھتن ملک کشمیر
ز آفات زمان و ظلم وتشور
مسلمانِ یم چھِ اندر ظلم مجبُور
ژکر تکھ از عنایت شاد و مُسرور

(یا اللہ! ملکِ کشمیر کو زمانے کی آفتوں سے اور ظلم و پریشانیوں سے محفوظ رکھ۔ یہاں کے مسلمان جو ظلم سہنے پر مجبور ہیں انہیں اپنی عنایت کے طفیل شادمان و مسرور کر دے!)

سال ۱۲۹۵ھ میں (۱۸۷۸ء) جب کشمیر کے ڈوگرہ حاکم وزیر پنون کے مظالم کے ہمراہ ایک قحط عظیم کشمیر پر نازل ہوا اور لوگوں کو سخت عذاب میں مبتلا ہونا پڑا تو ہمارا مصنف غم والم سے مغلوب ہوا۔ ڈوگرہ افسر شاہی کے عتاب کے خطرے کے باوجود بھی اس نے فارسی

نظم میں ایک روداد تیار کر لی اور اسے مہاراجہ رنبیر سنگھ (وفات ۱۸۸۶ء) کی خدمت میں پیش کیا۔ اس کا خاطر خواہ نتیجہ نکلا اور لوگ وزیر پنون کے ظلم وستم سے آزاد ہو گئے اور مہاراجہ نے راحت پہنچائے جانے کے حق میں احکامات صادر کئے۔ اس طرح سے ہمارے مصنف کی اونچے درجے کے افسروں کے ساتھ شناسائی ہوئی اور جب سر ڈبلیو آر لارنس یہاں لینڈ سٹلمنٹ کمشنر کی حیثیت میں آئے تو انہوں نے مقامی حالات سے واقفیت پیدا کرنے اور مقامی کاشتکاروں کی مصیبتوں سے اطلاع حاصل کرنے کیلئے ایک رہبر ورہنما کی حیثیت سے پیر غلام حسن کا ہی انتخاب کیا۔ انہوں نے اپنی ویلی آف کشمیر (۴) نام کی کتاب میں ہمارے مصنف کی خدمات کا ان الفاظ میں اعتراف کیا ہے۔

"کشمیری زبان کے ساتھ میری شناسائی صرف مقامی لہجہ کے عام محاوروں اور کاشتکار طبقہ کی اصطلاحات تک محدود تھی۔ اس کے علاوہ میں نے جو کچھ سیکھا اس کیلئے میں پیر حسن شاہ صاحب کا ممنون ہوں جس کا سارا کام دیہاتیوں سے مربوط ہے۔"

گامرو میں مصنّف کے وارثوں کے محفوظ کاغذات سے ہمیں ذیل میں درج ایک خط ملا جس سے معلوم ہو جاتا ہے کہ ہمعصر وزیر اعظم دیوان انت رام نے اسے کشمیر پر جغرافیہ کی ایک کتاب لکھنے پر راغب کیا جو بالآخر موجودہ اشاعت کی پہلی جلد قرار پائی۔

بعالی خدمت فیض موہبت بندگانِ حضور گنجور، دیوان صاحب فیاضِ زمان، مفخر دوران، عالی جاہ، کیوان پایگاہ، ظہیر سلطنت، مشیر مملکت، دام اقبالہم، می رساند کہ فرمان لازم الاذعان کہ دربارۂ تصنیف کتاب جغرافیہ کشمیر بنام این گمنام صادر شدہ بود، پرتوِ رودار زانی فرمود۔ رجای واثق آن است کہ در تمہید وتسوید آن بہ دل و جان کوشش کردہ آید۔ چونکہ تا حال کسی از مورّخانِ کشمیر ذکر مکانات متبرکۂ اہلِ ہنود بفارسی ضبط تاریخ نہ کردہ است، نظر بر آن در تبیین مکاناتِ اہل ہنود از آنجناب امداد واعانت باید بود۔

امیدوارم کہ بنام کسی پنڈتِ شاستر دان ارشاد صادر شود کہ بموجبِ کتاب نیل مت پوران وغیرہ تمامی استھانہای دیوی و دیوتا و بیروہا وغیرہ بندہ را مترجم گرداند۔

احوال ملک نوعی کی بود بدستور۔ بعض رعایا آباد و بعض مفرور۔ خیانت کنندگان مغرور۔ مال گذاران مقہور، بدنامی منتظمان مشہور۔ در آبادی آیندہ در بعض جاہا گمانِ قصور۔ در بیباقی مالیات فتور۔ بندہ در تشریح و توضیح آن معذرد۔

زیادہ آفتاب دولت و حشمیت تابندہ باد!

عرضی غلام

خاکسار حسن شاہ

(بدگان بارگاہ فیض بخش اور فیض و بخش کے خزانہ دار، وقت کے فیاض، زمانے کے صاحب افتخار، عالی جاہ، اونچی پایگاہ، سلطنت کے پشت و پناہ اور مملکت کے مشیر دیوان صاحب! آپ کا اقبال قائم اور بلند رہے۔ بندہ عرض پرواز ہے کہ قابل اطاعات فرمان جو کشمیر کی جغرافیہ کی کتاب لکھنے کے سلسلے میں اس بندۂ گمنام کے نام صادر ہوا تھا، پرتو وصول سے شرفیاب کر چکا۔ امید قوی ہے کہ اسے عمل میں لانے اور لکھنے کے سلسلے میں دل و جان سے کوشش کی جائے گی۔ چونکہ ابھی تک کشمیر کے مورخوں میں سے کسی نے بھی ہندوؤں کے متبرک مقامات کا ذکر فارسی زبان میں نہیں کیا ہے، اس لئے ہندوؤں کی جگہوں کو بیان کرنے کے لئے جناب والا سے امداد و معاونت کی ضرورت ہوگی۔

مجھے امید ہے کہ آپ کسی سنسکرت دان پنڈت کے حق میں حکم صادر فرمائیں گے کہ نیل مت پوران وغیرہ کتابوں سے وہ دیوی دیوتا اور بیروؤں وغیرہ کے استھانوں سے متعلق تمام اطلاعات کا میرے لئے ترجمہ کرے گا۔

ملک کشمیر کے حالات جیسے تھے ویسے ہیں بدستور، بعض رعایا آباد اور بعض مفرور۔ خیانت باز مغرور اور مال گذار مقہور۔ منتظمین بدنامی میں مشہور۔ آیندہ جگہوں کو آباد کرنے میں بعض لوگوں کا قصور۔ مالیات کو بے باق کرنے میں فتور۔ بندہ اس کی تفصیل و وضاحت کرنے میں معذور۔ آپ کے اقبال وحشمت کا آفتاب روشن اور زیادہ درخشاں ہو!

عرضی غلام

خاکسار حسن شاہ

بالآخر یہی سبب بن گیا قدیم زمانے سے مہاراجہ رنبیر سنگھ کے زمانے تک کشمیر کی ایک مکمل تاریخ لکھی جانے کا۔

مصنف نے اس کام کو چار جلدوں میں لکھنے کا منصوبہ بنایا۔ پہلی جلد جغرافیہ، دوسری جلد سیاسی تاریخ، جب کہ تیسری اور چوتھی جلدیں درمیانی صدیوں اور جدید عہد کے اولیا، علما اور شعرا کے بیان میں ہیں۔

پہلی جلد ایک مختصر تعارف کے بعد علاقائی اور ارضی جغرافیہ پر مشتمل ہے۔ صاف معلوم ہوتا ہے کہ اسکے یہ ابواب چند سستی قسم کی نصابی کتابوں پر مبنی ہیں اور ایک جدید قاری کے لئے ان میں مشکل سے ہی دلچسپی کا کوئی سامان موجود ہے۔ جلد کا باقی حصہ کشمیر کی جغرافیہ پر تفصیل کے ساتھ لکھا گیا ہے اور شرح و وضاحت کا ایک ذخیرہ ہے اور بہت دلچسپ ہے۔ مصنف ایک وسیع تر موضوع پر لکھنے کے باوجود سر اوریل سٹاین کی قدیم جغرافیہ کی سی دقت نظر اور علمی بصیرت پیدا نہ کر سکا۔ البتہ حیوانات و نباتات، آثار قدیمہ، علم الاقوام اور قدرتی آفات کا بیان جو اس جلد میں پیش کیا ہے وہ ہماری علمیت میں ایک اہم اضافہ ہے۔

دوسری جلد کشمیر کی سیاسی تاریخ کے لئے مخصوص ہے۔ مصنف کے خود اپنے بیان

کے مطابق اس نے ذیل میں درج منابع پر اعتبار کیا ہے۔

**۱. وقایع کشمیر** ...... علامہ احمد کی وقایع کشمیر جس کا اُوپر ذکر ہوا۔ اسی کتاب سے اس نے کلہن کی تاریخ میں گمشدہ ۳۵ / بادشاہوں کا بیان نقل کیا ہے اور ان بادشاہوں کا بھی جنہوں نے رانا دتیہ (جس کی حکومت بقول کلہن تین سو سال تک قائم رہی) سے پہلے اور اس کے بعد سال ۱۹۱ء سے ۴۱۴ء اور ۴۷۴ء سے ۵۲۱ء تک حکومت کی۔ ہمارے مصنف کے اس نادر الوجود حصہ کو روشن کرنے کی غرض سے ہم ذیل میں ان بادشاہوں کی فہرست درج کرتے ہیں: (۵)

| نام | مدت حکومت | نام | مدت حکومت |
|---|---|---|---|
| ۱۔ ہرن دیو | ۳۰/ سال | ۲۔ رام دیو | ۶۹/ سال |
| ۳۔ ویاس دیو | ۵۶/ سال | ۴۔ درونا دیو | ۵۸/ سال |
| ۵۔ سمہا دیو | ۵۴/ سال | ۶۔ گوپال چند | ۱۳/ سال ۳/ ماہ |
| ۷۔ وجے آنند | ۲۵/ سال | ۸۔ سُکھ دیو | ۴۴/ سال |
| ۹۔ رامانند | ۵۷/ سال | ۱۰۔ سندیمان | ۶۵/ سال |
| ۱۱۔ مرہن دیو | ۵۵/ سال | ۱۲/ کامن دیو | ۵۵/ سال |
| ۱۳۔ چندر دیو | ۵۲/ سال | ۱۴۔ آنند | ۲۸/ سال |
| ۱۵۔ دروپد دیو | ۵۱/ سال | ۱۶/ ہرنام دیو | ۳۹/ سال |
| ۱۷۔ سلکھن دیو | ۲۸/ سال | ۱۸۔ سینادتؒ | ۱۷/ سال |
| ۱۹۔ منگلادتؒ | ۳۹/ سال | ۲۰/ کھیشمندر | ۶۶/ سال |
| ۲۱۔ بھیم سین | ۶۱/ سال | ۲۲۔ اندرسین | ۴۶/ سال |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ۲۳۔ سندر سین | ۴۱/ سال | ۲۴۔ گلگندر | ۴۵/ سال |
| ۲۵۔ بال دیو | ۵۳/ سال | ۲۶۔ نل سین | ۲۵/ سال |
| ۲۷۔ گوکرن | ۳۶/ سال | ۲۸۔ پرہلاد | ۱۱/ سال |
| ۲۹۔ بمبور | ۸/ سال | ۳۰۔ پرتاپ سیلا | ۳۶/ سال |
| ۳۱۔ سنگرام چند | ۱/ سال ۴/ ماہ | ۳۲۔ لارک چند | ۳۱/ سال |
| ۳۳۔ بیرم چند | ۴۵/ سال | ۳۴۔ وبھیشن (وبھیکھن) | ۱۷/ سال |
| ۳۵۔ بھگونت | ۱۴/ سال | | |

رانا دتیہ سے پہلے چھ بادشاہوں اور اس کے بعد ایک بادشاہ کی فہرست یوں ہے۔

۱۔ تونجین = ۱۹۱ سے ۲۳۴ عیسوی تک

۲۔ سرب سین = ۲۳۴ سے ۲۸۲ عیسوی تک

۳۔ گندھرو سیشن = ۲۸۲ سے ۳۱۹ تک

۴۔ لچھمن = ۳۱۹ سے ۳۵۲ عیسوی تک

۵۔ سورک = ۳۵۲ سے ۴۰۳ عیسوی تک

۶۔ وجرا دتیہ = ۴۰۳ سے ۴۱۴ عیسوی تک

۷۔ رانا دتیہ = ۴۱۴ سے ۴۷۴ عیسوی تک

۸۔ ونے دتیہ = ۴۷۴ سے ۵۲۱ عیسوی تک

اس بارے میں جلد دوم کے صفحات ۱۵/ سے ۳۷ تک اور ۷۱/ سے ۷۶ تک ملاحظ ہوں۔

**۲. واقعات کشمیر :......** خواجہ محمد اعظم دیدہ مری (وفات ۱۱۷۹ھ = ۱۷۶۵ء) کی

تالیف۔ یہ فارسی میں کشمیر کی ایک مختصر تاریخ ہے۔ سیاسی تاریخ کے علاوہ اس میں مسلمان صوفیا اور کشمیر کے شعراء کا بھی بیان ہے۔ بعد کے ادیبوں کیلئے یہ ایک مقبول ماخذ رہا ہے (جیسے حدایق الحنفیہ۔ تذکرۂ علمای ہند، گوہر عالم وغیرہ کے مولفین کیلئے)۔ اسکے قلمی نسخے ہندوستان اور انگلستان کے اہم قلمی نسخوں کے ذخایر میں موجود ہیں۔ اس کتاب کا سنگی چھاپ غلام محمد نور محمد ناشران کتب سرینگر نے کشمیر کے آخری فارسی مورّخ مفتی محمد شاہ سعادت (وفات ۱۹۵۲ء) کی ہدایت میں طبع کیا ہے۔ اس سے قدیم تر ایڈیشن سال ۱۸۸۵ء میں لاہور سے شائع ہوا۔ دہلی کالج کے منشی اشرف علی کا اُردو ترجمہ دہلی میں ۱۸۴۶ء میں شائع ہوا۔

**۳. بهارستان شاهی** ...... یہ فارسی قدیم تاریخوں میں سے ایک تاریخ ہے جس کا مولف گمنام ہے۔ مشہور روایت کے مطابق اسکا نام میرزا مہدی کہا جاتا ہے۔ کتاب میں وہ اپنے جد کا نام یوں بتلاتا ہے:

"وجدّ پدر مسود این اوراق کہ ملا حسام الدّین نام داشت از غزنی مرید بابا حاجی ادہم شدہ ہمراہش بود و در مطبخ وی جماعت درویشان را خادمی میکرد۔ و این بابا حاجی ادہم تا زمانِ سلطان زین العابدین در قید حیات بود"۔

(اور ان اوراق کے لکھنے والے والد کے جدّ کا نام ملا حسام الدّین تھا جو غزنی کا تھا اور حاجی بابا ادہم کا مرید ہو گیا تھا۔ وہ اس کے ہمراہ تھا اور اس کے باورچی خانہ میں درویشوں کی خدمت کرتا تھا۔ اور یہ بابا حاجی ادہم سلطان زین العابدین کے عہد تک زندہ تھا)

سال ۷۲۴ھ (۱۳۲۴ء) میں کشمیر پر ذوالقدر کے حملے کا ذکر کرتے ہوئے لکھتا ہے:

"تا اکنون کہ دویست وھفتاد سال گذشت"۔

(اب تک ۲۷۰ سال کا عرصہ گذر چکا ہے)

اس سے کتاب کا سال آغاز ۹۹۴ھ (۱۵۸۶ء) معلوم ہوتا ہے جب کہ آخر میں قطعہ تاریخ سے کتاب کے مکمل ہونے کی تاریخ ۱۰۲۳ھ (۱۶۱۴ء) نکلتی ہے۔ کہتا ہے۔

پر سیدم زعقل راست تدبیر

بگفتا: نامۂ شاہان کشمیر (۱۰۲۳ھ)

کتاب بالکل ہی نادرالوجود ہے۔ محکمہ نے انڈیا آفس کتابخانہ اور برٹش میوزیم سے اس کتاب کے قلمی نسخوں کی مائیکروفلم نقلیں حاصل کی ہیں۔

۴. **تاریخ حیدر ملک چاڈورہ** ...... اس کتاب کا مولف رئیس الملک حیدر ملک چاڈورہ اپنے آقا یوسف خان ولد حسین شاہ چک سلطان کشمیر (۱۵۶۳ء-۱۵۷۰ء) کے ہمراہ بنگال گیا نہ کہ یوسف شاہ چک ماقبل آخری سلطان کشمیر کے ہمراہ، جیسا کہ ریو اور اس کے بعد پروفیسر سٹوری نے دعویٰ کیا ہے۔ اور بعد میں نورالدین جہانگیر بادشاہ کے التفات سے ترقی پائی اور کشمیر کا حاکم مقرر رہوا۔ یہ کتاب ایک طرح کی اسکی خاندانی تاریخ ہے فارسی میں۔ لیکن مغل حملہ کشمیر پر ایک اہم معاصرہ گواہی ہے۔ مولف شیر افگن کے قتل کے واقعہ کا چشم دید بیان پیش کرتا ہے اور وہ واقعہ بھی جب اس نے مہر النساء کو شاہی دربار میں پہنچایا اور بادشاہ کے الطاف و اکرام کے لائق بن گیا ہے۔ لکھتا ہے:

"در آن ہنگام مہر النساء را جہانگیر شاہ پیش خود طلب نمودند و اوّل چیزی کہ بعرض خدیو جہان مطاع رسانید این بود کہ حیدر ملک و علی ملک کشمیری ہر دو برادر خدمات خوب بجا آوردند، لائق عنایت و تربیت اند۔ انہارا طلب نمودہ سرفراز باید کرد......"

بجز در سیدن فرمان واجب الاطاعت ہر دو برادر را بہ درگاہ خلایق پناہ حاضر گردانید ندو چون بشرف آستان بوسی اختصاص یافتیم بیش از لیاقت نوازش فرمودہ در سلک باریافتگان درگاہ آسمان جاہ گیتی پناہ آفتاب شجاع ابوالمظفرؒ نورالدّین جہانگیر بادشاہ غازی انتظام یافتہ بہ منصب آدمیانہ و بانعام واکرام شاہانہ بہ لقب چغتائی معزز گشت وحکومت کشمیر بیاداش آن خدمت بالقب رئیس المملکی کہ منسوب بہ ایالت وامارت آن ولایت باشد سرفراز وممتاز شعرہ

زلطف حضرت شاہ جہانگیر
شدہ حیدر رئیس ملک کشمیر"

(اسی دوران میں مہر النساء کو جہانگیر شاہ نے اپنے پاس بلوایا اور پہلی بات جو اس نے قابل اطاعت شہنشاہ جہان کی خدمت میں عرض کی یہ تھی کہ حیدر ملک اور علی ملک کشمیری دونوں بھائیوں نے بہت اچھی خدمت انجام دی ہے اور اس لئے عنایت وحوصلہ افزائی کے لائق ہیں۔ ان دونوں کو طلب فرما کے سرفراز کیا جانا چاہیئے۔...... واجب التعمیل فرمان پہنچتے ہی دونوں بھائیوں کو خلائق پناہ بارگاہ میں حاضر کیا گیا اور جب آستان بوسی کے شرف سے ہم سر بلند ہوئے تو ہماری لیاقت سے بڑھ کر ہم پر نوازشیں فرما کر آسمان جاہ دربار اور غلام پناہ بارگاہِ آفتاب شجاع ابوالمظفر نورالدّین جہانگیر بادشاہ غازی کے حضور میں باریافتگان کے حلقہ میں شامل ہو گئے اور آدمیانہ منصب نیز شاہانہ انعام واکرام اور چغتائی کے لقب سے معزز کیا گیا اور اس خدمت کے عوض کشمیر کی حکومت رئیس الملک کے خطاب کے ساتھ جو اس صوبہ اور اسکی حکومت کے ساتھ وابستہ ہے، سرفراز اور ممتاز بنا دیا گیا۔

حضرت شاہ جہانگیر کے احسان سے حیدر ملک کشمیر کا رئیس بن گیا")

کتاب میں جو آخری واقعہ درج ہے وہ سال ۱۰۰۹ھ (۱۶۱۹ء) سے تعلق رکھتا

ہے۔ حال ہی میں انڈیا آفس لائبریری اور برٹش میوزیم سے اس کی مائیکروفلمیں محکمہ کے لئے آ گئی ہیں۔

**۵. نظام الوقایع (یا وقایع نظامیہ)....** اس کا مصنف ملّا نظام الدین ابن شیخ الاسلام ملا قوام الدین ہے۔ یہ خواجہ اعظم کی واقعات کشمیر کا ضمیمہ ہے اور اس میں سکھ حاکم دیوان کرپارام کے عہد (۱۸۲۷ء۔۱۸۳۱ء) تک کے واقعات درج کئے گئے ہیں۔ اس مصنف کی وفات سال ۱۲۴۰ھ (۱۸۲۴ء) میں ہوئی۔ اس کتاب کی ایک نقل موجودہ مفتی اعظم مولانا مفتی محمد قوام الدین صاحب کے ذاتی کتابخانے میں دیکھی گئی ہے۔

**۶. تاریخ مولوی هدایت الله متو....** یہ واقعات کشمیر کا ابتدائی ضمیمہ ہے جو کشمیر میں افغان حاکم جمعہ خان کے زمانے (۱۷۸۷ء۔۱۷۹۳ء) تک کے واقعات پر مشتمل ہے۔ یہ کتاب اب نادرالوجود ہے۔

**۷. تاریخ شاهنامئه محمد توفیق، سامی و شایق....** فارسی نظم میں ہے۔ سلطان محمود غزنوی کی پیروی میں کشمیر کے حاکم دیوان سوکھ جیون (وفات ۱۷۶۵ء) نے کشمیر کا شاہنامہ لکھنے کا کام اپنے سات ہمعصر شعرا سامی، نوید، راجح، متین، حسن، توفیق اور شایق کے سپرد کر دیا۔ آخرالذکر شاعر کے ذمہ تاریخ اولیاء لکھنے کا کام کر دیا گا۔ یہ سارا منصوبہ دیوان مذکور کی موت کی وجہ سے پورا نہ ہو پایا۔ سیاسی تاریخ کا جو حصہ توفیق نے ترتیب دیا وہ ہمارے مجموعے میں موجود ہے۔ باقی حصے بہت ناردالوجود ہیں۔

**۸. تحقیقات امیری....** یہ امیرالدین پکھلیوال (وفات ۱۲۸۲ھ=۱۸۶۵ء) کی تالیف ہے۔ یہ بھی ایک نادرالوجود کتاب ہے۔ یہ واقعات کشمیر، وقایع نظامیہ اور بہاء الدین خوشنویس کی لب التواریخ کی تلخیص ہے اور سال ۱۸۲۸ء تک کے حالات پر مشتمل

ہے۔

**9۔لب التواریخ بہاء الدین**..... فارسی میں یہ کشمیر کی ایک مختصر تاریخ ہے جو قدیم زمانے سے سال ۱۸۲۸ء تک کے واقعات پر مشتمل ہے۔ کتاب تین حصوں میں ہے۔ پہلے اور دوسرے حصوں میں کشمیر کا جغرافیہ اور سیاسی تاریخ ہے اور تیسرے حصے میں مسلمان صوفیا اور اولیاء کا ذکر ہے۔ برٹش میوزیم سے پہلے اور دوسرے حصوں کی مائیکروفلمیں محکمہ کے لئے آگئی ہیں۔ تیسرا حصہ نادرالوجود ہے۔

**١٠۔ باغ سلیمان**.... فارسی نظم میں یہ میر سعد اللہ شاہ آبادی کشمیری کی تالیف کی ہوئی تاریخ کشمیر ہے جو جمعہ خان (۱۷۸۷ء۔۱۷۹۳ء) کے عہد حکومت تک کے واقعات پر مشتمل ہے۔ اس میں شاہزادوں کا بھی ذکر ہے اور اولیای کرام کا بھی اور اس میں مؤلف نے خواجہ محمد اعظم دیدہ مری کی واقعات کشمیر کا تتبع کیا ہے۔ ابھی یہ چھپی نہیں ہے۔ ہمارے مجموعے میں اس کی دو نقلیں دستیاب ہیں۔

**١١۔ وجیز التواریخ**..... ملا عبدالنبی کی یہ تالیف فارسی میں کشمیر کی ایک تاریخ ہے جو مہاراجہ رنبیر سنگھ کے عہد حکومت تک کے واقعات کے بیان میں ہے۔ مسلمان اولیا کا مختصر ساذکر بھی اس میں کیا ہے۔ ہمارے مجموعے میں اس کا ایک قلمی نسخہ موجود ہے۔

**١٢۔ تاریخ ہادی**... اس کی دریافت ممکن نہیں ہو سکی۔

**١٣۔ پنج مثنوی**.... فارسی زبان میں یہ سلیم (وفات ۱۰۵۷ھ = ۱۶۴۷ء)، کلیم (وفات ۱۰۶۲ھ = ۱۶۵۲ء) خصالی ہروی (وفات ١٧ ا رصدی عیسوی)، میر الٰہی (وفات ۱۰۶۳ھ = ۱۶۵۳ء) اور احسن (وفات ۱۰۷۳ھ = ۱۶۶۳ء) کی کشمیر کی تعریف میں لکھی گئی پانچ مثنویوں کا مجموعہ ہے۔ پیر غلام حسن کی ان نظموں کی ذاتی نقل محکمے نے حاصل کر لی ہے۔

**۱۴۔ گلزار کشمیر**.... یہ مہاراجہ رنبیر سنگھ کے ایام میں جموں و کشمیر کے وزیر اعظم دیوان کرپارام کی تالیف ہے۔ فارسی میں یہ قدیم عہد سے سال ۱۸۵۷ء تک کشمیر کی تاریخ ہے جسے مؤلف نے پنجاب کے جوڈیشل کمشنر مسٹر رابرٹس کے ایما پر لکھا۔ یہ راج ترنگنی، تاریخ حیدر ملک چاڈورہ، تاریخ نراین کول عاجز (ذیل میں درج) اور تاریخ بیربل کاچرو (ذیل میں درج) کی پیروی میں تالیف کی گئی ہے۔ کشمیر کی تجارت، صنعت و حرفت اور پیداوار کے بارے میں اس میں بڑے دلچسپ ضمیمے موجود ہیں۔ پرتاپ عوامی لائبریری میں اسکی نقل موجود ہے۔

**۱۵۔ گلاب نامہ**.... اسی مصنف کی لکھی ہوئی مہاراجہ گلاب سنگھ (۱۸۴۶ء۔۱۸۵۷ء) کے دربار کی تاریخ ہے جو جموں و کشمیر ریاست پر حکومت کرنے والے آخری خاندان کا بانی تھا۔ یہ کتاب ابوالفضل کے اکبر نامہ کے اسلوب تحریر کے تتبع میں لکھی گئی ہے اور اس کے محاسن و معایب کی حامل ہے۔ یہ ابوالفضل کی طرز نگارش پر بڑی مغلق فارسی میں ہے۔ اس میں ڈوگرہ حکمرانوں کی اصل کو قدیم ترین زمانوں سے تلاش کیا گیا ہے اور بیان مہاراجہ گلاب سنگھ کی سیرت و کردار پر ختم ہوا ہے۔ یہ مہاراجہ گلاب سنگھ کے ابتدائی دور حکومت کے صدر دفتر دیوان جموں گنیش داس بداراہ کی فارسی میں لکھی گئی تاریخ جموں درشنی (۷) کی بنیاد پر لکھی گئی ہے اگر چہ مصنف اس حقیقت کو تسلیم نہیں کرتا۔ کتاب کا سنگی چھاپ رنبیر پرکاش پریس سے شائع ہو چکا ہے اور اب گورنمنٹ پریس بک ڈپارٹمنٹ میں فروخت کیلئے دستیاب ہے۔

**۱۶۔ منتخب التواریخ**..... پنڈت نراین کول عاجز کی تالیف ہے۔ قدیم زمانوں سے کشمیر کی اس مختصر تاریخ کو مؤلف نے کشمیر کے مغل حاکم عارف خان کے ایماء پر سال

۱۱۲۲ھ (۱۰-۱۷۱۱ء) میں لکھا۔ مصنف نے عارف خان کے جمع کیے ہوئے سنسکرت آثار کا ملک حیدر کے طویل اور پر تکلف ترجمے کے ساتھ مقابلہ کرنے کے بعد سادہ طرز بیان میں ایک خلاصہ تیار کرلیا۔ برٹش مجموعے سے اس کی مائیکروفلم نقلیں اس محکمے کے لئے آچکی ہیں۔

۱۷. **مجموعۂ تواریخ**.... بیربل کاچرو کی یہ تالیف نسبتاً متاخر دور کی ہے جو فارسی میں سال ۱۸۵۱ء تک کے واقعات پر مشتمل ہے۔ کشمیر کے ابتدائی سکھ دورِ حکومت پر مفید کتاب ہے۔ ہمارے مجموعے میں اس کا ایک قلمی نسخہ موجود ہے۔

۱۸. **کشمیر ہینڈبک**.... یہ انگریزی زبان میں ہے۔ اِنس کی کتاب ہے جسے خاص سیاحوں کی رہنمائی کے لئے لکھا گیا ہے اور جو پہلی بار سال ۱۸۶۸ء میں شائع ہوئی۔ کشمیر کی تاریخ پر اس میں ایک مختصر سی یادداشت ہے اور بالخصوص کشمیر سے پنجاب تک، سری نگر سے گلگت اور لداخ تک جانے والے راستوں اور نباتات اور جانوروں کا ذکر بھی پایا جاتا ہے۔ اس کتاب کا ہمارے مصنف نے پہلی جلد میں بیشتر استفادہ کیا ہے۔

۱۹. **نادرن بیریر آف انڈیا**.... انگریزی میں فریڈرک ڈریو کی یہ کتاب جموں کشمیر کی عملداریوں کا ایک مشہور تذکرہ ہے جسے ایڈورڈ سٹین فورڈ نے ۱۸۷۷ء میں لندن سے شائع کیا۔ یہ کتاب اسی مصنف کے مفصل دی جموں اینڈ کشمیر ٹیری ٹریز نام کی کتاب کا خلاصہ ہے اور جسے اسی فرم نے ۱۸۷۵ء میں چھاپا تھا۔ اس میں اس ملک کے طبعی حالات، زبان، مذہب، لوگوں کے آداب، معاصر سیاسی نظام اور اہم راستوں کا بیان ہے۔

۲۰. **تاریخ فرشتہ**.... یہ کافی مشہور کتاب ہے اور یہاں پر اسکی تفصیل بیان کرنے کی ضرورت نہیں۔ اس میں کشمیر کی تاریخ پر ایک حصہ موجود ہے۔

۲۱. **تاریخ رشیدی**.... یہ میرزا حیدر دوغلت کاشغری کی فارسی میں لکھی ہوئی وسط ایشیا

کے ترکوں پر ایک معروف تاریخ ہے۔ امن۔ الیاس اور ای۔ ڈی۔ راس نے اس کا انگریزی ترجمہ کیا ہے جسے سیمسن لو مارسٹن اینڈ کمپنی نے سال ۱۸۹۵ء میں لندن سے شائع کیا۔ اس میں سلطان سعید کی سال ۱۵۳۲ء میں لداخ، کشمیر اور تبت پر چڑھائی اور سال ۱۵۴۱ء میں حیدر کے فتح کشمیر اور کشمیر آزاد مملکت کی حیثیت سے اس کے آخری دنوں کے حالات پر بہت ہی مفید اطلاعات پائی جاتی ہیں۔

**۲۲. گلدستہ کشمیر....** یہ اُردو میں ہرگوپال خستہ کی کشمیر کی ایک مختصر تاریخ ہے۔ سال ۱۸۸۳ء میں لاہور سے اس کا سنگی چھاپ شائع ہوا ہے۔ بس ایک جانب دار اور غیر معتبر کتاب ہے۔

**۲۳. جام جہان نما.....** ایلیٹ اور ڈاسن نے اسی عنوان کی فارسی میں دو کتابیں دیکھی ہیں۔ ایک مظفر حسین کی اور دوسری قدرت اللہ کی۔ آخر الذکر کتاب میں کشمیر پر ایک حصہ لکھا ہے۔ غالباً اسی کتاب (۸) کی طرف ہمارا مصنف اشارہ کرتا ہے۔

مصنف نے مندرجہ ذیل کم اہمیت کی کتابوں کا بھی اپنے مآخذ میں نام لیا ہے:

**۱. قصص الهند....** اُردو میں ہندوستانی تاریخ کی حکاتیں، حصہ اول پیارے لال کی لکھی ہوئیں اور حصہ دوم ایم محمد حسین آزاد کی۔ یہ کتاب لاہور سے ۱۸۷۲ء، ۱۸۷۳ء، ۱۸۷۴ء، ۱۸۷۵ء، ۱۸۷۷ء، ۱۸۷۸ء، ۱۸۸۴ء اور ۱۸۹۴ء میں شائع ہوئی ہے۔

**۲. واقعات هند....** اس عنوان کی تین کتابیں ہیں:

(الف) **واقعات هند....** رام چند اور ضیاء الدین کی اُردو میں لکھی ہوئی۔ یہ کتاب لاہور سے سال ۱۸۶۳ء اور ۱۸۶۵ء میں چھپ چکی ہے۔

(ب) **واقعات هند....** رام چند اور ہنومان پرشاد کی اُردو میں لکھی ہوئی۔ یہ کتاب لکھنو

سے سال ۱۸۶۶ء میں چھپ چکی ہے۔

(ج) **واقعات ہند**.... کریم الدین کی اُردو میں لکھی ہوئی کتاب۔ سال ۱۸۶۸ء سے ۱۸۸۹ء تک یہ کتاب لاہور، لکھنو اور دہلی سے سترہ بار چھپ چکی ہے۔

یہ سب کتابیں سکول کی نصابی کتابیں ہیں ہندوستانی تاریخ پر۔ اور کوئی اہمیت نہیں رکھتیں (۹)۔

۳. **خرد افروز**.... حفیظ الدین احمد کی یہ کتاب ابوالفضل علامی کی عیار دانش کا اُردو ترجمہ ہے۔ سال ۱۸۵۷ء میں ہرٹفورڈ نے اسے ای۔ بی ایسٹ وک کے محتاط نظر ثانی اور تنقیدی و تفصیلی یاداشتوں کے ساتھ چھاپ دیا ہے۔ متن کا اصل نمونہ ۱۸۰۵ء میں کلکتہ سے چھپا تھا۔ عیار دانش، کلیلہ و دمنہ کی ایک جدید صورت ہے۔ اس کی بنیاد پنچ تنتر پر ہے۔ کتاب کی کوئی تاریخی اہمیت نہیں سوائے ضرب الامثال اور تشبیہات کے جو موجودہ کتاب میں ادھر ادھر درج ہیں۔ (۱۰)

۴. **جغرافیہ عالم**:.... انڈرسن کی تالیف جس کا عنوان تھا ماڈرن جیوگرافی فاری دی یوس آف سکولز۔ اس کتاب کی چھٹی اشاعت سال ۱۸۶۰ء میں لندن سے طبع ہوئی۔ (۱۱)

۵. **مفتاح الارض**.... کریم الدین کی یہ کتاب دنیا کا جغرافیہ ہے۔ پیارے لال نے اس پر نظر ثانی کی۔ لاہور سے یہ کتاب سولہ بار (بشمول لکھنو سے ایک بار) ۱۸۶۸ء سے ۱۸۷۹ء تک چھپ چکی ہے۔ (۱۲)

اُوپر درج نمبر ۴/۵/ہمارے مصنف کی تاریخ کے جلد اول کے مآخذ معلوم ہوتے ہیں۔ یہ کوئی معیاری کتابیں نہیں ہیں لیکن خالص سکول کی جغرافیہ نصاب کی کتابیں ہیں۔

۶. **ناسخ التواریخ**.... اس کتاب کی دریافت ممکن نہ ہو پائی۔ اس عنوان کی کتاب بہر

حال ایران کے بادشاہ محمد شاہ قاچار (۱۸۳۴ء-۱۸۴۴ء) کے درباری قصیدہ گو محمد تقی سپہر کاشانی سے منسوب، سی۔اے۔ اسٹوری نے دیکھی ہے۔ یہ معمولی درجے کی کتاب ہے سوائے عصری تاریخ کے جو چودہ جلدوں میں چھپی ہے اور ۱۲۶۷ھ (۱۸۵۱ء) تک کے واقعات پر مشتمل ہے جن کو بعد میں ۱۲۷۳ھ (۱۸۵۷ء) تک پھیلا دیا گیا ہے اور قاچاریوں سے مربوط حصہ کو تاریخ قاچاریہ کے ذیلی عنوان سے یاد کیا گیا ہے۔ (۱۳)

۷. **واقعات دُرّانی**.... میر وارث علی سیفی کی یہ تالیف سال ۱۸۷۵ء میں کانپور سے چھپی ہے۔ یہ عبدالکریم کی تاریخ احمد کا اُردو ترجمہ ہے اور ۱۷۹۷ء تک احمد شاہ، تیمور شاہ اور زمان شاہ کی تاریخ ہے اور جنگ افغان کی ابتدا کے مختصر تذکرے پر مشتمل ہے۔ (۱۴)

۸. **رنجیت نامه** ...... یہ فارسی میں کنھیالال کی لکھی ہوئی مہاراجہ رنجیت سنگھ کی تاریخ ہے۔ یہ ظفرنامہ رنجیت سنگھ کے نام سے بھی جانی جاتی ہے۔ سال ۱۸۷۶ء میں لاہور سے چھپی تھی۔ (۱۵)

تاریخ حسن کی تیسری جلد کا عنوان ہے اسرار الاخیار جس میں کشمیر کے مسلمان صوفیا اور اولیاء کا تذکرہ ہے۔ اس جلد کے مقدمہ میں مصنف نے مندرجہ ذیل آخذ کا ذکر کیا ہے۔

۱. **وقایع کشمیر** ...... علامہ احمد کی تالیف۔ اوپر اسکا ذکر ہو چکا ہے۔

۲. **اسرار الابرار** ...... اسے بابا داوٗد مشکواتی (وفات ۱۰۹۷ھ=۱۶۸۵ء) نے لکھا ہے۔ یہ فارسی میں قدیم ترین تذکروں میں سے ہے جس کی بنیاد بقول مولف فارسی اور کشمیری کے اصیل منابع پر ہے۔ اس میں خاص طور پر کشمیری مسلمانوں کے ریشی سلسلے کا ذکر ہے جس کے بانی کشمیر میں چرار شریف کے شیخ العالم شیخ نورالدینؒ ولی علمدار کشمیر ہیں (وفات ۸۲۰ھ=۱۴۱۷ء) اس سلسلے کے مطالعہ سے بدھ مت، شومت اور اسلامی تصوف

کے ایک دلچسپ اتحاد کی بات واضح ہو جاتی ہے۔ کتاب ابھی چھپی نہیں ہے۔ ہمارے مجموعے میں اس کی دو نقلیں ہیں۔ دونوں کی تاریخ ۱۱۷۷ھ (۱۷۶۳ء) ہے۔ کتاب سال ۱۰۶۵ھ (۱۶۵۵ء) میں لکھی گئی ہے۔

**۳. واقعات کشمیر......** یہ خواجہ محمد اعظم دیدہ مری کی تالیف ہے۔ اسکا ذکر اوپر ہم کر چکے ہیں۔

**۴. فتوحات کبرویہ......** تالیف عبدالوہاب نُوری (وفات ۱۱۸۲ھ = ۱۷۶۸ء)۔ یہ ایرانی اور کشمیری کبروی سلسلے کے صوفیا کا فارسی میں لکھا گیا تذکرہ ہے اور مولف نے بیشتر اسرار الابرار سے استفادہ کیا ہے۔ اس کے چند قلمی نسخے ہمارے مجموعے میں موجود ہیں۔

**۵. فتوحات قادریہ....** یہ میر سید محمد حسین قادری منطقی (وفات ۱۳۰۰ھ = ۱۸۸۲ء) کی فارسی تالیف ہے۔ اس میں ان مسلمان صوفیا کا ذکر ہے جو قادری سلسلے سے وابستہ ہیں اور کشمیری، ہندوستانی اور ایرانی اولیاء کا بھی اس میں تذکرہ ہے۔ یہ سال ۱۲۸۲ھ (۱۸۶۷ء) میں لکھا گیا ہے اور ہمارے مجموعے میں موجود ہے۔

**۶. دستور السّالکین......** شرح ورد المریدین کے نام سے بھی جانی جاتی ہے اور یہ فارسی میں شیخ بابا داؤد خاکیؒ (وفات ۹۹۴ھ = ۱۵۸۵ء) کی خود اپنے اس قصیدہ کی شرح ہے جو اس نے اپنے روحانی مرشد حضرت شیخ مخدوم حمزہؒ کی مدح میں لکھا ہے۔ اس کتاب میں بہت سے معاصر اور قدیم صوفیا اور اولیای کرام نیز مروجہ صوفیانہ رسومات کا ذکر ہے۔ اس کتاب کا سنگی چھاپ سال ۱۳۵۶ھ میں (۱۹۳۷ء) غلام محمد نور محمد نے سرینگر سے شائع کیا ہے۔ پیر محمد شاہ شایق نے اس کا کشمیری ترجمہ کیا ہے جسے ان ہی ناشران نے سال ۱۳۶۵ھ میں (۱۹۴۶ء) ذکر الواصلین کے نام سے شائع کیا۔

**۷.خوارق السالکین** ...... یہ کتاب تاریخ ہادی کے نام سے بھی جانی جاتی ہے اور احمد ابن عبدالصّبور کی تالیف ہے جسے اس نے سال ۱۱۰۹ھ (۱۶۹۷ء) میں ترتیب دیا۔ یہ فارسی زبان میں کشمیر کے صوفیا اور اولیا کا تذکرہ ہے۔ ہمارے مجموعے میں اس کی ایک بے تاریخ نقل موجود ہے۔

**۸.تاریخ شایق**...... تالیف عبدالوہاب شایق جو دیوان سوکھ جیون کے شاہنامہ کشمیر کا ایک شریک ہے اور اس کا ذکر اُوپر ہو چکا ہے۔

**۹. تاریخ باغ سلیمان**...... میر سعداللہ شاہ آبادی کی تالیف جس کا ذکر اُوپر ہو چکا۔

**۱۰. وقایع نظامیه** ......ملاّ نظام الدین کی تالیف جس کا ذکر اُوپر ہو چکا۔

**۱۱. خمسۂ بہاء الدین**.... ملا بہاء الدین (وفات ۱۲۴۸ھ=۱۸۳۲ء) کی تالیف۔ یہ فارسی میں لکھی گئی مندرجہ ذیل پانچ مثنویوں کا مجموعہ ہے:

سلطانیہ: حضرت سلطان مخدوم شیخ حمزہؒ کی زندگی پر۔

نقشبندیہ:

قادریہ: ان سلسلوں کے صوفیاں کرام پر

چشتیہ:

ریشی نامہ:

اسکی چند قلمی نقلیں ہمارے مجموعے میں موجود ہیں جن میں قدیم ترین نسخے کی تاریخ ۱۲۶۹ھ (۱۸۵۲ء) ہے۔

**۱۲. تحقیقات امیری** ...... امیر الدین پکھلیوال کی تالیف ہے۔ اسکا ذکر اُوپر ہو چکا۔

**۱۳. مجموعه شیوا** ...... ہمارے مصنّف کے باپ غلام رسول شیوا کی تصنیف۔ اُوپر

اس کی طرف اشارہ ہو چکا ہے۔ اس کی ایک ایک خاندانی نقل جس پر ہمارے مصنف کے بھائی غلام احمد جیّد (وفات ۱۳۲۷ھ = ۱۹۰۸ء) جو ایک مشہور شاعر اور فارسی نظم میں خلافت نامہ کا مصنف ہے کی مہر لگی ہوئی ہے، گامرؤ (بانڈی پور) کے ایم محمد سلیمان کے پاس موجود ہے۔

زیر نظر جلد کی ترتیب خوارق السالکین کی طرز پر ہے اور مندرجہ ذیل پانچ ابواب میں منقسم ہے:

۱ سادات ۲ ریشی حضرات

۳ دیگر صوفیا اور اولیا ۴ علما

5 مجذوبین

خاتمے پر مسلمان اولیا کے متبرک آثار، جو وادی کشمیر کے مختلف مقامات پر درگاہوں میں محفوظ ہیں، پر ایک حصہ موجود ہے۔ افسوس ہے کہ وسعت نظر کے باوجود مصنّف نے شیعوں اور غیر مسلموں کے مذہبی رہنماؤں اور علماء کے بارے میں خاموشی اختیار کی ہے۔

اس جلد کے قلمی نسخے میں کئی خالی جگہیں موجود ہیں جہاں سے متعلقہ خاندانوں کے خود غرض لوگوں نے الفاظ کو مٹا دیا ہے۔ ان خالی جگہوں کی خوش قسمتی سے جموں کشمیر یونیورسٹی کے مجموعے میں دستیاب قلمی نسخے سے پر کر دیا گیا ہے۔ اس کیلئے ہم جموں کشمیر یونیورسٹی کے رجسٹرار جی، اے، اشائی اور یونیورسٹی کے سپیشل آفیسر پروفیسر غلام محمد کے مشکور ہیں جنہوں نے اس قلمی نسخے کو بے دریغ ہمارے لئے تقابلی مطالعہ اور مناسب موقعوں پر اختلافات دُور کرنے کے لئے میسر رکھا۔

موجودہ کتاب کی چوتھی جلد کا عنوان ہے تذکرہ شعراء جس میں چک دور

(۱۵۵۵ء-۱۵۸۶ء) سے ۱۳۰۹ھ (۱۸۹۱ء) تک کے کشمیر کے فارسی شعرا کا مختصر تذکرہ ہے۔ افسوس کہ یہ حصہ بہت ہی مختصر ہے۔ مصنف نے اس کی اطلاعات کے مآخذ کا ذکر نہیں کیا ہے۔ کچھ شاعروں کا ذکر تو بس ایک یا دو سطروں میں کیا ہے۔ ایسا دکھائی دیتا ہے کہ مصنّف نے خواجہ محمد اعظم دیدہ مری کی واقعات اور مغل تواریخ پر ہی اعتماد کیا ہے۔

اس طرح سے پیر غلام حسن نے ایک وسیع میدان کو طے کیا ہے اور تمام اہم اطلاعات کے منابع سے استفادہ کرلیا ہے۔ البتہ مصنّف سے کچھ اشتباہات بھی سرزد ہوئی ہیں جن کی طرف مرّتب نے اشارے کئے ہیں۔

ہمارے مصنف نے ۶۸/سال کی عمر میں ۲۸/جمادی الثانی ۱۳۱۶ھ (۱۳/نومبر ۱۸۹۸ء) میں گامروٗ میں وفات پائی اور وہیں پر اپنے گاؤں کی پارسا خاتون میر بی بی خاتون کے مزار کے احاطے میں دفن کئے گئے۔ ایک روایت کے مطابق آپ نے اپنی مندرجہ ذیل تاریخ وفات اور تاریخ پیدائش لکھ کے رکھی تھی جو آپ کے کاغذات سے ملی اور ان تاریخوں کو موت سے دس سال پہلے کہہ چکے تھے۔

آہ غلام حسن بلبل باغِ سخن
رفت ازین خوش چمن جانب مینو نکو
ہاتف فرخندہ فال ازپی تاریخ سال
عمرو ولادت وصال گفت زیک بیت جو
بلبل باغ ۱۲۴۹ اصفیا آمدو سا جد ۶۸ بزیست
ازپی سال وفات یافت حسن بہشت گو

(افسوس باغِ سخن کا بلبل غلام حسن اس خوبصورت چمن سے نیک نام ہو کر عالم علوی کی طرف

پرواز کر گیا۔ تاریخ سال کیلئے نیک فال ہاتف نے کہا ایک ہی شعر سے عمر، پیدائش اور وفات ڈھونڈ لو۔ بلبل باغِ اصفیا (بن کر) آیا، ساجد (کی طرح) زندہ رہا۔ سال وفات کے لئے کہہ دو حسن نے جنت پائی)

اپنی وفات سے دو سال پہلے سال ۱۳۱۴ھ میں آپ نے موجودہ کتاب کا ایک قلمی نسخہ خانقاہ معلیٰ کو بطور وقف پیش کیا۔ اس پورے مجموعے پر آپ کی مہر لگی ہوئی ہے۔ اسی قلمی نسخے سے ہم نے کام لیا ہے۔ اس کتاب کے مستند ہونے میں کوئی شک ہی نہیں۔

کتاب کو چھاپنے کا کام اصل میں میرے پیشرو شری ٹی این خزانچی حکومت جموں کشمیر کے آثار قدیمہ محکمے کے سپرنٹنڈنٹ نے ہاتھ میں لیا تھا، جب کہ تحقیق کا شعبہ آثار قدیمہ محکمے کا ایک حصہ تھا۔ سال ۱۹۵۱ء میں تحقیق و اشاعت محکمہ ایک الگ محکمے کی صورت میں موجود میں آ گیا۔ نئے بنائے گئے اس محکمے کو اپنی تحویل میں لیتے وقت میں نے دیکھا کہ نسخے کا متن بغیر یادداشتوں کے زیر کتابت ہے اور اس کا ایک حصہ پہلے ہی چھپ چکا ہے۔ پہلی جلد کی صرف کچھ ہی تختیاں چھپی تھیں۔ ان کو ترک کر دیا گیا اور مزید تحقیق کی خاطر نیز کشمیر کی تاریخ کی اس پہلی اشاعت کو "کشمیر کے سلسلہ متن و مطالعہ" میں ناکافی مآخذ کے ہوتے ہوئے بھی حتی المقدور حد تک پُر از معلومات بنانے کیلئے ہم نے متن کو تنقیدی یادداشتوں کے ساتھ نئے سرے سے ترتیب دیا۔ دوسری جلد کے ۲۲۷ صفحات کو جو پہلے ہی چھپ چکے تھے اور ان کو بھاری نقصان اور تاخیر ہوئے بغیر چھوڑا نہیں جا سکتا تھا، ویسے ہی رہنے دیا گیا اور ان کی تنقیدی یادداشتیں نہیں لکھی گئیں۔ البتہ یہ کمی دوسری اشاعت میں پوری کر دی جائے گی۔

اوّل درجے کی حوالہ جاتی لائبریری کی کم دستیابی اس سخت محنت طلب کام کی ایک

بڑی رکاوٹ رہی ہے اور مزید تحقیق کیلئے ابھی بھی اس کیلئے گنجائش باقی ہے۔ اس لئے احساس انکساری کے ساتھ اس اشاعت کی پہلی جلد کو فاضل عوام کی خدمت میں پیش کیا جا رہا ہے۔ دوسری جلد کی ترتیب اور کتابت مکمل ہو چکی ہے۔ یہ زیر طبع ہے اور جلد ہی اس کے اجرا کئے جانے کی امید ہے۔ تیسری اور چوتھی جلدوں پر کام جاری ہے۔

اس عظیم کام کا بیشتر بوجھ مولوی محمد ابراہیم نے اٹھایا ہے۔ محکمہ پنڈت رگھوناتھ زاڈو، شاستری ودیا بھوشن، مولوی عبدالطیف، مسٹر محمد امین ابن مہجور اور عملے کے دوسرے کارکنوں کا بھی ان کی ترتیب کاری اور تصحیح خوانی کے عمل میں ان کی قابل قدر مدد کرنے کی خاطر ان کا شکر گذار ہے۔

کتاب کو چھاپنے کا کام گورنمنٹ چھاپہ خانہ جموں اور سرینگر نے سنبھالا ہے۔ مواد اور صلاحیت دونوں میں سرمایہ کی کمی کی وجہ سے ان کے کام میں رکاوٹ آگئی۔ یہ اس نوعیت کا ان کا پہلا کام تھا جو انہوں نے ہاتھ میں لیا تھا اور اب جبکہ حکومت نے بڑی مہربانی سے کام لے کر سامان مہیا کر دیا ہے مستقبل میں بہتر نتائج کی امید ہے۔ چھاپنے کے عمل کے دوران میں کچھ پرتیں پھیکی ہو گئیں اور ان کو حکومت کے چھاپخانے میں پھر سے لکھنا پڑا۔ اس حادثے کو چھپانے کے غم میں چھاپخانے نے اس محکمے کو کوئی اطلاع نہیں دی اور تصحیح خوانی کے بغیر ہی ان پرتوں کو چھاپ دیا۔ ایک لمبا غلط نامہ اسی لئے چھپے ہوئے متن کے ساتھ ملحق کرنا پڑا ہے۔ ہم شری جے۔ این۔ شرما، کنٹرولر آف سٹیشنری اینڈ پرنٹنگ، کے بھی مشکور ہیں جس کی ہمارے اس کام میں دلچسپی اس کتاب کے پے در پے آنے والی جلدوں میں اصلاح کی ضمانت ہے اور اس لائبریری ایڈیشن کیلئے بھی جو عنقریب چھپنے والا ہے۔

محکمہ اپنے فرض کو نظر انداز کرے گا اگر نہ وہ ادارہ اوقاف خانقاہ معلیٰ کے حق میں

اپنے عمیق امتنان کو ضبط تحریر میں نہیں لائے گا جنہوں نے اس کتاب کا قلمی نسخہ اسکے لئے مہیا رکھا۔

عملہ اس موقع کی راہ سے استفادہ کرتے ہوئے ڈائریکٹر آف ایجوکیشن ریسرچ اینڈ پبلی کیشن کے حق میں اظہار تشکر کرتا ہے جس کی فاضلانہ رہبری، امداد اور حوصلہ افزائی کی وجہ سے جو انہیں اس سے وقتاً فوقتاً ملتی رہی اور جس کی وجہ سے یہ کام ان کیلئے سہل اور دلچسپ بن گیا۔

آخر میں محکمہ حکومت جموں وکشمیر کے حق میں شکر و امتنان کا اظہار کرتا ہے جس کی جود و سخاوت کی وجہ سے اس ضخیم کتاب کی اشاعت ممکن ہو سکی۔

راج گڈھ۔ سرینگر
جنوری ۱۹۵۸ء

صاجزادہ حسن شاہ
اسسٹنٹ ڈائریکٹر
ریسرچ اینڈ پبلی کیشن ڈپارٹمنٹ

# یادداشتیں

(۱) سال ۱۹۱۱ء میں طبع ہوئی ہے۔ مطبع مجددی امرتسر ص ۹۷۔

(۲) ایضاً۔

(۳) دیکھئے جرنل ایشیاٹک سوسائٹی بنگال۔ جلد ۹ رنمبر ۵ رسال ۱۹۱۳ء ص ۱۹۵۔

(۴) ویلی آف کشمیر مصنف ڈبلیو۔ آر۔ لارنس۔ شائع کنندہ ہنری فرینک، لندن، سال ۱۸۹۵ء، ص ۴۵۴۔

(۵) سکشن اول۔ نوٹ ۲۷ رص ۳۷ رجلد اول راج ترنگنی باہتمام سٹاین۔

(۶) ریو کا کٹلاگ جلد اول ص ۲۹۷ ب۔ پرشن لٹریچر مصنف سی، اے، سٹوری ص ۶۸۰۔ اور قلمی نسخہ تاریخ ملک حیدر چاڈورہ ریسرچ لائبریری سرینگر ورق ۴۲۔

(۷) اس کی ایک نامکمل نقل پرتاپ میوزیم سرینگر میں موجود ہے اور حال ہی میں ریاست کے محکمہ اطلاعات نے انڈیا آفس لائبریری سے اس کی ایک مائیکروفلم حاصل کی ہے۔

(۸) تاریخ ہندوستان تایف ایلیٹ اور ڈاسن جلد ۳ رص ۱۵ راور ۱۸۴۔ انڈیا آفس لائبریری کٹلاگ جلد ۱ رحصہ دوم ص ۹۲۔ اور برٹش میوزیم کٹلاگ آف ہندوستانی بکس ص ۱۶۲۔

(۹) انڈیا آفس لائبریری کٹلاگ جلد اول حصہ دوم ص ۱۴۷۔ اور برٹش میوزیم کٹلاگ آف ہندوستانی بکس ص ۲۲۸۔۲۲۹۔

(۱۰) انڈیا آفس لائبریری کٹلاگ جلد دوم حصہ دوم، ص ۱۴۳۔ برٹش میوزیم سپلیمنٹ کٹلاگ آف ہندوستانی بکس ص ۲۶۔۲۷۔

(۱۱) پنجاب پبلک لائبریری کلاسیفائڈ کٹلاگ جلد ۱ رص ۲۰۹۔

(۱۲) انڈیا آفس لائبریری کٹلاگ جلد ۲ رحصہ دوم ص ۸۱۔

(۱۳) پرشن لٹریچر مصنف سی، اے، سٹوری ص ۱۵۳۔

(۱۴) ایضاً ص ۴۰۳۔

(۱۵) ایضاً ص ۶۷۵۔

# شمس التواریخ

یعنی

# تاریخ حسن

(حصہ اول)

کا اُردو ترجمہ

از

پروفیسر ڈاکٹر شمس الدین احمد
بُرج بخت آور۔ آستان پور روڑ
راول پور سری نگر، کشمیر

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

# آغاز

عنوان کلام کا آغاز، اوراس مدوّن بیان کا دیباچہ، اُس بے نظیر شہنشاہ حقیقی کی حمد وثنا کے واضح فرمان سے روشن اور مزیّن ہے، جس کی سلطنت کے دوام کی تاریخ، ابتدا و انتہا سے عاری، اور جس کی مملکت کے قائم بالذات ہونے کا کارنامہ بُرہان اور استدلال سے مبّرا ہے۔ اس کی عظمت وجلال کا خطاب: تُوتی المُلکَ مَنْ تشاء وتَنْزِعُ المُلک مِمَّنِ تشاء و تعز من تشاء و تذل من تشاء۔(۱) زمانوں کے منبروں پر مذکور وعیاں ہے اوراس کے لمن المُلکَ الْیوم اللہ واحِدالقھار (۲) کی صاحب اختیاری و فرمان کا سکہ زمانے کے امور کے دیناروں پر مزیّن اور حکم فرما ہے۔ وقت کے صفحات پر اُسی کی حکومت کے حالات و واقعات مذکور ہیں اوراسی کی حکمت کے علامات واخبار، درختوں کے بتوں اور پھولوں کی پتیوں پر مسطور۔ دنیای کون وفساد میں اس کے مستحکم انتظام بخش قوانین وفرامین، ہرلحہ، نظم ونسق کے حامل اور کامل ہیں اوراطاعت گذار بنی نوع افراد پر مقدر کیئے گئے اس کے امور کا منشور ہمیشہ مہر وثبت کیا ہوا اور پیش آنے والا ہے۔ اس کی بادشاہی کے احکامات کا بلیغ فرمان، نازل کیا گیا قرآن مجید ہے، جو ہماری طرف بھیجا گیا ہے اور تمام احکامات پر شامل ہے۔ اوراس کی حکومت کے بلند و بالا شاہی حکمنامے، پہلے نازل کیئے گئے وہ صحیفے ہیں، جو قابل اعتماد وعمل تھے۔ لَہُ المُلکُ وَلَہُ الحَمدُ وَھُو

عَلٰی کُلِّ شیٔ قَدِیر (۳)

تعالیٰ اللہ شہنشاہ جہان است — کہ ظلّ اوھمہ صاحب قرآن است
جہانگران کہ اکبر درجہان اندر — چوعالم گیر ازو شاہ جہان اندر
شہنشاہیش دایم بے زوال است — قوی قیّوم وقادر ذوالجلال است

(وہ بزرگ و برتر خداوند دنیا کا بادشاہ ہے۔اس کا سایہ بھی سراسر بادشاہی کا حامل ہے۔جو بادشاہ دنیا میں بہت بڑے شمار ہوتے ہیں وہ اسی کے ذات سے عالمگیر بھی ہوئے ہیں اور شاہ جہان بھی۔دراصل بس اسی کی بادشاہی ہے جو ہمیشہ بے زوال ہے کیونکہ وہ قوی ہے، قائم رہنے والا ہے،قدرت والا اور صاحب عزت وشان ہے!)

کیا ہی عمدہ بادشاہ ہے جس نے اپنی قدرتِ کاملہ کی قوت سے مملکتِ دنیا کی وسعتوں کو آسمان کے نو گنبدوں کی مضبوط اساس سے اور گونا گون لمحوں اور زمانوں کے ظہور سے اس کارخانہ ہستی کو وافر وسعت ورفعت سے آراستہ کیا اور اس کی رونق اور نادرہ کاری کو ثوابت اور روشن ستاروں کے چراغان کی آرائش سے اور درخشان ستاروں کی قندیلوں کی نموداری سے اور اس شائستہ تماشا گاہ کو کمال تازگی اور عمدگی کے ساتھ سنوارا۔کرہٗ زمین کے جسم کو آب وہوا کی گود میں چار عناصر (۴) کے پستانوں کے دودھ اور آسمان کے مخصوص ستاروں کی تاثیرات کی خوارک سے پالا۔اس ظلمت کدہ کو چمکتے سورج اور چاند کے مشعلوں کے نور کے انعکاس سے شب وروز کی باہمی علیحدگی کے ساتھ روشن کیا۔ایک انوکھی قیام گاہ معلق بچھادی اور اپنے ذاتی ارادہ ومقصد ومراد کے بموجب اس کے اوپر مختلف انواع اور گونا گو اقسام کی ممکنات وموجودات کی ایک پوری لشکر موالید تلاثہ (۵) کو وجود میں لانے کے سبب پیدا کردی۔ "انی جاعل فی الارض خلیفہ" (۶) کا شوراس وسیع عالم میں برپا

کیا اور تمام موجودات میں اپنے فضل واحسان کی کثرت سے نوع انسان کے سر پر "وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ" (۷) کا گراں بہا تاج رکھ کر اسے خلافت وحکومت کے مسند کا بادشاہ بنا دیا اور کارگاہ دنیا کو آباد زمینوں، شہروں، ملکوں، مسکنوں، بازاروں، متاعوں اور دیگر اشیاء کے ساتھ زینت دی اور ایک نمائش گاہ وجود میں لائی۔ نظم

شہنشاہی کہ تختش ہر مکان است — بہ ملکِ آفرینش حکمران است
جہانداران دوران شوکت اوست — پی تنظیم عالم حکمت اوست
بہ شاہِ خاوری اکلیلِ زرّ داد — زتاثیرش بہ بحر و کان گہر داد
سکندر صارم از فرمان او آخت — زمشرق تا بہ مغرب رایت افراخت
سلیمان راچو اوتخت ونگین داد — طیور وانس و جان فرمود منقاد
ازوخاقانِ چین این قاتنین یافت — ازوقیصر جہان زیرِ نگین یافت
بہ زارِ روس داد او کوسِ شاہی — تصلّف می کند از کجکلاہی
ازو مورے چو تیمورِ جہان شد — شبانی در زمان صاحبقران شد
جہاندران کہ در دوران سبب کرد — مطیع حکم سلطان عرب کرد

(وہ شہنشاہ جس کا تخت شاہی ہر مقام ہے اس دنیاوی وجود پر حکمران ہے۔ دنیاوی بادشاہوں کے ظہور میں نظم عالم کی حکمت اور اسکی شوکت پوشیدہ ہے۔ سورج کو اس نے سونے کا تاج دیا اور اسکی تاثیر سے سمندروں اور کانوں کو موتی عطا کئے۔ سکندر نے اسی کے حکم سے تلوار کھینچی اور مشرق سے مغرب تک اپنی بادشاہت کی بلند کی۔ سلیمان کو جب اس نے تخت وتاج بخشا تو اسکی اطاعت میں پرندے اور جن وانسان بھی رکھ دیئے۔ اسی کے حکم سے خاقانِ چین نے دنیا کو زیر فرمان پایا اور قیصر روم نے سارے عالم کو زیر کیا۔ روس کے زار کو اسی نے شاہی عطا

کی جب ہی وہ کجکلا ہی کی ڈینگیں مارتا ہے۔ وہ چیونٹی کو سارے عالم کا فرمان روا بنا چکا یعنی ایک گڈریئے کو اس نے ایک لمحہ میں صاحبقران بنا دیا۔ دنیا میں اس نے جن کو فرمان روا بنا دیا ان کو سلطان عرب (حضرت رسول اللہ ﷺ) کا فرمان بردار کر دیا)

## حضرت رسول کریم ﷺ کی مدح میں

عظمت و کبریا کے دربار کا نائب، جلالت و رفعت کی بارگاہ کا سردار، مشرق و مغرب کی مملکت عالیہ کا مختار م، دنیا و عقبیٰ کی سلطنت محفوظ کا کارگذار، دنیای آفرینش کی مملکت کا منتظم اعظم، دانش بینش کے دفتروں کا فرمان روا، کون فساد پر مشتمل حکومت کا نگرانِ اعلیٰ، ولایت آخرت و قیامت کا مہتمم، ممکنات و موجودات کی لشکر کا سپہ سالار، حاضر اور غائب لشکروں کا سپہ سالار، انبیاء اور مرسلین کا پیشوا، اولیاء اور متقیوں کا قافلہ سالار، دین و ملت کا خالق، علم و حکمت کا موجد، شہرستان طریقت و تقویٰ کا فرمان روا، صاحبان معرفت و صفا کا روشن گر، شریعت کے مقدمات کا قاضی، حقیقت کے مجملات کا حاکم، گہنگار امیدواروں کا شافع، سخت سرکشوں کا سرشکن، ظالم کسراؤں کا قاطع، اسلامی افواج کا ناصر، قدسیان آفاق کا آقا، نو آسمانوں میں تسبیح خوان فرشتوں کا پیشوا، بادشاہ جہان کشا، دیوان قضا کا حکم روا، شفاعت کے خزانوں کا خزانہ دار، بزرگی و عظمت کے ممالک کا مالک، عالم پناہ اور مخدوم جہان، سرمایہ و افتخار آدم، دل پسند صفتوں کا تقسیم کار، خوش اطوار و حرکات، صاحب خوش اندام، جناب مستطاب، طاہا خطاب، یاسین القاب، لولاک شان، صاحب قرآن، خاتم النبیین، وَمَا اَرسَلْنَاکَ اِلَّا رَحْمَةً لِلْعَالَمِیْن (۸)

محمد کہ برعالمش سروری است　　یلیواج از حضرتِ تنگری است (۹)
زنورش مواد ھمہ کاینات　　ظہورش مراد از ھمہ ممکنات
بہار جہان راہدایت ازو　　خزان زمان را نہایت ازو
بدیع البیان و فصیح اللّسان　　شفیع جہان و رفیع المکان
خور از چتر داران درگاہ او　　مہ از پاسداران خرگاہ او
خلافت گر خاصِ عالم پناہ　　حمایت گر امت پر گناہ
رفیعی جہان راکشایش از وست　　شفیعی کہ مارا ہایش ازو ست
شرف بین کہ در کشور کاینات　　نظیرش ندیدہ کس از ممکنات
خیابان او باغِ ہفت آسمان　　بیابان اوساحت لا مکان
چو دژبان کیوان برایوان او　　سلیمان نگہبان بہ دیوان او
نر دادار مختار کل درجہان　　بہ ادوار فرماندہ سروران

سزد نزل حق رحمش بر دوام
علیہ الصلوٰۃ و علیہ السلام

(محمدؐ جن کی حاکمیت سارے عالم پر ہے حضرت خداوند تعالیٰ کے پیامبر ہیں۔ ساری کائنات کا مواد آپ کے نور سے ہے اور تمام ممکنات سے مقصد آپ کا ظہور تھا۔ بہار عالم کی ابتدا آپ سے ہوئی اور خزانِ دہر کی انتہا بھی آپ ہی سے۔ آپ بدیع البیان و فصیح اللسان ہیں۔ آپ شفیع جہان اور رفیع المکان ہیں۔ آفتاب آپ کی درگاہ، کا چتر بردار اور چاند آپ کے دربار کا نگہبان ہے۔ آپ خلافت گر ہیں اور عالم پناہ ہیں اور گناہ آلودامت کے حمایت

گر ہیں۔آپ ایسے بلند قدر ہیں کہ سارے عالم کی نجات آپ سے ہوگی۔آپ وہ شفاعت ساز ہیں کہ ہماری رہائی آپ سے وابستہ ہے۔آپ کی بزرگواری ملاحظہ ہو کہ کائنات میں تمام ممکنات میں آپ کی نظیر کہیں نہیں دکھائی دیتی۔سات آسمانوں کی وسعتیں آپ کی سیر گاہ اور لامکان کی کشادگی آپ کی جولان گاہ ہے۔آپ کے ایوان کا محافظ کیوان اور آپ کے دفتر کا نگہبان سلیمان ہے۔سارے جہاں میں اللہ تعالیٰ کی طرف سے آپ ہی مختارِ کُل ہیں اور بادشاہوں کے فرمان روا بھی ہر زمانے میں آپ ہی ہیں۔ ہمیشہ اللہ تعالیٰ کی رحمت کا نزول آپ پر سزاوار ہے۔درود ہو آپ پر، سلام ہو آپ پر!)

## خلفائی راشدینؓ اور ائمہ مومنینؒ کی منقبت میں

رسالت کی بارگاہِ عالی کے خاقان، خلافت کی کارگاہِ نامدار کے ارکان، ملّت عالی کی ولایت کے طرفدار، بلند پایہ امت کی لشکر کے سپہ دار، مملک ناسوت کے پیشکار، لاہوت کے راستوں کے مقتدیٰ، شریعت وتقویٰ کے دیوان کے مستوفی، حقیقت وہدایت کے عرفان کے خبر دار، کوکبۂ بزرگی وعظمت کے تاجدار، دبدبہ شجاعت کے نامدار، سعادت مند اولیاء کی جماعتوں کے متولی، متقیوں کے گروہوں کے محتسب، خاندان نبوت کے اصحاب، دودمان سخاوت کے اعیان، حضرت سیّد الابرار ﷺ کی لشکر کے بزرگانِ سرافراز **وَالَّذِیْنَ مَعَهُ اَشِدَّاءُ عَلَی الْكُفَّار (۱۰)**۔

روہسِ نجابت نصوصِ متین فصوصِ فخامت شموسِ مبین

ھمہ مجتبیٰ اتقیا رہنما ھمہ پیشوا مقتدار مہتدا

ظہیران امت بشیرانِ دین امیرانِ ملت مشیران دین
از ایشان ھمہ تابدور قیام سعید و رشید و حمید و ہمام
بآن آل و اصحاب سلطان دین فدا قرّہ العین کنم از یقین
خصوصاً بآن چار مہر جلی ابوبکر و فاروق عثمان علی
مصابیح امت مآب ھمہ مفاتیح جنّت جناب ھمہ
ھمہ تاجداران ملک یقین ھمہ پاسدارانِ دنیا و دین
ھمہ مہتر وبہتر و شاہ دہر ھمہ سرور و رہبر دین زمہر
ازین جیش در عیش امت ھمہ کہ ازکیش شان یافت رفعت ھمہ
ھمہ ہادی راہِ عین الیقین
سلام علیٰ کلھم اجمعین

(شرافت کے سروار، مستحکم آیات الٰہی، رفعت و بلندی کے نگینے، روشن آفتاب! یہ سب برگزیدہ ہیں، متقی ہیں اور رہنما ہیں۔ یہ سب پیشوا ہیں، سرور ہیں اور ہدایت یاب۔ یہ امت کے پشت پناہ ہیں، دین کے بشارت دینے والے ملت کے امیر اور دین کے مشیر ہیں۔ قیامت کے زمانے تک ان کے سبب سب سعادتمند ہیں، ہدایت یافتہ ہیں، لائق ستائش ہیں اور بزرگوار! حضرت سلطانِ دین ﷺ کے ان آل واصحابؓ پر میں پورے یقین کے ساتھ اپنی آنکھیں نچھاور کروں۔ خاص کران چار روشن آفتابوں پر یعنی ابوبکرؓ و فاروقؓ اور عثمانؓ و علیؓ پر جو سارے امت کے چراغ اور جنت کی کنجیاں ہیں۔ یہ سارے ملک یقین کے تاجدار اور دین و دنیا کے پاسدار ہیں۔ یہ سب برتر ہیں، بہترین اور شاہان دہر ہیں۔ یہ سب سرور ہیں، رہبر دین ہیں۔ اس گروہ پاک کی برکت سے امت ساری کی ساری رحمت و

آسودگی میں ہے کیونکہ ان ہی کے اطوار سے ہم سب کو بزرگی حاصل ہوئی۔ یہ سب راہ عین الیقین کے ہادی ہیں۔ ان سب پر مجموعاً سلام ہو!)

## اپنے مرشد کے اقتدار کی بلندی اور منقبت کے اظہار میں

صدق ویقین کے تخت کا شہریار، کشور دین ودنیا کا تاجدار، ابنائے حقیقت کا آقا، اولیای شرعیت کا پیشوا، راہ وصال کے شب رووٴں کا رہنما، فضل وکمال کے سرداروں کا سردار، مشاغل طریقت کی مشکلوں کا عقدہ کشا، اعمال واسرار کی مملکتوں کا بادشاہ، خداند بیچون کے خطاب کا مبشر اَلااِنَّ اَوْلیاء الله لا خوف علیهم ولا هم یحزنون (۱۱)۔

ولایت مآب و معلّیٰ جناب
ملقّب بالقاب شیخ شہاب (۱۲)

علم سہروردی است چون نام او
بہ عالم بسیط است انعام او

زفیضش شدہ بہرہ ور خاص و عام
کہ کہف امان است و فخر انام

سبیل نجات و دلیل ہدیٰ
کفیل عصاۃ و خلیل خدا

چراغ فلاح و سراغِ رجا
مراغ صلاح و ایاغ عطا

اساس شرعیت ازو استوار
رصاص طریقت ازو زرّ نگار

چراغ حقیقت ازو روشن است
مراغِ ہدایت ازو گلشن است

معارف ازو نشر اندر جہان
عوارف بود لمعہ ای نور آن (۱۳)

بسی غوث واقطاب چون ماہتاب
منوّر شد از تابِ آن آفتاب

بسی اولیاء کف بدامان او
شدہ مست از جام عرفانِ او

ازو شیخ حمزہؒ شدہ مقتدا (۱۴) | بہ کشمیر از رایت اہتدا
درین ملک مملوک شد او تمام | اقاصی ادانی خواص و عوام
شدہ رہبر و سرور عارفان | زدہ کوسِ سلطانی اندر جہان
ازو فیض باطن بہ اہل سداد | رسد دم بہ دم تا بہ یوم التناد
نگارم اگر جود و الطاف او | نگنجد بصد دفتر اوصاف او
ازو نام کشمیر والا شدہ | ازو کوہِ ماران مطلّی شدہ
ازو جدِ من (۱۵) نور اسلام یافت | ازو جان من در جہان کام یافت
بدربارِ از سگی کمترم | ولی از نگاہش غضنفر فرم

باین جیشِ پُرعیش در روز حشر
الٰہی حسنؔ رابکن بعث و نشر

(عالی جناب، ولایت پناہ جو شیخ شہابؔ کے القاب ہیں اپنے اسم مبارک کی طرح سہروردی سے مشہور ہیں۔ آپ کا انعام سارے جہاں میں پھیلا ہوا ہے۔ ہر خاص و عام آپ کے فیض سے بہرہ ور ہے۔ اسلئے آپ امن و سلامتی کی پناہ گاہ اور خلق اللہ میں قابل افتخار ہیں۔ آپ نجات کی راہ ہیں اور ہدایت کی دلیل۔ آپ گنہگاروں کے کفیل ہیں اور اللہ کے دوست! آپ رستگاری کے چراغ اور امید کی علامت ہیں۔ آپ خیر و بہبودی کے شاداب میدان اور عطا بخشش کے ساغر ہیں۔ شریعت کی بنیاد آپ سے مستحکم اور طریقت کی قلعی آپ سے زرّ نگا ہے۔ چراغِ حقیقت آپ سے روشن اور جولان گاہِ ہدایت آپ سے گلشن ہے۔ دنیا میں معارف آپ سے شایع ہے جس کے انور میں عوارف بس ایک چمک ہے۔ اس آفتاب کی روشنی سے کتنے ہی ماہتاب جیسے غوچ و اقطاب منور ہوئے۔ آپ کے دامن کو تھام کر کتنے ہی

اولیاء آپ کے جام عرفان سے مست ہوئے۔ ان میں ایک حضرت شیخ حمزہؒ پیشوا ہوئے جنہوں نے کشمیر میں ہدایت و رہنمائی کا علم گاڑ دیا۔ اس ملک میں سارے آپ کے غلام بن گئے خواہ وہ دور کے تھے یا نزدیک کے، خاص تھے یا عام! آپ عارفوں کے سردار اور رہبر ہوئے اور دنیا میں سلطانی کا ڈنکا بجایا۔ راہ راست کے پیرووٴں کو آپ کا باطنی فیض روزِ قیامت تک لمحہ بہ لمحہ پہنچتا رہے گا۔ اگر میں آپ کی سخاوت اور لطف و کرم کے بارے میں لکھنا شروع کروں تو آپ کے ان اوصاف کو سمانے کے لئے سینکڑوں دفتر بھی کافی نہیں ہونگے۔ آپ ہی کی برکت سے کشمیر کا نام بلند ہوا اور آپ ہی سے کوہ ماران سونا بن گیا۔ آپ ہی کی برکت سے میرے جدّ نے نور اسلام پایا اور آپ ہی کے برکت سے اس دنیا میں میری جان نے مراد پائی۔ آپ کے دربار میں تو میں ایک کتے سے بھی پست درجے کا ہوں لیکن آپ کی نگاہ کرم کی برکت سے میں شیر کی سی نشان رکھتا ہوں۔ اسی صالح جماعت کے ساتھ قیامت کے دن، اے میرے پروردگار! مجھے اٹھا لینا)

اس تمہید کے بعد یہ بات پوشیدہ نہ رہے کہ یہ خطا کار بھلایا گیا غمزدہ مسکین جس کے چہرے بُشرے سے کم فہمی اور ناپختگی عیاں ہے یعنی میں حسنؔ ابن عبدالرسول شیوا جو اصلاً شہر سرینگر کے محلّہ زونی مر کا رہنے والا ہوں، ارباب دانش و عمل اور اصحاب علم و فضل کی خدمت میں عرض پرداز اور ملتمس ہوں کہ قلت تجربہ اور انشاء و عبارت پردازی کی عدم مہارت کے سبب مجھ جیسے ضعیف و ناتوان میں نہ اس عظیم کام کو انجام دینے کی خواہش تھی اور نہ ہی میں اہلِ ملامت کی سرزنشوں کو برداشت کرنے کا اہل تھا۔ لیکن بعض نامی بزرگواروں اور معزز دوستوں کی سخت تاکید و اصرار پر، جن کی حکم عدولی کرنا بے معنی تھا، اس رسالہ کی تحقیق اور لکھنے کا کام عمل ترتیب کے ساتھ وجود میں آ ہی گیا۔ اس دلہن کو لباس شائستہ سے

آراستہ کرنے اور اس منشور محقق کے عنوان کی ابتدا کرنے کے وقت اگلوں کے حالات کے استدلال و تحقیق اور قدیم واقعات کو کشف کرنے اور اس نامہ نگارین کے مضامین کی توثیق کی خاطر متقدمین کی تواریخ کا مطالعہ بے حد لازم اور واجب تھا۔ کافی کوششوں کے بعد قدیم وجدید تواریخ میں سے تیس کتابیں، جو اس پھولوں کی سرزمین کے حالات و واقعات سے مربوط تھیں دستیاب ہوئیں اور یہی کتابیں اسے ترتیب و تالیف دینے کا باعث اور اس کام کو مکمل کرنے کا موجب بن گئیں:

| | | |
|---|---|---|
| تاریخ وقایع کشمیر | ........ | ملّا احمد (۱۶) |
| واقعات کشمیر | ........ | خواجہ اعظم (۱۷) |
| بہارستان شاہی (۱۸) | ........ | مشہور بہ رازہ ترنگ |
| تاریخ (کشمیر) | ...... | حیدر ملک چاڈورہ (۱۹) |
| نظام الوقایع | ...... | مولوی محمد نظام الدین |
| تاریخ (کشمیر) | ...... | مولی ہدایت اللہ متو |
| تاریخ شاہنامہ (منظوم) | ...... | محمد (۲۰) توفیق وشایق وسامی |
| تحقیقات امیری | ...... | امیر الدّین پکھلیوال |
| لُبّ التواریخ (۲۱) | ...... | مولوی بہاء الدین |
| باغِ سلیمان (منظوم) (۲۲) | ...... | میر سعد اللہ |
| مختصر التواریخ | ...... | ملا عبد النبی |
| تاریخ ہادی | ...... | محمد حیات |

| | | |
|---|---|---|
| مثنوی در تعریف کشمیر | ...... | سلیم |
| مثنوی در تعریف کشمیر | ...... | کلیم |
| مثنوی در تعریف کشمیر | ...... | میر الٰہی |
| مثنوی در تعریف کشمیر | ...... | خصالی |
| مثنوی در تعریف کشمیر | ...... | احسن |
| گلزار کشمیر (۲۳) | ...... | دیوان کرپا رام |
| گلاب نامہ | ...... | دیوان کرپا رام (۲۴) |
| منتخب التواریخ (۲۵) | ...... | نارائن کول عاجز |
| مجموعُ التواریخ | ...... | بیربل کاچرو (۲۶) |
| تاریخ (انگریزی) | ...... | مسٹر لارنس صاحب (۲۷) |
| ناردرن باریر آف انڈیا | ...... | مسٹر دریو صاحب (۲۸) |
| جغرافیہ عالم | ...... | مسٹر ھنڈرسن صاحب |
| تاریخ فرشتہ (۲۹) | | |
| ناسخ التواریخ | | |
| تاریخ رشیدی | | |
| واقعات دُرّانی | | |
| قصص الھند | | |
| واقعات ھند | | |
| گلدستہ کشمیر (۳۰) | | |

جام جہان نما

رنجیت نامہ

خرد افروز

مفتاح الارض

وغیرہ کا ایک دوسرے کے ساتھ مقابلہ و تطبیق کر کے حالات و واقعات کی تصحیح و تصدیق میں حتی المقدور حد تک کوشش عمل میں لا کر اور غیر مصدقہ اور قابل اختلاف قصوں اور حکایتوں کو نظر انداز کر کے اسے ایک مقدمہ اور چار حصوں میں ترتیب دیا گیا۔

مقدّمہ بعض آسمانی حالات اور زمین کے پیکر کی بعض علامات و آثار کے کشف کے بیان میں ہے۔

حصہ دوّم کامران راجاؤں اور مشہور سلاطین کے ذکر سے متعلق ہے۔

حصہ سوم اولیای بزرگوار اور تقویٰ شعار فضلا کے ذکر سے تعلق رکھتا ہے۔

حصہ چہارم بلاغت نشان شعراء کے حالات کے بارے میں ہے۔

البتہ اس رسالہ کی نگارش میں چند چیزوں کو ملحوظ نظر رکھا گیا ہے:

اول: ابنای وقت کو خاطر میں رکھتے ہوئے دقیق عبارتوں اور بوجھل الفاظ کے استعمال سے پرہیز کر کے سادہ اور مصفا عبارت میں ایک عام فہم نمونہ، جو خلل انداز اختصار کے عیب اور ملال انگیز طوالت کے قصور سے خالی و عاری ہے، ترتیب دیا گیا ہے۔

دوم: بعض وہ نکات جو اگلے وقتوں کے راجاؤں کے ذخر میں مبالغہ و اغراق سے پُر تھے، اگرچہ اہل تنقید کے نزدیک ان کا ذکر لائق ایرادو قابل اعتراض ہے لیکن عجائب پسند دوستوں کے ذائقہ خاطر کو ملحوظ رکھتے ہوئے ان کو نظر انداز کرنا میں نے مناسب نہیں جانا۔

اس لئے ان میں سے بعض نکات کو درج کر دیا گیا ہے اور اس طرح کی مبالغہ نگاری کو علامت قف سے آگاہی کے طور پر استعمال کیا گیا ہے تا کہ مطالعہ کرنے والے حضرات مبالغہ واغراق سے مطلع ہوں۔

سوم: یہ ترتیب دیا گیا مجموعہ جو تاریخ حسن کے نام سے موسوم ہے سنہ ایک ہزار تین سو ایک (۱۳۰۱ء) میں خاطر امکان سے ظہور پذیر ہوا اور ترتیب پانے کے وقت مختلف سن و سال جو زمانے میں مشہور ہیں جمل صغیر کے حساب سے خزانہ خیال سے یوں ظاہر ہوئے:

| | | |
|---|---|---|
| سنہ ہجری | ....ملک کی تاریخ | (۱۳۰۱) |
| سنہ عیسوی | ....تواریخ ملُوکِ کشمیر | (۱۸۸۴) |
| سنہ بکرمی | ....تاریخ سلاطین کشمیر | (۱۹۴۱) |
| سنہ کلجوگ | ....حکام کشمیر کی نظامت کی نادر تاریخ | (۴۹۸۰) |

چہارم: کشمیر کے اکثر مورخین نے اپنی برزگ فروشی و بزرگواری جتانے کی خواہش اور خود ستائی کے شوق میں فخر وتعصب سے کام لیتے ہوئے اصلی حقیقت سے انحراف کیا ہے۔لیکن میں نے ذاتی عجز وانکسار کے پیش نظر تعصب اور فخر فروشی اور جانب داری کو اپنا شیوہ نہ جانتے ہوئے ہر ایک کے مرتبہ کی رعایت وحفاظت کی ہے اور کسی کے دل کو مجروح نہیں کیا ہے۔

پنجم: کلہن پنڈت کی رازہ ترنگنی میں، جو سنسکرت زبان میں لکھی گئی کشمیر کی تواریخ میں اصل بنیاد کی مشہور تاریخ ہے، جاہلوں کی تغیر وکتابت کی وجہ سے اصلاح اور الفاظ کی تبدیلی ہو چکی تھی۔ میں نے اپنے ترجمے کا اصل نسخہ کے ساتھ مقابلہ کر کے تحریف الفاظ اور

غلطیوں کو درست کیا اور طوالت کے خوف سے غیر مفید مضامین کو خذف کر دیا۔

ششم: کلہن پنڈت نے جن غیر وثوق واقعات کو بعض راجاؤں کے ذکر کے ضمن میں چھوڑ دیا تھا میں نے رتن پوران کے ترجمہ کے بموجب ان کا اس رسالہ میں ذکر کر دیا ہے۔

ہفتم: مشہور سن وسال کی مطابقت کے بارے میں اگلے مورخوں میں سے کسی نے کوئی ذکر نہیں کیا تھا۔ مجھ حقیر نادان نے کمال محنت سے سنہ ہجری وعیسوی وبکرمی وغیرہ کی تطبیق کرتے ہوئے اس رسالہ میں ذکر کر دیا ہے۔ وَاللّٰہ الموفق وَالمُعِین۔

# یادداشتیں

(۱) قرآن کریم سورہ آل عمران پارہ ۳۔

(۲) سورہ مومن پارہ ۲۴۔

(۳) سورہ تغابن پارہ ۲۸۔

(۴) چار پستان ارکان سے کنایہ ہے چار عناصر کی طرف یعنی پانی، آگ، مٹی اور ہوا۔

(۵) جمادات ونباتات وحیوانات۔

(۶) قرآن کریم سور بقرہ پارہ ۱۔

(۷) سورہ بنی اسرائیل پارہ ۱۵۔

(۸) قرآن کریم پارہ ۱۷/سورہ ابنیاء۔

(۹) یلیواج اور تنگری ترکی زبان میں پیغمبر اور خدا۔

(۱۰) قرآن کریم پارہ ۲۷/سورہ محمد۔

(۱۱) قرآن مجید سورہ یونس پارہ ۱۱/۔

(۱۲) مراد ہے شیخ شہاب الدین سہروردیؒ (وفات ۱۱۸۹ء) سہروردی سلسلے کے بنیاد گذرا۔ ڈاکٹر براؤن کے بقول شیخ موصوف کے بارے میں یہ روایت کہ آپ فلسفہ کی طرف میلان رکھنے کی وجہ سے صلاح الدین ایوبی کے حکم سے قتل کئے گئے غلط ہے۔ دراصل ایک دوسرا شخص جو شہاب الدین سہروردی کا ہم نام تھا، سلطان مذکور کے حکم سے الحادوزندقہ کے سبب سے قتل کیا گیا۔ عوارف المعاروف کتاب شیخ موصوف سے منسوب ہے۔

(۱۳) اس شعر میں معارف وعوارف کے الفاظ لاکر مصنف نے ابہام وکنایہ سے شہاب الدین سہروردی کی کتاب عوارف المعارف کی طرف اشارہ کیا ہے۔

(۱۴) کشمیر کے صوفیای کرام اور بزرگان دین میں سے ایک پیشوا ہیں۔ خواجہ محمد اعظم دیدہ مری صاحب واقعات کشمیر کے بقول ۹۰۰ھ میں عدم سے وجود میں آئے۔ خاص دہر سے تاریخ ولادت نکلتی ہے۔ ۹۷۴ھ میں ۲۴/ صفر کو واصل بحق ہوئے۔ آپ کے ایک مرید خاص شیخ بابا داؤد خاکی نے مندرجہ ذیل ابیات میں آپ کے وصال کا ذکر

کیا ہے۔

شیخ حمزہؒ مرشد والا گہر    فوت شد در بست وچارم از صفر
رفت اکمل یافت فضل کردگار    عاقبت در نہصد ہفتاد وچار

(شیخ حمزہؒ مرشد بلند قدر صفر کی چوبیس تاریخ کو فوت ہوئے۔ کامل بن کر چلے گئے اور فضل رب پایا آخر کار نوسو چہتر کے سال میں)۔

(۱۵) مطلب ہے شیخ غازی الدین کول جس نے مخدوم حمزہؒ کی توجہ سے دین اسلام قبول کیا۔ کفر کے زمانے میں اس کا نام گنیش دتاتریہ کول تھا۔

(۱۶) موجودہ ایام میں یہ کتاب نادارت میں سے ہے۔ ممکن ہے مصنف کے عہد میں وقائع کشمیر کا نسخہ موجود رہا ہو اور بعد میں گویا وقت نے اسے ناپید کر دیا ہو۔

(۱۷) خواجہ اعظم سال ۱۱۷۹ھ میں فوت ہوئے۔ دہلی کالج کے استاد منشی اشرف علی نے ۱۸۴۶ء میں واقعات کشمیر کا اُردو ترجمہ تاریخ اعظمی کے نام سے شایع کیا۔ ۱۳۰۳ھ میں پہلی بار لاہور میں اس کا فارسی متن طبع ہوا۔ غلام محمد نور محمد ناشران کتب سرینگر کشمیر نے دوسری بار اس کا متن سلسلہ مطبوعات کے نمبر ۱۸۰۵/ کے تحت سنگی چھاپ میں شایع کیا۔ اس کتاب کے قلمی نسخے رضا کتابخانہ رامپور میں موجود ہیں۔ اوران میں سے ایک ۱۸۱۴ء اور دوسرا ۱۸۴۷ء میں نقل ہوئے ہیں۔ اس کتاب کا ایک قلمی نسخہ عبدالسبحان وقف کتابخانہ میں اور دوسرا یونیورسٹی علی گڈھ کے لٹن کتاب خانہ میں موجود ہے (فہرست مخطوطات قلمی نمبر ۲/۷)۔

(۱۸) نادارت میں سے ہے۔ اس کتاب کے مصنف نے کشمیر کی تاریخ قدیم زمانے سے ۱۰۲۳ھ تک لکھی ہے۔ ۹۸۶ھ سے کشمیر کے واقعات کو تفصیل سے بیان کیا ہے (فہرست مخطوطات برٹش میوزیم نمبر ۸۲۷/اور ۲۹۷۔B۔ نیز فہرست مخطوطات کتابخانہ آفس لندن نمبر ۵۰۷/۔

(۱۹) صاحب اقبالنامہ جہانگیری کے بقول ملک حیدر چاڈورہ ۲۴/سال تک یوسف شاہ چک (کشمیر کا آخری بادشاہ) کی ملازمت میں تھا۔ یوسف شاہ کی بنگال میں جلاوطنی میں اس کی جاگیر میں اپنے ولی نعمت اور آقا کے ساتھ رہا۔ ملک حیدر مذکور شیر افگن کے قتل کے واقعہ میں چشم دید گواہ ہے۔ اس کتاب کی ایک نقل (حصہ اول) حکومت جموں وکشمیر کے تحقیقات علمیہ کے کتابخانہ میں نمبر ۳۴ کے تحت موجود ہے۔ یہ کتاب دو حصوں میں منقسم ہے۔ پہلے حصے میں قدیم زمانے سے جہانگیر کے عہد تک کی تاریخ بیان ہوئی ہے اور دوسرے حصے میں ایران اور توران کے ہمعصر خاندانوں کا ذکر ہے۔ مصنف نے اختصار کے ساتھ کلہن پنڈت کی تاریخ راجہ ترنگنی سے ہندوؤں کے حالات نقل کئے ہیں (فہرست مخطوطات کتابخانہ انڈیا آفس نمبر ۲۸۴۶/اور نمبر ۵۱۰/ کتابخانہ برٹش میوزیم نمبر ۲۹۸۔B۔ فہرست

کتابخانہ پیرس میوزیم مخطوطات نمبر ۶۲۵ر اور بقیہ فہرست مرتبہ ڈاکٹر براؤن کیمبرج یونیوسٹی اور آکسفورڈ یونیورسٹی نمبر ۳۱۶ اور ۳۱۷ر اور میونخ کتابخانہ نمبر ۳۶۶۔

(۲۰) دیکھئے ببلیوگرافی آف پرشن مینوسکرپٹس تصنیف پروفیسر سٹوری چھاپ لیوزک اینڈ کمپنی لندن ۸۷۹ر کشمیر کے حالات اور کشمیر کی ملک گیری کے واقعات پر۔ کتاب کا نام احوال کشمیر درج ہے۔ فان ہیوجل نے اس کتاب کو رفیع الدین محمد کی تصنیف کہا ہے۔

(۲۱) اس کی ایک نقل برٹش میوزیم کتابخانہ میں قلمی مخطوطات کی فہرست میں زیر نمبر ۹۵۷۔A۔ موجود ہے۔

(۲۲) فہرست کتاب تحقیقات علمیہ حکومت جموں وکشمیر نمبر ۴۷ر اور فہرست کتابخانہ آصفیہ حیدر آباد دکن نمبر ۲۰۵۔

(۲۳) دیوان کرپارام کی تصنیف (وفات ۱۸۷۶ء) چھاپ کوہ نور لاہور ۱۲۸۷ھ۔

(۲۴) دیوان کرپارام نے مہاراجہ رنبیر سنگھ (وفات ۱۸۸۴ء) کی فرمائش پر اسے اکبر نامہ کی طرز پر لکھا۔ تواریخی واقعات کے لحاظ سے معتبر نہیں جانی جاتی ہے۔ عام روایتوں اور قصوں سے پر ہے اور مصنف نے منبع کا بھی ذکر نہیں کیا ہے۔ یہ کتاب ۱۹۳۲ء میں سری رنبیر پرکاش چھاپ خانے میں چھپی ہے اور حکومت جموں وکشمیر کے تحقیقات علمیہ کتابخانے میں نمبر ۱۴۲۱ر کے تحت موجود ہے۔ مذکورہ دیوان کرپارام آنجہانی مہاراجہ گلاب سنگھ کے وزیر اعظم دیوان جوالا سہای کے خاندان سے تھا اور پنجاب کے ایمن آباد قصبے کا رہنے والا تھا۔ باپ کی موت کے بعد رنبیر سنگھ کے زمانے میں ریاست کا وزیر اعظم تھا۔ فارسی انشا اور مروجہ علوم میں کامل مہارت رکھتا تھا۔

(۲۵) کشمیر کے دیوان اور نائب عارف خان کی فرمائش پر شاہ عالم کے جلوس سال ۴ھ میں لکھی گئی۔ اسکی ایک نقل پیرس میوزیم میں نمبر ۶۲۸ر کے تحت بقیہ حالات کے ساتھ ۱۸۴۷ء تک موجود ہے اور ایک نقل نمبر A کے تحت مسلم یونیورسٹی علی گڈھ کے لٹن کتابخانہ میں عبدالسبحان وقف کتابخانے میں موجود ہے۔

(۲۶) کتاب خانہ تحقیقات علمی حکومت جموں وکشمیر نمبر ۱۴۱۔

(۲۷) مراد ہے ویلی آف کشمیر۔ یہ کتاب ۱۸۹۵ء میں چھپ چکی ہے۔

(۲۸) فریڈک ڈریو کی کتاب نادران بیر بر آف انڈیا۔ مطبوعہ ۱۸۷۷ء۔ باہتمام ایدورڈ سٹنیفورڈ ۵۵۔ چیرنگ کراس، ایس ڈبلیو لندن۔

(۲۹) محمد قاسم ہندوشاہ فرشتہ کی تصنیف تاریخ فرشتہ۔

(۳۰) ہرگوپال کول خستہ کی تصنیف۔ یہ کتاب اُردو زبان میں ہے اور ۱۸۸۳ء میں سنگی چھاپ ہوئی ہے۔ فی الحال نادرات میں سے ہے۔

# مقدمہ

## بعض آسمانی حالات اور زمین کے پیکر کی بعض علامتوں اور آثار، نیز افلاک کی تفصیل کے بیان میں

جان لو کہ یونان کے متقدمین علماء نے افلاک کے نو طبقے ثابت کیے ہیں جن میں آسمان کے ہر ایک طبقے کے ساتھ کئی اور طبقے مربوط ہیں اور سبھی آسمان ہمیشہ گردش میں رہتے ہیں اور عناصر کے کرّوں کی طرح الگ ہوئے بغیر ایک دوسرے ساتھ ملے ہوئے ہیں۔ جس طرح سے ہوا کا کرّہ زمین میں لپٹا ہوا ہے اور اس کے ہر طرف پانی ہی پانی ہے، اور آگ کا کرّہ ہوا کے کرّہ پر حاوی ہے، اسی طرح آسمان اوّل آگ کے کرّہ سے لپٹا ہوا ہے اور فلک دوّم آسمان کو گھیرے ہوئے ہے الیٰ آخر۔ تمام افلاک کروی شکل میں گولائی مانند ہیں انڈے کی طرح اور زمین آسمان کے درمیان انڈے کی زردی کی مانند ہے۔ آٹھ آسمان مغرب سے مشرق کی طرف گھومتے رہتے ہیں اور نواں آسمان دوسرے افلاک کے برعکس مشرق سے مغرب کی طرف گھومتا ہے اور اپنے نیچے کے آسمانوں کو آگ کے کرّہ کے ساتھ جبراً اپنے ساتھ گھماتا ہے۔

تمام اسلامی علماء آسمان کے سات طبقے مخصوص جانتے ہیں۔ آٹھویں آسمان کو وہ کرسی اور نویں کو عرش کا نام دیتے ہیں۔ لیکن افلاک کی کروی حیثیت اور دو آسمانوں کے

درمیان علیحدگی کے نہ ہونے کو وہ تسلیم نہیں کرتے۔ البتہ آسمان کی گردش کے قائل ہیں۔ حکماء ہر آسمان کے دو خیالی قطبوں کے قائل ہیں اور قطب وہ فرضی نقطہ ہے جو اس وقت اپنی جگہ پر قائم رہتا ہے جب کروی جسم گردش کرتا ہے۔ اس لئے ہر آسمان کے لئے دو متقابل غیر متحرک نقطے لازم قرار دئے گئے ہیں۔ لہٰذا ہر آسمان میں شمال کی طرف ایک قطب اور جنوب کی طرف ایک قطب لازم آتا ہے۔

## سات آسمانوں کے تعین کے خیال کے بارے میں

جان لو کہ سات آسمان چند دیگر طبقوں پر مشتمل ہیں اور یہ سب تین قسموں میں بٹ جاتے ہیں۔

پہلی قسم :...... فلک حاوی یعنی یہ احاطہ کرنے والا ہے اور اس کا مرکز کرّہ زمین ہے۔

دوسری قسم :...... عالم کو احاطہ کئے ہوئے ہے لیکن زمین اس کا مرکز نہیں ہے اور اسے مرکز سے باہر کا فلک نام دیا گیا ہے۔

تیسری قسم :......اسے فلک التّدویر کا نام دیا گیا ہے اور یہ عالم کو احاطہ نہیں کرتا بلکہ مخصوص درمیانی جگہ پر فلک میں واقع ہے۔ غرض ہر طبقہ کو فلک کہتے ہیں مجازی طور پر اور یہ سب ہی فلک کلی کے نام سے موسوم ہیں۔ آٹھواں اور نوان (ا) فلک ان سے جداگانہ ہیں۔

جان لو کہ فلک کلّی سے مربوط جو دوسرے طبقے منسوب ہیں ان میں سے ہر ایک کی گردش مختلف ہے اور سب آسمانوں کی گردش چکی کی مانند ہمارے سروں کے اُوپر ہوتی ہے یا رہٹ کی طرح گھومتے ہیں یا لٹکی ہوئی چیز کی طرح حرکت میں رہتے ہیں۔ چکی کی طرح کی

حرکت قطبوں کے عموداور رہٹ کی طرح کی حرکت خطِ استوااور لٹکی ہوئی چیز کی طرح حرکت ان دوسمتوں کے درمیان کی جگہ کے عمود کے تحت ہوتی ہے۔

جان لو کہ فلک التدّویر کی حرکت ہر فلک کی بہ نسبت مختلف ہوتی ہے۔کبھی فلک کلی کے مطابق حرکت کرتا ہے کبھی اس کے برعکس۔ان میں سے بعض تیزی سے گھومتے ہیں بعض آہستہ۔سب میں قمر کا فلک التدویر تیزی سے حرکت کرتا ہے دوسرے آسمانوں کے فلک التدویر کے مقابلے میں۔اس لئے قمر کو پیک فلک کہتے ہیں کیونکہ قمر (چاند) کا فلک تدویر چودہ دنوں میں ایک دور کو مکمل کرتا ہے۔

آسمان اوّل جسے آسمان دنیا اور فلک القمر کہتے ہیں ایک مہینے میں گردش پورا کرتا ہے۔دوّم فلک العطارد، جو تقریباً ایک سال میں گردش مکمل کرتا ہے۔سوم فلک الزّہرہ جو ایک سال میں چکر پورا کر لیتا ہے۔چوتھا فلک الشّمس ایک سال میں گردش مکمل کرتا ہے۔پانچواں فلک المریخ جو ایک سال اور دو ماہ میں دور مکمل کرتا ہے۔چھٹا فلک المشتری جو بارہ سال میں ایک گردش کو پورا کرتا ہے۔ساتواں فلک الزحل جو تیس سال میں گردش پوری کر لیتا ہے

اوپر ذکر ہوا کہ ہر اوپر کا فلک اپنے نیچے والے کا احاطہ کئے ہوئے ہے اور یہ جو ہر ایک کی گردش کی مدت کے تعین کا بیان ہوا یہ ان کی طبعی حرکت کی بنا پر ہے ورنہ فلک الافلاک کی گردش کے سبب تمام آسمانوں کی مخالف طرفوں کی حرکت مجبوراً ایک دن رات میں مکمل ہو جاتی ہے جیسا کہ بیان ہوگا۔

آسمان ہشتم:۔۔۔۔(آٹھواں آسمان) کی تشریح جسے فلک البروج اور فلک الثوابت اور اہل شریعت کے بقول کرسی کہتے ہیں، اسکی طبعی حرکت دوسرے آسمانوں کی طرح مغرب سے

مشرق کی طرف کہی جاتی ہے اور چھتیس ہزار سال میں گردش پورا کرتا ہے۔ اس میں سبع سیّارہ (سات سیّاروں) کے بغیر باقی ستارے ثابت ہیں۔

اب جان لو کہ حکمانے اس فلک کے بارہ مساوی حصے کئے ہیں اور ان کو بارہ برج کہتے ہیں۔ تمام برجوں کی لمبائی شمال سے جنوب کی طرف ہوتی ہے اور چوڑائی مشرق سے مغرب کی طرف یعنی قطب شمالی سے قطب جنوبی تک۔ برج کی سیدھ خربوزہ کے قاش کی مانند ہوتی ہے۔ ہر برج تیس حصوں میں منقسم ہے اور ہر حصہ کو درجہ کہا جاتا ہے۔ فلک البروج تین سو ساٹھ درجوں کا ہے اور ہر برج میں چند ستاروں کے جمع ہو جانے سے ایک شکل واقع ہو جاتی ہے اور اسی شکل کی مناسبت سے اس برج کا نام پڑ گیا جیسے: حمل، ثور، سرطان، اسد، سنبلہ، میزان، عقرب، قوس، جدی، دلو، حوت۔ ہندی زبان میں: میگھ، برکھ، متھن، کرک، سنگھ، کنیان، تلا، درچک، دھن، مکر، قونب، مین۔

یہ جو کہا جاتا ہے کہ فلاں ستارہ فلاں برج میں پہنچا اس کے معنی یہ ہیں کہ مثال کے طور پر سورج برجِ حمل میں آجاتا ہے اس وقت سورج سے ایک خیالی سیدھا خط کھینچ کے آسمانوں کو کاٹتے ہوئے فلک البروج میں پہنچا دیا جاتا ہے جو برج حمل کے برابر آجاتا ہے۔ تب کہتے ہیں کہ سورج حمل میں ہے ورنہ ظاہر ہے سیارے نچلے آسمانوں میں ہیں۔ ان کا آٹھویں فلک میں واقع ہونا ناممکن ہے۔ اور اس فلک کے بھی دو قطب ہیں اور اس مقام پر اتفاقاً دو ستارے بھی واقع ہیں شمال اور جنوب میں۔ چنانچہ قطب شمالی نظر آتا ہے لیکن اہل شمال پر قطب جنوبی مخفی ہے۔ ربع مسکون شمال کے علاقہ میں واقع ہے اور جنوب کا علاقہ سارے کا سارا پانی میں ہے۔ قطبوں کے درمیان ایک خط کو تصور کیا جانا چاہئے جو مساوی طور پر مشرق سے مغرب میں گذرتا ہے اور اس دائرہ کو منطقۃ البروج کہتے ہیں۔

آسمان نہم:...... (نویں آسمان) کو فلک الافلاک اور فلک اطلس اور فلک الاعظم کہتے ہیں اور اس کی حرکت دوسرے آسمانوں کے برعکس ہے یعنی مشرق سے مغرب کی طرف۔ انتہائی تیزی کے ساتھ ایک دن رات میں گردش پوری کرتا ہے اور تمام افلاک کو جبراً اپنے ساتھ گھماتا ہے۔ تو دوسرے آسمانوں کی جبری گردش بھی اس کی پیروی میں ایک دن رات میں مکمل ہو جاتی ہے اگر چہ ان کا طبعی دور اس گردش کے برخلاف ہے جیسا کہ بیان ہوا۔ اس فلک پر کوئی ستارہ نہیں ہے اس لئے اسے اطلس کہتے ہیں۔

اب جان لینا چاہئے کہ حقیقی احاطہ کرنے والا یہی فلک ہے اور زمین مرکز کی مانند اس کے حقیقی وسط میں ہے۔ چونکہ ہر فلک کے لئے دو قطب ضروری مان لئے گئے ہیں یہاں بھی فرض کئے گئے ہیں ایک شمال کی طرف دوسرا اس کے مقابل میں جنوب کی طرف۔ قطبوں کے درمیان ایک خط تصور کیا جاتا ہے جو تمام فلکوں سے مشرق سے مغرب کی طرف گذر چکا ہوتا ہے اور اس خیالی خط کو دائرہ معدل النّہار (۲) کہتے ہیں اور منطقہ کا نام دیا جاتا ہے مثلاً مذکورہ کرّہ فلک کو دو پیالیاں یا دو برتن فرض کرتے ہیں شمال میں اور جنوب میں، اور ہر برتن کے حقیقی وسط میں ایک قطبی نقطہ ڈال دیا جاتا ہے اور ان مساوی مقدار والے برتنوں کے ملنے کی جگہ کو دائیرہ معدل النّہار خیال کرتے ہیں۔ حکما اپنے خیال میں اس فلک کو محدود کہتے ہیں اور ان کا کہنا ہے کہ اس سے پرے نہ خلا ہے اور نہ ملا۔

## زمین اور سیّارے کی کیفیت

جان لو کہ حکما کا ان کی وضع کے بارے میں آپس میں اختلاف ہے۔ بعض کہتے ہیں

نیم کرّہ کی شکل کا ہے اور پانی پر کھڑا ہے اور بعضوں کا کہنا ہے کہ ہوا پر قائم ہے اور سپر (ڈھال) کی شکل کا ہے۔ زمین ہمیشہ قائم ہے اور آسمان متحرک۔ لیکن اکثر قدما اور یورپ کے عام عالم لوگوں کا متفقہ خیال یہ ہے کہ کروی ہے اور انڈے کی زردی کی طرح ہوا کے وسط میں واقع ہے، ہمیشہ رہٹ کی حرکت کی طرح متحرک ہے۔ اپنی نسبت اجزای فلکی میں ہمیں جو تبدیلی نظر آتی ہے وہ زمین کی منتقلی کی وجہ سے ہے۔

یہ بات پوشیدہ نہ رہے کہ زمین تین طبقوں والی ہے۔ ایک وہ جو ہمارے پاس ہے اور یہ پانی اور ہوا سے مرکب ہے دوسرا وہ جو اسکے نیچے ہے اور وہ پانی سے مرکب ہے ہوا سے نہیں۔ تیسرا وہ جو مرکز کے قریب ہے اور وہ خالص ہے اور وسیع ہے اور پانی وہاں نہیں پہنچتا۔ جب کہ زمین دائرہ فلک میں ایک نقطہ کی طرح ہے اور چونکہ یہ آسمان کے بیچ میں واقع ہے اس لئے معدل النہار اور منطقۃ البروج کے روبرو ویسے ہی زمین کے وسط میں ایک خط کو فرض کیا جاتا ہے اور اس مفروضہ خط کو خط استواء (۳) کہتے ہیں برابری کی وجہ سے۔ کیونکہ یہاں پر دن اور رات ہمیشہ برابر ہوتے ہیں۔ خط استواء کی بنا پر زمین کو دو فرضی حصوں میں بانٹ دیا گیا ہے۔ شمالی اور جنوبی۔ اور یہ دونوں حصے دو برتنوں کی مانند ہیں جن کے کنارے (دونوں برتنوں کے) ایک دوسرے کے ساتھ ملے ہوئے ہیں اور ان کے ملنے کی جگہ یہی خط استواء ہے۔ اور دو برتنوں کے حقیقی وسط میں دو متقابل نقطے خیال کیئے گئے ہیں شمال اور جنوب میں اور ان دونوں نقطوں کو زمین کا قطب کہا جاتا ہے مجازی طور پر۔ اور کرۂ زمین میں سے تین چوتھائی پانی میں غرق ہے اور ایک چوتھائی نمایاں ہے جسے آباد چوتھائی (ربع مسکون) اور ہفت اقلیم کہتے ہیں اور اس کے علاوہ پہاڑ اور ویرانے بھی اسی میں شامل ہیں۔

طبعی تقاضا یہی ہے کہ زمین کے تمام اجزاء پر پانی کا احاطہ ہوتا اور ہوا اور یہ زمین کے درمیان حایل ہو جاتا لیکن چونکہ بعض زمینوں کا ظہور مرکبات کے آشکار ہونے کے لئے ضروری تھا اس لئے خالق دو جہاں نے ایسی تدبیر کی کہ پانی زمین کے بعض اجزاء سے ہی نکلے تا کہ زمین ایک طرف سے نمایاں رہے۔ اور تدبیر یہ تھی کہ کواکب کو اثر بخشا کہ وہ اپنی قوت سے بعض عناصر کو گرم کر دیتے ہیں جس کی وجہ سے عنصر کا بخار بن جاتا ہے اور دھواں بھی۔ اس لئے جب زمین کے بعض اجزاء گرم ہو جاتے ہیں اور اُوپر کو اٹھنے لگتے ہیں تو دھواں بن کر زمین کے اجزاء کو خالی کر دیتے ہیں کیونکہ زمین سیال نہیں کہ نقصان کی تلافی کر سکے یا کمی کو پورا کر سکے۔ اور چونکہ پانی مرکز کی تلاش میں رہتا ہے اس لئے فطری طور پر زمین کی اس خالی جگہ میں آجاتا ہے۔ پانی جب زمین کے رخنوں میں سما جاتا ہے تو زمین میں تبدیل ہو جاتا ہے اور جب پھر زمین کے اجزاء میں دھوئیں کی وجہ سے کشادگی پیدا ہو جاتی ہے تو وہاں پانی جگہ لے لیتا ہے اور زمین کی سطح نمایاں رہ جاتی ہے۔ اللہ تعالیٰ کی کاریگری ہے۔

## زمین کی روزانہ حرکت

متاخرین حکماء کے قیاس سے یہ بات ثابت ہے کہ آسمان ٹھہرا ہوا ہے اور زمین اپنے محور پر ہمیشہ گردش کرتی ہے اور انسانوں اور تمام حیوانات اور نباتات اور ممالک اور سمندروں وغیرہ اشیاء کو جبراً اپنے ساتھ گھماتی ہے اور چوبیس گھنٹوں کی مدت میں ایک گردش کو پورا کر لیتی ہے۔ اس گردش سے دن اور رات پیدا ہوتے ہیں۔ جب وہ حصہ جو

ہماری سکونت کی جگہ ہے سورج کے مقابل میں آجاتا ہے تو ہمارے لئے دن روشن ہو جاتا ہے اور جب وہ حصہ اپنی جگہ سے پھر جاتا ہے تو ہم پر رات آجاتی ہے۔ مثال کے طور پر ہم چراغ کے سامنے ایک سیب کو لٹکا دیں جو حصہ چراغ کے روبرو ہو گا روشن رہے گا اور اس کا پچھلا حصہ تاریک ہو گا۔ اسی طرح زمین کا وہ حصہ جو آفتاب کے مقابل ہو گا روشن رہیگا اور زمین کا وہ پچھلا حصہ جس پر آفتاب کا پرتو نہیں چمکتا تاریکی میں ہوگا۔ پس زمین کا وہ حصہ جو ہم سے مشرق میں واقع ہے اس حصہ کو سورج پہلے اپنی کرنوں سے روشن کرتا ہے اور ہمیں افق سے سورج چڑھتا دکھائی دیتا ہے۔ جب ہم آہستہ آہستہ سورج کے مقابل میں آجاتے ہیں اور سورج سر کے اُوپر یا آسمان کے درمیان (سمت الراس) کو آجاتا ہے، دوپہر ہو جاتی ہے۔ پھر زمین کے گھومنے کی وجہ سے وہ حصہ جس پر ہم ہیں مشرق کی طرف پلٹ جاتا ہے اور سورج مغرب کی طرف چلا جاتا ہے، تو معلوم ہو جاتا ہے کہ سورج مغرب میں ڈوب رہا ہے۔ دراصل سورج ڈوبتا نہیں بلکہ ہم زمین کی گردش کی وجہ سے مشرق کی طرف چلے جاتے ہیں اور سورج ہماری نظروں سے غائب ہو جاتا ہے جس کی وجہ سے اندھیرا چھا جاتا ہے۔ اس گردش کو روزانہ گردش کہتے ہیں۔

## زمین کی سالانہ حرکت

روزانہ گردش کے علاوہ زمین کی ایک اور سالانہ گردش ہے یعنی سورج کے اردگرد پورے ایک سال میں ایک گردش ختم کرتی ہے۔ اس حرکت سے موسموں کا تغیر و تبدل پیدا ہو جاتا ہے۔ اپنی گردش سے زمین سورج کے اردگرد ایک دائرہ بناتی ہے جسے مدارارضی کہتے

ہیں۔ دسمبر یعنی پوہ (۴) کے مہینے میں زمین سورج سے نو کروڑ اور پچاس میل دور ہوتی ہے اور جون یعنی ہاڑ کے مہینے (۵) میں اس جگہ سے جہاں پر کہ دسمبر کے مہینے میں ہوتی ہے اُنیس کروڑ میل دور ہو جاتی ہے۔ پس سال کے دنوں کی تعداد تیں سو پانسٹھ اور پانچ گھنٹے اور اڑتالیس منٹ اور اڑتالیس سکنڈ مقرر ہوئے۔ یورپی حکماء تین سال تک مذکورہ گھنٹوں کو حساب سے خارج کر دیتے ہیں اور چوتھے سال کو فروری کے مہینے میں ایک دن بڑھا دیتے ہیں۔

## موسموں کا تغیر و تبدل

زمین کا قطب شمالی ہمیشہ آسمان کے قطب شمالی کے مقابل میں ہوتا ہے۔ مدار ارضی کی سطح پر زمین کا محور ایک خاص طرز سے ذرا ٹیڑھا واقع ہوا ہے اور اسی وجہ سے موسموں میں تغیر و تبدل ہوتا رہتا ہے۔ کیونکہ محور زمین اور مدار ارضی کے انحراف کی وجہ سے جنوبی حصہ کے نصف دائرہ میں سے شمالی کرہ کے آدھے حصہ میں چھ ماہ تک جاڑے کی سردی بہت زیادہ ہوتی ہے اور شمالی حصہ کے نصف دائرہ میں سے جنوبی حصہ میں چھ ماہ تک گرما کی گرمی بڑھ جاتی ہے اور چھ ماہ تک دن بہ دن اس میں اضافہ ہوتا رہتا ہے۔ راتوں کو چھ ماہ میں قطب شمالی جو ہمارے قریب ہے جاڑے کے موسم میں سورج کے مقابل میں نہیں ہوتا جس کی وجہ سے سورج دوپہر کے وقت سمت الراس سے نیچے رہتا ہے اور اسکی کرنیں شمالی حصہ پر ٹیڑھی گرتی ہیں جس کی وجہ سے اس وقت شمالی حصہ پر سردی ہوتی ہے اور دن چھوٹے اور راتیں لمبی۔ اسکے برعکس جب قطب شمالی سورج کے مقابل میں آجاتا ہے ان دنوں میں سورج کی

دھوپ ہم پر عمودی یعنی برابر سیدھ میں پڑتی ہے۔اسی لئے ان ایام میں گرمی کا موسم ہوتا ہے۔زمین سورج کے گرد ایک پل میں۔۔۔میل (٦) فاصلہ طے کرتی ہے اور محوری گردش کے سبب لندن کی زمین ایک منٹ میں ۱۰۲۳/۴ میل چکر کاٹتی ہے۔جو زمین قطب شمالی کے نزدیک ہے وہ آہستہ گھومتی ہے اور خط استوا کی زمین تیزی کے ساتھ گردش کرتی ہے۔

## زمین کے دائرے کا محیط

ایک خیالی خط جو مشرق سے مغرب تک سیدھا جاتا ہے کھنچا گیا ہے اور اسے زمین کا قطر کہتے ہیں۔اس کا فاصلہ سات ہزار نو سو بارہ (میل) اور کرۂ زمین کا محیط چوبیس ہزار آٹھ سو چھپن میل ہے (٧)۔اگر ایک ریل گاڑی (٨) ایک گھنٹے میں پچیس میل فاصلہ طے کرتی ہے تو یہ چوبیس دنوں میں زمین کے گرد گردش پوری کرے گی۔

## سورج

جان لو کہ سورج قرض زمین سے بارہ لاکھ پچاس ہزار درجہ وسیع اور بڑا (٩) ہے اور تین لاکھ پچاس ہزار بار بھاری اور پچیس دنوں تک اپنے محور پر گردش پوری کر لیتا ہے اور نو کروڑ بیس لاکھ میل زمین سے دور نظر آتا ہے (١٠)۔موجودات سفلی اور اجرام علوی کو اس کے اثرات سے بہت سے فائدے حاصل ہیں۔خاص کر موالید ثلاثہ کے لئے اس کی حرارت کے اثرات ضروری ہیں۔سورج نے اپنی قوت کشش کے بموجب زمین کو گو پیا کے

پتھر کی طرح پکڑ رکھا ہے کیونکہ اگر کوئی فلاخن کے اندر پتھر رکھ کر اسے کمال طاقت کے ساتھ گھمائے تو یہ پتھر فلاخن سے ہرگز الگ نہیں ہوگا۔ اسی طرح زمین فلاخن کے پتھر کی طرح ہزار گنا تیزی کے ساتھ سورج کے گرد گھومتی ہے اور سورج سے جو کے دانے کے برابر بھی دُور نہیں ہوتی اور ایک ذرہ برابر بھی سورج کے قریب نہیں آتی۔ کیونکہ خالق حقیقی نے ہر ایک چیز کو اسکے مادّہ کے مقدار کے مطابق خاصیّت بخشی ہے۔ کہ ایک چیز دوسری چیز کو اسی خاصیت سے کشش کرتی ہے جیسے کاہ رُبا اور لوہا وغیرہ۔ اسی خاصیّت سے سورج اپنی کشش مادہ کے استعداد کے بموجب زمین کو کشش کرتا ہے اور زمین اپنے مادہ کی قوت سے سورج سے دُور رہنا چاہتا ہے۔ اسی لئے زمین کا سورج کے قریب جانے کا امکان نہیں اور مطلق طور پر دُور نہیں ہوسکتا۔ بلکہ کشش سے سورج کے گرد گھومتا ہے۔ جب چاند زمین اور سورج کے بیچ میں حائل ہو جاتا ہے تو سورج گرھن ہو جاتا ہے۔

## چاند

جان لو چاندہ کا قطر دو ہزار ایک سو چالیس میل خیال کیا گیا ہے اور زمین کے کرہ سے دو لاکھ سینتیس ہزار میل دُور ہے۔ کرہٗ ماہ خود بخود روشن نہیں بلکہ سورج کی کرنوں کے انعکاس سے چمکتا ہے۔ قمر چونکہ ہمیشہ زمین کے اردگرد گھومتا ہے اس لئے ہر روز چاند کا چہرہ دکھائی نہیں دیتا۔ چنانچہ ہلال ہونے کی حالت میں چاند زمین کے مقابل میں آ جاتا ہے تو اس کا روشن چہرہ ہم سے منحرف ہو جاتا ہے اور قمر ہونے کی حالت میں زمین کے پیچھے رہتا ہے تو اس کا روشن چہرہ ہمارے مقابل میں آ جاتا ہے۔ پہلے دو ہفتوں میں قمر زمین کے

مقابل سے پیچھے کو چلا جاتا ہے جس کی وجہ سے اسکی روشنی میں دن بہ دن اضافہ ہوتا ہے اور دوسرے دو ہفتوں میں کرۂ قمر زمین کے پیچھے سے آگے مقابل میں آجاتا ہے جس کی وجہ سے اسکا روشن چہرہ دن بہ دن بے نور ہوتا جاتا ہے۔

چاند کی گردش کی وجہ سے سمندر کا پانی جوش مارتا ہے جس سے مدوجزر (۱۱) واقع ہوتا ہے۔ نیز جب سورج اور چاند کے درمیان زمین آجاتی ہے تو چاند گرہن واقع ہوتا ہے۔

## عطارد

یہ سورج سے تین کروڑ پچاس لاکھ میل دُور (۱۲) ہے اور آدمی کو زیادہ دکھائی نہیں دیتا۔

## زہرہ

یہ سورج سے چھ کروڑ ساٹھ لاکھ میل دُور (۱۳) ہے اور کرۂ زمین کے قریب۔ اس لئے دوسرے ستاروں سے زیادہ روشن دکھائی دیتا ہے۔

## مریخ

یہ سورج سے تیرہ کروڑ نوے لاکھ میل دُور (۱۴) اور اس کا رنگ سرخ ہے۔ دوربین

سے اسکی سطح پر بہت سے داغ دکھائی دیتے ہیں۔ حکماء نے کالے داغوں کو زمین اور سفید داغوں کو برف قرار دیا ہے۔

## مشتری

یہ سورج سے سنتالیس کروڑ ساٹھ لاکھ میل دُور (۱۵) ہے اور کرۂ زمین کی گولائی سے ایک ہزار تین سو مرتبہ بڑا اور تین سو درجہ بھاری ہے۔ اس میں چار چاند ہیں اور اس کے گرد بہت سے دائیرے دکھائی دیتے ہیں۔

## زحل

یہ سورج سے ستاسی کروڑ بیس لاکھ میل دُور (۱۶) ہے اور اس کے گرد آٹھ چاند چمکتے اور اسکی سطح پر چار دائرے نظر آتے ہیں۔ جن میں تین دائرے روشن ہیں اور ایک دائرہ تاریک ہے۔

## دُم دار سیارہ

یہ سیارہ سورج سے چھہتر کروڑ میل دُور ہے اور اس میں چار چاند ہیں (۱۷)۔

## نیپٹون

یہ سورج سے دو ارب پچھتر کروڑ میل دُور ہے اور اس کے ساتھ دو چاند دکھائی دیتے

ہیں اور ۱۸۴۶ء میں ظاہر (۱۸) ہوا ہے۔

## سیاروں کے اجرام

جان لو کہ سیّارے بھی زمین ہی کی طرح سورج کے گرد گھومتے ہیں اور زمین ہی کی طرح ان کی گردش بھی ہمیشہ اپنے محور پر ہوتی ہے۔ اس میں شک نہیں کہ سیّاروں کی سطح پر زمین کی طرح موسم بھی ہونگے۔ شاید بیشتر سیاروں میں بادل اور بارش بھی ہوتی ہوگی اور سیاروں میں آبادی نہ ہونے کی کوئی معقول وجہ معلوم نہیں۔ سورج اور سیاروں کے حالات اس مثال سے اچھی طرح واضح ہونگے مثلاً ایک کرّہ کے وسیع میدان میں جس کا قطر دو فٹ ہو ہم ایک سورج کا ہونا مقرر کر دیتے ہیں اور اس سے اٹھائیس گز دُور فاصلہ پر رائی کا ایک دانہ عطارد کے طور پر رکھ دیں اور باون گز کے فاصلہ پر مونگ کا ایک دانہ زہرہ کے طور پر رکھ دیں اور بہتر گز کی دُوری پر مشنک (۱۹) کا ایک دانہ رکھ کر اسے زمین مان لیں پھر ایک سو نو گز کے فاصلہ پر مسور کے ایک دانہ کو رکھ کر مریخ خیال کریں اور پھر دو سو گز کے فاصلہ پر ریت کے دانوں کو جدید سیارے جان لیں، پھر تین سو تہتر گز کے فاصلہ پر سنگترہ کے برابر مشتری مان لیں اور پھر چھ سو چور اسی گز کی دُوری پر ایک سیاہ دانہ کو زحل خیال کریں اور ایک ہزار چار سو باون گز کی دُوری پر دمدار ستارے اور دور ستاروں کو مقرر کریں۔

## اندرونی اور بیرونی سیاروں کے بارے میں

سب ہی سیارے دو قسم کے ہیں اندرونی سیارے اور بیرونی سیارے۔ اندرونی

سیارے بیرونی اجرام کے قرص چوٹے ہیں اور سورج کے گرد ہمیشہ اپنی گردش جلد ختم کرتے ہیں۔ اپنے محوروں پر چوبیس گھنٹوں کی مدت میں گردش کرتے ہیں۔ ان سب میں قمر بڑا اور شاندار سیارہ ہے۔

بیرونی سیارے بہت بڑے اور عظیم الشّان ہیں۔ سورج کے گرد آہستہ سے گھومتے ہیں۔ تقریباً دس گھنٹوں کی مدت میں اپنے محوروں پر گھومتے ہیں۔ ان کے ساتھ کئی قمر ہوتے ہیں۔

مذکورہ سیاروں کے علاوہ اور بھی اجسام جنہیں ذات الاذناب یعنی دم دارستارے کہتے ہیں، سورج کے گرد گھومتے ہیں۔ یہ کبھی سورج کے نزدیک ہوتے ہیں کبھی دُور۔ ان میں سے بعض تین ہزار سال تک دکھائی نہیں دیتے ہیں۔ نظام شمسی کے بموجب معلوم ہو جاتا ہے کہ اجرام فلکی کس تسلسل اور نظم کے ساتھ سورج کے گرد گردش کرتے ہیں۔

## بحر محیط کی وضاحت

کرۂ زمین کے اردگرد بحر محیط، جسے دریائے شور اور سمندر کہتے ہیں، چھ طرفوں سے احاطہ کئے ہوئے ہے اور یہ سمندر اپنی ذات کا واحد سمندر ہے۔ اسکی گہرائی نوسومیل تک پائی گئی ہے (۲۰) اور اس سے زیادہ گہرائی پائی نہیں گئی۔ فرنگ کے حکماء نے اس کے پانچ حصے فرض کرلئے ہیں۔ پہلا حصہ جو جدید براعظم یعنی امریکہ سے فرنگستان اور افریقہ تک ہے اسے بحر اوقیانوس اور بحر اٹلانٹک کا نام دیا گیا ہے اور اس کی لمبائی ایک ہزار میل، چوڑائی تین ہزار سے چار ہزار تک ہے (۲۱)۔ دوسرا حصہ جو جدید براعظم اور قدیم براعظم کے

درمیان حایل ہے اسے بحرا لکاہل اور پاسفک سمندر کہتے ہیں۔ اسکی لمبائی نو سو میل اور چوڑائی بارہ ہزار میل (۲۲) ہے۔ تیسرا حصہ افریقہ کی حدود سے نکل کر ہندوستان اور جزیرہ مشرقی ایشیا تک پھیلا ہے جو بحرالہند کہلاتا ہے۔ اسکا طول وعرض قریب چھ ہزار میل ہے۔ چوتھا حصہ قطب جنوبی سے مشرق کی حدود تک احاطہ کئے ہوئے ہیں اور اسے بحر جنوبی کہتے ہیں۔ پانچوں حصہ مشرق کی حدود سے قطب شمالی تک یخ سے جما ہوا ہے اور اسے بحر شمالی اور بحر منجمد کا نام دیا گیا ہے۔ درحقیقت چوتھے اور پانچویں حصے کی کیفیت درست واضح نہیں۔ بحر محیط کے حصوں سے اکثر سمندری ٹکڑے ربع مسکون کی سطح میں داخل ہوئے ہیں جنہیں خلیج اور بحیرہ کہتے ہیں۔ چنانچہ بحر محیط کے خلیجوں کے نفوذ کی وجہ سے زمین میں بہت سے ٹکڑے وجود میں آگئے ہیں جو جزیرے کہلاتے ہیں۔ چونکہ سطح زمین کے درمیان بحر محیط کا دوسرا حصہ، جو پاسفک سمندر کہلاتا ہے واقع ہے، اسلئے کرۂ زمین کے دو حصے ہو جاتے ہیں مشرق حصہ اور مغربی حصہ۔ مشرقی حصہ قدیم دنیا اور ربع مسکون اور قدیم براعظم کے نام سے موسوم ہے اور مغربی حصہ کوئی دنیا اور ارضِ جدید اور امریکہ اور جدید براعظم کہتے ہیں۔

## براعظم امریکہ کی شہرت کی حقیقت

یورپ کے مورخین نے لکھا ہے کہ ربع مسکون میں آبادی کی ابتداء سے ہی امریکہ کا سواد اعظم دنیا کے لوگوں سے پوشیدہ تھا۔ اللہ تعالیٰ کی ہدایت اور صاحب کمال لوگوں کی خواہش کی قوت سے پردہ غیب سے ظہور کے محل میں باہر آکر بہت سے فوائد کا باعث بن گیا۔ چونکہ اس ملک کی دریافت زمانے کے عجائبات میں ایک نادر ترین عجوبہ ہے اس لئے

اس کی حقیقت کو مختصر طور پر بیان کیا جاتا ہے۔

سن چودہ سو بکرمی کے قریب (مطابق تیرہ سو عیسوی) خالق کائنات کی ہدایت و رہنمائی سے لوہے کو اپنی طرف کھینچنے کے پتھر کا، جسے مقناطیس کہتے ہیں (۲۳)، حکماء کے دل پر الہام ہوا جو لوگوں کے حق میں بہت زیادہ فوائد کا سبب بنا۔ ان میں سے ایک یہ تھا کہ یورپ کے حکماء نے مقناطیس کی خاصیت سے قطب نما کا آلہ ایجاد کیا۔ یہ آلہ اطراف و جوانب کا رہنما بن گیا اور لوگ بحر محیط میں گھومنے میں دلیر ہو گئے اور وہ بلا کسی خوف کے بحر محیط میں ہر طرف دوڑنے لگے۔ برخلاف پہلے وقتوں کے جہاز رانوں کے جو مطلوبہ سمت کو کھو دینے کے ڈر سے سمندر کے بیچ میں جہاز چلانے کی جرأت نہیں کرتے تھے اور ہمیشہ ساحل کو ہی نظر میں رکھتے تھے۔

مقناطیس کی خاصیت کی دریافت کے دوسو سال بعد کولمبس نامی (۲۴) ایک آدمی اٹلی کے شہر خیوہ میں (۲۵) پیدا ہوا۔ اس نے پرتگیزی استادوں سے جہاز رانی کے فن میں کمال حاصل کیا اور سمندری سیاحت میں تجربہ پایا اور پسندیدہ آزمایشوں سے گذرا۔ ایک دن اس نے چند بید کی اور اسی طرح کی چند نقش و نگار والی لکڑیاں، جنہیں مغربی ہواؤں نے بحر مغرب کے ساحل پر دھکیل دیا تھا، پالیں اور انہیں پا کر وہ بہت خوش ہوا اور یقین سے جان گیا کہ مغرب کی طرف کوئی ملک ہوگا یا کوئی آبادی ہوگی۔ غرض اس بارے میں واقفیت پانے کے بعد اس آبادی کو دریافت کرنے کی خاطر سمندری سفر اختیار کرنے کا ارادہ کیا اور اس گرانمایہ سیاحت کے سلسلے میں مناسب سامان تشکیل دینے کے لئے اس نے وہاں کے حاکموں اور بادشاہوں سے مدد طلب کرنا چاہی۔ چنانچہ اس نے پہلے اپنے ملک کے حکام سے مدد کی درخواست کی۔ انہوں نے اس کی یہ خواہش رد کردی۔ اس کے بعد اس نے

پرتگال کے بادشاہ سے مدد چاہی۔ اس نے کولمبس کے زیرِ نظر منافع کو خیال میں لاکر جلدی سے اپنی حکومت کے ایک معتمد کو اس مہم کیلئے نامزد کر کے روانہ کیا۔ چونکہ یہ آدمی کولمبس کی طرح صاحب ارادہ نہیں تھا تو تھوڑا راستہ طے کر کے سمندری طوفان کی لہروں کے خوف سے سراسیمہ اور خوفزدہ ہوکر لوٹ آیا۔ مایوس ہوکر کولمبس نے اپنے بھائی کو مدد حاصل کرنے کیلئے حکومت برطانیہ کے پاس بھیج دیا لیکن وہاں اسکی مشکل حل نہ ہوسکی۔ اب کولمبس نے اسپین کے بادشاہ کی طرف رجوع کیا۔ وہ مسلمانوں کے ساتھ جنگوں میں مشغول تھا اور اس نے کولمبس کے ارادے کو عقل سے دُور جان کر اس کی درخواست نامنظور کردی۔ اب کولمبس انگلینڈ کی حکومت کی طرف رجوع کرنا چاہتا تھا، لیکن بادشاہ کی ملکہ کو اس کی حالت پر رحم آیا اور اس نے اپنے زیورات رہن میں رکھ کر سفر کے سامان کیلئے رقم مہیا کی اور سامان سفر درست کر کے تین منزلہ ایک چھوٹا سا جہاز بیس ہزار روپے میں خرید لیا، اور اگست مہینے کی تیسری تاریخ کو سال ۱۴۹۲ء میں (مطابق ۱۵۵۵ء بکرمی) جہاز پر سوار ہوگیا۔ لوگوں کا ایک بڑا ہجوم ساحل پر اکٹھا ہوکر اسکے مقصد کی کامیابی کیلئے دست بدعا ہوا۔ کولمبس نے مغرب کی طرف بادبان اٹھالئے اور چل پڑا۔ زمین ان کی نظروں سے اوجھل ہوگئی اور بحرِاعظم میں داخل ہوگئے۔ جہاز ران افسوس کرنے لگے، لیکن کولمبس اپنے مقصد کو حاصل کرنے کی امید میں راحت و آرام کو الوداع کر کے مغرب کی طرف بڑھتا گیا۔

اکیس دنوں کے بعد جہاز کے لوگ نا اُمیدی کی وجہ سے مضطرب ہوئے اور انہوں نے کولمبس کو قتل کرنے کا ارادہ کیا۔ کولمبس نے نرمی و محبت سے ان کی دلجوئی کی اور وعدہ کیا کہ اگر تین دنوں تک زمین کا کوئی کنارہ دکھائی نہ دیا تو واپس چلے جائیں گے۔ گویا کولمبس نے پانی کا امتحان کرنے کی راہ سے زمین کے آثار پاکر نیز درختوں کے پتوں کو گذرنے کے

بعد انہیں متحرک روشنیاں دکھائی دیں اور بے حد خوش ہوئے۔ مذکورہ مہینے کی بارہ تاریخ کو کولمبس نے نئی دریافت شدہ زمین پر پہلے قدم رکھا اور اسپین کے بادشاہ کا جھنڈا گاڑ دیا اور توپیں چلائیں۔ اس جگہ کے لوگوں کی بھاری بھیڑ جمع ہو کر ان کے گرد آ گئی اور توپیں اور اسلحہ اور سامان اور سفید کھالیں اور ان کی لمبی داڑھیاں دیکھ کر حیرت میں ڈوب گئے اور خیال کیا کہ یہ سورج کے بیٹے ہیں۔ جہاز والے بھی ان کی صورتوں کو دیکھ کر جو بالکل ننگے تھے، بے ریش تھے اور جن کی کھال بہت نرم اور رنگ تانبے کی مانند تھا، حیران ہوئے۔ شام کو ان کے چند آدمی ایک چھوٹی کشتی میں بیٹھ کر جہاز کے پاس آ گئے اور ضیافت کے طور پر کئی قسم کی کھانے کی چیزیں کولمبس کو پیشکش کیں۔ اس کے عوض کولمبس نے موتیوں کے ہار، شیشے اور کانچ کی چیزیں، چھوٹی گھنٹیاں اور چند معمولی قیمت کی اشیاء ان کو دیدیں۔ سات دنوں تک وہاں ٹھہرنے کے بعد وہ لوٹ آئے۔ اسپین کے بادشاہ نے سپاہیوں کی سات پلٹنیں جہاز میں بٹھا کر وہ علاقہ فتح کرنے کے لئے بھیج دیا۔

اس کے بعد یہ واقعہ بہت مشہور ہوا۔ چنانچہ روس اور انگلینڈ وغیرہ ممالک کے بادشاہوں نے بھی وہ علاقہ مسخر کرنے کے لئے فوج بھیج دی اور وہاں کئی علاقوں کو فتح کیا۔ سال ۱۴۹۹ء میں فلارنس میں رہنے والے ایک شخص امریکو نامی نے اس نئی سرزمین میں داخل ہو کر سارے علاقہ کی سیاحت کی۔ اس نے اپنے سفرنامہ میں اس نئی دنیا کا نام امریکہ رکھا اور اسی نام سے یہ ملک مشہور ہوا۔ لندن سے جنوبی امریکہ تک پینتیس ہزار سات سو میل کی دُوری (۲۶) ہے اور لیور پول سے امریکہ کے نیو پارک تک سمندری فاصلہ تیس ہزار پچاس میل (۲۷) ہے۔

# زمین کی لمبائی اور چوڑائی

آبادربع مسکون کی لمبائی بحر محیط (۲۸) کے مغربی ساحل سے اس کی مشرقی ساحل تک بقول ابطلیموس (۲۹) ایک سو ستھتر درجہ اور چوڑائی اناسی درجہ ہے۔ اکثر علماء کے نزدیک جزایر خالدات (۳۰) سے، جو انتہائی مغرب میں ہیں، گنگ وژ تک، جو انتہائی مشرق میں ہے، ایک سواسیؔ درجہ اور خط استوا سے شمالی حدود تک چوڑائی چھیاسٹھ درجہ ہے۔ بعض حکماء نے ربع مسکون کی چوڑائی خط استوا سے شمال کی حدود تک تخمیناً نوّے درجہ بتلائی ہے۔ اس میں سے قطب شمالی کی طرف آبادی کی عدم قابلیت کی وجہ سے جہاں سورج کی دُوری کے سبب بہت زیادہ سردی اور تاریکی رہتی ہے، تیس درجے نکال کر ہفت اقلیم کی چوڑائی مجموعاً ساٹھ درجہ متعین کی ہے۔ زمینی درجہ کا فاصلہ ساڑھے چھ سو چھیاسٹھ میل اور چھ سو چھیاسٹھ گز ہوتا ہے اور زمینی منٹ ایک میل اور چار سو چوالیس گز اور ایک میل چار ہزار گز کا ہوتا ہے اور سکنڈ ایک منٹ کا ساٹھواں حصہ۔

البتہ خط استوا ایک فرضی خط ہے جو قطبین کے بیچ میں مغرب سے مشرق تک کھنچا گیا ہے اور جس سے کرہ زمین کے دو حصے کیئے گئے ہیں۔ شمالی حصہ اور جنوبی حصہ جیسا کہ تفصیل سے کہا گیا۔ یہ چین کے جنوب سے شروع ہو کر گنگ دژ اور جمکوٹ سے گذرتے ہوئے سراندیپ کو جنوب اور زنگ کے جزایر اور مغربی سپاہان کے جنوب میں بحر اوقیانوس پر ختم ہو جاتا ہے۔

# حصہ ہفت اقلیم

ہفت اقلیم (۳۱) معمول کے سات زمینوں کی مانند مشرق سے مغرب تک ربع مسکون میں واقع ہے اور ایک دوسرے کے برابر۔ یعنی خط استواء سے ربع مسکون کی چوڑائی کی شمالی حدود تک سات مساوی حصے کئے گئے ہیں اور ان کا نام ہفت اقلیم رکھ دیا گیا ہے۔

پہلا اقلیم: اس کی لمبائی تین ہزار بتیس فرسنگ اور خط استواء سے شمال کی جانب چوڑائی ایک سو سنتالیس فرسنگ ہے۔ اس اقلیم میں بیس پہاڑ اور تیس نہریں ہیں۔ یہاں کے لوگ سیاہ رنگ کے ہیں۔ دن سوا بارہ گھنٹے لمبا ہوتا ہے۔

دوسرا اقلیم: اس کی لمبائی دو ہزار آٹھ سو بتیس فرسنگ اور چوڑائی ایک سو بتیس فرسنگ ہے۔ اس اقلیم میں سات پہاڑ اور سات دریا ہیں۔ لوگوں کا رنگ گندم گون ہے۔ دن پونے چودہ گھنٹے لمبا ہوتا ہے۔

تیسرا اقلیم: یہ دو ہزار دو سو چوالیس فرسنگ لمبا اور ایک سو سولہ فرسنگ چوڑا ہے۔ اس اقلیم میں تنتیس پہاڑ اور بائیس نہریں ہیں۔ لوگ گندمی رنگ کے ہیں۔ دن ساڑھے چودہ گھنٹے لمبا ہوتا ہے۔

چوتھا اقلیم: اس کی لمبائی دو ہزار دو سو چھیاسٹھ فرسنگ اور چوڑائی ننانوے فرسنگ ہے۔ اس میں پچیس پہاڑ اور بائیں دریا ہیں۔ لوگوں کا رنگ سفیدی مائل گندمی ہے۔ دن ایک چوتھائی کم پندرہ گھنٹے کا ہوتا ہے۔

پانچواں اقلیم: اس کی لمبائی ایک ہزار سات سو ستاسی فرسنگ اور چوڑائی چوراسی فرسنگ

ہے۔اس میں تیس پہاڑ اور پندرہ دریا ہیں۔لوگ سفید رنگ کے ہیں اور دن ساڑھے پندرہ گھنٹے کا ہوتا ہے۔

چھٹا اقلیم: اس کی لمبائی ایک ہزار پانچ سو گیارہ فرسنگ اور چوڑائی اکھتّر فرسنگ ہے۔اس اقلیم میں دس پہاڑ اور چالیس نہریں ہیں۔لوگوں کا رنگ سرخ ہے۔دن پونے سولہ گھنٹے کا ہوتا ہے۔

ساتواں اقلیم: شمال کی انتہا میں ہے اور عمارت و آبادی یہاں کم ہے۔اس کی لمبائی ایک ہزار ایک سو تین فرسخ ہے۔اس میں دس پہاڑ اور چالیس نہریں ہیں۔لوگوں کا رنگ سرخ وسفید ہے۔

## دنیا کی آبادی چار حصوں میں

فرنگ کے حکماء نے دنیا کے دو براعظموں کو چار حصوں میں تقسیم کیا ہے۔ان میں براعظم قدیم یعنی ربع مسکون کے تین حصے یورپ، ایشاء اور افریقہ اور براعظم جدید یعنی امریکہ کو ایک حصہ خیال کیا ہے۔

## یورپ کی سلطنتوں کی وضاحت (۳۲)

یورپ چار حصوں میں سے چھوٹا حصہ ہے۔اس کی لمبائی مشرق اور مغرب کے

درمیان تین ہزار پانچ سو میل اور چوڑائی شمال سے جنوب تک دو ہزار چار سو میل ہے۔ اس رقبہ ستئیس لاکھ مربع میل ہے۔ لوگوں کی تعداد بتیس کروڑ سترّ لاکھ ہے۔ ہر میل میں چھیاسی آدمی رہتے ہیں۔ لوگ سارے عقلمند اور محنتی ہیں۔ یورپ کی سلطنتیں یہ ہیں:

## عظیم برطانیہ کی سلطنت

یہ چار مشہور ملکوں پر مشتمل ہے۔ انگلینڈ اور دوسرا ویلز۔ ان دونوں کی آبادی جزیروں کے سمیت دو کروڑ چھیالیس لاکھ آٹھ ہزار تین سو اکانوے افراد ہیں۔ تیسرا ہے سکاٹ لینڈ جس کی آبادی ستئیس لاکھ پنتیش ہزار پانچ سو تہترّ افراد پر مشتمل ہے۔ چوتھا ملک آیر لینڈ ہے۔ اس کی آبادی اکاون لاکھ چھہتر ہزار آٹھ سو چھتیس افراد پر مشتمل ہے۔ مذہب پروٹسٹنٹ ہے۔

## سلطنت فرانس

اس کی لمبائی چھ سو میل چوڑائی پانچ سو ساٹھ میل، آبادی تین کروڑ چھہتر لاکھ سترّ ہزار لوگوں پر مشتمل ہے۔ مذہب رومن کتھولک ہے۔

## سلطنت بلجیم

اس میں تین بڑے شہر شامل ہیں۔ برسلز، کنٹ اور گنٹورپ (۳۳)۔ آبادی پچپن

لاکھ انیس ہزار۔ مذہب کتھولک۔

## سلطنت ہالینڈ

اس ملک میں پانچ بڑے شہر آباد ہیں۔ آبادی اکتالیس لاکھ چودہ ہزار۔

## سلطنت پرشا

یہ سات بڑے صوبوں پر مشتمل ہے۔ آبادی دو کروڑ ستر لاکھ ہے۔ مذہب پروٹسٹنٹ ہے۔ بعض یہودی بھی ہیں اور بعض رومن کتھولک۔

## سلطنت آسٹریا

یہ اُنیس بڑے صوبوں پر مشتمل ہے۔ آبادی ایک کروڑ ستتھر لاکھ چھیاسی ہزار۔ مذہب پروٹسٹنٹ۔ بعض رومن کتھولک ہیں۔

## جرمنی کے چھوٹے ممالک

اس ملک میں تینتیس ریاستیں ہیں۔ بعضوں کو بادشاہ اور بعضوں کو ڈیوک کہتے

ہیں۔ آبادی چار کروڑ پچاس لاکھ۔ مذہب پروٹسٹنٹ۔ بعض رومن کیتھولک اور بعض یہودی ہیں۔

## سلطنت سوئزرلینڈ

تین مشہور شہروں پر مشتمل ہے جو بائیس صوبوں کے حامل ہیں۔ آبادی اٹھائیس لاکھ چھیالیس ہزار۔ مذہب مخلوط رومن کیتھولک اور پروٹسٹنٹ ہے۔

## حکومت ڈنمارک

اس ملک میں آتش فشان پہاڑ واقع ہے۔ یہاں کی آبادی انیس لاکھ اور انہتر ہزار افراد پر مشتمل ہے۔ مذہب پروٹسٹنٹ ہے۔

## سویڈن کی متحدہ سلطنت

چوبیس صوبوں پر مشتمل ہے۔ آبادی پینتالیس لاکھ پینسٹھ ہزار چھ سو نفوس پر مشتمل ہے اور مذہب پروٹسٹنٹ ہے۔

## ناروے

اس کی شمالی حدود میں گرما کے موسم میں دو تین ماہ تک سورج نہیں ڈوبتا اور دو مہینوں

کی مدت کو ایک دن خیال کیا جاتا ہے۔ اس کے جنوب میں دن اٹھارہ گھنٹے لمبا ہوتا ہے۔ لوگوں کی آبادی انیس لاکھ پچیس ہزار ہے۔ اسکے متصل لپلینڈ نامی شہر ہے، جہاں آٹھ فٹ تک برف جمی رہتی ہے۔ وہاں کے لوگ چھوٹے قد کے تین بالشت کے برابر ہیں اور آبادی ساٹھ ہزار نفوس پر مشتمل ہے۔

## سلطنت روس

سلطنت روس کے دو حصے ہیں۔ ایک حصہ ایشیا میں ہے اور دوسرا یورپ میں۔ یورپ کے حصے میں اکاون صوبے شامل ہیں۔ جن کی آبادی آٹھ کروڑ چھتیس لاکھ پر مشتمل ہے۔ مذہب پروٹسٹنٹ ہے۔ تقریباً پانچ لاکھ یہودی ہیں۔

## سلطنت روم

جغرافیہ دانوں نے اس کے دو حصے کر دئیے ہیں۔ جن میں سے ایک حصہ ایشیا میں ہے اور دوسرا یورپ میں۔ لوگوں کی آبادی ستتھر لاکھ پندرہ ہزار ہے۔ مذہب اسلام زیادہ رائج ہے اور کلیسائی بھی۔

## یونان

پہلے روم میں شامل تھا اب آزاد ہے۔ آبادی سولہ لاکھ اسیؔ ہزار ہے۔ لوگ

پروٹسٹنٹ ہیں۔

## لوبک ہمبیر۔ بریمن

یہاں کی آبادی چھ لاکھ چھہتر ہزار ہے۔ آزاد ملک ہے۔

## بویریا

باون لاکھ چوراسی ہزار آبادی والا ملک ہے۔

## رومانیا

باون لاکھ نوے ہزار لوگوں کا ملک ہے۔

## سرویا

یہاں کی آبادی سترہ لاکھ پچیس ہزار ہے۔

## مانٹ نگر (۳۵)

دو لاکھ پچاس ہزار کی آبادی والا ملک ہے۔

## حکومت اٹلی

اس ملک میں ایک آتش فشان پہاڑ ہے۔آبادی دو کروڑ چوراسی ہزار ہے اور گیارہ صوبوں پر مشتمل ہے۔مذہب رومن کتھولک۔

## اسپین

آبادی ایک کروڑ چھیاسی لاکھ پچیس ہزار ہے۔

## پرتگال

آبادی اکتالیس لاکھ ہزار ہے۔

## پولینڈ

روس میں شامل ہے اور یہاں کی آبادی ستر لاکھ چار ہزار ہے۔

## سیکنی

آسٹریا اور پرشیا کے درمیان واقع ہے۔اُنیس لاکھ افراد کی آبادی ہے اور آزاد ہے۔

# حصہ ایشیا کی سلطنتیں

شمال مشرق سے جنوب مغرب تک ان کی لمبائی انہتّر ہزار میل اور شمال سے جنوب تک کی چوڑائی پنتیس ہزار چار سو میل ہے۔ ان کا کل رقبہ ایک کروڑ پچھتّر لاکھ میل مربع ہے۔ آبادی اناسی کروڑ پچپن لاکھ نوے ہزار ہے یعنی اندازاً 45 آدمی ہر میل ہیں۔

## روسی ایشیا (۳۶)

اس ملک میں چھ بڑے صوبے ہیں، جن کی لمبائی چھ ہزار چھ سو میل اور چوڑائی سات سو ساٹھ میل ہے۔ بعض شمالی جگہوں میں کئی مہینوں تک سورج نہیں ڈوبتا اور رات نہیں ہوتی ہے۔ آبادی اسی لاکھ۔ دارالخلافہ طفلیس۔

## رومی ایشیا

چھ بڑے صوبوں پر مشتمل ہے۔ ایشیای کلان، سیریا (۳۷)، پلس ٹین (۳۸)، جوروشلم، آرمینا، کردستان۔

## تاتار

یعنی ترکستان۔ اس میں پانچ بڑے صوبے ہیں۔ کاشغر، یارقند، تھن شن (۳۹)،

بخارا، خیوہ (۴۰)۔

## وسط ایشیا

پانچ صوبوں پر مشتمل ہے: تاشقند، خجند، سمرقند، قوقان (۴۱)، کلاجا۔

## سائبیریا

اس کے دو حصے ہیں، مغربی سائبیریا اور مشرقی سائبیریا۔ مغربی سائبیریا کی آبادی پچاس لاکھ اور مشرقی سائبیریا کی چالیس لاکھ سے کم ہے۔

## چین

بے شمار جگہوں پر مشتمل ہے جن میں چھ بڑے صوبے مشہور ہیں۔ اصل چین، منچوریا، منگولیا، تبت اور کولیا (۴۲)۔ ان کی آبادی اندازاً چالیس کروڑ پچاس لاکھ ہے۔ لوگ بدھ مذہب کے ہیں۔ ان میں اصل چین کی آبادی پندرہ لاکھ، منچوریا کی دو کروڑ چالیس لاکھ، منگولیا کی بیس لاکھ ہے جو صحرانشین ہیں۔ کولیا ایک جزیرہ نما جگہ ہے۔ جہاں کے حالات زیادہ معلوم نہیں۔ تبت کی آبادی تقریباً ساٹھ لاکھ ہے۔

## جاپان

چینی تاتار کے متصل ہے اور اس میں بحرالکاہل کے اکثر جزیرے شامل ہیں۔

سات کروڑ کی آبادی ہے۔

## جزیرہ نما ممالک

برہما، سیام، آسام، ملایا۔ ان میں سے پانچ ضلعوں پر انگریز قابض ہیں۔

## مشرقی افغانستان

چھ صوبوں پر مشتمل ہے: کابل، قندہار، جلال آباد، غزنین، ہرات، بلوچستان۔ آبادی پچاس لاکھ ہے۔

## ہندوستان

اس کا مربع رقبہ آٹھ لاکھ چھپن ہزار پانچ سو مربع میل (۴۳) ہے۔ بنگال شمالی ومغربی ممالک، پنجاب، وسطی ممالک، بمبئی، سندھ، مدارس، آسام، انگریزوں کا مقبوضہ برہما، برار، گورک، اجمیر، انڈمن جزیرے، نکوبار اسکے صوبے ہیں۔ آبادی پچیس کروڑ پچاس لاکھ ہے۔ باجگذار صوبوں کی تعداد ایک سو اکیاون ہے۔ آمدنی سات لاکھ ہزار پونڈ۔ اس وقت غیر باجگذار علاقے ہیں: نیپال، سکم اور بھوٹان۔

## جزیرہ لنکا

اسے سیلون اور سنگلدیپ بھی کہتے ہیں۔اس کی لمبائی دوسو ستّر میل اور چوڑائی ایک سو چالیس میل۔آبادی۔۔۔۔(۴۵)۔

## ایران

اس سلطنت میں بہت سے مشہور شہر آباد ہیں۔آبادی چھہتّر لاکھ پچاس ہزار۔

## عربستان

بہت سے شہروں پر مشتمل ہے۔اسیّ لاکھ کی آبادی ہے۔مدینہ سے مکہّ تک دوسو پچاس میل کا فاصلہ ہے۔

## افریقہ کی تفصیل

رُبع مسکون کا تیسرا حصہ افریقہ ہے۔اس کی لمبائی دو ہزار دوسو میل اور مشرق سے مغرب تک اس کی چوڑائی چار ہزار چھ سو پچاس میل اور اس کا رقبہ ایک کروڑ پندرہ لاکھ مربع

میل (۴۶) ہے۔ آبادی بیس کروڑ اٹھاون لاکھ نفوس پر مشتمل ہے۔ گویا سترہ سے اٹھارہ آدمی ہر میل کے حساب سے۔ سورج کی حرارت اور باد سموم نیز ریگستان کی وجہ سے یہاں کی آبادی کم ہے۔

## بربر

اس ملک میں بہت (۴۷) سے شہر ہیں۔ آبادی اکاسٹھ لاکھ اور چالیس ہزار ہے۔ مراکو دارالخلافہ ہے۔

## الجیریا

اٹھائیس لاکھ ساتھ ہزار آبادی والا ملک ہے۔

## ٹیونس

اکیس لاکھ کی آبادی ہے۔

## ترپولیا

تین بڑے صوبوں کا ہے اور آبادی گیارہ لاکھ پچاس ہزار۔

## صحرائے اعظم

بعض جگہوں پر آبادی ہے۔ دریا کا پانی نایاب۔

## مصر

چار بڑے صوبے اس میں شامل ہیں۔ قاہرہ، اسکندریہ، روزنہ (۴۸)، دمیا (۴۹)
آبادی پچپن لاکھ (۵۰)۔

## نوبیا یعنی خرطوم اور مشرقی سوڈان

یہاں کی آبادی ایک کروڑ بیس لاکھ ہے۔

## ابی سینیا

یعنی حبش۔ پانچ صوبوں پر مشتمل ہے۔ آبادی چالیس لاکھ۔

## زنگبار

ڈھائی ہزار میل لمبا اور بہت سے صوبوں پر مشتمل ہے۔

## مغربی افریقہ

اس میں تین صوبے شامل ہیں۔ سنی گنیا، اپر گنی، لوئیر گنی۔

## جنوبی افریقہ

اس کے ممالک ہیں۔ کیپ کالونی، صنبل (۵۱) اور آزاد صوبے۔

## جزائر افریقہ

پرتگیزی مدیریا، کیپ واڈ، سینٹ ٹامس، برسنز ایلینڈ۔

## براعظم امریکہ کے ممالک کی تفصیل

دنیا کا چوتھا حصہ براعظم امریکہ ہے جو دو حصوں میں منقسم ہے ایک شمالی امریکہ اور دوسرا جنوبی امریکہ۔ اس کا رقبہ ایک کروڑ ساٹھ لاکھ مربع میل (۵۲) ہے۔ اور آبادی دس کروڑ چار لاکھ دس ہزار کی ہے۔

## گرین لینڈ

سرد علاقہ ہے اور بھیڑ، گائے، گھوڑے، کتے، بلیاں اور خرگوش وہاں نہیں ہوتے۔ آبادی دس ہزار (۵۳) نفوس کی ہے۔ اس میں بہت سے جزیرے شامل ہیں۔

## روسی امریکہ

چند صوبوں پر مشتمل ہے۔ غلہّ کی پیداوار وہاں نہیں ہوتی ہے۔ جانوروں کی کھالیں اکٹھی کر کے بیچی جاتی ہیں۔

## کناڈا

یعنی برٹش امریکہ۔ سات صوبوں (۵۴) پر مشتمل ہے اور انگریزوں کے قبضہ میں ہے۔

## صوبہ جات متحد

زیادہ تو حصہ انگریزوں کے قبضہ میں تھا۔ بالآخر لوگ طاقتور ہو کر آزاد (۵۵) ہو گئے۔ ان صوبوں کی تعداد انچاس ہے۔ آبادی پانچ کروڑ سے زیادہ۔

## میکسیکو

چند بڑے صوبوں پر مشتمل ہے۔ آبادی تریانوے لاکھ تینتیس ہزار۔

## وسطی امریکہ

اس میں چند مشہور شہر شامل ہیں۔ آتش فشاں پہاڑ کا بھی حامل ہے۔

## مغربی ہند کے جزائر

بحرمحیط میں چند آباد جزیروں کا مجموعہ ہے۔

## گنی (۵٦)

تین ریاستیں اس میں شامل ہیں۔ برٹش گاینا، ڈچ گائنا اور فرنچ گائنا۔

## ڈنی زوپلا (۵۷)

بیس لاکھ پچھتر ہزار کی آبادی والا جمہوری ملک ہے۔

## کولمبیا

اُنیس لاکھ پچاس ہزار کی آبادی والا جمہوری ملک ہے۔

## اکونڈر (۵۸)

یہاں کی آبادی دس لاکھ چھیاسٹھ ہزار ہے۔ جمہوری ملک ہے۔

## پیرو

اس ملک میں کبھی بھی بارش نہیں ہوتی ہے۔ جمہوری ملک ہے اور آبای پچیس لاکھ

افراد کی ہے۔

## بولویا

خودمختار سلطنت ہے۔تروبیس لاکھ کی آبادی ہے۔

## برازیل

اس ملک میں ہیرے، چاندی، سونے اور الماس کی کانیں ہیں۔دھات بھی خاصی پائی جاتی ہے۔آبادی دوکروڑ کی ہے۔

## پراگو

اس ملک میں کثرت سے چائے پیدا ہوتی ہے۔آبادی تین لاکھ۔

## آرگوے (۵۹)

اس کی آبادی چار لاکھ پنتیس ہزار ہے۔

## چلی

یہاں سیماب اور سونے کی کانیں کثرت سے ہیں۔ایک لاکھ تریاسی ہزار نفوس کی

آبادی ہے۔

## آرکن ٹین لا پلاٹا کی؟

متحد ملک ہے اور چودہ ریاستوں اور چار صوبوں پر مشتمل ہے۔ آبادی اُنیس لاکھ کی ہے۔ سرد ملک ہے اور کئی آتش فشان پہاڑوں کا حامل ہے۔ لوگ پست قد کے ہیں۔ تین بالشت کے برابر۔

## بحرالہند کے جزایر

اوشینیا، ملیشیا، آسٹریلشیا اور پولینگیشیا پر مشتمل تین کروڑ اسیّ لاکھ کی آبادی والے جزایر۔

## سنڈیا جزیرے (٦٠)

سماٹرا، جاوا اور مدورا۔ ایک کروڑ نوے لاکھ کی آبادی ہے۔ سال ١٨٦٣ء میں بھونچال سے ایک جزیرہ مع تیس ہزار لوگوں کے ڈوب گیا۔

## فلی پائن جزیرے

یہ بارہ سو جزیرے ہیں۔ ان میں بہت سے آتش فشان پہاڑ پائے جاتے ہیں۔

آبادی تریسٹھ لاکھ۔

## سلیب (٦١)

ہالینڈ کے قبضہ میں ہے۔ آبادی چالیس لاکھ۔

## بورنیو

ڈھائی ہزار میل لمبا ہے اور بیس لاکھ کی آبادی ہے۔

# دنیا کے ملکوں کی مردم شماری، زبان کا اختلاف اور کرۂ زمین کی وسعت

ہینڈرسن کی جغرافیہ کے بموجب تمام دنیا کی کل آبادی ایک ارب چھیالیس کروڑ اٹھاسٹھ ہزار ہے۔ دنیا کی زبانوں کی کل تعداد دوسو ہے اور کرۂ زمین ایک ارب باون کروڑ ایک لاکھ پانچ ہزار مربع میل ہے۔ جس میں خشکی کا علاقہ یعنی زمین پانچ کروڑ تینتیس لاکھ مربع میل اور تری کا علاقہ یعنی سمندری علاقہ ایک ارب چھیالیس کروڑ اٹھاسٹھ لاکھ پانچ ہزار میل ہے۔ ہر میل میں ٢٧ آدمی۔

# یادداشتیں

(۱) نو آسمانوں کا تصور مختلف مذاہب کا اعتقاد ہے لیکن سائنس دانوں کے نزدیک آسمان نظر کی انتہا کو کہتے ہیں۔ ان کے خیال میں جو نیلا پن ہمیں نظر آتا ہے وہ پانی سے اٹھا ہوا بھاپ ہے جو ہمیشہ کرۂ ہوا میں جمع رہتا ہے (جامع اللغات اردو جلد ۲۴ر مؤلف خواجہ عبدالحمید بی اے مطبوعہ جامع اللغات کمپنی لاہور)۔

(۲) خط معدل النہار ایک دائرہ ہے جو دنیا کو دو حصوں میں تقسیم کرتا ہے۔ مشرق سے مغرب تک جب اس دایرہ میں سورج داخل ہو جاتا ہے تو تمام علاقوں میں دن اور رات تقریباً برابر ہوتے ہیں البتہ عرض میں یہ تعین میں برابر نہیں ہوتا۔ سال تک سورج اس دائرہ میں سے دو بار گذرتا ہے۔

(۳) ایک خیالی خط ہے جس کا ایک سرا مشرق اور دوسرا مغرب میں ہے۔ حکما معدل النہار کے دایرہ میں ان سروں کو زمین کے وسط میں ایک دوسرے کے مقابل فرض کرتے ہیں۔ یوں کہ اگر معدل النہار کا دایرہ دنیا کو کاٹ ڈالے تو زمین کو بھی الگ کرتے ہیں۔ اس لئے زمین جہاں پر الگ یعنی کٹ جاتی ہے وہیں پر خط استوا ہے۔

(۴) پوہ۔ ہندی مہینے کا نام۔

(۵) ہاڑ۔ ہندی مہینے کا نام۔

(۶) اصل نسخہ میں خدف ہوا ہے۔

(۷) صحیح یہ ہے کہ زمین کا قطر آٹھ ہزار میل اور اس کا محیط پچیس ہزار میل ہے (جامع اللغات اُردو جلد ۲۰ر زمین کے بیان میں)۔

(۸) مطلب ہے بھاپ سے چلنے والی ریلی۔

(۹) سورج کی گولائی جیسا کہ حسن نے حساب لگایا ہے زمین سے ایک ارب اور پچیس کروڑ میل بڑی ہے۔ لیکن یہ حساب تمام جغرافیہ دانوں کے اندازے کے برخلاف ہے۔ صحیح یہ ہے کہ آفتاب کی گولائی کا محیط آٹھ لاکھ چوسٹھ ہزار میل ہے۔

(۱۰) سورج کی دوری زمین سے بیانوے کروڑ اور تریاسی لاکھ میل ہے اور حسن نے لکھا ہے وہ اس زمانے کی مختلف روایتوں کے مطابق لکھا ہے۔

(۱۱) قاعدہ ہے کہ ہر قمری ماہ کی پہلی کو سمندر کا پانی چاند گردش کی وجہ سے جوش میں آتا ہے اور اپنی جگہ سے اُوپر اٹھتا ہے۔اسے مد کہتے ہیں اور آخری دو ہفتوں میں جبکہ چاند اماوس میں ہوتا ہے سمندر کا پانی نیچے چلا جاتا ہے اور جب آخری راتوں میں چاند نظر نہیں آتا ہے تو پانی اپنے ساحل پر آجاتا ہے۔اسے جزر کہتے ہیں۔

(۱۲) صحیح یہ ہے کہ تین کروڑ ساٹھ لاکھ میل دُور ہے زمین سے۔

(۱۳) اس کا صحیح فاصلہ سورج سے ستسٹھ کروڑ میل ہے۔

(۱۴) سورج سے اس کا فاصلہ چودہ کروڑ اور پندرہ لاکھ میل ہے اور زمین سے ساڑھے تین کروڑ میل۔

(۱۵) صحیح ہے اٹھتالیس کروڑ اور تیس لاکھ میل۔صاحب جامع اللغات اُردو کے بقول اس کا قطر آٹھ ہزار چھ سو پچاس میل ہے اور آٹھ چاندوں پر مشتمل ہے۔

(۱۶) سورج سے اس کی صحیح دُوری اٹھاسی کروڑ اور ساٹھ لاکھ میل ہے اور نو چاندوں پر مشتمل ہے۔

(۱۷) وبسٹرس نیو انٹرنیشنل ڈکشنری کے مطابق دمدار سیارہ کسی ایک سیارے کا نام نہیں بلکہ یہ مختلف سیارے ہیں جو اس نام سے مشہور ہیں اور اسی لئے زمین اور سورج سے ہر ایک کا فاصلہ مختلف ہے۔تفصیل کے لئے ملاحظہ ہو یہی کتاب۔

(۱۸) نپٹون کو ایسٹرن بھی کہتے ہیں۔ویسٹرس نیو انٹرنیشنل ڈکشنری کے مطابق سورج سے اس کا صحیح فاصلہ دوارب اناسی کروڑ بیس لاکھ میل ہے۔اس ستارے کو ایک فرانسیسی سائنس دان نے جس کا نام گال تھا ۲۳ رستمبر میں ۱۸۴۶ء دریافت کیا ہے۔

(۱۹) مشنگ (م پر پیش) ایک تین کونے والا سفیف رنگ کا غلہ جسے ہندی میں کو ہساری کہتے ہیں (شمس اللغات، ص ۱۲)۔

(۲۰) صحیح ہے نو میل اور جو اصل کتاب کے متن میں ہے وہ شاید کاتب کی غلطی ہے۔دنیا کے سمندروں میں بحر الکاہل کی گہرائی سب سے زیادہ ہے۔جاپان کے گرد نواح میں جزیروں کی گہرائی نو میل تک ہے۔

(۲۱) تحقیق کرنے والوں کے نزدیک بحر اوقیانوس کی لمبائی جگہ جگہ مختلف ہے۔قطب جنوبی اور قطب شمالی کے درمیان آٹھ ہزار میل کی دوری تحقیق کی گئی ہے اور گرین لینڈ اور ناروے کے درمیان کا فاصلہ ان کے نزدیک آٹھ سو میل ہے اور یہ تمام فاصلوں سے کم ہے۔جنوبی امریکہ میں فلوریڈا اور شمالی افریقہ میں مراکو کے درمیان کا فاصلہ تین ہزار چھ سو میل ہے اور اتنا ہی فاصلہ ہے راس امید اور لا پلاٹا کے درمیان جو بالترتیب جنوبی افریقہ اور جنوبی امریکہ میں واقع ہیں۔

(۲۲) بحر اوقیانوس کی طرح بحر الکاہل کی لمبائی بھی جا بجا مختلف ہے۔ کہتے ہیں مشرق سے مغرب تک چالیس میل سے آٹھ ہزار پانچ سو میل تک پہنچ چکی ہے۔ تنگنائے بیرنگ، جہاں براعظم امریکہ اور ایشیا ملتے ہیں، کے پاس اس کا فاصلہ چالیس میل ہے اور کیلی فورنیا اور چین کے درمیان یہ فاصلہ آٹھ ہزار پانچ سو میل تک پہنچتا ہے اور جغرافیہ دانوں کے نزدیک یہ فاصلہ خط استوا میں کیوٹو اور ملکا کے درمیان دس ہزار میل سے بڑھ کر ہے۔ غرض یہ کہ جس علاقے کا بحر الکاہل احاطہ کرتا ہے اس کے رقبہ کا اندازہ پانچ کروڑ سے دس کروڑ مربع میل تک ہے۔

(۲۳) سنگِ آہن رُبا کی ابتدائی تاریخ کوئی نہیں جانتا۔ چند مستند رائیں موجود ہیں جن سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ سنگِ آہن رُبا پہلے چین میں دریافت ہوئی اور وہاں سے شاید عرب کے راستے سے یورپی ممالک میں پہنچا۔ لیکن جدید تحقیق سے معلوم ہوتا ہے کہ چینیوں کا اس مقناطیس کے پتھر کو دریافت کرنے کا دعویٰ محض ایک بے ثبوت دعویٰ ہے کیونکہ ان کی قدیم کتابوں میں اس پتھر کے وجود کا کوئی ذکر نہیں۔ اسی طرح حسن کا ۱۳۰۰ء میں قطب نما آلہ کا ایجاد ہونے کا دعویٰ باعث اختلاف و بحث ہے کیونکہ یورپ کے لوگوں کی زبان پر اس آلہ کا ذکر بارہویں صدی عیسوی میں ہوا ہے اور یہ بھی گویا اس کے جدید ایجاد ہونے پر دلالت نہیں کرتا کیونکہ یہ آلہ اس وقت کوئی نئی چیز نہیں شمار ہوتی ہے (انسائیکلوپیڈیا کا جلد ۱۵)۔

(۲۴) کرسٹوفر کولمبس (۱۴۳۶ء۔۱۵۰۶ء) ۱۴۳۵ء یا ۱۴۴۶ء میں جنیوا میں پیدا ہوا۔ ڈامینیکو کولمبو فانٹانا روسا کا بیٹا تھا۔ جدید دنیا جسے امریکہ کہتے ہیں کو دریافت کرنے کے سبب تاریخی شہرت پائی۔ ۱۴۹۲ء میں جمعہ کے دن مذکورہ سال میں اگست کی تین تاریخ کو کولمبس صبح کے وقت لیزبن کی بندرگاہ سے امریکہ کی طرف روانہ ہوا۔ پہلے کیزی جزایر میں داخل ہوا۔ جہاز رانوں کی تعداد جو اس کے ہمراہ تھی ایک سو بیس تھی۔ اس کا مقصد سیپانگر شہر کو دریافت کرنا تھا جو چینی ترکستان میں ہے۔ وہ وہاں کے خان بزرگ کو اسکی رعایا کے سمیت عیسائی مذہب میں لانا چاہتا تھا۔ لیکن حسن اتفاق سے جدید دنیا میں داخل ہوا۔ پہلا شخص جس نے امریکہ کے دریافت ہو جانے کی خبر اپنے ساتھیوں کو سنائی اس کا نام تھا راڈرڈی ٹریانا۔ بعض جدید تحقیق کے بقول یہ شخص ایک عرب تھا جس کا نام علی تھا اور اسی نے کولمبس کے ہمراہیوں کو یہ خوش خبری سنائی تھی۔ ۱۲ اکتوبر ۱۴۹۲ء کو جمعہ کی صبح کے وقت یہ واقعہ وجود میں آیا۔ پہلی جگہ جو ان کو نظر آئی گوانا ہانی تھی۔ کولمبس نے اسے سان سالی ڈور کا نام دیا۔

(۲۵) صحیح ہے جنیوا۔

(۲۶) صحیح ہے پانچ ہزار پانچ سو میل اور اصل کتاب کے متن میں غالباً کاتب سے غلطی ہوگئی ہے۔

(۲۷) صحیح ہے تین ہزار پانچ سو میل۔

(۲۸) مطلب ہے بحر اوقیانوس۔

(۲۹) کلاڈیوس پٹلی میوس ایک مشہور ریاضی دان نجومی اور جغرافیہ دان تھا۔ کہتے ہیں مصر کا باشندہ تھا لیکن صحیح یہ ہے کہ اس کی جای ولادت صحیح طور پر معلوم نہیں۔ عربوں میں یہ روایت چل رہی ہے کہ یہ شخص ۷۸ رسال کی عمر میں فوت ہوا۔ امکان ہے کہ حضرت مسیح سے تین سو سال پہلے تھا۔

(۳۰) مطلب ہے کیزی جزایر۔ قدیم زمانوں میں اسلامی مؤرخین ان ہی جزایر کو زمین کی انتہا خیال کرتے تھے۔

(۳۱) اسکی کوئی حقیقت نہیں۔ صرف یہ ہے کہ قدیم زمانوں میں کرۂ زمین کو سات حصوں میں تقسیم کیا گیا ہے۔

(۳۲) جان لینا چاہیے کہ یورپی ممالک، ایشیا، افریقہ اور امریکہ کی ملکی اور سیاسی اور آبادی کی تفصیل کا جو یہاں پر بیان ہوا ہے وہ بارہویں صدی عیسوی سے مربوط ہے۔ لیکن اب تو عالمگیر جنگوں (۱۹۱۴ء۔۱۹۱۸ء اور ۱۹۳۹ء۔۱۹۴۵ء) کی وجہ سے اہم تبدیلیاں واقع ہوئی ہیں۔

(۳۳) انٹورپ۔

(۳۴) سیکسنی۔

(۳۵) مانٹی نیگرو۔

(۳۶) مراد ہے وہ علاقہ جس کے اردگرد بحر ارال واقع ہے اور ۱۹۱۸ء سے جب کہ روسی حکومت شوروی وجود میں آگئی ایشائی روس کا اطلاق سائبیریا، جارجیا، آرمینیا، قفقاز اور روسی ترکستان سے جموں وکشمیر کی شمالی سرحد گلگت ہونے لگا۔

(۳۷) شام۔

(۳۸) فلسطین۔

(۳۹) تھیان شیان۔

(۴۰) قدیم خوارزم۔

(۴۱) صحیح ہے توقند۔

(۴۲) کوریا۔

(۴۳) برما کو چھوڑ کر فی الحقیقت ہندستان کا رقبہ اٹھارہ لاکھ مربع میل ہے اور جو حسن لکھتا ہے وہ ظن وقیاس پر مبنی ہے۔

(۴۴) مطلب ہے ہندوستان کی ریاستیں۔

(۴۵) اصل نسخہ میں ایسے ہی ہے۔

(۴۶) صحیح رقبہ اس کا ہے ایک کروڑ بارہ لاکھ دو ہزار مربع میل۔ چوڑائی چار ہزار چھ سو میل اور لمبائی پانچ ہزار میل ہے (جامع اللغات اُردو مولفہ خواجہ عبدالمجید بی اے۔ مطبوعہ جامع اللغات کمپنی لاہور)۔

(۴۷) شمالی افریقہ کا علاقہ ہے جو مصر اور بحر اوقیانوس کے درمیان اور صحرای اعظم کے شمال میں واقع ہے۔ بربر میں طرابلس، ٹیونس، الجیریا اور مراکو شامل ہیں۔ حسنؔ نے اس وقت کی اطلاع کے مطابق غلطی سے ان کو مختلف خطےّ جانا ہے۔

(۴۸) صحیح ہے روز مینا۔ ایک مشہور تاریخی شہر ہے۔ ۱۷۹۹ء میں یہاں ایک پتھر پایا گیا جس پر قدیم مصری اور یونانی زبانوں میں ایک کتبہ لکھا تھا اور اس سے مصری قرات کا طریقہ دریافت ہوا۔ یہاں کی آبادی سات ہزار ہے۔

(۴۹) دمیاط ایک شہر ہے مصر میں جو قاہرہ سے ۱۲۵ر میل دُور شمال مشرق میں دریای نیل کی مشرقی شاخ کے کنارے پر آباد ہے۔ بقول صاحب جامع اللغات یہاں کی آبادی پینتیس ہزار ہے۔

(۵۰) یہ گنتی حسنؔ کے زمانے سے تعلق رکھتی ہے لیکن آج کل اس کی صحیح آبادی ایک کروڑ اکتالیس لاکھ ہزار سات سو ہے۔

(۵۱) نیٹال۔

(۵۲) بقول صاحب جامع اللغات اس کا رقبہ ایک کروڑ ستستھ لاکھ پچاس ہزار مربع میل ہے اور آبادی سترہ کروڑ ہے۔

(۵۳) پندرہ ہزار نفوس۔

(۵۴) صحیح ہے آٹھ صوبے اس تفصیل کے ساتھ: نوا شکوشیا، جزیرہ پرنس ایڈورڈ، برنزدک، کیوبک، انٹیریو، مینی ٹویا، برٹش کولمبیا اور نیوفاونڈ لینڈ۔

(۵۵) آزادی کی اس تحریک کا رہبر جارج واشنگٹن تھا (۱۷۳۲ء۔ ۱۷۹۹ء) جس نے انگریزوں کو وطن کی جنگ آزادی میں شکست فاش دی اور جمہوری متحدہ امریکہ وجود میں لایا۔ سات سال تک اس جمہوری ملک کا صدر رہا۔

(۵۶) گی آنا۔

(۵۷) ونزویلا۔

(۵۸) اکویڈور۔

(۵۹) یوروگوے۔

(۶۰) درست ہے سنڈا۔ یہ ملایا کے مجموعی جزایر کا نام ہے۔ صاحب جامع اللغات کے بقول دو حصوں میں منقسم ہے سنڈا کلان اور سنڈا خورد۔ پہلا حصہ بورنیو، سماٹرا، جاوا اور سیلبس جزایر پر مشتمل ہے اور دوسرا حصہ بلی، لمبوک اور سمباوا وغیرہ پر۔

(۶۱) یعنی جزایر سیلبس۔

# کشمیر کی جغرافیہ کے بیان میں

# اور

# اس کی کمیت وکیفیت اور متفرق ومربوط حالات کے بارے میں

## کشمیر کا خطۂ دل پذیر

خطۂ کشمیر ایشیا کے حصے میں ایک ملک ہے جس کے مشرق میں چینی اور شمال میں وسطی ایشیا اور مغرب وجنوب میں ہندوستانی ایشیا ہے۔ یونان کے پیمائش گروں کے تعین کے مطابق یہ اقلیم چہارم کے بیچ میں واقع ہے جس کی چوڑائی خط استوا سے پینتیس درجہ اور جزایر خالدات سے ایک سو پانچ درجہ ہے۔ ہندوستانیوں کے بموجب اقلیم چہارم کے شروع میں واقع ہے کیونکہ اس کی چوڑائی خط استواء سے چونتیس درجہ اور ساڑھے آٹھ منٹ اور جزایر خالدات سے اسکی لمبائی ایک سو آٹھ درجہ ہے۔ اور ہندوستانی جغرافیہ دانوں کے حساب سے اقلیم چہارم کے شروع میں واقع ہے کیونکہ خط استواء سے چونتیس درجہ اور آدھا منٹ اسکی چوڑائی ہے اور جزائر سے ایک سو آٹھ درجہ اسکی لمبائی ہے۔ اور انگریز نجومیوں کے حساب سے گرین وچ سے، جو لندن سے منسوب شاہی رصدگاہ ہے، ہاری پربت تک اس کی لمبائی چھتھر درجہ اور انچاس منٹ اور ایک سکنڈ ہے اور خط استواء سے اس کی چوڑائی چونتیس درجہ اور چھ منٹ اور چھبیس سکنڈ ہے اور لیٹی چوڈ یعنی عرض البلد کے حساب سے چونتیس درجہ

پندہ منٹ اور لانجی چوڑ (طول البلد) شرقی کے حساب سے چھہتر درجہ اور دس منٹ ہے۔

## کشمیر کی اُونچائی

یورپ کے محققین نے کشمیر کے شہر سرینگر کو بحر محیط کی سطح سے پانچ ہزار دو سوانگریزی فٹ جو ایک ہزار سات سو تینتیس گز کے برابر ہے، اُونچا دریافت کیا ہے اور مضبوط پہاڑ، جو اس کے گرد مستحکم قلعوں کی طرح احاطہ کئے ہوئے ہیں، قریب آٹھ ہزار سے سترہ ہزار فٹ تک کی فرق کے ساتھ بلند ہونگے۔ اس لئے مقام کی بلندی کے مطابق کشمیر کے علاقہ میں سال کے تیسرے حصہ تک برفباری ہوتی رہتی ہے اور اُونچے اُونچے پہاڑ، جو تیرہ ہزار فٹ سے بلند تر ہیں، ہمیشہ برف سے ڈھکے رہتے ہیں۔ تیرہ ہزار فٹ کی بلندی تک برف پگھل جاتی ہے۔

## کشمیر کا طول وعرض

کشمیر ایک وسیع وادی کی مانند ہمالیہ کے مستحکم پہاڑوں کے وسط میں مشرق اور مغرب کے گوشے سے شمال اور مغرب کے گوشے کی جانب مربّع اور مستطیل کی شکل میں واقع ہے۔ خواجہ اعظم کے بقول مشرقی حدود سے مغربی حدود تک اس کی لمبائی چالیس فرسخ (۱) اور جنوب سے شمال تک سات سے آٹھ فرسخ تک کا فرق رکھتی ہے۔ کشمیر کی سر

زمین کی پیمائش کرنے والے یعنی سروے کرنے (Survey) کے کارکنوں (۲) نے اس کا حدود اربعہ چار گوشوں پر مقرر کیا ہے۔ مشرقی گوشہ سناسرناگ پہاڑ پر جو دچھن پارہ پرگنہ میں شیشرم ناگ سے ایک کروہ اُوپر کی جانب ہے۔ اور مغربی گوشہ کی اوڑی پہاڑ پر اور شمالی گوشہ دل پورہ پہاڑ پر، جو گوریس قلعہ سے دو کروہ ہے، اور جنوبی گوشہ کوثر پہاڑ کی چوٹی پر نصب ہے، ایک سو نو میل ہے اور اس کی چوڑائی ہرموکھ پہاڑ سے کوثر ناگ پہاڑ تک ساڑھے ساٹھ میل اور اس کا مربع وکم وکسر رقبہ پانچ ہزار ایک سو بیالیس میل اور ہر میل پانچ ہزار دو سو ستر فٹ جو ایک ہزار سات سو ساٹھ گز کے برابر ہوتے ہیں۔ جدید مورخ مسٹر انس (۳) صاحب اپنی کتاب میں اسکی لمبائی ویری ناگ کی حدود سے شیبوہ پورہ تک ایک سو میل اور اوسط درجہ تک اس کی چوڑائی پچیس میل اور اس کا رقبہ چار ہزار پانچ سو مربع میل لکھتا ہے۔ مسٹر ڈرو صاحب (۴) نے اس کی لمبائی اسّی میل اور اس کی چوڑائی پچیس میل لکھی ہے (۵)۔

## ہندو مورخین کے بقول اس کی وجہ تسمیہ

نیل مت پوران کا مؤلف لکھتا ہے کہ اوّلین زمانے میں کشمیر بلند و بالا پہاڑوں کے درمیان ایک وسیع اور گہرا تالاب (۶) تھا۔ جو صاف وشفاف پانی سے مالا مال تھا کیونکہ اس میں برف اور بارش اور دریاؤں، ندی نالوں اور چشموں کا پانی جمع ہوا کرتا تھا اور پہاڑوں کے باہمی ملاپ سے پانی کے باہر جانے کے راستے بند تھے۔ اس زمانے میں ہر موکھ پہاڑ کی چوٹی پر ماتا ستی یعنی پاروتی جو شری مہادیو جی کی کامل قوت ہے قیام پذیر تھیں،

اور کشتی پر سوار ہو کر کوثر ناگ پہاڑوں کی چوٹیوں تک سیر و تماشا کے لئے جایا کرتی تھیں۔ لازمی طور پر اس تالاب کا نام ستی سر رکھا گیا تھا کیونکہ سنسکرت زبان میں سر تالاب کو کہتے ہیں۔ ان ہی ایام میں ستی سر تالاب میں جلد یو نامی ایک دیو رہتا تھا جو بہت طاقتور، ہیبت ناک، دلاور اور قوی پیکر تھا۔

بزور و توانا چو اہر یمنی

بآدم خوری ریمنی پر فنی

(طاقت و توانائی میں اہرمن کی مانند تھا اور آدم خوری میں ایک مکارِ فریب کار!)

چو عفریت خون خوارہ پر شکوہ

قوی ہیکلی ھمچو یکپارہ کوہ

(خبیث بھوت کی مانند ایک خوفناک، خونخوار اور پہاڑ کی طرح قوی پیکر!)

یہ بے مانند دیو اپنی زندگی کے اوائل میں بڑی عاجزی اور انکساری کے ساتھ برہما کی عبادت کرتا تھا اور ان کی بارگاہ میں قربت حاصل کر کے اسے یہ انعام ملا تھا کہ پانی میں کوئی تجھے قتل کرنے میں غالب نہیں ہوگا۔ اس کے بعد سے وہ دیو بد خصلت ستی سر جھیل میں ہی رہنے لگا اور پہاڑوں کی چوٹیوں تک اکثر و بیشتر حملے کرتا رہا اور اس طرح سے ہر جگہ وہ جانداروں کو ہلاک و نیست و نابود کیا کرتا تھا اور وہ دیو سیاہ بہت عرصے تک مخلوق کو اذیت دینے اور ظلم کرنے کے عمل میں مشغول رہ کر تباہی و خرابی کا باعث بنا رہا۔

پھر ایک دفعہ برہما کا پوتا جس کا نام کشف رکھشیر تھا دنیا کے تمام اطراف کی سیر کرتا ہوا ستی سر جھیل کے نواحی میں اُترا اور اس علاقے کے پہاڑوں اور مرغزاروں کی ہوا ئی نسیم سے اس کے دل کی گلشن پھولوں کی مانند کھل اٹھا۔ گویا کہہ رہا تھا کہ۔

بخ بخ چہ مکانِ دلنشین است
بروی زمین ارم همین است

(واہ واہ! کیا ہی دل نشین مقام ہے۔ گویا زمین کے اُوپر ارم یہی ہے)

جھیل کے قریب وجوار میں کسی آدمی کو نہ پا کر اسے حیرت ہوئی اور ایک بوڑھے آدمی سے جلد بو دیو کے ظلم وستم کے ہاتھوں خرابی وتباہی کا حال سن کر اس کا دل بھر آیا اور اس نے نوبندن کے مقام پر، جو کوثر ناگ پہاڑ کے وسط میں یا ہیرہ پور کے قریب ہے، اپنی عبادت گاہ بنائی اور ایک ہزار سال تک وہاں خداوند بے مثال کی عبادت میں مشغول رہا اور اس پرغوغا دیو کو ہٹائے جانے کی التجائیں کرتا رہا۔ خداوند عظیم کی بارگاہ میں اس مرد بے ریا کی عبادت قبول ہوئی اور مراد بیان کرنے کی اجازت ملی۔ اس نے دیو جلد بو کو ہٹانے کے لئے مدد کی درخواست کی۔ عالم خیر وشر کے کارگذاروں کے خداوند برھما کے دربار سے بشن اور مہشیر کے ہمراہ اسے اس بدسرشت دیو کو قتل کر دینے پر مامور کر دیا گیا۔ تینوں بزرگوں نے بہت عرصے تک دیو خونخوار کے ساتھ جنگ کی لیکن اسے قتل نہ کر پائے۔ جب بھی دیو مغلوب ہو کر شکست کھاتا تو پانی کے نیچے چھپ جاتا۔ جھیل اسکی پناہ گاہ تھی اور برھما کی دعا اسکا محافظ۔ آخر کار شری بشن جی نے بارہ مولہ کے قریب پانی نکال دینے کی جگہ مقرر کی اور سودرشن چکر کے اسلحہ سے سخت چٹانوں والے پہاڑ کے ٹکڑے ٹکڑے کر کے پانی کے بہہ جانے کی جگہ نکال دی۔ جھیل کا پانی جب نیچے آ گیا تو جلد بو دیو زمین کی تہ میں چھپ گیا اور بشن اور مہشیر بھی اپنی جگہوں میں چلے گئے۔ لیکن جلد بو نے پھر سے اپنی فریب کاری شروع کی اور پانی اسکی جگہ سے پھر سے جوش مارنے لگا جس سے زمین کی سطح ڈھک گئی۔ کشف رکھشیر نے پھر سے خداوند بے نیاز کے حضور میں عاجزی کی۔ دعا قبول ہونے کے نتیجے میں شکتی یعنی

خدائے تبارک وتعالیٰ کی قدرت شارک، جسے کشمیری زبان میں ہاری (ہار) کہتے ہیں، کی شکل میں سمیر پہاڑ سے اس کا ایک ٹکڑا چونچ میں لئے ہوا میں اُڑتی ہوئی آئی اور اسے جلد بو کی کمین گاہ پر ڈال دیا جس سے وہ دیو دب کر مٹ گیا اور پانی کا اُبل آنا بند ہو گیا۔ پہاڑ کے اس ٹکڑے کو اب ہاری پربت کہتے ہیں اور شارکا بھگوتی کی جگہ اسی جگہ پر مانی جاتی ہے۔ چنانچہ ایک خاص دن پر ہندوؤں کا ہجوم وہاں جاکر پرستش کرتے ہیں۔

جلد بو کے مٹ جانے کے بعد جب پانی اُتر گیا تو پہلے آڈون نامی کریوہ نمودار ہوا (آڈ یعنی اوّل اور ون یعنی زمین) یعنی اس مقام کو اوّل زمین کا نام دیا گیا۔ غرض جب اس گل زمین کی ہموار سطح نمایاں ہوئی اور بہت سی نہریں اور خوشگوار پانی اور بے شمار چمن اور سبزہ زار نمودار ہوئے تو دیوتاؤں یعنی فرشتوں نے اس جگہ کو پسند کر کے ہر ایک نے اپنی خواہش کے بموجب ہر مقام پر اپنی اپنی جگہ مقرر کی۔ چنانچہ آج تک اس کے استھان (۷) اور یاترا کے مقام بعض جگہوں پر مقرر ہیں۔

اس کے بعد کشف رکھشیر نے اس مسرت افزا ملک میں قیام کر کے مختلف جگہوں سے پاکیزہ اخلاق والے برہمنوں کو لاکر آباد کیا اور اس پھولوں کی سرزمین کا نام کشف مرکھ دیا۔ سنسکرت زبان میں مرگھر کو کہتے ہیں۔ یعنی اس ملک کا نام اس نے کشف کا گھر رکھ دیا۔ وقت گذرنے کے ساتھ ساتھ اسے کش مر کہا جانے لگا اور زبان کی تبدیلی کے اثرات سے کشمیر کے نام سے مشہور ہوا۔

مُلّا احمد (۸) (رتن پوران کے مترجم) نے بیان کیا ہے کہ امرت ساگر نامی ایک بزرگ رکھشیر بند اچھل (۹) پہاڑ پر خداوند یکتا کی عبادت میں مشغول تھا۔ اس زمانے میں کاشم ویر نام کا ایک پہلوان بہادری اور دلاوری میں بڑی شہرت رکھتا تھا، جو ایک سومن کا

وزنی پتھر ہاتھ میں لئے پھرتا تھا۔ ایک دن یہ طاقتور پہلوان شکار کھیلنے کیلئے پہاڑ کی طرف نکل پڑا تھا تو بھوکا پیاسا اسی رکھشیر کے پاس پہنچا اور بڑی تند مزاجی اور سختی کے ساتھ اس سے پانی طلب کیا۔ رکھشیر نے اسکے ہاتھ میں ڈول دیا اور کنوئیں کی طرف اشارہ کیا۔ پہلوان نے کنوئیں میں ڈول ڈال دیا اور پوری بہادری و طاقت کے ساتھ بھی وہ ڈول کو کنوئیں سے واپس نہ کھینچ سکا۔ سخت حیران ہوا اور رکھشیر کے پاؤں اور ہاتھوں کو چومتے ہوئے بہت عاجزی اور انکساری کا اظہار کیا۔ رکھشیر نے آواز دی: ''اے ماں! اس پہلوان کو پانی دو۔'' کاشم ویر نے ڈول کو کنوئیں سے باہر کھینچ لیا اور ایک سو ڈول کی جگہ ایک ہی ڈول بھر کے پانی پی کر سیر ہوا۔ اس کے بعد اس نے رکھشیر کی خدمت گذاری کیلئے وہی پر قیام کیا اور سخت ریاضتوں میں مشغول ہوا اور ہمیشہ بغیر کھائے پیئے اور بغیر نیند کے رب الارباب کی بندگی اور رکھشیر کی خدمت میں دن گذارتا رہا۔ ایک دن اس نے اس شان و شوکت والے رکھشیر کی خدمت میں عرض کیا کہ گذشتہ زمانے میں نے بہت سے جرم اور گناہ کئے ہیں جن کا کوئی شمار نہیں، ان کی معافی مجھے کیسے ملے گی؟ رکھشیر نے کہا اگر تم خاص دن پر سوامی امر ناتھ کے طواف کو جاؤ گے اور وہاں اپنے گناہوں کی معافی چاہو گے تو گناہوں سے ویسے ہی پاک وصاف ہو جاؤ گے جیسے کہ وہاں یخ کا پیکر صاف و پاک ہے۔ اس کے بعد کاشم ویر نے اس فقیر کے ساتھ امر ناتھ کا طواف کرنے کا پختہ ارادہ کیا اور جنوبی پہاڑوں کی راہ سے امر ناتھ پہاڑ پر پہنچا اور مخصوص دن میں وہاں کے رسوم کو انجام دے کر دل کا اطمینان پایا اور غیب سے اپنے جرموں کے معاف ہونے کی خوشخبری بھی پائی۔ اس کے بعد کشمیر کے پہاڑوں پر واقع تمام تیرتھوں کا طواف کر کے بارہ مولہ میں کوٹی تیرتھ پر پہنچا اور رکھشیر سے کوٹی تیرتھ کی خاصیتوں کے بارے میں سوال کیا۔ رکھشیر نے جواب دیا کہ ستی سر کے درمیان ایک ہزار تیرتھ موجود ہیں اور کوٹی تیرتھ میں نہانے سے ایک ہزار تیرتھوں کا ثواب

ملتا ہے۔ کاشم ویر نے پوچھا: کیا کوئی ان تیرتھوں کو اپنی آنکھوں سے دیکھ سکے گا؟ رکھشیر نے کہا: اگر پانی نکال دیا جائے تو البتہ ہر کوئی ان تیرتھوں کی زیارت کرنے میں کامیاب ہوگا۔ کاشم ویر نے کہا: دنیا میں کوئی ایسا آدمی ہے جو اس پانی کو ختم کر دے؟ رکھشیر نے کہا: اگر تم خدائے قادر بے نظیر کی ایک ہزار سال تک عبادت کرو گے تو یہ ناممکن امر تم پر آسان بن جائیگا۔ تب کاشم ویر قیصر ناگ پہاڑ پر ایک ہزار سال کے عرصے تک عبادت میں مشغول ہو گیا۔ اپنی عبادت گاہ میں ایک دن اس نے پانی کے برتن میں ایک چوہے کو سوراخ کرتے دیکھا اور پانی برتن سے سوراخ کی راہ سے باہر آ گیا۔ کاشم ویر نے اسے غیبی اشارہ جان لیا اور اپنی ذاتی قوت سے اس نے بارہ مولہ میں کھادہ نیار کے مقام پر نقب لگا کر ایک سوراخ کیا اور خدائے قدیر کی قدرت سے پانی اس سوراخ سے بہنا شروع ہوا، یہاں تک کہ ستی سر سوکھ گئی اور زمین کی سطح دکھائی دی۔ اس سوراخ کی اندرونی چھت سندر سین کے عہد تک موجود تھی۔ اس عہد میں بھونچال کی وجہ سے لڑھک گئی اور سندمت نگر کا شہر سیلاب کی زد میں آ گیا۔

جب کاشم ویر اس جنت نظیر ملک میں آیا تو یہاں کے سارے تیرتھوں کے طواف سے مستفید ہونے کے بعد اس نے اسی ملک میں سکونت اختیار کی۔ اس کے بعد ہندوستان کے تمام رکھشیر اور زاہد و عابد لوگ، جو اس زمانے میں تھے، یہاں آ کر سخت ریاضتوں کو انجام دینے میں مشغول ہو گئے۔ مختلف اطراف سے برہمن اور عام لوگ، جو یہاں آ چکے تھے، یہیں رہنے لگے۔ چونکہ اس سرزمین کی شہرت کاشم ویر کی ہمت سے ہوئی تھی اس لئے اس زمانے کے لوگوں نے اس ملک کا نام کاشی مر رکھا اور زمانے کے گذرنے کے ساتھ ساتھ اس کا نام کشمیر ہو گیا۔ **واللہ اعلم بحقائق الامور**۔

بہر حال مندرجہ ذیل مورخین کے بقول اور ان کی تائید نیز موجود علامتوں اور

نشانیوں کا معاینہ کئے جانے کے نتیجے میں معلوم ہوتا ہے کہ پھولوں کی یہ سرزمین اوّل اوّل پانی سے آباد تھی اور اس زمانے میں لوگ پہاڑوں کی چوٹیوں پر سکونت پذیر تھے اور اطراف میں کشتیوں کے ذریعہ سے آیا کرتے تھے۔ چنانچہ ہرموکھ پہاڑ اور کوثر ناگ اور دچھن پارہ اور لولاب وغیرہ کے سرد مقامات میں اکثر جگہوں پر نوکار بندن موجود ہیں۔ کیونکہ اگلے زمانے میں ملاح لوگ پتھروں کے بیچ میں سوراخ کر کے اپنی کشتیوں کو ان سے باندھ کر محفوظ و مضبوط رکھتے تھے اور اس سوراخ کو نوکا بندن کہتے ہیں۔ سنسکرت زبان میں نوکا کشتی کو کہتے ہیں اور بندن کشتی باندھنے کی جگہ کو۔ بعض پہاڑوں پر پتھر کی اوکھلیاں، جو کثرت استعمال سے صاف اور چکنی ہو چکی ہیں، پانی پینے کی جگہوں پر موجود ہیں اور بعض جگہوں پر دقّت نظر سے معلوم ہو جاتا ہے کہ پانی یہاں تک موجود تھا۔

## کشمیر کی خصوصیات

کشمیر کی سرزمین ایک دل آویز باغ اور بے نظیر چمن ہے، جسے اگلے بزرگوں اور فضلا نیز دانشمند علماء و حکماء نے تمام دنیا کے ممالک و مقامات کے مقابلے میں پسندیدہ خصوصیات کی بنا پر جنت نظیر کا نام دیا ہے۔ حق تو یہ ہے کہ دل نشین خصوصیتیں اس گل زمین سے تعلق رکھتی ہیں وہ کسی اور ممالک میں نہیں پائی جاتیں۔

اول............اس ملک کی ہوا، جو بے حد معتدل ہے، لطافت و پاکیزگی میں روح کیلئے راحت رسان اور صحت، مزاج نیز خوشی و مسرت اور کشایش دل کا موجب ہے۔ موسم گرما کی حرارت میں آدمی کو پنکھا استعمال کرنے کی ضرورت نہیں ہوتی اور جاڑے کی سردی میں

برف و بارش کی کثرت کے باوجود بھی پوستین پہننے کی خواہش نہیں ہوتی بلکہ فطری حرارت اور طبعی مزاج ہی عمل پیرا ہوتا ہے۔

ہوایش ز خلد آمدہ بے خلاف　　دہد مردہ را جان بہ تن بی گزاف
ہمہ سال باشد ہوا معتدل　　نوائے عنادل برد غم ز دل

(اس کی ہوا یقینی طور پر جنت سے آتی ہے جو بلا کسی مبالغہ کے مردوں میں جان ڈال دیتی ہے۔ یہاں کی ہوا سال بھر معتدل ہوتی ہے اور بلبلوں کا شور آدمی کے دل سے غم واندوہ کو مٹا دیتا ہے)

دوم...... پھولوں کی اس سرزمین کا پانی جو پر برف پہاڑوں اور عمدہ چشموں اور جھیلوں سے آ کر نہروں اور ندیوں کی راہ سے ہمیشہ رواں اور جاری رہتا ہے بلاشک آب حیات کی مانند عیش جاودانی کے حق میں کامرانی کی بشارتیں دیتا ہوا مردوں کو زندگی کی نوید پہنچاتا ہے اور کمال لطافت وصفا اور پاکیزگی سے ملک کو سیراب اور لوگوں کو شاداب کر دیتا ہے:

بہ بین آب این بوستان خوشگوار　　لطیف و روان بخش چون رُویِ یار

(اس خوشگوار بوستان کے پانی کو دیکھ! کس قدر لطیف ہے، زندگی بخش ہے، محبوب کے چہرے کی طرح!)

سوم...... اس ملک کی پوری سطح پر اطراف واکناف میں کوہساروں میں، ندی نالوں، دریاؤں اور چشموں کے کنارے ہر جگہ پر سبز و شاداب سبزہ زار زمرد گون قالینوں کی مانند بچھے اور پھیلے ہوئے ہیں جو کمال تازگی اور شادابی و سرسبزی کی وجہ سے بہت خوشنما اور روح افزا ہیں:

ز خانہ چون بہ صحرا سر نہادی　　میان سبزہ و گل اوفتادی

(جب تم گھر سے صحرا کی طرف چل نکلو گے تو سبزہ زاروں اور پھولوں میں گرتے پڑتے چلو گے)

چہارم......... اس گل زمین کے باغات، اگلے بادشاہوں کے تعمیر کردہ ایوانوں اور جھروکوں نیز نہروں، آبشاروں اور فواروں، خیابانوں اور چمن زاروں کی تنظیم و ترتیب اور درختوں، پھولوں اور سبزہ زاروں کی کثرت کی وجہ سے بہار فرخار (۱۰) کے لئے رشک افزا اور دیکھنے والے کے لئے نشاط انگیز ہیں:

بگلزار کشمیر خوش خوش گل است    ہزاران فزون خوشنوا بلبل است

(کشمیر کے گل زار میں عمدہ عمدہ پھول ہیں۔ ہزار داستانوں کی کثرت ہے اور خوش آواز بلبلیں چہکتی رہتی ہیں)

پنجم.........اس گلشن کے گرد بے شمار پہاڑ حصاروں کی طرح احاطہ کئے ہوئے ہیں جن کی فضا مسرت افزا اور اطراف دلکش ہیں اور اللہ تعالیٰ کی قدرت کی آبیاری کی وجہ سے آباد اور کمال سرسبزی و تازگی سے سرسبز و شاداب ہو کر اس گلستان کے حفظ مراتب کی خاطر پائے استقامت کے ساتھ کھڑے ہیں اور قدرت ازلی کے پنکھوں سے دل کشا ہواؤں اور روح افزا خوشبوؤں کو ہر طرف پھیلاتے اور پہنچاتے رہتے ہیں۔

زرشک سبزہ زارِ کوہ کشمیر    زغم فیروزہ در معدن شود پیر

(کشمیر کے پہاڑوں میں موجود سبزہ زاروں پر رشک کرتے ہوئے فیروزہ کان میں مارے غم کے بوڑھا ہو جاتا ہے)

چھٹی.........اس ملک کے پہاڑی سبزہ زار ہوا کی تازگی اور فضا کی پاکیزگی سے عیش پسند اقبال مند لوگوں اور صاحب نظر دانشمندوں کی خوشیوں کو دوبالا کرتے ہیں۔

اگر در مر غزارش میکنی جای دہد بوسہ دو صد گل بر کفِ پای

(اگراس کے سبزہ زاروں میں ٹھہرو گے تو سینکڑوں پھول تمہارے تلوؤں کو چومیں گے)

ساتویں.........اس جنت نشان ملک میں بے شمار قسموں کے میوہ دار درخت باغوں میں، نخلستانوں میں، صحراؤں اور ٹیلوں میں رس دار پھلوں اور خوشگوار میوؤں سے لدے رہتے ہیں۔

چو جنت ہمہ مثمر اشجار اوست رواں زیر اشجار انہار اوست

(جنت کی طرح اس کے درخت سراسر میوہ دار ہیں اور ان درختوں کے نیچے نہریں ہمیشہ جاری رہتی ہیں)

آٹھویں......بے شمار اقسام کے غلہ جات، جو اس ملک کی پیداوار ہیں، ہمیشہ سستے اور کثرت کے ساتھ میسر و مہیار رہتے ہیں۔ خاص کر چاول جسکی یہاں کافی کاشت ہوتی ہے اور ہر خاص وعام کی غذا ہے۔

نویں.........اس ملک کے جنگلوں اور پہاڑوں میں وحشی جانور اور پرندوں کا شکار بہت ہوتا ہے۔ چنانچہ انگلستان کے شائقین کافی سرمایہ خرچ کر کے اس ملک کے سیر و شکار سے لطف اٹھا کر اپنے دوستوں کے لئے کافی تحائف ہدیہ کے طور پر اپنے ساتھ لے جاتے ہیں۔

دسویں......خونخوار درندے اور زہریلے کیڑے جیسے سانپ اور بچھو اور مگر مچھ اور نہنگ (۱۱) وغیرہ اس ملک میں مطلق نہیں ہوتے اور یہاں کے لوگ ان سے محفوظ ہیں۔

بہشت آن جا کہ آزاری نہ باشد کسی را با کسی کاری نہ باشد

(جنت وہی ہے جہاں کوئی تکلیف نہ ہو اور کسی کو کسی کے ساتھ کوئی عمل دخل نہ ہو)

گیارہویں...... حقیقی صاحب حکمت خداوند کریم نے اس ملک کے لوگوں کو عقل و دانشمندی کے زیور سے آراستہ کر کے عقلمندی میں اور صنعت گری میں دوسرے ملکوں کے ہنرمندوں پر فضلیت و برتری عطا کی ہے۔ خاص کر پشمینہ کی صنعت میں، جو کہیں بھی اس قدر سجاوٹ کے ساتھ بنایا نہیں جاتا۔ اور وقت کے بڑے بڑے لوگ اس کے لباس سے آراستہ ہو کر قدرومنزلت پاتے ہیں اور اسکی تجارت سے مستفید اور بہرہ مند ہو جاتے ہیں۔ اس کے علاوہ اپنی تیز ہوشی سے اور بھی بہت سی صنعتوں کو وجود میں لے آتے ہیں۔

بارہویں......... اس ملک کی خوبصورتی اور حسن، صباحت و ملاحت میں حدکمال کو اور خوبی و دلکشی میں لطافت واعتدال کی انتہا کو پہنچ چکے ہیں:

نظامی (۱۲)

یکی گفتا کہ در اقصای کشمیر　　نباشد از لطافت ہیچ تقصیر

مقام خوبرویان آن زمین است　　بہ خوبی رشکِ فردوس برین است

(ایک آدمی کہتا تھا کہ کشمیر کے مناطق میں لطافت و پاکیزگی میں کوئی کمی باقی نہیں رہ گئی ہے۔ وہ سرزمین حسین وجمیل لوگوں کی جگہ ہے اور فردوس برین بھی وہاں کی خوبصورتی پر رشک کرتا ہے)

سعدی (۱۳)

آن کیست کہ میرود بہ نخچیر　　پای دل دوستان بہ زنجیر

ہم شیوۂ جادوان بابل　　ہمشیرۂ گلرخان کشمیر

(یہ کون شکار کو جارہا ہے کہ دوستوں کے دل کو پابہ زنجیر کر کے جارہا ہے۔ بابل کے جادوگروں کا ہم کرشمہ ہے اور کشمیر کے گل رخوں کا ہم سنگ!)

جامی (۱۴)

ز کشمیری بتان دین برانداز دلم بتخانہ کشمیر گشتہ

(دین کو درہم برہم کرنے والے کشمیری بتوں سے میرا دل کشمیر کا بت خانہ بن گیا ہے) ]

غنی (۱۵)

کشمیر از صباحت رونشگر جمال است حسن سیاہ آن جاگر ہست خال خال است

(صباحت میں کشمیر حسن و جمال کا رونشگر ہے۔ حسن سیاہ اگر وہاں ہے بھی تو خال خال ہے)

تیرہویں...... قدیم پورانوں اور بڑی بڑی کتابوں میں لکھا ہے کہ سابق زمانے میں کشمیر دیوتاؤں کی سیرگاہ تھی اور وہ اکثر یہاں آکر ٹھہرا کرتے تھے۔ ان کی نشانیاں ہر جگہ پائی جاتی ہے۔

چودھویں...... جماعت اسلام کے اکثر اولیائِ عظام نے اس عالی مرتبہ ملک میں عبادت و ریاضت سے نفس کی پاکی اور باطن کی صفائی پائی اور ان کے روضے اور عبادت کے مقامات ہر جگہ فیض و کشایش کی مقدس جگہیں ہیں۔

پندرہیوں...... پھولوں کی اس سرزمین کے جنت نظیر ہونے کی بنا پر متقدمین علماء و فضلا و شعراء اور اگلے فصیح زبان ادیبوں نے اس کی تعریف میں روشن موتی اور چمکیلے جواہر پروئے ہیں اور نظم و نثر کی زبان میں داستانیں لکھی ہیں۔ چنانچہ سلیمؔ اور کلیمؔ اور قدسیؔ اور خصالیؔ اور ظفر خان احسنؔ (۱۶) اور میر الٰہی اور طغرا (۱۷) اور عرفی (۱۸) اور فیضی (۱۹) وغیرہ کی مثنویاں اس سرزمین کی توصیف و تعریف میں یادگار مثنویاں ہیں:

شیخ شہاب الدین سندی:

کَانَ انگشمیر لِسکَانہا جَنّتُ عَدنِ ہِیَ لِلمُومِنِین

قَدْ کَتَبَ اللّٰہُ عَلٰی بَابِہَا مَنْ دَخَلَہُ کَانَ مِنَ الْاٰمِنِیْن

(کشمیر وہاں کے رہنے والے باایمان لوگوں کیلئے جنّت کی مانند ہے۔ گویا اللہ نے اس کے دروازوں پر لکھ دیا ہے جو اس میں داخل ہوا وہ سلامتی پانے والوں میں ہے)

قطب (۲۰):

ہزار ران ناز اے کشمیر بر باغ جنان داری
کہ در فصل خزان ہم خوش بہار زعفران داری
ہزاران گل بود فصل خزان در باغ کشمیرم
چہ می نازیٰ تو ای کابل ہمین یک ارغوان داری

(اے کشمیر! باغ جنت پر تجھے ہزار ہا بار فخر حاصل ہے کیونکہ خزان کے موسم میں بھی تو زعفران کی بہار کے عمدہ جلوے دکھاتا ہے۔ موسم خزان میں میرے کشمیر کی وادی میں ہزاروں پھول کھلے رہتے ہیں اور اے کابل! تو کس پر اتراتا ہے تمہارے پاس تو بس ایک ہی ارغوان رہتا ہے)

شاہ جہان (۲۱):

خورد آدم گندم از جنت کشیدندش برون
من کہ خوردم آشِ جو یارب بہ کشمیرم رسان

(آدم نے گیہوں کھالی تو اسے جنت سے نکال دیا گیا۔ میں نے جو کا پانی پیا ہے تو اے میرے رب! مجھے کشمیر بھیج دے)

طغرا:

از شاہ جہانگیر دم نزع چو جستند باخواہشِ دل گفت کہ کشمیر و دگر ہیچ

(جان کنی کے وقت جب بادشاہ جہانگیر سے سوال کیا گیا تو دلی خواہش کے ساتھ کہا کہ مجھے سوائے کشمیر کے اور کچھ نہیں چاہیئے)

ظفر خان احسن:

کشمیر مگو رشک پری خانہ چین است　　　القصّہ بہشتی است کہ بر روی زمین است

(مت کہو کشمیر چین کے پری خانہ کے لئے باعث رشک ہے۔ خلاصۂ کلام یہ ہے کہ ایک جنّت ہے جو روئے زمین پر ہے)

عرُفی:

ہر سوختہ جانی کہ بہ کشمیر در آید　　　گر مرغ کباب است کہ باباں و پر آید

(ہر سوختہ جان جو کشمیر میں داخل ہوگا اگر بھنا ہوا پرندہ بھی ہوگا تو اس کے بال و پر نکل آئیں گے)

قُدسی (۲۲):

چو کشمیر افتخار ہر دیار است　　　بہشت و سلسبیلش آب لار است

(چونکہ کشمیر ہر جگہ کیلئے مایۂ افتخار ہے یہاں کی بہشت اور سلسبیل لار کا مقام اور وہاں کا پانی ہے)

فیضی:

نسبت کشمیر را با روضۂ رضوان چہ کار　　　این بود باغ سلیمان آن بود باغِ جنان

(کشمیر کی نسبت کا روضۂ رضوان کے ساتھ کیا تعلق۔ یہ تو سلیمان کا باغ ہے اور وہ جانوں کا)

کلیم (۲۳):

چرا آشفتہ ای چرخ دلگیر　　　تماشا کن کہ کشمیر است و کشمیر

پر از گل دشت و کوہ و راغ بینی    ہزار ان باغ را یک باغ بینی

(اے رنجیدہ آسمان تو کیوں پریشان ہے؟ یہ دیکھو یہ ہے کشمیر۔ دیکھو لو میدان اور پہاڑ اور جنگل پھولوں سے اٹے پڑے ہیں۔ دیکھ لو ایک ہی باغ میں ہزاروں باغ سمٹ آئے)

مندرجہ بالا خصوصیات کے علاوہ اس ملک کی اور بھی کیفیتیں ہیں جن کی تفصیل دو ابواب میں بیان کی جائیگی۔ پہلا باب، قدرتی مقامات کی تفصیل کے بیان میں اور دوسرا باب واقع ہونے والی نشانیوں اور آثار کے بیان میں ہے۔

# یادداشتیں

(۱) ایک فرسخ اٹھارہ ہزار فٹ ہوتا ہے۔اس حساب سے ایک فرسخ ڈھائی میل کے برابر ہوتا ہے۔

(۲) یعنی سروے آف انڈیا محکمہ کے کارکن۔

(۳) لارنس۔

(۴) فیڈرک ڈرو۔

(۵) یہی رائے صحیح ہونے کے قریب ہے۔

(۶) کشمیر کے قدیم مؤرّخ جیسے کلہن پنڈت، سوم پنڈت، شری ور اور پراج بھٹ اپنی تواریخ میں کشمیر کی وجہ تسمیہ اور اس کی آبادی کے بارے میں یہی لکھتے ہیں۔ مشہور چینی سیاح ھیون سانگ جو ساتویں صدی میں کشمیر میں داخل ہوا اس روایت کو ایک عوامی عقیدہ کہتا ہے لیکن جدید تحقیق اس داستان میں تھوڑی حقیقت کے وجود کے قائل ہیں ،اور کہتے ہیں ممکن ہے کہ قدیم زمانے میں کشپ مرنام کا آدمی رہا ہو جس نے قدرتی سہولتوں سے استفادہ کر کے پانی کو اس خطہ دلپذیر سے باہر نکال دیا ہو۔اسی کے نام سے یہ ملک پہلے کشپ مر کہلایا جو زمانہ گزرنے کے ساتھ کشمیر ہو گیا ۔ برنیر پانی کے اخراج کو زلزلے کا سبب بتاتا ہے جو کسی زمانے میں اس پہاڑ کے ٹوٹ جانے کا باعث ہوا جو بارہ مولہ کے پاس دکھائی دیتا ہے۔صاحب انسائکلو پیڈیا برٹانیکا کے بقول ھیون سانگ کے زمانے میں کشمیر نام کا اطلاق کابل ، پنجاب اور گندھار کے علاقوں پر ہوتا تھا۔سولہویں صدی میں ملکی مصلحتوں کے پیش نظر چغتائی بادشاہوں نے بھی کابل اور غزنی کو کشمیر میں شامل کر کے ایک ہی ملک بنا کر رکھا تھا۔ان ایام میں کشمیر کا دارالخلافہ کابل تھا۔ یہاں پر حسن کی مراد وادی کشمیر سے ہے۔اس ملک کے لوگوں میں یہ لفظ کشیر کے نام سے جانا جاتا ہے۔

(۷) یعنی متبرک جگہیں اور زیارت گاہ۔

(۸) مُلّا احمد نواسہ ہے مُلّا احمد علامہ کا۔سلطان زین العابدین کی مصاحبت اور ندیمی میں گستاخ بھی تھا اور اس کا یار دمساز بھی۔شعر و سخن میں بلند ذہن رکھتا تھا۔تاریخ وقایع کشمیر اور ترجمہ مہابھارت وغیرہ کتابیں تایف کی ہیں۔کسی نا معلوم جگہ پر آپ کی قبر مزار سلاطین میں ہے۔

(۹) بندھیاچل ایک پہاڑی سلسلہ ہے ہندوستان کے صوبہ وندھیا پردیش میں۔

(۱۰) ترکستان میں ایک شہر ہے جو حسن اور خوبصورتی میں معروف ہے۔

(۱۱) ہندی زبان میں نہنگ۔

(۱۲) نظامی گنجوی (۵۰۷۔۵۹۷ھ) فارسی زبان کا ایک مسلم الثبوت استاد ہے۔ اس کی بہت سی تصنیفات ہیں جن میں سکندر نامہ مشہور ہے۔ اس میں اس نے بادشاہ سکندر کی تاریخ نظم میں لکھی ہے۔ اس کی کتابوں کا مجموعہ جو خمسہ کہلاتا ہے ان کتابوں پر مشتمل ہے مخزن اسرار، لیلیٰ مجنون، خسرو شرین، ہفت پیکر اور سکندر نامہ۔ ان کتابوں کو بڑی قدر کی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے۔

(۱۳) آپ کا نام تھا مصلح الدّین اور سعدی لقب تھا۔ ۵۷۱ھ میں شیراز میں پیدا ہوئے اور ۶۹۱ھ میں وہیں پر وفات پائی۔ تیس سال تک سیاحت کی۔ کئی کتابوں کے مصنف ہیں جن میں نثر میں گلستان اور نظم میں بوستان نامی کتابیں اپنا جواب نہیں رکھتیں اور کسی نے آج تک ان کا اور بالخصوص اوّل الذکر کتاب کا جواب نہیں لکھا۔

(۱۴) عبدالرحمٰن جامی فارسی زبان کے مشہور شاعر تھے۔ وہ ۲۳ رشعبان ۸۱۷ھ (۷رفروری ۱۴۱۴ھ) میں ہرات کے مضافات میں جام نامی گاؤں میں پیدا ہوئے اور ۸۱ برس کی عمر میں ۱۸ رمحرم ۸۹۸ھ (۹رنومبر ۱۴۹۲ھ) میں مدینہ منورہ کی راہ میں اس جہانِ فانی سے رحلت کی۔ آپ کی تصنیفات میں سے عربی میں شرح جامی اور فارسی میں کلیات جامی، یوسف زلیخا، تحفہ الاحرار، شواہد النبوۃ، نفحات الانس، لیلیٰ مجنون اور بہارستان بہت مشہور ہیں۔

(۱۵) آپ کا نام تھا محمد طاہر اور تخلص غنی۔ کشمیر کے ایک معروف شاعر تھے۔ زمانے کے یکتا شاعر ملاّ محسن فانی سے فیض پایا۔ غنی عشائی خاندان سے منسوب ہوتے ہیں۔ از حد استغنا کے مالک تھے۔ ایک دیوان یادگار چھوڑا ہے جو کافی وقت سے لکھنوں کے مطبع نولکشور سے چھپ چکا ہے۔

(۱۶) ظفر خان احسن جن کی وفات ۱۰۷۳ھ میں (۱۶۶۲ء) ہوئی، شاہجہان بادشاہ کے امراء میں سے تھے۔ تین ہزاری منصب پر فائز تھے۔ بیشتر عمر کشمیر کے حاکم رہے۔ شاہ جہان نامہ کے مصنف عنایت خان کے والد ہیں۔

(۱۷) مغلیہ عہد کے شاعروں میں سے ہیں۔ جہانگیر بادشاہ کے عہد میں ہندوستان سے کشمیر آئے۔ وفات کے بعد درگجن میں دفن ہوئے۔

(۱۸) نام تھا جمال الدین اور تخلص عرفی۔ اکبر بادشاہ کے زمانے میں اپنے وطن شیراز سے ہندوستان چلے آئے اور ۳۶ رسال کی عمر میں ۹۹۹ھ میں لاہور میں وفات پائی اور وہیں دفن ہوئے۔ آپ کے مختلف تصانیف ہیں لیکن ان میں سے آپ کا دیوان جو قصائد اور ابیات پر مشتمل ہے بہت مشہور ہے۔

(۱۹) عرفی کا ہمعصر تھا اور جلال الدین اکبر کے زمانے میں ملک الشعراء کا خطاب پایا تھا۔ ہندوستانیوں میں فیضی دوسرا آدمی ہے جس نے اہل زبان کی مانند فارسی میں شعر کہے ہیں۔ نام ابوالفیض اور شیخ مبارک کا بیٹا تھا۔ ۹۴۹ر

سال کی عمر میں سال ۱۰۰۱ھ میں وفات پائی۔ اس کی تصنیفات میں سے تفسیر سواطع الالہام مثنوی نل ومن اور ترجمہ شریمد بھگوت گیتا بہت مشہور ہیں۔

(۲۰) یعنی سلطان زین العابدین۔

(۲۱) صاحبقران ثانی شہاب الدین محمد شاہ جہان پادشاہ غازی (۱۶۲۸ھ۔۱۶۵۸ء)۔

(۲۲) حاجی محمد جان قدسی مشہدی۔ شاہ جہان کے عہد میں ملک الشعراء تھا۔ تصانیف میں ظفر نامہ شاہجہانی اور بادشاہ نامہ شامل ہیں۔ لاہور میں وفات پائی۔

(۲۳) نام تھا ابو طالب اور کلیم تخلص۔ ھمدان کے بڑے شاعروں میں سے تھے۔ جہانگیر بادشاہ کے عہد میں پہلی بار ہندوستان آئے اور ۱۰۲۸ھ میں واپس وطن چلے گئے۔ کچھ عرصہ بعد دوسری بار شاہ جہان کے زمانے میں پھر ہندوستان آئے اور شاہی ملازمت اختیار کی اور ملک الشعراء کا خطاب پایا۔ آپ کی تصانیف میں ظفر نامہ شاہ جہان اور ایک فارسی دیوان ہے۔ ۱۵ر ذی الحجہ ۱۰۶۱ھ (۱۹ر نومبر ۱۶۱۵ء) میں سرینگر کشمیر میں فوت ہوئے اور درگجن کی قدیم خانقاہ کے نواح میں دفن کئے گئے۔

# پہلا باب

## قدرتی مقامات وعلامات کی تفصیل کے بیان میں

### کشمیر کی آب وہوا

جاننا چاہئے کہ مشرق سے مغرب تک کرہ زمین کو پانچ حصوں میں تقسیم کیا گیا ہے اور ہر حصہ کو منطقہ کا نام دیا گیا ہے۔ پہلا خط استوا سے شمال کی جانب سولہ ہزار میل کے فاصلے تک اور جنوب کی سمت سولہ ہزار میل تک منطقہ حارہ ہے۔ اس منطقہ میں سورج کی گرمی بڑی شدّت کی ہوتی ہے۔ منطقہ حارہ سے شمال کی طرف تین ہزار میل کی دوری تک اور جنوبی کی طرف تین ہزار میل کے فاصلے تک دو معتدل منطقے ہیں ایک جنوبی اور دوسرا شمالی۔ ان دونوں منطقوں کی ہوا گرمی اور ٹھنڈک میں اعتدال پر رہتی ہے۔ منطقہ معتدلہ کے بعد جنوب کی جانب سولہ ہزار میل کی دوری تک اور شمال کی طرف سولہ ہزار میل کے فاصلے تک سرد منطقہ ہے۔ ان منطقوں کے حدود میں سورج کی کرنیں نہیں چمکتی ہیں۔ اس لئے لازماً ان اطراف کی آب وہوا انتہائی ٹھنڈی اور برف اور پانی ہمیشہ جمے رہتے ہیں۔ چونکہ کشمیر کا خطّہ شمالی معتدل منطقہ میں واقع ہے۔ اس لئے اس ملک کی آب وہوا گرمی اور سردی میں معتدل ہے۔ البتہ بلند مقامات کی آب وہوا ٹھنڈی اور پست جگہوں کی گرم ہوتی ہے۔ نیز اگر ہوا دریا کے قریب ہو تو وہ خود بخود مرطوب ہو جاتی ہے۔ اگر شمالی ہو تو ٹھنڈی، جنوبی ہو

تو گرم اور اگر مشرقی ہو تو مرطوب اور مغربی ہو تو غلیظ ہوتی ہے اور اگر ہوا مٹی والی زمین کے قریب ہو تب بھی رطوبت والی ہوا کرتی ہے۔

چونکہ کشمیر کا مالک، جس کی زمین ایک تہائی پانی کے نیچے چھپی ہے، برفانی پہاڑوں کے درمیان ہے۔ اس لئے یہاں کی آب و ہوا برف اور پانی اور مٹی والی زمین سے پیدا ہوتی ہے۔ سردی اور گرمی اور رطوبت و غلاظت سے آب و ہوا کے اعتدال میں رہنے کی کیفیت برقرار رہتی ہے۔ اس لئے یہاں کی آب و ہوا روح کی فرحت، طبیعت کی مسرت، صالح اخلاط کی تولید اور اعضاءِ رئیسہ کو تقویت بخشنے میں رُبعِ مسکون کی تمام جگہوں میں افضل ہے۔ موسم گرما میں اتنی گرم بھی نہیں کہ پنکھا استعمال کرنے کی نوبت آئے اور موسم سرما میں برف کی فراوانی کے باوجود اتنی مضر نہیں کہ جسم کی تباہی کا موجب بنے بلکہ فطری حرارت اور طبعی مزاج کو بروئے کار لاتی ہے۔

لار اور پھاک کے پرگنے کشمیر کی عمدہ ترین جگہیں ہیں۔ چنانچہ گرمیوں کے موسم میں لار اور شالیمار کی وادیوں میں متواتر موسم بہار میں روح افزا ہوائیں مغرب سے چلنے لگتی ہیں اور دن ڈھلنے تک دل کو خوش رکھتی ہیں۔ غروب آفتاب کے بعد مشرق سے ہوائی نسیم آتی ہے جو صبح تک سلاتی اور خوشی و مسرت بکھیرتی ہے۔ موسم گرما میں اعتدال میں ٹھنڈی رہتی ہے اور موسم سرما میں اتنی ابر آلود نہیں رہا کرتی بلکہ آہک ٹینگ سے تخت سلیمان کے دامن تک برف بھی بہت کم گرتی ہے۔ اگلے بادشاہوں اور یورپی سیاحوں نے کشمیر کی جگہوں میں سے اسی علاقہ کو زیادہ اچھا جان کر سیر و سیاحت کی جگہ کی حیثیت سے قبول کر لیا ہے۔ کرنیل مور نے تو پرگنہ لار کو لالہ رُخ (۱) کا نام دیا ہے اور متقدمین شعراء نے اسکی تعریف میں مثنویاں لکھی ہیں:

لار بر کاخ ملک تا لار است برهمه پرگنات (۲) سالار است

(لار ملک کی عمارت شاہی میں وسیع ایوان ہے۔ یہ تمام پرگنوں کا سردار ہے)

## کشمیر کا موسم

اس گل زمین کا موسم گرما اور موسم سرما دونوں میں مسرت افزا ہیں۔ لیکن موسموں کے اختلاف اور گردش آفتاب کی وجہ سے اس ملک کے موسم میں مختلف اثرات واقع ہو جاتے ہیں۔

پہلا موسم بہار: فصل بہار جو چیتر اور بیساکھ اور جیٹھ کے مہینوں پر مشتمل ہے۔ اس موسم میں اس ملک کی ہوا انتہائی معتدل، لطیف، مرطوب، فرحت بخش، دل کش اور زود اثر ہوتی ہے۔ اس سے جسم کی بالیدگی، خون کا تصفیہ اور اعضاء رئیسہ (۳) کی تقویت ہو جاتی ہے۔

مصطفیٰ فرمود با صحبِ کبار تن مپوشانید از باد بہار

(حضرت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اصحاب کبار رضوان اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین سے فرمایا کہ بہار کی ہوا سے اپنے جسم کو مت چھپا کے رکھو)

اس عرصے میں پہاڑوں اور میدانوں میں بارشوں کی کثرت سے ہر جگہ ہرے بھرے سبزہ زار انتہائی تازگی و عمدگی کے ساتھ زمین سے اُگتے ہیں اور دیہات و باغات کے اطراف میں جگہ جگہ چمن زاروں اور درختوں کے شگوفے کھل کر ہوشمندوں کے ہوش اور غمزدوں کے غم کو چھین لیتے ہیں۔ اس زمانے میں شوق والے اور عیش پسند لوگ دیوانوں کی طرح شگوفہ دار درختوں کے دامن سے لپٹ کر پھولوں کے جلوؤں کا تماشا کر کے مجنوں کی

مانند مبہوت ہو کر رہ جاتے ہیں۔ ہر کوئی اعلیٰ ہو یا ادنیٰ، عورت ہو یا مرد کشتیوں کو پر تکلف فرش سے آراستہ کر کے اور کھانے پینے کی چیزوں کو ساتھ اُٹھا کر دوستوں اور رشتہ داروں کے ہمراہ کبھی شگوفہ کا تماشا دیکھنے اور کبھی توت اور خربوزے اور تربوزے کھانے کے لئے جھیل ڈل کی طرف چلے جاتے ہیں اور نالہ تیل بل اور شالیمار اور نشاط اور نسیم میں بادام کے شگوفوں، سرخ پھولوں، یاسمنوں اور تسترنوں اور کنول (۴) کے پھولوں کی بہار کا تماشا دیکھنے میں وقت گذارتے ہیں، دیوانہ وار جگہ جگہ گھومتے ہیں اور درختوں کے سایوں کے تلے داد عیش و نظارہ دیتے ہیں۔

دوسرا موسم گرما: جو ہار اور ساون اور بادرون (۵) کے مہینوں پر مشتمل ہے۔ اس موسم میں اس ملک کی ہوا اعتدال کی حد سے گرمی کی طرف مایل ہو جاتی ہے اور بعض آدمیوں کے حق میں گرمی مزاج اور جوش اخلاط کا باعث بن جاتی ہے اور بعض لوگ آنکھوں کے درد میں مبتلا ہو کر تکلیف میں رہتے ہیں۔ دوپہر کے وقت گرمی کی وجہ سے طبیعت تفریح چاہتی ہے۔ اس موقع پر موسم کا درجہ حرارت پچاسی سے پچانوے تک چڑھ جاتا ہے۔ عیش پسند لوگ ہوا خوری کے لئے دیہات کے اطراف کی طرف نکل جاتے ہیں۔ ماہ ہار کے اوائل میں کشمیر میں دن چودہ گھنٹے اور ساڑھے تیرہ منٹ لمبا ہو جاتا ہے۔ جب برسات کی بارشیں آتی ہیں تو بعض اوقات برق و گرج اور بجلی اور اولے بھی ساتھ لاتی ہیں اور دھوپ کی تیزی دن بدن گھٹ جاتی ہے۔

تیسرا موسم خزان: جو اسوج اور کتک اور مگھر (۶) کے مہینوں پر مشتمل ہے۔ اس زمانے میں ہوا کی گرمی خشکی کی طرف مائل ہو جاتی ہے۔ مسامات کے بند ہو جانے کی وجہ سے حواس میں تھوڑی سی کندی اور خشکی پیدا ہو جاتی ہے۔ لوگ اس موسم میں جاڑے کا سامان جیسے لکڑی

اور کوئلے اور سوکھی سبزیاں (۷) وغیرہ جمع کرنے کی طرف متوجہ ہو جاتے ہیں اور چھ ماہ کی مدت کے لئے مہیا رکھتے ہیں۔ موسم کے آخر میں ٹھنڈک درجہ کمال کو پہنچتی ہے اور سردی کی وجہ سے درخت سے پتے جھڑتے ہیں۔ فضا گرد آلود، پہاڑ پوشیدہ اور سورج افسردہ ہو جاتا ہے۔ اطراف کے پہاڑوں پر برف کا نزول ہوتا ہے اور لوگ گرم کپڑے جیسے پشمینہ، پٹو (۸)، پوستین، روئی دار اور روئی والے کپڑے پہنتے ہیں اور گرم جگہوں میں چلے جاتے ہیں۔ عام لوگ کانگڑی نام کی ایک چھوٹا سا آتش دان یا انگیٹھی بغل میں پکڑ کر سردی کو دُور کرتے ہیں اور جاڑے میں اسے بہت عزیز رکھتے ہیں۔ چنانچہ کہا گیا ہے کہ ۔

کانگڑی در بغل بگو چون است لیلے درکنارِ مجنون است

(بغل میں کہو تو کانگڑی کیسی ہے ایسی جیسے مجنون کے بغل میں لیلیٰ!)

کانگڑی کی گرمی سے پیٹ اور پنڈلیوں پر کشمیر کے لوگوں میں کالے داغ بلکہ ناسور اور آبلے پیدا ہو جاتے ہیں۔ بھاری کپڑوں اور لباس کے باوجود بھی وہ کانگڑی کو نہیں چھوڑتے۔

چوتھا موسم سرما: جو پوہ اور ماگھ اور پھاگن (۹) کے مہینوں پر مشتمل ہے۔ اس موسم میں ہوا میں سردی اور خشکی کا غلبہ ہو جاتا ہے۔ مسام سکڑ جاتے ہیں، حواس مکدر اور معدہ اور باہ مقوی ہو جاتے ہیں۔ لوگ اس زمانے میں دروازوں اور کھڑکیوں کو بند کر کے گرم جگہ جیسے حمام وغیرہ میں بیٹھتے ہیں۔ پوہ اور ماگ میں برف اور بارش کا متواتر ہجوم رہتا ہے۔ بعض اوقات شہر میں تقریباً دو گز بلندی تک برف جمع ہو جاتی ہے اور اس سے زیادہ البتہ ندرت سے ہی گرتی ہے۔ جھیلوں اور نہروں کا پانی جم جاتا ہے اور عجیب عجیب صورتوں میں یخ بندی نمایاں ہو جاتی ہے۔ ان دنوں میں موسم کا درجہ انجماد کے نقطے تک پہنچ جاتا ہے اور چھتوں کے کناروں پر مخروطی شکل میں منجمد پانی کے گاجر نما لٹھ جیسے لٹکے رہتے ہیں۔ بعض شدت کے

جاڑوں میں کبھی ایسا ہوتا ہے کہ زمینی بخارات آسمان کی فضا پر چھا جاتے ہیں اور ہوا میں حبس واقع ہو جاتا ہے اور اس موسم کو کشمیری زبان میں کٹ کشو کہتے ہیں۔ اس وقت اُونچے پہاڑوں کے اُوپر دھوپ ہوتی ہے اور برف و بارش موقوف اور زمین پر ہوا دھندلی اور اندوہناک ہو جاتی ہے اور یہ موسم کبھی دواڑھائی روز اور کبھی دواڑھائی ہفتے اور گاہے دواڑھائی مہینوں تک ڈسنے والا اور جلا دینے والا موسم ہوتا ہے اور سردی کے دبدبے سے درخت کی شاخوں کی ذاتی رطوبت نچوڑ کر خشک ہو جاتی ہے۔ لوگ سخت تنگ آ جاتے ہیں۔ انڈے تک جم جاتے ہیں اور پنساری گھی کی طرح تیل سیاہ کو کاغذ میں باندھ کر بیچتے ہیں (۱۰)۔ اس زمانے میں بعض اوقات دریائے بہت (۱۱) بھی منجمد ہو جاتا ہے۔ اس حد تک کہ لوگ اس کے اُوپر چلنے لگتے ہیں۔ جھیل ولر اس عرصے میں ہمیشہ جمتی ہی ہے اور اس کے اُوپر سے لوگ بھاری بوجھ اٹھا کر عبور و مرور کرتے ہیں۔ بعض اوقات تو یہ دو تین مہینوں تک جمی رہتی ہے (۱۲)۔ کہتے ہیں کہ سال ۱۱۷۷ھ میں جاڑے کا موسم بہت مشکل موسم تھا۔ دریائی بہت اور جھیل اولر منجمد ہوئے تھے اور جھیل اولر کے کنارے پر (تمام پائینی دیہات کا جنوب میں واقع پرگنہ، نیز شمال کی جانب میں پرگنہ کھویہامہ) اس زمانے میں پائینی دیہات کے سبھی لوگ جھیل اولر کے اوپر کی یخ بندی پر سے گذر کر کھویہامہ آ جاتے۔ اور اسی راہ سے خشک گھاس کا بوجھ کندھوں پر اٹھا کر واپس چلے جاتے تھے اور راستے میں گھاس کی پتیاں بہت گری پڑی رہتیں۔ بیساکھ کے مہینے میں چنار کے پتے مرغ کے پنجوں کے برابر ہو چکے تھے اور شالی کی تخم ریزی کی نہالی زمین سے ایک گروہ بلند ہوئی تھی۔ اس وقت میں بھی تمام پائینی دیہات کے اطراف سے چودہ گھوڑے جھیل اولر کی منجمد سطح پر گھاس کھانے کی اُمید لے کر، جو راستے میں گری پڑی تھی، کھویہامہ میں عبور کر کے آ گئے اور کھویہامہ میں پہنچ کر شالی کی تخم ریزی کو ہڑپ کر گئے۔ یعنی اس زمانے تک جھیل کی یخ بندی قائم رہی تھی

اور ہوا کی خشکی ڈسنے والی، سورج مخفی اور بہت مسدود تھی۔ تین چار سال کے بعد جھیل اُولر مع تمام جھیلوں کے ایک سال ضرور جم جاتی ہے لیکن کبھی کبھی دریا بہت بھی منجمد ہو جاتا ہے۔ چنانچہ ۷۶۰ھ اور ۱۱۷۷ھ اور ۱۱۹۵ھ اور ۱۲۴۸ھ اور ۱۲۹۶ھ (۱۳) میں دریا ی بہت جم گیا تھا اور لوگوں نے بڑی تکلیف اٹھائی تھی۔ چونکہ یہاں جاڑے کی ہوا بڑی دشوار اور تکلیف دہ ہے اس لئے دوسرے ممالک کے لوگ یہاں رہ نہیں سکتے البتہ مقامی لوگوں کے لئے عادت ہو جانے کے سبب زیادہ مشکل نہیں۔ جاڑے کے بعض موسموں میں ہوا اعتدال پر رہتی ہے اور برف باری و بارش بھی کم ہی ہوتی ہے، جس کی وجہ سے اس سال میں پانی کی کمی کی وجہ سے زراعت میں کمی ہو جاتی ہے۔

## کشمیر کی ہوائیں

ساون اور بادرون میں جنوب کی ہوا جنوب کی جانب بانہال کی چوٹی پر دوپہر سے شام اور عشاء تک سفید بادل ایک دو میل کے فاصلے تک غالب رہتے ہیں جسے کشمیری میں واوہ مال کہتے ہیں۔ اس بادل سے سخت تند ہوا کے جھکڑ جن کی شدت سے پتھر ہل جاتے ہیں نکل کر سارے کشمیر میں پھیل جاتے ہیں جو بعض اوقات کشمیر کی سطح پر موجود درختوں کو بھی درہم برہم کر دیتے ہیں۔ کہا جاتا ہے کہ ان خاک اُڑانے والی ہواؤں سے اس ملک کی پیداوار پختہ ہو جاتی اور نشو نما پاتی ہے۔ ہواؤں کے تھم جانے کے بعد بادل اُوپر کو چلے جاتے ہیں اور پھر چمکتی ہوئی بجلیاں پے در پے ہجوم کرتی ہوئی آسمان کے کناروں پر رات دیر گئے تک چمکتی رہتی ہے۔ بعض تجربہ کار لوگوں کا کہنا ہے کہ اکثر اوقات ہوائیں ساون کی ساتویں

کو چلنے لگتی ہیں اور گیارہوں تاریخ کو ہٹ جاتی ہیں اور ساون کی سترہ تاریخ کو پھر سے لوٹ آتی ہیں۔

## بادِ دبُور

مذکورہ بالا اوقات میں دچھنہ اور کھاورہ پہاڑوں کی درمیانی وادی میں مغرب کی جانب پنجاب کے حدود سے دوپہر کے بعد باد دبور سختی کے ساتھ داخل ہو جاتی ہے۔ اور بارہ مولہ سے اطراف و جوانب میں پھیل جاتی ہے۔ کہتے ہیں ان ہواؤں کے چلنے سے کشمیر کے ملک میں تب لرزہ واقع نہیں ہوتا۔

## بادِ شمال

موسم گرما کے بعض ایام میں کرناہ پہاڑ کے اُوپر جسے کشمیری زبان میں فسادنار کہتے ہیں، شمال اور مغرب کے گوشے کے بالمقابل آسمان کے کنارے پر شعاعی لکیریں نمایاں ہو جاتی ہیں اور اس کے بعد شدت کے ساتھ تند و تیز ہوا آتی ہے جو مضبوط درختوں کو بھی جڑ سے اکھیڑ کے رکھ دیتی ہے۔ کشمیری زبان میں اس ہوا کو کامراجی کہتے ہیں۔

گرما کے موسم میں بعض اوقات وجہ بال پہاڑ کے مقابل میں شمال اور مشرق کے گوشے میں سخت ہوائیں آتی ہیں جو درختوں اور عمارتوں کو ڈھا دیتی ہیں۔ کشمیری زبان میں اسے وجہ واد کہتے ہیں۔

## کشمیر کے پہاڑ

اس مُلک کی وسعت کے ارد گرد بے شمار پہاڑ فصیل کی مانند دُور فاصلوں تک سلسلہ وار اور چاروں طرف پازیب کی طرح چلے گئے ہیں۔ طراوت و سرسبزی میں باہم یکسان طور پر دل کشا اور فرحت افزا ہیں اور خود ان کے اندر اور ان کے اطراف میں دیودار اور چیڑ اور شمشاد اور سرو کے درخت خداوند عادل کی قدرت سے کوہ در کوہ اُگے ہوئے ہیں اور رنگ برنگ اور مختلف قسموں کی عجیب و غریب نباتاتیں ہجوم در ہجوم ہر جگہ زمین پر پھیلی ہوئی ہیں اور پہاڑوں کے اوپر بھی بے شمار چشمے ہر طرف رواں اور جاری ہیں۔

ان پہاڑوں کے حدود مشرق میں لداخ کی شروع سے ملتی ہیں اور مغرب میں مظفر آباد کی حدود کے ساتھ۔ شمال میں کرشنا گنگا دریا تک اور جنوب میں چندر باگا کے ساحل تک۔ یورپ کے محققین ان پہاڑوں کی بلندی آٹھ ہزار فٹ سے سترہ ہزار فٹ تک کی فرق کے ساتھ بتلاتے ہیں اور ان کا رقبہ انس صاحب (۱۴) کے بقول پچیس ہزار مربع میل ہے۔ ان پہاڑوں میں سے بعض بلند پہاڑوں اور ٹیلوں کا ذکر جو لوگوں کیلئے فائدہ ہوگا، کیا جارہا ہے:

## ہرموکھ پہاڑ

سرینگر سے تیس کروہ کے فاصلہ پر شمال کی جانب پرگنہ لار اور کو یہامہ کے متصل یہ

انتہائی بلند پہاڑ خاص مشہور ہے۔ اس کی بلندی سولہ ہزار چھیانوے انگریزی فٹ اور شاندار پہاڑ کی چوٹی پر پانچ مضبوط چوٹیاں، جو ہمیشہ برف سے چاروں طرف گھری رہتی ہے، دکھائی دیتی ہیں۔ کہا جاتا ہے کہ مذکورہ چوٹی پر سال بھر بادل چھا جانے کے وقت برفباری ہوتی ہے۔ ساون کے مہینے میں سات دنوں تک بارش اور برفباری رک جاتی ہے۔ اصل میں اسی چوٹی کا نام ہرموکھ رکھا گیا (۱۵) ہے۔ ہر لقب ہے سداشو (۱۶) کا اور موکھ کے معنی چہرہ کے ہیں یعنی ہرموکھ کے معنی ہیں سداشو کا چہرہ۔ ہندو اسے بہت متبرک جانتے ہیں اور کہتے ہیں کہ ماتا پاربتی جی، جن کا نام پہلے جنم (۱۷) میں ستی تھا، اسی پہاڑ پر رہتی تھیں۔ ان مذکورہ چوٹیوں میں ایک مدت سے برف کے خزانے موجود ہیں اور زمانے گذرنے کے ساتھ ساتھ برف کا رنگ بعض جگہوں پر سرخ، بعض جگہوں پر زرد اور سبز اور لاجوری نظر آتا ہے۔ ان کے نیچے عجیب سبزہ زار اور دل فریب و روح افزا چشمے موجود ہیں خاص کر ہرموکھٹہ گنگا (۱۸) کا سرچشمہ مشرق کی طرف اور سشیر اسرنامی سرچشمہ جو مغرب میں واقع ہے۔ کہتے ہیں کہ ابھی تک کوئی بھی آدمی ہرموکھ پہاڑ کی چوٹی پر نہیں چڑھا ہے۔

چنانچہ قدیم راجوں میں سے ایک راجا نے سداشو کی زیارت کرنے کے لئے درمیانی چوٹی پر چڑھنے کی کوشش کی تھی تو فوراً بھڑوں کے حملے کی وجہ سے لوٹ کے چلا گیا۔ حال ہی میں ۱۹۱۱ء بکرمی مطابق ۱۲۷۱ھ میں پہلے مسٹر جانسن صاحب گرداور پیمائش کو یہامہ کے راستے سے کمپاس کی علامت نصب کرنے کی خاطر بہت سے لوگوں اور کافی سامان کے ساتھ مذکورہ پہاڑ پر چڑھا لیکن اس مضبوط چوٹی پر چڑھنے کو مشکل جان کر وہ شمال کی جانب دامن کوہ سے چودہ کروہ کے فاصلہ تک چھوٹی چوٹی پر پہنچا اور اس کے اُوپر کمپاس نصب کر کے لوٹ آیا۔ اس کے بعد مسٹر منٹگمری صاحب سروے آفیسر تقریباً ایک ہزار آدمیوں کے ساتھ چڑھا اور پہلے پڑاؤ پر پہنچ کر تند ہوا کا وہ طوفان اٹھا کہ بڑے بڑے چٹان

ہل گئے اور ایک بھی آدمی کو زندگی کی اُمید نہ رہی ۔ آخر کار خیریت گذری اور صاحب موصوف نو دنوں تک پیمائش میں مشغول رہ کر واپس آ گیا۔

کہتے ہیں کہ مذکورہ پہاڑ کی بلند چوٹی پر زمرد کی کان ہے۔اس لئے جہاں ہر موکھ پہاڑ کی چوٹی نظر آتی ہے وہاں واقعی سانپ کم ہوتے ہیں۔

## کوثر پہاڑ (۱۹)

سرینگر سے تیس کروہ کے فاصلے پر جنوب کی طرف دیوہ سر کے نواحی میں کافی بلندی کا حامل یہ ایک عظیم الشان پہاڑ ہے اور جموں اور پنجاب کی حدود تک نمایاں ہے۔اس کی اونچائی پندرہ ہزار پانچ سو تیس انگریزی فٹ ہے اور اس کے اطراف پر تین مضبوط چوٹیاں ہیں جو کوثرن کوٹھر کے نام سے جانی جاتی ہیں اور ہمیشہ چاروں طرف برف میں گھری رہتی ہیں۔کہتے ہیں کہ آج تک ان چوٹیوں پر کوئی نہیں چڑھا تھا لیکن پیمایش کرنے والے گرداور صاحبان سب کے سب اس کی چھوٹی چوٹی پر چڑھ کر پیمائش کر کے لوٹ آئے ۔ مذکورہ چوٹیوں پر ایک دلکش سبزہ زار ہے جس کے درمیان میں کوثر ناگ نام کا معروف چشمہ ہے جو بہت ہی خوف ناک اور عجیب چشمہ ہے۔

## کاجی ناگ پہاڑ (۲۰)

سرینگر سے مغرب کی جانب تیس کروہ کی دوری پر کامراج (۲۱) کے حدود میں

دچھنہ اور کرناہ کے درمیان میں واقع ہے۔ انس صاحب (۲۲) کے بقول اس کی بلندی پندرہ ہزار پانچ سو چوبیس انگریزی فٹ (۲۳) اور اسکی چوٹی ہمیشہ برف سے ڈھکی رہتی ہے۔ پیمایش کرنے والے گرداور صاحب نے ہرموکھ کی چوٹی کو مقابلے میں رکھ کر اس کی پیمائش کی۔ اس پہاڑ کے اُوپر کاجی ناگ چشمہ مشہور ہے۔

## ہوکھسر پہاڑ

سرینگر سے تیس کروہ کے فاصلے پر مشرق اور مغرب کی طرف پر گنۂ برنگ اور مرووارڈون کے درمیان واقع ہے۔ اس کی اُونچائی ایک ہزار پانچ سو ساٹھ فٹ (۲۴) ہے اور اس کے نیچے چشمہ ہوکھسر موجود ہے۔

## گوشہ براری

دچھن پارہ سے مشرق کی جانب پہلگام سے اُوپر موضع فرسن لن اور منڈلن کے متصل واقع ہے۔ اس کی اُونچائی سترہ ہزار آٹھ سو چھتیس فٹ (۲۵) ہے اور چوٹی ہمیشہ برف سے ڈھکی رہتی ہے۔ اسکے شمالی دامن کے نیچے برف سے ڈھکا ہوا ایک میدان ہے اور یہ برف وہاں قدیم زمانے سے موجود ہے جو گنج کہلاتا ہے۔ اس کا پانی امراوتی نہر یا سندلار میں مل جاتا ہے۔

## برار بال پہاڑ

یہ پہاڑ سرینگر سے جنوب کی طرف تیس کروہ کی دوری پر شاہ آباد اور ڈوڈی (۲۶) کے علاقے کے درمیان واقع ہے۔ اس کی اونچائی چودہ ہزار تین سو فٹ (۲۷) اور اس کی چوٹی ہمیشہ برف سے ڈھکی رہتی ہے۔ اس کے دامن میں بہت سے چشمے پانی سے لبریز ہیں۔

## افروٹھ پہاڑ

یہ سرینگر سے جنوب اور مغرب کے گوشے میں گلمرگ کے متصل تیرہ ہزار (۲۸) اور بتیس فٹ اُونچا مشہور پہاڑ ہے۔ اس کے نیچے ایلہ پتری نام کا چشمہ اُبلتا رہتا ہے۔

## مہادیو پہاڑ

سرینگر سے چودہ میل کے فاصلے پر مشرق کی جانب لار اور پھاک کے درمیان واقع ہے۔ اسکی بلندی چودہ ہزار (۲۹) دو سو فٹ ہے۔ ہندو اسے متبرک جانتے ہیں۔ اسکی چوٹی پر قدرتی یخ دان ہے جہاں پر ہمیشہ بارہ مہینے یخ موجود رہتی ہے اور لوگ شہر میں لا کر اسے بیچتے ہیں۔ ساون (۳۰) پورنماشی پر پنڈت لوگ وہاں یاتر کے لئے جایا کرتے ہیں۔

## امرناتھ پہاڑ (۳۱)

سرینگر سے مشرق میں پچھتر میل کی دوری پر واقع ہے۔ اسکی اُونچائی سولہ ہزار انگریزی فٹ ہے اور اسکے کمر میں امرناتھ جی (۳۲) کی غار موجود ہے۔ جس کی اُونچائی بارہ ہزار فٹ ہے۔

یہ ہیں کشمیر کے اونچے پہاڑ۔ ان کے علاوہ اور بھی ٹیلے ہیں جن کی چوٹیوں پر سے مسافروں کے آنے جانے کیلئے راستے اور رہگذر بنے ہیں۔ اور ان کی بلندی و کیفیت کا بیان کرنا بھی ضروری ہے۔

## پہاڑی ٹیلہ پیر پیچال (۳۳)

سرینگر سے جنوب کی جانب پینتیس میل کے فاصلے پر ہیرہ پور جانے والے راستے پر واقع ہے۔ اسکی اُونچائی گیارہ ہزار بیس انگریزی (۳۴) فٹ لکھی گئی ہے۔ انس صاحب کے بقول اس کا سلسلہ چار ہزار میل کے فاصلے تک چلا گیا ہے۔ اور اسکے درمیان میں ہر جگہ پر جنگل اور غار موجود ہیں۔ جاڑے کے موسم میں مسافروں کی آمد ورفت بند ہو جاتی ہے۔ بلکہ گرما کے موسم میں بھی ہوا اور بارشوں کے طوفان کی وجہ سے اس سے گذرنا دشوار ہے۔ اسکی چوٹی پر پیر محمدؒ صاحب کی زیارت موجود ہے جو حضرت امیر کبیرؒ کے مریدوں میں سے

تھے۔

## پہاڑی ٹیلہ بانہال

سرینگر سے پچاس میل کی دوری پر جنوب میں شاہ آباد اور بانہال کے درمیان مشہور ہے۔ کشمیر کی طرف اس میں بہت سے جنگل اور سبزے کے مقامات ہیں اور بانہال کی طرف بالکل برہنہ ہے۔ انس صاحب نے اسکی اُونچائی نو ہزار تین سو فٹ لکھی ہے (۳۵)۔ جاڑے کے موسم میں آزمودہ کار لوگ سواری اور بار برادری کے بغیر دشواری کے ساتھ اسے عبور کرتے ہیں۔ جب ہوا کا طوفان اُٹھتا ہے تب اس پر سے عبور و مرور ممکن نہیں ہوتا۔ موجودہ زمانے میں مہاراجہ رنبیر سنگھ (۳۶) کے ملازموں نے اس پہاڑ کی راہ میں جنوب کی جانب ہوا کے گذرنے کی جگہوں پر پختہ اور سنگین برج ایک ایک تیر پرتاب کی دوری پر تعمیر کئے ہیں تا کہ ہواؤں کے طغیان کے وقت سفر کرنے والے لوگ ان برجوں میں داخل ہو کر ہوا کے طوفان کے صدمے سے محفوظ رہ سکیں۔ لیکن اس کے باوجود بعض اوقات طغیانِ ہوا کے وقت راستہ کئی دنوں تک بند ہو جاتا ہے۔

## پہاڑی ٹیلہ مربل

برنگ (۳۷) کے پرگنہ کے درمیان سرینگر سے مشرق اور جنوب کے گوشے میں ساٹھ میل کی دوری پر واقع ہے۔ اس کی اُونچائی گیارہ ہزار پانچ سو ستر فٹ (۳۸) ہے۔

کشتواڑ جانے کا راستہ اس کے اُوپر سے بڑا دشوار گذار ہے۔

## پہاڑی ٹیلہ مرگن

سرینگر سے مشرق اور جنوب کے گوشے کی جانب نوبوگ نے کے متصل مرو واردن جانے والی راہ پر واقع ہے۔ پیمائش کرنے والے گرداور صاحبان نے اس کی بلندی گیارہ ہزار چھ سو فٹ تحقیق کی ہے (۳۹)۔

## پہاڑی ٹیلہ راز دان آنگن (۴۰)

سرینگر سے شمال کی جانب پرگنہ کو یہامہ (۴۱) کے نواحی گوریج (۴۲) جانے والے راستے پر واقع ہے۔ اس کی اُونچائی گیارہ ہزار سات سو ستر فٹ ہے (۴۳)۔

## پہاڑی ٹیلہ زوجہ بال (۴۴)

سرینگر سے مشرق کی طرف ستر میل کی دوری پر پرگنہ لار کے حدود میں سونہ مرگ اور دراس (۴۵) کے درمیان ایک خوفناک مقام ہے۔ اس کی اُونچائی گیارہ ہزار تین سو (۴۶) فٹ ہے۔ جاڑے میں اسے عبور کرنا ناممکن ہے۔ کیونکہ اکثر اوقات یہاں ہوا کے

طوفان اٹھتے ہیں۔ اگر اتفاق سے موسم سرما میں کسی قافلے کا وہاں سے گذر ہو تو ہوا کی طغیانی کے باعث کوئی قافلے میں بدحواس ہو جاتا ہے اور خود بخود برف کو اُٹھا کر جیب میں بھر دیتا ہے اور کھاتا ہے اور خود کو برف پر لڑھک دیتا ہے، تو اس کے ساتھی اسے مارتے پیٹتے ہیں اور پھر اُسے اُٹھا کر لے جاتے ہیں۔ ورنہ وہ وہیں پر ہلاک ہو جاتا ہے۔ اس پہاڑ کی چوٹی پر ایک جگہ ہے جو برار آنگن کہلاتی ہے۔ ان اطراف میں رہنے والے لوگوں کو یقین ہے کہ وہاں جنوں کا تصرف ہے۔ چنانچہ بعض لوگوں نے عورت کی شکل میں جن عورت کو دیکھا بھی ہے اور اسے برار ماجی کا نام دیا ہے۔ کبھی کبھی وہاں گانے بجانے کی آواز بھی سنائی دیتی ہے۔ کہتے ہیں کہ پہلے بہت سے مسافر ہلاک ہو جاتے تھے۔ یہاں تک کہ سال ۱۰۹۰ھ میں اولیاء اللہ میں سے ایک ولی اللہ شیخ عبداللہ گزریالیؒ (۴۷) کا وہاں سے گذر ہوا۔ جب لوگوں کی زبانی آپ نے اس جگہ کا حال سنا تو اس پہاڑ کی چوٹی پر اور اس کے دامن میں آپ نے محکم اور مضبوط برج بنائے اور خود چند دنوں کے لئے برار آنگن کے مقام پر قیام فرمایا اور باطنی توجہ سے جنوں کو بلا کر ان کے لئے ایک نذر مقرر کی یعنی مزدور اپنے زادراہ میں سے اور تاجر اپنے مال تجارت میں سے کچھ خیرات میں دے دے۔ تاکہ ہر کوئی آسانی کے ساتھ گذر جائے اور یہ رسم ابھی تک جاری ہے۔ گگنہ گیر کے شروع سے زوجہ بال کے حدود تک پہاڑ کا درہ بارہ کروہ کے فاصلے تک بہت تنگ اور دشوار گذار ہے۔ دائیں اور بائیں پہاڑ فصیل کی مانند کھڑا ہے۔ اور سندھ لار (۴۸) کا دریا اس کے درمیان میں سے بہتا ہے۔ ماگ اور پھاگن کے مہینوں میں سارا پہاڑ برف سے بھرا رہتا ہے۔ اور اس زمانے میں پہاڑ کی بلندی سے کوئی پتھر برف کے ہمراہ نیچے کی طرف لڑھکتا ہے تاکہ برف کو لپیٹ کر لے جائے اور اس قدر زور و شور سے گرتا ہے کہ اطراف کی ساری برف پھسل کر انتہائی تیزی کے

ساتھ پہاڑ پر سے نیچے آکر دائیں طرف ڈھیر ہو جاتی ہے۔اسی طرح دائیں طرف کے پہاڑ پر سے خاصے جوش وخروش کے ساتھ نیچے آکر بائیں جانب جمع ہو جاتی ہے۔اس وقت ان پہاڑوں میں عجیب حال ہوتا ہے۔ ساری برف پہاڑوں کی چوٹیوں سے اتر کر درہ کے نشیب میں اکٹھی ہو جاتی ہے۔اور دریائے سندھ کے اُوپر چھت کی سطح کی مانند نظر آتی ہے۔ بلکہ بعض اوقات ایک دو ہفتوں تک دریائے سندھ کا پانی رُک جاتا ہے اور اس مدت میں مسافر لوگ سندھ کی راہ کے اُوپر برف کے راستے سے عبور و مرور کرتے ہیں اور جیٹھ (۴۹) کے مہینے میں برف پگھل جانے کے بعد زوجہ بال کا راستہ پھر سے بدستور جاری رہتا ہے۔

## نستہ چھنو

سرینگر سے شمال اور مغرب کے گوشے میں اوتر پرگنہ کے انتہا میں واقع ہے۔اسکی بلندی نو ہزار تین سو (۵۰) فٹ ہے اور اس کے اُوپر کرناہ (۵۱) کا راستہ جاتا ہے۔سرینگر سے بہتر میل کی دوری پر واقع ہے۔

آگاہی: تین عجیب ٹیلے، پہاڑوں سے ملے بغیر الگ تھلگ اور ننگے اور خوشنما، مشرق کی جانب، گویا برج میزان میں تین ستاروں کی مانند کشمیر کی سطح پر موجود اور نمایاں ہیں۔ان تینوں کی کیفیت ذیل میں درج کی جاتی ہے۔

## تخت سلیمان

شہر سرینگر کے قریب مشرق میں شہر کی طرف رخ کر کے کھڑا دکھائی دیتا ہے۔ظفر احسن نے کہا ہے

نہی چون پای برتخت سلیمان شود کشمیر و شہر او نمایان

(جب تم تخت سلیمان پر پاؤں رکھو گے تو کشمیر اور اس کا شہر دکھائی دے گا)

اپنی تاریخ میں ملا احمد لکھتا (۵۲) ہے کہ حضرت سلیمان پیغمبرؑ (۵۳) ہوا میں اُڑ رہے تھے کہ کچھ دیر کے لئے اس پہاڑ کے اُوپر آ کر رُکے۔اسی لئے اس پہاڑ کو تخت سلیمان کا نام دیا گیا ہے۔

نیز ۲۸۰ کل یگ میں راجہ (۵۴) سندیمان (۵۵) نے زیشٹی شور نام کا بت خانہ مذکورہ پہاڑ کے اُوپر بنایا۔اس لئے اس پہاڑ کو کوہِ سندیمان کہتے ہیں۔

شنکر اچارج (۵۶) نام کا ایک آدمی یہاں عبادت کیا کرتا تھا اور اس نے اپنی عمر عزیز کو بدھ کے بارے میں بحث و گفتگو میں گذاری۔اس پہاڑ کو اسی وجہ سے ہندو لوگ کوہ شنکر اچارج کے نام سے یاد کرتے ہیں۔پہلے زمانے میں اس پہاڑ کو جیٹ لدرک کہتے تھے۔اس کی اُونچائی چھ ہزار دو (۵۷) سو تریسٹھ فٹ ہے۔

## ہاری پربت

ہندو مورخین لکھتے ہیں کہ قدیم زمانے میں شارکا دیوی نے شارک کی شکل میں سمیر

پہاڑ ایک حصہ چونچ میں اُٹھا کر اس جگہ جلد بو کے سر پر ڈال دیا۔ اسی لئے اسے ہاری پربت کہتے ہیں (ہاری کے معنی ہیں شارک اور پربت یعنی پہاڑ)۔ بعض اسے پردمن پیٹ کے نام سے یاد کرتے ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ ہندو اسے متبرک جانتے ہیں۔

مسلمان مورّخین نے اسے کوہ ماران کا نام دیا ہے۔ قدیم زمانے میں کوہ ماران شہر کے درمیان دائرے کے مرکز کی مانند دکھائی دیتا تھا۔ چنانچہ اسکے دامن کے نیچے اکبر بادشاہ کے بنائے ہوئے قلعہ ناگرنگر کے گرد فصیل موجود ہے۔ اب حادثات و انقلابات زمانہ کے صدموں سے شاہی خانہ اور شہر کی آبادی ویران ہو چکی ہے اور عمارات کی جگہوں پر کھیتی باڑی کا کام عمل میں لایا جارہا ہے۔ اس کی چوٹی پر عطا محمد خان (۵۸) کا قلعہ موجود ہے۔ اور درمیانی حصے پر مغرب کی جانب شارکا دیوی کا مقام ہے۔ جہاں ہندو لوگ زیارت کے لئے رجوع کرتے ہیں۔ اور جنوب میں حضرت شیخ حمزہ مخدومؒ کی زیارت ہے جو مسلمانوں کا مقام طواف ہے۔ نیز مسجد ملا شاہ (۵۹) اور دارا شکوہ کے محل کے آثار بھی جنوب میں موجود ہیں۔ سطح سمندر سے اس کی اُونچائی پانچ ہزار سات سو فٹ ہے۔

## آھک ٹینگ

سرینگر سے سات کروہ کی دوری پر (۶۰) شمال کی جانب صفا پور کے نزدیک مانسر کے جنوبی کنارے پر واقع ہے۔ اس کے شمالی حصے کے نیچے چونے کا پتھر پختہ بنانے کا کام ہوتا ہے۔ اس کی کمر میں جنوب کی جانب پانی کا چشمہ اُبلتا رہتا ہے۔ سطح سمندر سے اس کی بلندی چھ ہزار دو سو فٹ ہے (۶۱)۔

## داراش

کوہ ماران کے مقابل پرگنہ مانچھامہ میں بائیں طرف واقع الگ اور ننگا مقام ہے۔ اس کے نیچے رٹ سون اور چیوڈارہ کے گاؤں آباد ہیں اور اس کے اُوپر بابا رجب دینؒ (۶۲) کی زیارت موجود ہے۔اس کی اُونچائی چھ ہزار فٹ ہے۔

## کشمیر کے سبزہ زار

اس ملک کے پہاڑوں کے اُوپر بڑے وسیع ہموار سبزہ زار کثرت سے پائے جاتے ہیں، جو فضا کی پاکی اور ہوا کی تازگی کی وجہ سے بہت دل کشا اور خوشنما صورت میں جگہ جگہ اپنی بہار دکھلاتے ہیں۔ رنگ رنگ کے پھول ہر طرف کھلے نظر آتے ہیں اور خوش رنگ سبزہ ہر جگہ اُگا ہوا دکھائی دیتا ہے۔ گرمیوں کے موسم میں گڈریئے اور ریوڑ والے، بھیڑ بکریوں اور ریوڑ کو اکٹھا کر کے سبزہ زاروں کے اُوپر چرانے کیلئے لے جاتے ہیں اور کتک کے مہینے میں لوٹ آتے ہیں۔

## تفصیل

ذیل میں ان سبزہ زاروں کی تفصیل بیان کی جاتی ہے جنہیں بادشاہوں نے پسند کیا

ہے اور جو عالمی سیاحوں کی سیر گاہیں ہیں:

## سبزہ زار گل مرگ

ایک خوشنما اور دلکش سبزہ زار ہے۔ سرینگر سے مغرب کی جانب تیس میل کی دوری پر پرگنہ بانگل (۶۳) کے متصل رنبوہ (۶۴) نامی پہاڑ پر واقع ہے۔ اس کی سطح تقریباً تین میل لمبی اور اوسط درجے میں دوسو سے چار سو گز چوڑی ہے۔ اس کے گرد صوبر اور سرو کے درخت گویا چھانٹ کر درست کر دیئے گئے ہیں اور خوبصورت انداز میں نمایاں ہیں۔ بیچ میں ایک نہر بہہ رہی ہے جو تقریباً پانچ گز چوڑی ہے۔ اس کا پانی جگہ کے ہموار ہونے کی وجہ سے آہستہ سے چلتا ہے۔ اپنی حکومت کے عہد میں یوسف شاہ چک ایک چھوٹی سی کشتی میں اس نہر میں سیر کو نکلتا تھا۔ اس گل زمین کی سطح پر رنگ برنگ کے پھول پچیس (۶۵) رنگوں سے زیادہ اقسام میں کھلتے رہتے ہیں۔ جن میں سرخ رنگ کا ایک پھول گل زن دور بغیر کسی شاخ وسبزہ کے برف پگھلنے کے ایام میں ایک فرد قالین کی طرح یکساں طور پر زمین سے اُگ آتے ہیں اور دو تین روز تک مرجھا جاتے ہیں۔ بڑے ہی خوبصورت پھول ہیں۔ ایک وقت بادشاہ جہانگیر نے خاص اپنے ہاتھوں سے پھول توڑ کا ان کا دستہ بنالیا۔ توڑتے وقت تمام پھول ہاتھ میں آگئے تھے۔

پہلے اس سبزہ زار گل مرگ کو گوری مرغ کہا کرتے (۶۶) تھے۔ سال ۸۹۰ھ (۶۷) میں یوسف شاہ چک نے ایک بلند مقام پر وہاں ایک بڑی مضبوط عمارت بنوائی اور اس جگہ کو گل مرگ (۶۸) کا نام دیا۔ وہ ہمیشہ وہاں داد عیش دیا کرتا تھا۔ اسکے بعد مغل بادشاہ

اس گل زمین کی سیر و سیاحت کرتے تھے اور جہانگیر بادشاہ اکثر اوقات وہاں رہتا تھا۔ چرواہوں کو اس طرف ریوڑ لے جانے سے منع کر دیا گیا تھا۔ اس جگہ کی حفاظت کرنے کے لئے بانگل کے بعض زمینداروں کو جاگیر عطا کی گئی تھی۔ موجودہ زمانے میں انگلستان کے عیش پسند یہاں کی سیر گلشن کو پسند کرتے ہیں اور عمارتیں بھی بناتے ہیں۔

## سبزہ زار سونہ مرغ

یہ سبزہ زار سرینگر سے ساٹھ میل کے فاصلے پر مشرق کی جانب پرگنہ لعل (٦٩) کے انتہا پر زوجہ بال کے متصل پہاڑ کے درے میں دریائے سندلار کے کنارے پر واقع ہے۔ رنگ برنگ پھولوں اور دل پسند سبزہ کی وجہ سے مشہور جگہ ہے۔ اسکی لمبائی قریب دو کروہ ہے اور چوڑائی مختلف۔ موسم گرما میں زمینداروں کے ریوڑ یہاں چرنے کے لئے لائے جاتے ہیں۔ اس کے اطراف کے پہاڑوں پر سرو اور شمشاد کے درخت بکثرت پائے جاتے ہیں۔ نصف النہار میں انتہائی مرطوب و خنک ہوا کی وجہ سے بڑی دل کشا جگہ ہے۔ رات میں خاصی سرد جگہ ہو جاتی ہے۔ موجودہ زمانے میں انگلستان کے سیاح اسے بہت پسند کرتے ہیں۔

## سبزہ زار ووشنہ سر

لار کے پہاڑ پر گرمیاں گذارنے کے لئے ٹھنڈی جگہ ہے۔ جو مختلف اقسام کے

دلفریب پھولوں اور سبزہ و چمن سے آراستہ ہے۔ اس کے بیچ میں وشنہ سر جھیل ہے۔ یہاں غبار کی صورت میں بارش گرتی ہے۔ اور اس سے پورے دن میں ایک لباس بھی گیلا نہیں ہوتا ہے۔ گھاس کی ایک بہت ہی نازک قسم یہاں اُگتی ہے۔ جس کے ایک پتے کو کاٹنے سے دودھ نکلتا ہے۔ جب گھوڑیاں اسے کھاتی ہیں تو اس دودھ کی کثرت سے ان کے بچے گر جاتے ہیں۔

## کنہ مرغ (۷۰)

زوجہ بال کے متصل دراس کی جانب ایک پسندیدہ چراگاہ ہے اور بہت سے ریوڑ اس میں چرتے ہیں اور موٹے ہو جاتے ہیں۔

## گنگہ بل مرغ

ہرموکھ گنگا کے متصل ہرموکھ پہاڑ کے (۷۱) دامن میں ایک دلپذیر ٹھنڈی جگہ ہے۔ سبزہ زاروں کی کثرت اور پھولوں کی فراوانی کے باعث اس ملک کے پہاڑوں میں ایک منتخب جگہ ہے۔

## ناگہ مرغ

پرگنہ کو یہامہ اور لولاب (۷۲) کے درمیان ایک شاداب و سرسبز سبزہ زار ہے جو

فراخی وکشادگی میں مشہور جگہ ہے۔

## منہ مرغ

گوریس (۷۳) کی طرف لب کچال کے اُوپر ایک وسیع خنک جگہ ہے۔آب وہوا میں دلکشا۔

## وجہ مرغ

گوریس جانے والی راہ پر پرگنہ کو یہامہ کے نواحی میں وجہ بال پہاڑ پر ایک سبزہ زار ہے۔سبزہ و پھول بکثرت پائے جاتے ہیں۔

## مہا لشہ مرغ

پرگنہ لعل کے خنک مقام میں تلیل جانے والے راستہ پر برتھ (۷۴) پہاڑ کے اُوپر واقع ہے۔اور وسعت میں قریب سات مربع میل ہے۔اس کی سیر کرنے کے وقت کشمیر کی وسعت ایک ہتھیلی کے برابر نظر آتی ہے۔

## سالن مرغ

ہرموکھ (۷۵) پہاڑ کے نیچے شمال کی جانب تازگی و شگفتگی میں بڑی خوبصورت جگہ ہے جو قریب دس میل کی وسعت پر ہے۔

## سبزہ زار بنگس

کرنا (۷۶) کی جانب کامراج کے ٹھنڈے مقام میں ہوا کی لطافت و پاکیزگی میں مشہور اور پھولوں کے اقسام میں معروف ہے۔ خصوصاً گل زن دور میں جو وہاں کافی تعداد میں پائے جاتے ہیں۔ گرما کے موسم میں گوجر لوگ اور چرواہے کرنا اور دراوا اور کامراج کے علاقوں سے چوپایوں اور مویشیوں کو لے کر وہاں جاتے ہیں اور تین چار مہینوں تک رہتے ہیں۔ اس کے اُوپر کرنا جانے کا راستہ جاری رہتا ہے۔

## توسہ مرغ

پرگنہ بانگل کے متصل پہاڑ کے اُوپر، جسے توسہ میدان کہتے ہیں، واقع ہے۔ یہاں سے پونچھ (۷۷) کو بھی راستہ جاتا ہے۔ رنگ رنگ کے پھول خاص کر گل زن دور کثرت سے پائے جاتے ہیں۔ یہاں ایک وسیع اور مشہور چراگاہ ہے۔

## نُنہ مرغ

نارہ واوکہل پہاڑ کے حدود میں گوگل (۷۸) مرغ کی جانب واسک ناگ سے اُوپر ایک کشادہ ٹھنڈی جگہ ہے، جو اپنی وسعت وفراخی میں مشہور ہے۔شہنشاہ اکبر ایک بار وہاں گیا تھا اور دو دنوں تک سیر وشکار کرتا رہا۔ننہ مرغ میں ایک گاؤں بھی آباد ہے جو ابھی تک موجود ہے۔

## زجہ مرغ

کوثر پہاڑوں میں سے دیوہ سر (۷۹) نامی پہاڑ سے اُوپر مشرق کی طرف نارہ بل پہاڑ پر کہوری جانے والے راستے پر ہوا کی پاکیزگی اور قسم قسم کے پھولوں اور سبزوں کی وجہ سے مشہور مقام ہے۔شوپیان سے دس کروہ کے فاصلے پر جنوب میں واقع ہے۔اور اسکی وسعت تقریباً آٹھ کروہ ہے۔

## سبزہ زار رای نیور

بدلی جانے والے راستے پر شوپیان سے ہاپت کھوڈ کے متصل جنوب میں عجیب و

غریب سبزہ زار ہے۔ جو خاصا وسیع ہونے کی وجہ سے مشہور ہے۔ مختلف اقسام کے دلکشا پھولوں اور دلنشین سبزے سے اٹا ہوا ہے۔ راجور اور شوپیان کے ریوڑ یہاں چرانے کے لئے آتے ہیں۔

## فام مرغ

کوہ ہوکھ سر کے مقابل میں مرو (۸۰) جانے والے راستہ پر ایک دلکشا سبزہ زار ہے۔ جو پھولوں کے رنگوں اور سبزہ کی وجہ سے معروف جگہ ہے۔

## سبزہ زار مرگن

کوٹھار کی جانب چوگام پہاڑ کے اُوپر واقع ہے۔ اسکی سطح پر کروہ مربع ہے۔ اس سبزہ زار میں بڑے ہی دلفریب پھول پیدا ہوتے ہیں۔ واڑون (۸۱) جانے کا راستہ اس کے درمیان میں جاری ہے۔

## بڈ مرغ

آڑو پہاڑ اور منڈلن (۸۲) کے اُوپر دچھن پارہ کی چراگاہ ہے، جو بہت وسیع ہے۔ اس میں بہت سے پھول اور سبزہ زار پائے جاتے ہیں۔ امرناتھ جی تک جانے کا راستہ

یہاں سے گذرتا ہے۔

## زبہ مرغ

مڈمرغ (۸۳) کے متصل مذکورہ پہاڑ کے اُوپر تروتازگی اور ہوا کی پاکیزگی میں مشہور جگہ ہے۔

## سبزہ زار سنگِ سفید

چرار (۸۴) راستے سے سنگ سفید نامی پہاڑ پر دلکشا آب وہوا والی مشہور جگہ ہے۔ اس کے قریب ایک عجیب چشمہ ہے۔ سیر وصفا اور ہوا خوری کے لئے دنیا کے اکثر سیاح لوگ وہاں جاتے رہتے ہیں۔

## استھان مرغ (۸۵)

شیشرم ناگ سے اُوپر دچھن پارہ (۸۶) پہاڑ پر ایک خنک جگہ ہے۔ وسعت و فراخی میں اور پھولوں کی فراوانی کی وجہ سے بڑی دلکش اور بے نظیر۔ موجودہ زمانے میں انگریز سیّاح وہاں شکار کرنے کیلئے اکثر جایا کرتے ہیں۔ سال ۱۹۴۰ بکرمی میں ہندوستان

کے ملک کا وایسرائے لارڈ رِپن سیر وشکار کیلئے وہاں گیا اور بہت خوش ہوا۔

## کشمیر کے ٹیلے (۸۷)

اس ملک کی وسعتوں میں بہت ہموار اور علیحدہ علیحدہ ٹیلے ہر جگہ موجود ہیں اور اوسط درجہ کی سطح سے ایک سو سے دو سو فٹ تک بلند ہیں۔ ان میں بعض پہاڑوں سے ملے ہوئے ہیں اور بعض بغیر ملے ہوئے بھی بلندی کے حامل ہیں۔

## مٹن ٹیلہ (۸۸)

سرینگر سے جنوب کی طرف اٹھارہ کروہ کے فاصلے پر پرگنہ مارتنڈ (۸۹) کے درمیان واقع ہے۔ اس کی لمبائی ایک فرسنگ اور چوڑائی تقریباً ایک سے دو میل تک ہے۔ اس کے نیچے سار بون اور اننت ناگ وغیرہ بے شمار چشمے بہتے ہیں۔ اس کی سطح ہموار اور کھیتی اور آبادی کے لائق ہے لیکن پانی کی نایابی کے باعث آج کل ویران ہے۔

رتنہ پوران (۹۰) کا مترجم لکھتا ہے کہ کل جوگ کے اوائل میں راجہ رام دیو (۹۱) نے مذکورہ ٹیلے پر بابل نامی شہر بسایا تھا اور اپنے شاہی محل کے متصل مارتانڈی شور مندر (۹۲)، جس کی بنیاد آج تک باقی ہے، تعمیر کیا اور کھاورہ پارہ پہاڑ سے پانی کی نہر لا کر شہر میں جاری کی۔ جب مذکورہ نہر تخ بندی کی وجہ سے بند ہوگئی تو اس کے بیٹے راجہ واسدیو نے شہر میں ایک کشادہ اور گہرا کنواں کھدوایا۔ زمانہ گذرنے کے ساتھ ساتھ مذکورہ شہر مٹ

گیا اور کنواں بھی بکھر گیا۔ لیکن لوگ کنوئیں کے کنارے پر جا کر غیب سے آوازیں سنتے تھے اور عام لوگوں میں یہ عقیدہ پیدا ہو گیا تھا کہ اس کنوئیں میں دو آسمانی فرشتے ہاروت اور ماروت عذاب میں مبتلا ہیں۔ اسی خیال سے لوگ گروہ در گروہ پاکیزہ نذریں اور تحایف لے کر اس کنوئیں کے کنارے پر جا کر اسے اللہ کی نزدیکی اور اپنی مرادیں پوری ہونے کا ایک واسطہ جانتے تھے۔ سال ۷۸۱ھ (۹۳) میں جناب حضرت امیر کبیر قدس سرہ نے اپنی خاص تشریف آوری سے اس خطۂ دل پذیر کو شرف بخشا اور اس کنوئیں پر چند روز کے لئے قیام فرمایا۔ کنوئیں کی کیفیت سے، کہ شیاطین کی قیام گاہ تھی، آگاہ ہو کر آپ نے بدعت کی بنیاد کو اکھیڑنے کیلئے بت خانہ کے ہی پتھروں اور مٹی سے بھروا کر اسے نابود کر دیا۔ اس کے بعد جناب میر محمد ہمدانیؒ (۹۴) نے اپنے قدموں کی برکت سے اس ملک کو رشک فرخار بنایا اور اس کنوئیں کی جگہ کے ساتھ ایک مسجد تعمیر کی اور اس میں اپنے ایک ساتھی رشتہ دار کو بٹھایا۔ اس بزرگوار صاحب نے اپنی ساری عمر وہاں گذاری اور وہیں پر دفن ہوئے۔ موجودہ وقت میں عوام اس بزرگوار کی قبر شریف کو ہاروت ماروت کی زیارت جانتے ہیں اور مذکورہ ٹیلے کو صحرای بابل۔

## نونگری ٹیلہ (۹۵)

چھراٹ (۹۶) اور شاورہ کے پرگنہ میں واقع ہے۔ پہاڑوں سے منقطع ہے اور اسکی لمبائی تقریباً چھ کروہ اور چوڑائی تقریباً دو میل۔ علیحدہ ہے اور ہموار۔ اسکی زمین میں اکثر کاشت ہوتی ہے۔ ایک طرف شالی بوئی جاتی ہے۔ جھاڑیوں اور درختوں سے خالی ہے۔

قدیم زمانے میں راجہ گلگندر (۹۷) نے مذکورہ ٹیلہ کی سطح پر نونگر نامی شہر بسایا تھا۔ اسی لئے یہ نونگر ٹیلہ کہلاتا ہے۔

## زینہ پورہ ٹیلہ

پرگنہ آڈون (۹۸) میں ہے۔ اسکی سطح ہموار ہے۔ بیچ میں بہت پستیاں ہیں۔ آبی اور خشکی دونوں طرح کی کاشت اس پر ہوتی ہے۔ جھاڑیاں اور درخت بے شمار پائے جاتے ہیں اور اس پر متعدد گاؤں آباد ہیں۔ سلطان زین العابدین نے مذکورہ ٹیلے پر زینہ پورہ آباد کیا اور اُونچی عمارتوں اور مضبوط شاہی تعمیرات سے وہاں اپنے دارالحکومت کی بنیاد ڈالی اور پانی کو جاری کرنے کے لئے سات کردہ کے فاصلہ پر زینہ ستھو (۹۹) نام کا پچاس گز سے ایک سو گز تک کا ایک اُونچا اور وسیع بند بنوایا اور اس کے اُوپر سونہ کل نامی نہر جاری کروا کے مذکورہ ٹیلے کو آباد کیا۔ کہتے ہیں اس زمانے میں فقیروں کی ایک جماعت شاہی محل میں پہنچی اور آزمائش کرنے کے لحاظ سے ان کے مربی نے بادشاہ سے کہا کہ فقیر لوگ بادشاہ کے برابر ہوتے ہیں۔ اس لئے ایک ہی جگہ میں دو بادشاہ نہیں سما سکتے ہیں۔ بادشاہ نے فقیروں کو راضی رکھنے کیلئے اپنا محل چھوڑ دیا اور نوشہرہ (۱۰۰) کو دارالخلافہ بنایا۔ بعد میں عمارات کی مرمت کے بعد وہ جگہ ویران ہوگئی، بند مہندم ہوا اور پانی منقطع ہوگیا۔

## بیج بہاڑہ ٹیلہ (۱۰۱)

چھوٹی سی بلندی کا ٹیلہ ہے اور ہر طرف سے منقطع۔ اگلے زمانے میں اس وقت

کے کسی راجا نے اس کے اُوپر شاہی محل بنوایا تھا۔

## بابا پور ٹیلہ (۱۰۲)

آڈون کے ساتھ پرگنہ زینہ پورہ (۱۰۳) میں واقع ہے۔اسکی زمین ہموار ہے، ہوا فرحت بخش ہے اور بلندی میں مشہور ہے۔ دُور دُور تک جہاں نظر جاتی ہے آبی اور خشکی زراعت دیکھنے میں آتی ہے۔اس پر کئی گاؤں آباد ہیں۔

## خام پور ٹیلہ (۱۰۴)

ناگام (۱۰۵) پرگنہ میں واقع ہے۔ بہت وسیع ہے اور شوپیان (۱۰۶) جانے والے راستہ میں آتا ہے۔اسکی زمین خشکی اور آبی زراعت کے لائق ہے۔خصوصیت کے ساتھ مونگ کی کاشت میں کہ وہاں کے دانے موٹے اور لذیز اور طاقت بخش ہوتے ہیں۔اس کے بیچ میں علی مردان خان (۱۰۷) کی سرائے موجود ہے۔

## ناگام ٹیلہ

چرار کے راستے میں اُونچا اور وسیع اور قابل زراعت ٹیلہ ہے لیکن پانی نہ ہونے کی وجہ سے خشک پڑا ہے۔اس کے بیچ میل نیل ناگ (۱۰۸) کا خوفناک چشمہ تھا جواب مفقود

ہے۔

## دامُو درو ُڈر (۱۰۹)

سرینگر سے پانچ کروہ کی دوری پر جنوب میں پرگنہ اچھہ (۱۱۰) میں واقع ہے۔ اسکی لمبائی قریب سات میل اور چوڑائی دو میل ہے۔ ہر طرف سے منقطع ہے اور ہموار۔ اس کے درمیان میں بہت سی پستیاں ہیں۔ جھاڑیوں اور درختوں اور پانی سے خالی ہے۔ ربیع اور خریف کی زراعت کے اجناس آبپاشی کے ذریعے موٹے اور طاقت بخش نکل آتے ہیں۔

کہتے ہیں کہ راجہ دامودر (۱۱۱) نے اس کے اُوپر دمودر نامی شہر بسایا تھا۔ ایک دن اس نے اپنے باپ کی روح کے نام پر خوراک پکوا کر خود دریائے بہت پر نہانے کے لئے گیا اور جاتے ہوئے اپنے محل کے دروازے پر دو برہمنوں نے اس سے کھانا مانگا۔ راجہ نے کہا ذرا ٹھہریئے میں بہت سے نہا کر آؤں۔ برہمنوں نے دریائے بہت کو اسکے سامنے لا کر حاضر کر دیا۔ راجہ نے ان کے اس غیر معمولی عمل کو جادو سمجھ لیا اور خود دریائے بہت کی جانب روانہ ہوا۔ برہمنوں نے اُسے کہا کہ جا تجھے سانپ کی شکل ہو جائے۔ یہ کہتے ہی راجہ کی شکل سانپ کی صورت میں مسخ ہوگئی اور وہ ٹیلے پر حیران و سرگردان ہو گیا۔ برہمنوں نے کہا کہ اگر کوئی باگوت گیتا کتاب ایک دن میں (ختم کر کے) اسکے سامنے پڑھے تو یہ اپنی صورت میں آجائے گا۔ لیکن ایک ہی دن کی مدت میں کوئی نہ پڑھ سکا اور راجا سانپ کی صورت میں بہت عرصے تک زندہ رہا۔ بعض لوگ اسے دیکھتے بھی تھے۔ اسی لئے اس ٹیلے کا نام دامودرو ُڈر (۱۱۲) رکھا گیا۔

## کھوشی پورہ ٹیلہ (۱۱۳)

ایک علیحدہ منقطع ٹیلہ ہے۔ لمبائی میں ایک میل اور چوڑائی میں بھی ایک میل۔ سرینگر سے مغرب کی جانب ہاکورسر کے کنارے پر واقع ہے اور اس کے اُوپر سلطان زین العابدین نے بلند عمارتیں بنوائی تھیں۔

## ہانجک ٹیلہ (۱۱۴)

خوشی پورہ ٹیلے کے متصل ہے۔ گولائی میں قریب تین میل ہے اور الگ منقطع ٹیلہ ہے۔ تھوڑی سی خشکی کی زراعت بھی اس پر ہوتی ہے۔

## ٹیلہ بڈگام (۱۱۵)

پرگنہ دین سو میں واقع ہے۔ ایک منقطع ٹیلہ ہے اور اسکی وسعت لمبائی اور چوڑائی میں ایک ایک فرسنگ ہوگی۔ اس پر کئی گاؤں آباد ہیں اور زراعت کاری بھی ہوتی ہے۔

## ٹیلہ چھُند پورہ (۱۱۶)

پرگنہ مانچھا مون (۱۱۷) میں واقع اور بہت وسیع ہے۔ پانی دستیاب ہے اور اس پر

کئی گاؤں موجود ہیں۔

## ٹیلہ مکھ ہامہ (۱۱۸)

دو تین میل لمبا بغیر پانی کے اور کٹا ہوا ٹیلہ مانچھا مون پرگنہ میں دارا پہاڑ کے متصل واقع ہے۔

## ژیوۃ وُڈر (۱۱۹)

دین سو پرگنہ میں ایک ٹیلہ نما تودہ ہے۔ تین چار کروہ لمبا اور تین کروہ چوڑا۔ پیٹھ اس کی پہاڑ کی طرف ہے اور درخت اور جھاڑیاں بے شمار پائی جاتی ہیں۔

## ٹیلہ پٹن (۱۲۰)

ایک وسیع تودہ ہے جس پر بانگل (۱۲۱) کے گاؤں آباد ہیں۔ نہروں کے پانی سے بعض جگہوں پر شالی کی کاشت ہوتی ہے۔ خریف کا موسم نہایت عمدہ اور نشو ونما والا ہوتا ہے۔ دیوان نہال چند نے اسکے اُوپر نہال پور نامی گاؤں بسایا تھا۔

# کریری ٹیلہ

پرگنہ کروہن (۱۲۲) میں پہاڑ کے ساتھ ملا ہوا ٹیلہ ہے۔ جو خاصا لمبا ہے۔ خشکی اور آبی زراعت کے لائق۔ اس کے درمیان میں سید حاجی مرادؒ کی زیارت موجود ہے۔

## ٹیلہ اشکورہ (۱۲۳)

پرگنہ کروہن میں واقع ہے۔ بہت وسیع اور فراخ ہے۔ قابل زراعت اور بعض جگہوں پر پانی دستیاب ہے۔ اس پر کئی گاؤں آباد ہیں۔ درختوں اور جھاڑیوں کا ہجوم پایا جاتا ہے۔ پہاڑ کے متصل ہے۔

## ٹیلہ واگب (۱۲۴)

پرگنہ کروہن میں واقع اور ہر طرف سے منقطع ہے۔ پانی کے بغیر ہے۔ خشکی کی زراعت بہت ہوتی ہے۔ بغیر درختوں کے ہے اور ایک مشہور خارزار ہے۔

## ٹیلہ بنڈہ پورہ

پرگنہ کو یہامہ (۱۲۵) میں واقع ہے۔ پانی دستیاب ہے۔ پیٹھ اس کی پہاڑ کی طرف ہے۔ شالی اور مختلف اجناس کی کاشت ہوتی ہے۔ اس پر بادام کے درختوں کا باغ ہے۔ پن چکی شالی کے لئے موجود ہے۔ مہاراجہ گلاب سنگھ (۱۲۶) کے تعمیرات بھی موجود ہیں۔

## ٹیلہ صفاپورہ

سایر المواضع (۱۲۷) پائین میں مان سرچشمے کے کنارے پر واقع ہے۔ پانی مہیا ہے۔ شالی اور اجناس کی کاشت کے لائق ہے۔ پہاڑ کے متصل ہے اور اسکے درمیان میں صفاپورہ کا گاؤں ہے۔

## ٹیلہ کرھامہ (۱۲۸)

پرگنہ لعل میں آہک ٹینگ پہاڑ کے متصل واقع ہے۔ بہت وسیع ہے۔ پانی دستیاب اور قابل زراعت ہے۔ اس پر چند گاؤں آباد ہیں۔

## واج وُڈر (۱۲۹)

پرگنہ لعل میں فشل تونگ پہاڑ کے متصل واقع ہے۔اس کا بیشتر حصہ خشکی زراعت کے قابل ہے۔ پانی کم ہی پایا جاتا ہے۔ زرد آلو کے درخت اس پر بہت ہیں جن کی گریوں سے لوگوں کو کافی فائدہ پہنچتا ہے۔اس کے نیچے جوی شاہی، جو سرینگر میں پہنچتی ہے، جاری ہے۔

## ٹیلہ پاندچ (۱۳۰)

باغِ ملّا شاہ سے محلّہ صورہ تک تین کروہ کے فاصلے پر ہے۔آبی اور خشکی زراعت کے لائق ہے۔آنچار سر جھیل کے کنارے پر واقع ہے۔ پادشاہان چغتائیہ کے عہد درختوں کی کثرت کی وجہ سے خاصا آباد ہو چکا تھا۔

## ٹیلہ چندی

پرگنہ دچھن پارہ میں کنل ون کے متصل واقع ہے۔اس کی لمبائی اندازاً چار میل اور چوڑائی ایک میل۔ پانی مہیا ہے اور اس پر کئی گاؤں آباد ہیں۔

## ٹیلہ دیوہ پور (۱۳۱)

سپرہ سمن (۱۳۲) پرگنہ میں واقع ہے۔اسکی وسعت تین چار میل سے زیادہ ہے۔ اسکے اندر بہت سے پتھریلے نالے موجود ہیں۔

## گوس وُڈر

چھراٹ پرگنہ میں واقع ہےاوراس پر بہت سے گاؤں آباد ہیں۔

## ڈڈوُ ڈر

دچھن پارہ (۱۳۳) پرگنہ میں مرہامہ گاؤں کے متصل واقع ہے۔اس پر کئی گاؤں آباد ہیں۔

## ٹیلہ پانپور

پرگنۂ وہو (۱۳۴) میں واقع اور ہر طرف سے منقطع ہے۔اس کے ایک طرف

دریائے بہت اور دوسری طرف جھیل ہے اور اسکے درمیان پستیوں اور بلندیوں کے فاصلے واقع ہیں۔ پانی کے بغیر ہے اور اجناس کی کاشت کے لائق۔ جن میں بیشتر ایک ہزار بارہ بیگہ زمین زعفران کی کاشت کے قابل ہے۔ جس کی کیفیت اپنی جگہ پر بیان کی جائیگی۔

## کشمیر کی زمینیں

کشمیر کی وادی تین درجوں میں تقسیم ہوتی ہے۔ ایک ہموار اور مسطح زمین، دوسری پہاڑوں کے درّے اور تیسری پہاڑوں اور ٹیلوں کے دامن۔

درجہ اول: کشمیر کا اوسط حصہ ایک مستطیل مسطح اور ہموار میدان ہے، جو ریت سے اور کنکروں سے آزاد اور گڑھوں اور خارزاروں سے خالی ہے۔ اسکی لمبائی اچھ بل (۱۳۵) چشمے سے زینہ گیر پرگنہ (۱۳۶) کے انتہا تک تقریباً پچاس کروہ اور اوسط درجے تک چوڑائی آٹھ کروہ ہے۔ اس کی زمین آبی و خشکی زراعت کے لائق ہے۔ مٹی اسکی بھورے رنگ کی ہے اور کافی طاقتور۔ فصل اس کی موٹے اور بھرے دانے والی اور نشو نما والی، اور پیداوار اسکی اُونچی زمینوں کے مقابلے میں دوگنی بلکہ تین گنی ہوتی ہے۔ اسکے اطراف و جوانب میں وسیع جھیلیں اور تالاب، جیسے جھیل اُولر، جھیل ڈل، آنچار سر، مان سر، پماسر، ہاکور سر اور خوشحال سر (۱۳۷) وغیرہ، زیرِ زمین پانی کے خزانے اور پانی کے حوض، نے راز اور لوخ زار (۱۳۸) واقع ہیں۔ اسکے بیچ میں سرینگر کا مشہور شہر ہے۔ اسکے اُوپر کے اور نیچے کے علاقے میں بہت

سے گاؤں آباد ہیں۔ وسط میں دریائے بہت ہمیشہ جاری ہے۔ بعض وقتوں میں دریا سیلابی ہو کر مذکورہ علاقے کو سیلاب کی زد میں لے آیا ہے۔ اس سیلاب کی وجہ سے شہر کے مکانات بھی تباہ ہو گئے۔ اکثر دیہات کی آبادی اور کھیتی باڑی کی زمینیں اور خاص کر شہر کا نچلا علاقہ سیلاب سے ویران ہو جاتا ہے۔

درجہ دوم: کشمیر کے گرد پہاڑوں میں ان کے درمیانی حصے مسطح اور ہموار شکل میں ہر طرف میں پھیلے ہوئے ہیں اور بہت سے گاؤں بلند سطح پر آباد ہیں۔ ان کی فصل قوت ونشو ونما اور بہتات میں اوسط درجے کی ہوتی ہے۔

درجہ سوم: یہ پہاڑوں اور ٹیلوں اور پشتوں کے دامن ہیں جو گولائی میں ہموار سطح کی صورت میں ایک سو فٹ انگریزی سے دو سو فٹ تک درجۂ اوّل والی زمین سے بلند ہے اور اکثر مسطح اور ہموار اور آبی و خشکی کاشت کے لائق ہے۔ اسکی پیداواری فصل قوت ونشو ونما اور بہتات میں تیسرے درجے پر ہے۔ اس قسم کی زمین میں بعض جگہوں پر سنگلاخ زمین، خار زار، گڑھے اور ویرانے بھی موجود ہیں۔

# کشمیر کے غار

## غار منڈا

شاہ آباد پرگنہ (۱۳۹) میں ڈورہ قصبہ میں جنوب کی جانب تین میل کی دُوری پر منڈا گاؤں کے قریب بانہال پہاڑ کی کمر پر ایک عجیب وغریب غار ہے۔ جس کے دہانے میں داخل ہو کر اندھیرے میں مشعلوں کی روشنی سے ذرا آگے بڑھ کر دو راستے نظر آتے ہیں۔ ایک راستہ بائیں جانب سخت خوفناک اور ہولناک ہے جہاں سے جانا دشوار ہے۔ دوسرا راستہ آگے جاتا ہے۔ تھوڑا فاصلہ طے کئے جانے کے بعد غار کے وسط میں ایک چھوٹی سی کوٹھری ہے جس کے بیچ میں ایک عجیب سا چشمہ ہے جس کا پانی غار کے منہ سے نکلتا ہے۔ پانی نہایت شیرین، میٹھا اور ٹھنڈا ہے۔ اس کوٹھری کی چھت سے پانی کے قطرے ہمیشہ ٹپکتے رہتے ہیں، جو اس جگہ کی سردی کی وجہ سے فوراً جم جاتے ہیں۔ لوگ وہاں ان یخ بستہ لٹھوں کو قند ونبات کی طرح کھاتے ہیں اور یہ جو کشمیر کے مؤرّخ لکھتے ہیں کہ مذکورہ یخ بستہ لٹھوں کو جب غار سے نکالتے ہیں تو وہ پتھر کی مانند ہو جاتے ہیں بالکل غلط ہے۔

## غار آری رای

ایک مشہور غار ہے، جو بومہ زوہ گاؤں میں مٹن پرگنہ میں ٹیلے کے دامن میں شمال

کی جانب واقع ہے۔ اس کی انتہا کو کسی نے نہیں دیکھا۔ اسکی چوڑائی پانچ گز اور بلندی چار گز سے تھوڑی اُوپر۔ اس غار کے اطراف میں کوٹھریاں ہیں۔ گویا رشیوں کی عبادت کرنے کی جگہیں تھیں۔ ایک کوٹھری میں قبر کی شکل بھی نظر آتی ہے۔ اس وقت ساری غار چمگاڈروں کے قبضے میں ہے جس کی وجہ سے طبیعت مکدرؔ ہو جاتی ہے اور غار میں داخل ہونا دشوار بن جاتا ہے۔

حیدر ملک چاڈورہ اپنی تاریخ میں لکھتا (۱۴۰) ہے کہ تحقیق کرنے کے مقصد سے میں اس غار میں داخل ہوا اور ہم بارہ آدمی ہاتھوں میں چراغ لئے اور ہر ایک کے لئے ایک سیر تیل اسکے سپرد کر کے آگے بڑھے۔ ہر چراغ کے درمیان ایک تیر پر تاپ کا فاصلہ تھا۔ جب دُور تک کا فاصلہ طے ہوا، ایک گنبد میں پہنچے جو بیس گز اُونچا تھا اور جس کی گولائی پچاس گز دیکھی۔ وہاں میں نے چار راستے دیکھے۔ دائیں طرف کا راستہ سانپ کی طرح بل کھاتا ہوا، بائیں طرف بھی ایک راستہ تھا اور اُوپر کو بھی ایک راستہ جاتا تھا اور آگے کی طرف بھی جو نیچے کو جارہا تھا۔ ان تینوں راستوں پر جانے کی ہم نے جرأت نہیں کی۔ البتہ امتحان کرنے کی غرض سے نیچے جانے والے راستے پر ایک پتھر کو لڑھک دیا گیا۔ ایک گھنٹے تک اس پتھر کے گرنے کی آواز کانوں میں آتی رہی۔ نیز اس گنبد کی چھت وغیرہ سے پانی ٹپکتا رہتا تھا۔ زمین تھوڑی گیلی ہو چکی تھی۔ اسی اثنا میں اطلاع ملی کہ تیل کم رہ گیا ہے، اس لئے اسی راہ سے لوٹ کر ہم باہر آگئے۔

صاحب تاریخ نے لکھا ہے کہ راجہ آری رای نے جو سندیمان (۱۴۱) کے نام سے معروف تھا بادشاہت چھوڑ دی اور ہرن کی کھال پہن کر اس غار میں آیا۔ اس کے بعد واپس نہیں آیا۔ اسی لئے اس غار کا نام آری رای غار رکھا گیا۔ اس کے بعد راجا رنادت اپنی رانی

کے ہمراہ مذکورہ غار میں داخل ہوا اور ان کا کوئی نشان تک نہ ملا۔

## غار امرناتھ (۱۴۲)

پرگنہ دچھن پارہ کے پہاڑوں میں مشرق کی جانب ایک پہاڑ پر ایک عجیب سی غار ہے، جس کی لمبائی پچاس گز اور چوڑائی بھی اسی قدر اور بلندی پینتیس گز تک ہوگی۔ قدیم زمانے سے برف اور یخ مختلف رنگوں میں وہاں موجود ہے جس پر کبھی سورج کی کرنیں نہیں پڑتیں۔ کشمیر کے مؤرخین لکھتے ہیں کہ اس غار کی چھت سے پانی کے قطرے ٹپکتے ہیں اور سمندر کے مدوجزر کے مطابق چاند کی روشنی بڑھنے کے ساتھ پانی کے قطرے ٹپکنے سے اس غار کے ایک کونے میں یخ کا ایک پیکر چھت تک جم جاتا ہے۔ ہندو اس پیکر کو مہادیو کا لنگ جانتے ہیں۔ چاند کی روشنی گھٹنے کے ساتھ پانی کے قطروں کا ٹپکنا بھی رُک جاتا ہے اور یخ کی شکل بھی پگھل جاتی ہے اور جن ایام میں چاند نظر نہیں آتا یخ بندی کا کوئی نشان باقی نہیں رہتا۔ کہتے ہیں ہر مہینے ایسا ہی ہوتا ہے اور پھر پگھلتا ہے۔

لیکن یورپ کے محققین اس بات کو نہیں مانتے۔

ہندوستان کے علاقوں اور اطراف وغیرہ سے برہمن اور سادھو اور سنیاسی اور گوسائیں لوگ (۱۴۳) اس جگہ کی زیارت کے لئے بڑی تکلیفیں اُٹھا کر پندرہ ساون سودی کی تاریخ کو وہاں جاتے ہیں۔

## غار بازارھوی

پرگنہ کوہامہ کے بوٹو گاؤں میں آہام پہاڑ کے اُوپر سنگ بی بی صاحبہ کی زیارت کے متصل ایک لمبی غار ہے جس کی انتہا کسی آدمی نے نہیں دیکھ پائی ہے۔اس کے اندر سے ایک پرانی نہر جاری ہے۔

## غار کپوارہ

دچھن پارہ پرگنہ میں کپوارہ گاؤں میں ایک اندھیری غار ہے جسکے اندر کوئی نہیں جاتا۔ کہتے ہیں اس غار کے اندر ایک عرصے تک شیخ زین الدین ریشی (۱۴۴) خلوت نشین تھے۔

## غار بیروہ

بیروہ قصبہ کے متصل ایک بہت لمبی غار ہے جس کی انتہا کوئی نہ دیکھ پایا۔ کہتے ہیں انبودنامی ایک عبادت گذار آدمی، جو بڑا ریاضت کش تھا، اپنے بارہ شاگردوں کے ہمراہ جو سارے ویدوں (۱۴۵) کے عالم تھے، اس غار میں داخل ہوا اور واپس نہیں آیا۔ اس غار کے اندر بہت گہرا کنواں ہے۔

# کشمیر کے پتھر

## سنگ بلور

اگلے زمانے میں دچھن پارہ کے پہاڑوں اور پرگنہ لعل کے ٹھنڈے علاقے میں بلور کے پتھر کافی تعداد میں پائے گئے ہیں۔ موجودہ زمانے میں بھی بعض اوقات چرواہے اور سیاح لوگ مذکورہ ٹھنڈے علاقوں سے بلور کے دانے لایا کرتے ہیں۔ سال ۱۹۴۰ بکرمی میں لعل کے پہاڑوں سے بلور کی کان نکلی تھی لیکن ناپید ہوگئی۔

## سنگ موسیٰ

پرگنہ وہو کے کھریو شار گاؤں سے سیاہ رنگ کا صاف، شفاف اور ملائم پتھر لایا کرتے ہیں جس سے نگینے اور عجیب عجیب چیزیں بنائی جاتی ہیں۔ بعض لوگ اسے سنگ پتاول کہتے ہیں۔

## سنگ چقماق

اسے حجر النّار کہتے ہیں۔ کھریوہ شار گاؤں سے دستیاب ہوتا ہے۔

## سنگ نلچین

پرگنہ دچھن پارہ کے مامل گاؤں سے سرخ نما پتھر، جو بہت نرم و ملائم ہوتا ہے، لاتے ہیں اور اسے برتن اور پیالے بنائے جاتے ہیں۔ ٹھیکری کے برابر ہوتا ہے۔

## سنگ دالم

بہت نرم پتھر ہے اور ویرناگ کے متصل شاہ آباد گاؤں میں ہوتا ہے۔ زرگر لوگ کوٹ چھان کر چاندی اور سونے کو پگھلانے کے لئے اس سے برتن بناتے ہیں۔

## سنگ شیشہ و کانچ

ددر ہامہ کے متصل سندلار سے چھوٹے چھوٹے خوبصورت گول پتھروں کو جمع کر کے آگ میں ڈالنے کے بعد ان سے شیشہ اور کانچ بناتے ہیں۔

## سنگ کچ

بارہ مولہ قصبہ (۱۴۶) سے بھٹیوں میں پختہ بناوئے جانے کے بعد شہر میں لائے

جاتے ہیں۔ بہت صاف اور سفید پتھر ہوتے ہیں۔

## سنگ چونہ

کشمیر میں بہت ہوتا ہے۔ اوّل کوہِ آہک ٹینگ سے، جو سارے کا سارا چونے پتھر کا ہے، دستیاب ہے۔ اسکے نیچے چونہ کی دس بیس بھٹیاں موجود ہیں۔ پھر پرگنہ کو یہامہ میں اجس گاؤں میں ملتا ہے۔ اور پرگنہ مچھی پورہ میں زچل ڈارہ میں دستیاب ہے۔ بارہ مولہ قصبہ میں ملتا ہے اور اننت ناگ قصبہ میں دستیاب ہے۔ نیز پرگنہ دیوہ سر (۱۴۷) میں ملتا ہے۔

## سنگ سماق

کشمیر میں بہت موجود ہے۔

## سنگ فرشی

بارہ مولہ پہاڑ سے بہت مقدار میں لاتے ہیں اور حماموں کے فرش کیلئے مصرف میں لایا جاتا ہے۔ پرگنہ لعل کے نونر گاؤں سے صاف قسم کی پوتریاں ملتی ہیں۔

## کشمیر کی کانیں

کہتے ہیں قدیم زمانے میں کشمیر کے پہاڑوں میں بہت کانیں تھیں، جواب موجودہ زمانے میں ناپید ہیں۔ بس لوہے کی کانیں رہ گئی ہیں۔

## زمرد کی کان

کہا جاتا ہے ہرموکھ پہاڑ کی چوٹی پر زمرد کی کان موجود ہے جس کے سبب جہاں کہیں بھی کوہ ہرموکھ کی اُونچی چوٹی نظر آئے گی وہاں سانپ کا ڈسنا یقیناً مہلک نہیں ہوتا بلکہ وہاں افعی اور سانپ ظاہر بھی نہیں ہوتے (۱۴۸)۔

## سونے کی کان

قریب سو سال بیت چکے کہ دراس کے لوگوں نے زوجہ بال کے پہاڑوں سے مشرق کی جانب دریا کے کنارے پر سونے کی کان پائی تھی اور کچھ عرصے تک اس میں مصروف رہے۔

اطلاع: ایک دن سونے کا ایک پیکر جسکے دونوں بازوں نہیں تھے لوگوں کو مل گیا اور اسے

بانٹنے میں انہوں نے جھگڑا کر کے ایک دوسرے پر تیر چلانے سے خود کو زخمی کر دیا۔ یکا یک مذکورہ پیکر نے اٹھکر دریا کے کنارے سے بیچ دریا میں چھلانگ لگا لی اور فوراً ہی پہاڑ پر سے بڑا سا پتھر نیچے آیا اور کان کو ڈھک دیا۔ ہے تو حیران کن واقعہ لیکن دلپذیر ہے۔

آئین اکبری میں لکھا ہے کہ دریائے ابا سند اور پدمنی ندی سے جو چیلاس سے آتی ہے نیز دریائے کرشنہ گنگا سے سونے کی ریت دستیاب ہوئی ہے۔ اسے خاک شوئی کے توسط سے حاصل کرتے ہیں یا اُونچے بالوں والی کھال کو دریا میں پھیلا دیتے ہیں اور اس کے ارد گرد پتھر رکھ دیتے ہیں کہ پانی بہا کر نہ لے جائے پھر دونوں کے بعد اُٹھا کر دھوپ میں چھوڑ دیتے ہیں اور جب سوکھ جاتی ہے تو جھاڑ دیتے ہیں اور سونے کے ریزے پا لیتے ہیں (۱۴۹)۔

## چاندی اور مس کی کان

انس صاحب نے اپنی تاریخ میں لکھا ہے کہ کشمیر کے ملک میں چاندی اور مس اور قلعی کی کانیں موجود ہیں۔ کہتے ہیں کہ عیش مقام کے پہاڑوں میں مس کی کان (۱۵۰) ہے لیکن اس پر اخراجات زیادہ اور آمدنی کم ہے۔

## لوہے کی کان

ملک کشمیر میں چار جگہوں پر لوہا نکلتا ہے۔ ایک پشر گاؤں میں جو کوٹھار پرگنہ میں

ہے اور برنگ پرگنہ میں صوف (۱۵۱) نامی جگہ پر جو بہت ہی صاف اور ملائم ہے۔ دوسرے پرگنہ ٔوہو میں کھریوشار گاؤں میں جو اوسط درجے کا ہے۔ تیسرے زینہ گیر پرگنہ میں ہرون گاؤں میں جو نا صاف اور خراب ہے اور چوتھے پرگنہ شاہ آباد میں ژوہن گاؤں میں (۱۵۲)۔

## گندھک کی کان

کشمیر میں بہت سے ایسے چشمے ہیں جن کے پانی سے گندھک کی بو آتی ہے۔ اس سے معلوم ہوا ہے کہ ان کے نیچے گندھک کی کان ہوگی۔ کہتے ہیں کہ کامراج کے مغربی پہاڑوں میں گندھک کی بہت سی کانیں موجود ہیں۔ چنانچہ مچھی پورہ پرگنہ میں پہاڑ کے دامن میں بعض اوقات زمین سے دھواں نکلتا ہے اور رات کو آگ کے شعلے دیکھنے میں آتے ہیں۔ ہندو لوگ سے سویم کہتے ہیں اور اسے جوالا مکھی (۱۵۳) کے ظاہر ہونے کی جگہ جانتے ہیں اور اس کے ظاہر ہو جانے پر ہندو جوق در جوق وہاں جا کر پوجا کرتے ہیں اور مٹی کے برتنوں (۱۵۴) میں چاول اور پانی رکھ کر چشمے میں ڈال (۱۵۵) دیتے ہیں اور گھنٹہ بھر میں خوراک پک جاتی ہے۔ اس کے ظاہر ہو جانے کا کوئی وقت مقرر نہیں۔

مسلمان اسے گندھک کی کان سمجھتے ہیں اور یورپ کے لوگ کوئلے کی۔

## سُرمے کی کان

پرگنہ کہاروہ میں بونیار گاؤں میں سُرمہ کی کان موجود ہے۔

# کشمیر کے پہاڑی چشمے

کشمیر کے ملک میں پہاڑوں اور صحراؤں میں جگہ جگہ بہت سے دلآویز چشمے پائے جاتے ہیں۔ ان میں سے بعض ایسے مشہور چشموں کا ذکر کیا جارہا ہے جو پہاڑوں کے اُوپر سے ندیوں کی راہ سے اس ملک کے لئے فائدہ بخش ہیں۔

## ہرموکٹہ گنگا

پرگنہ لعل (۱۵۶) نامی ٹھنڈے مقام پر سرینگر سے پچاس میل شمال کی طرف ہرموکھ پہاڑ کے مشرقی دامن میں واقع ہے۔ اسکی شکل مربع اور مستطیل اور اس کے اصلاع تقریباً پانچ میل اور وسعت وفراخی میں تمام پہاڑی چشموں میں بے مثال ہے۔ یہ چشمہ ہمیشہ صاف وشفاف پانی سے مالا مال رہتا ہے۔ اسکے درمیان میں برف کے ٹکڑے ہر طرف حرکت میں رہتے ہیں۔ ہندو اس متبرک جان کر اپنے مردوں کی ہڈیوں کو اس میں ڈال (۱۵۷) دیتے ہیں۔ آٹھویں بہادون (۱۵۸) سوری کو وہاں ایک میلہ (۱۵۹) ہوتا ہے۔

## کانہ سر

یہ ہرموکٹہ گنگا (۱۶۰) سے اُوپر شمال کی جانب ایک چشمہ ہے۔ جس کے اندر گرما

کے موسم میں برف کے ٹکڑے تیرتے رہتے ہیں۔اس کا پانی گنگا کے پانی سے مل جاتا ہے۔ نیز اس کے متصل ہرموکھ پہاڑ کی چوٹی سے پانچ ندیاں جاری ہوکر گنگا کے پانی میں اُترتی ہیں۔جن میں ایک ندی کا پانی دودھ کی مانند ہوتا ہے اور دوسری ندی کا پانی سرخ نما نظر آتا ہے اور باقی تین ندیوں کا پانی صاف وشفاف ہے۔

## نند کالو

ہرموکٹہ گنگا کے متصل جنوب (۱۶۱) کی طرف دو آنکھوں کی طرف یہ دو چشمے ایک دوسرے کے ساتھ ساتھ ہیں۔نند چشمے کا پانی صاف اور کالو چشمے کا سیاہ رنگ کا ہے۔ ہندوان چشموں کو گنگا کے دو بھائی جان کران کو متبرک مانتے ہیں۔

## کولوسر (۱۶۲)

کوہ ہمیشہ دارا اور ہرموکٹہ گنگا کے درمیان واقع ہے۔اس کا پانی صاف اور نیلے رنگ کا دکھائی دیتا ہے۔کئی چشموں کا مجموعہ ہونے کی وجہ سے یہ کرانکہ ندی کا منبع بھی ہے۔

## اش فیر

کولوسر کے متصل جنوب کی طرف دو چشمے ہیں۔جو ایک دوسرے کے ساتھ ساتھ

ہیں۔ایک کا پانی گرم اور دوسرے کا سرد۔ ہندوؤں کا اعتقاد ہے کہ یہ دو چشمے ماتا پاروتی کی آنسوؤں کے دو قطرے ہیں جو وہاں پر گرے ہیں۔اش فیر کے معنی ہیں آنسوؤں کے قطرے۔ان دو چشموں کا پانی کبھی نہیں بہتا۔

## ستہ سر (۱۶۳)

زوجہ بال پہاڑ پر ایک دوسرے کے متصل سات چشمے ہیں اور ہر موکٹہ گنگا سے آٹھ میل کی دُوری پر شمال میں واقع ہیں۔ان چشموں کا پانی دو حصوں میں بٹ جاتا ہے۔ایک حصہ میں جنوب میں کرانکہ ندی میں مل جاتا ہے اور یہ ندی کوہ وگنی کے نیچے ایک غار کے اندر داخل ہو کر چھپ جاتی ہے۔ کہتے ہیں ماضی میں یہی پانی الرناگ میں اُبل کر شہر سندمت نگر کو غرق کر چکا تھا۔چنانچہ اگلے راجوں میں سے کسی راجا نے آزمانے کی خاطر شالی کے بھوسے کو مذکورہ ندی میں ڈال کر الرناگ کے چشمے میں ظاہر ہوتے دیکھا۔**واللہ اعلم بحائیق الامور**۔

## ڈوڈھ سر

پرگنہ لار کے (۱۶۴) سر دعلاقے میں ایک گول چشمہ ہے۔اس کا پانی کرانکہ ندی کے پانی میں شامل ہو کر سندلار کے ساتھ مل جاتا ہے۔

## پرآن گنگ

یعنی پرانا گنگ جو پرگنہ لار کے پہاڑوں میں واقع ہے۔ کہتے ہیں پرانے زمانے میں ہندو لوگ اپنے مردوں کی ہڈی کو اسی میں ڈالتے تھے۔ کلجوگ کی تاثیر سے اسکی خاصیت ہرموکٹھ گنگا میں تبدیل ہوئی اور اس مذکورہ چشمے کا پانی کم ہوگیا کہ اسکی گہرائی سے پتھر دکھائی دینے لگے۔ موجودہ وقت میں تھوڑا پانی اس سے ابل کر کرانکہ ندی میں مل جاتا ہے۔

## مَس ٹھوکر

گنڈ سرسنگھ پہاڑ کے اُوپر ایک چشمہ ہے جس کا پانی سندلار میں مل جاتا ہے۔

## برہمہ سر

مہالشہ مرغ (۱۶۵) سبزہ زار کے کونے میں ایک چشمہ ہے۔ ہندو اسے متبرک جانتے ہیں۔ کہا جاتا ہے اس کا پانی برہمہ سرندی کا منبع ہے، جو وسن کے مقام پر سندلار سے مل جاتا ہے۔

## کرشنہ سر

پرگنہ لار کے پہاڑوں میں ایک چشمہ ہے۔ کہتے ہیں یہی چشمہ کرشنا گنگا کا منبع

(۱۶۶) ہے۔

## وشنہ سر

کرشنہ سر کے قریب وشنہ سر سبزہ زار میں پانی کا تالاب ہے جس کے اندر ایک بہت بڑا پتھر دکھائی دیتا ہے۔ ہندو اسے یشن جی (۱۶۷) کا مندر خیال کرتے ہیں۔ اس کا پانی کرشنہ گنگا میں مل جاتا ہے (۱۶۸)۔

## پرنگ سر

وشنہ سر کا ایک چشمہ ہے شمال کی جانب (۱۶۹)۔

## گاڈہ سر (۱۷۰)

ستہ سر کا ایک چشمہ ہے جو مشرق میں ہے۔ اس کا پانی گدلا ہے اور اس میں کثرت سے مچھلیاں ہیں جنہیں کوئی شکار نہیں کرسکتا۔

## یم سر

گاڈہ سر کے قریب مشرق میں ایک چشمہ ہے۔ اس کا پانی نیلے رنگ کا ہے۔ اس

میں ایک جانور ہے جسے ہندی میں تیندوا کہتے ہیں جو آدمی کو مار ڈالتا ہے۔ان تینوں چشموں کا پانی کرشنہ گنگا میں گرتا ہے۔

## ستانی سر

تلیل کی جانب ستانی پہاڑ پر ایک چشمہ ہے۔اس کے متصل تین اور بے نام چشمے ہیں جن کا پانی کرشنہ گنگا سے جا ملتا ہے۔

## کڈوری سر

پاتل ون سبزہ زار میں ہے۔اس کا پانی کرشنہ گنگا سے مل جاتا ہے۔

## سارن سر

ایک خوبصورت چشمہ ہے گوریس کی طرف ۔اس کا پانی سیاہ رنگ کا ہے اور کرشنہ گنگا میں جا ملتا ہے۔

## شیراسر

کوہ ہرموکھ کے مغربی دامن میں ایک تالاب ہے۔اس میں یخ کے ٹکڑے تیرتے

رہتے ہیں۔ وسعت میں ہرموکھ گنگا کے برابر ہے۔ اسکے بیچ میں ایک بڑا پتھر نظر آتا ہے۔ اس کا پانی آرنی ندی (۱۷۱) کا منبع ہے اور جھیل الر سے مل جاتا ہے۔ اس کے متصل اور بھی دو بے نام چشمے ہیں۔

## دودھ سر

شیرا سر سے شمال کی جانب کوہ پلہ دار میں واقع ہے۔ اس چشمے کے عجائبات میں سے ایک یہ ہے کہ بہادون کے مہینے میں ہمیشہ اس کا پانی تین بار دودھ جیسے سفید رنگ میں جاری ہوتا ہے جو ایک دن رات تک ویسے ہی جاری رہتا ہے۔ اس چشمے کا پانی ارنی ندی میں مل کر جھیل ولر میں شامل ہو جاتا ہے۔

## کم سر گگر سر (۱۷۲)

ہرموکھ پہاڑ کے نیچے چھتر سبزہ زار میں واقع ہیں اور دونوں چشموں کا پانی ارنی ندی کے ہمراہ اولر میں جاملتا ہے۔

## نیلہ سر

ایک عمدہ چشمہ ہے جو ہرموکھ پہاڑ کے دامن کے نیچے شمال میں واقع ہے۔ اس کا

پانی نیلے رنگ کا ہے اور ہاضم ہے۔ سالنی پہاڑ کی بلندی پر مدمتی ندی کا منبع (۱۷۳) ہے جو کو یہامہ کے وسط کے درے سے گذر کر جھیل اولر میں جاملتا ہے۔

## نیلہ بون

کچھ بال پہاڑ کے دامن کے نیچے واقع ہے۔ اسکا پانی مدومتی میں مل جاتا ہے۔

## تلاوبل

برہ بال پہاڑ کے دامن کے نیچے واقع ہے۔ اس کا پانی مدومتی میں مل جاتا ہے۔

## سالن سر

ہرموکھ پہاڑ کے نیچے سالنی سبزہ زار میں واقع ہے۔ اس کا پانی مدومتی کے ساتھ جا ملتا ہے۔

## یمل سر

برہ بال پہاڑ کے متصل مشرق کی جانب واقع ہے۔ کہتے ہیں کہ یہاں جنوں کا

تصرف ہے۔ اکثر اوقات ساز و آواز کی صدائیں سنائی دیتی ہیں۔ اس کا پانی مدومتی نہر سے جاملتا ہے۔

## کم سر

کو یہامہ کے شمالی پہاڑ پر ناگا مرغ سبزہ زار کے درمیان میں واقع ہے۔ اس کا پانی مدومتی سے جاملتا ہے۔

## نیلہ سر

گوریز جاتے ہوئے راستے پر وجہ بال کے نیچے صاف وشفا پانی سے مالامال چشمہ ہے۔ جس میں سے پانی کا ایک ایک قطرہ بھی باہر نہیں جاتا۔ عجیب بات یہ ہے کہ ہر سال بہار کے ابتدائی ایام میں پہاڑوں کی برف پتھروں اور مٹی اور درختوں کو ساتھ لاتی ہوئی اس میں آگرتی ہے اور اس سے ایک دو مہینوں تک نظروں سے چھپ جاتی ہے۔ اسکی گہرائی ان پتھروں اور مٹی سے مطلق بھر نہیں پاتی۔

## مرناگ

پرگنہ اوتر کے ٹھنڈے مقام میں مرناگ پہاڑ پر ایک بہت گہرا چشمہ ہے، جو پانی

سے لبریز ہے، لیکن بہتا نہیں ہے۔ کہتے ہیں اس چشمے کا پانی پرگنہ وتر میں منزہار نامی گاؤں سے اُبلتا ہے۔ العلم عند اللّٰہ۔

## ژہن ژہن ناگ

گگلوسہ پہاڑ پر واقع ہے اور گہرا ہے۔ اس کا دور پچاس قدم ہے اور پانی باہر نہیں بہتا۔ کہتے ہیں پرگنہ وتر میں ترہ گام نامی گاؤں میں شیوہ ناگ چشمے سے اس کا پانی اُبلتا ہے۔ واللہ اعلم۔

## ستہ کل ناگ

شمشہ پہاڑ پر ایک عجیب سا چشمہ ہے اور کامراج کے بنگس نامی ٹھنڈے مقام میں ہے۔ اس میں پانی کی بہتات ہے۔ قدرت الٰہی سے اس سے سات ندیاں نکلتی ہیں جن میں سے چار دراو، کرنا کی جانب کرشنہ گنگا (۱۷۴) میں ملتی ہیں اور باقی تین کشمیر کی طرف آتی ہیں۔ ایک کامل ندی ہے جو وتر ٹیلے کی ایک جگہ کو، دوسری مادر ندی اور تیسری تالر ندی کھیتی کی زمینوں کو سیراب کرتی ہوئی پہرو (۱۷۵) نالے میں جا ملتی ہیں۔

## کیسہ ناگ

دراوہ جاتے ہوئے راستے پر کوہ بنگس کے اُوپر ایک عجیب چشمہ ہے۔ کھمبل ندی

کے ساتھ اس کا پانی مل کر پہرو نالے میں شامل ہو جاتا ہے۔

## چہار چشمہ

مچھی پورہ کامراج کے حدود میں واقع کاجی ناگ پہاڑ کی بلند چوٹی، جو ہمیشہ برف میں ڈھکی رہتی ہے، کے آس پاس چار عجیب وغریب چشمے (۱۷۶) ہیں، جو پانی کی فراوانی کی وجہ سے مشہور ہیں۔ راہ کی مشکلات اور جگہ کی اُونچائی کے باعث ان چشموں کو دیکھنا ہر ایک کے لئے دشوار بن چکا ہے۔ البتہ سادھو (۱۷۷) لوگ اور یورپی سیاح بڑی مشکلوں کے بعد ہی انہیں دیکھ پاتے ہیں۔ ان میں ایک کاجی ناگ ہے، جو مذکورہ چوٹی کے مشرق میں واقع ہے۔ اور بادلوں کے پردے میں ہمیشہ چھپا اور یخ کے ٹکڑے سے بھرا رہتا ہے۔ کسی آدمی نے خشک سالی میں گائے کی کھال کا ایک ٹکڑا اس میں پھینک دیا۔ اس قدر اولے گرے کہ وہ بے تمیز ہلاک ہوا۔ اس کا پانی مادر ندی میں مل کر پہرو نالے میں شامل ہو جاتا ہے۔

## گورچن ناگ

کاجی ناگ کے متصل جنوب کی جانب واقع ہے۔ اس کا پانی کہمل ندی میں مل کر کھیتوں کو سیراب کرتے ہوئے پہرو نالہ میں شامل ہو جاتا ہے۔

## نیلہ پش ناگ

مغرب میں واقع ہے۔اس کا پانی کھٹائی (۱۷۸) تک کھیتوں کو طراوت بخشنے کے بعد کشمیر کے دریا (۱۷۹) کے ساتھ مل جاتا ہے۔

## وانگن واس

نیلہ پش ناگ کے قریب مغربی جانب جنوب میں واقع ہے۔اس کا پانی وزہامہ کی کھیتوں کو سیراب کر کے بہت میں مل جاتا ہے۔

## ایلہ پتھری

افروٹ پہاڑ کے اُوپر ایک دل کشا چشمہ ہے۔گل مرغ سے جنوب میں اس سے تین ندیاں نکلتی ہیں۔ایک پونچھ کی طرف بہہ نکلتی ہے۔جسے تباری کہتے ہیں۔دوسری بونیار کی طرف جسے ہفت کھی کہتے ہیں۔تیسری ندی گل مرغ میں بہہ کر ننگل دریا میں مل جاتی ہے۔

## سُک ناگ

پرگنہ بیروہ (۱۸۰) کے ٹھنڈے مقام میں ژنہ پتھر نامی پہاڑ پر واقع ہے۔فراخی میں

بے مثال ہے۔اس کا پانی ہاضم اور خوشگوار ہے اور زمانے کے عیش پسند لوگوں کے لئے پسندیدہ جگہ ہے۔اسکی ندی پہاڑ کی چوٹی سے......(۱۸۱) نامی جگہ پر پانی کی چادر کی طرح گرتی ہے۔اور وہاں پر عجیب کیفیت طاری ہو جاتی ہے جو دیکھنے والوں کے لئے مسرت افزا ہے۔اکثر عیاش لوگ اس جگہ کی سیر اور نظارہ کرنے کے لئے جاتے رہتے ہیں۔اگلے شاعروں نے اس کی توصیف میں دادِ سخن دیا ہے۔اس کا پانی مکھامہ ندی میں شامل ہو کر پماسر میں مل جاتا ہے۔

## دمامہ سر

توسہ میدان کے جنوب کی طرف ایک وسیع تالاب ہے۔اس کا پانی پونچھ کی طرف بہتا ہے۔

## دودھ سر

یہ چشمہ کاژہ گل نامی (۱۸۲) پہاڑ کی چوٹی پر واقع ہے۔اس کا پانی میٹھا، ہاضم اور شیرین ہے۔اپنے منبع سے اُبل کر سنگلاخ میں سے، جس کے پتھر بالکل سفید ہیں، بہہ کر اُونچائی سے پانی کے ایک چادر کی مانند نیچے گرتا ہے۔یہ چشمہ دودھ گنگا دریا (۱۸۳) کا منبع ہے۔سنگ سفید مرغزار میں ہوا خاصی مرطوب اور روح افزا ہے۔گرما کے موسم میں عیاش لوگ اس کی سیر و سیاحت کو جاکر خوشیاں مناتے ہیں۔لیکن مقام کی اُونچائی راہ کی دشواری

اور ہوا کی خنکی کی وجہ سے چشمے کا دیکھنا مشکل ہو جاتا ہے۔

## انوٹ ناگ

پیر پنچال (۱۸۴) کے شمال میں انوٹ پہاڑ پر ایک عجیب چشمہ ہے۔ رامشی (۱۸۵) ندی کا منبع ہے جو چھراٹ ٹیلے کے درمیان میں سے بہتا ہے۔

## رام سر

ایک عمدہ چشمہ ہے جو کاژہ گل نامی پہاڑ پر دودھ سر کے نزدیک واقع ہے۔ رامشی ندی (۱۸۶) کا منبع ہے جو چھرات ٹیلے کے درمیان میں سے بہتا ہے۔

## کریم سر، تان سر، مان سر

تین اور بے نام اور غیر مشہور چشمے ہیں۔ ان چشموں کا پانی اجتماعی طور پر جنوب میں واقع ایک حصہ کے ساتھ راجوری دریا کے ساتھ شامل ہو جاتا ہے اور دوسرا حصہ کشمیر کی طرف بہتا ہے جو رنبی آرہ (۱۸۷) کا منبع بن جاتا ہے۔

## نندن سر

چندن سر کے نزدیک ایک میل کے فاصلے پر ایک دل کش چشمہ (۱۸۸) ہے۔ اس

کا پانی رنبی آرہ کے منبع میں پایا جاتا ہے اور سرای سوختہ کی طرف راہ میں بہہ نکلتا ہے اور مذکورہ ندی میں وسعت پیدا کر دیتا ہے۔

## چندن سر (۱۸۹)

پیر پنچال کے روپڑی پہاڑ پر جنوب کی طرف ایک چشمہ ہے۔ اس کے ارد گرد چھ اور چشمے موجود ہیں۔

## وتہ سر

شوپ کوری پہاڑ پر ایک چشمہ ہے جس کا پانی ذبجن نامی مقام میں پہنچتا ہے۔

## کوثر ناگ

یہ کوثر پہاڑ پر ایک معروف چشمہ ہے جس کا احاطہ تین میل پر حاوی ہے اور پاؤں کے تلوے کی مانند نظر آتا ہے۔ ہندوؤں کا عقیدہ ہے کہ یہ چشمہ بشن جی کے پاؤں کے نیچے سے پھوٹ نکلا ہے، اس لئے شاستر کی کتابوں میں اس کا نام وشنہ پادر (۱۹۰) رکھا گیا ہے۔ اس کا پانی ہمیشہ نیلا رہتا ہے۔ جس میں یخ کے ٹکڑے تیرتے پھرتے ہیں۔

زینہ ترنگنی (۱۹۱) کا مصنف لکھتا ہے کہ سلطان زین العابدین گرمیوں کے موسم میں

سیر و تفریح، شکار اور ہوا خوری کے لئے کوثر پہاڑ پر آیا کرتا تھا اور اکثر اوقات اس وقت کے بزرگوں میں سے اپنے ایک مربی بزرگ کے ہمراہ کوثر ناگ چشمہ میں کشتی میں سوار ہو کر تحقیق و مطالعہ اور تصوف کے دقائق و نکات پر بحث و گفتگو میں سیر و تفریح کے اوقات میں مصروف رہا کرتا تھا۔

راقم الحروف ایک فقیر کے ہمراہ اپنے چند دوستوں کے ساتھ چشمہ کوثر ناگ پر پہنچا۔ ہمارا ایک دوست مذکورہ چشمے میں نہا رہا تھا اور تیراکی کے بل بوتے پر ذرا دُور چلا گیا۔ اچانک اس کی دونوں ٹانگیں تیرنے سے رُک گئیں اور ہم نے اس کی پگڑی ایک پتھر کے ساتھ باندھ کر اسکی طرف پھینک دی اور اسکی مدد سے ہم اسے کھینچ کر کنارے پر لے آئے۔ ہم نے دیکھا کہ ایک حیوان اسکی دونوں ٹانگوں کو منہ میں دبا کر انہیں نگل رہا تھا۔ اگرچہ ہم نے لکڑیوں، کلہاڑیوں اور پتھروں سے اس کو بہت مارا لیکن موثر نہ ہو پایا۔ اور اس نے ہمارے دوست کے جسم کو گھٹنے تک نگل لیا۔ پھر ہم نے اس حیوان کے اُوپر لکڑیاں رکھ کر اس پر آگ لگا دی۔ آگ کے بھڑکتے ہی اس خوفناک بلا کے اندر سے بندوق داغنے کی سی آواز نکلی اور وہ فوراً ہوا میں چھلانگ لگا کر پانی میں کود پڑا اور اس اجل رسیدہ دوست کو اپنی غذا بنا لیا۔ یہ حیوان ایک جونک کی شکل کا تھا جو دو گز لمبا اور نیچے کی طرف ایک گز اور سر کی جانب آٹھ گرہ چوڑا تھا۔ اسکی کھال سخت کھردری اور دانہ دار تھی جس پر کلہاڑی کے ضرب بھی کارگر نہ ہوئے۔

اس چشمے کا پانی اپنے منبع سے نکل کر دو حصوں میں بٹ جاتا ہے۔ ایک حصہ جنوب کی طرف بہہ کر چندربا گاندی میں شامل ہو جاتا ہے اور دوسرا حصہ ویشو دریا (۱۹۲) کا منبع بن کر کشمیر کی طرف بہہ نکلتا ہے۔

## ژھر سر

زجہ مرگ کے درمیان ایک چشمہ ہے۔اس کا پانی ویشو دریا میں بہتا ہے۔

## کوثر سر

رای نیو پہاڑ پر ایک چشمہ ہے، جو بدلی جانے والے راستہ پر واقع ہے۔اس کا پانی خوشگوار ہے، جو ویشو دریا میں مل جاتا ہے۔

## سر بل

برار بال نامی پہاڑ پر واقع ہے۔اس کا پانی ہضم کرنے والا ہے اور یہ واڑون ندی میں شامل ہو جاتا ہے۔

## ہوکہ سر

واڑون جانے والی راہ پر فامر پہاڑ کے اُوپر واقع ہے۔اس کا پانی اسی طرف سے بہتا ہے۔

## کھلن ناگ

کوٹھار پہاڑوں میں واقع ہے۔اسکی گہرائی آزما کر بھی معلوم نہ ہوسکی ہے۔اس کا پانی واڑون کی طرف بہہ نکلتا ہے۔

## کالوسر

ہوکھ سر کے نزدیک واقع بہت گہرا چشمہ ہے۔اسکے اردگرد چھ اور چشمے ہیں۔اس کا پانی وارڈون کی جانب بہہ نکلتا ہے۔

## ژھرناگ

کوٹھار کے نواحی میں واڑون جانے والے راستے پر مرگن نامی پہاڑ پر ایک خوشنما چشمہ ہے۔ قدیم مورخوں نے کشمیر کے عجائبات کے ضمن میں لکھا ہے کہ مذکورہ چشمے کا اندرونی حصہ ہمیشہ مٹی کے برتنوں سے پُر رہتا ہے۔ ہر چند ان برتنوں کو باہر نکالنے کی کوشش کی گئی لیکن ممکن نہ ہوا ہے اور جب بھی کوئی برتن اُوپر پانی کی سطح تک آگیا تو بے اختیار ہاتھ سے چھوٹ کر ٹکڑے ہو جاتا ہے اور پانی کی گہرائی میں پہنچ کو پھر سے ٹھیک ہو جاتا ہے

(۱۹۳)۔ محققین اسے ایک عجیب وغریب حقیقت بیان کرتے ہوئے کہتے ہیں کہ پانی کی تہہ میں انہیں کوئی برتن نظر نہیں آئے۔

اس چشمے کے ارد گرد سات اور چشمے ہیں۔ ان تمام چشموں کا پانی آپس میں مل کر دوراہوں سے نکلتا ہے۔ ایک واڑون کی طرف اور دوسرا کشمیر کی جانب۔

## سونہ سر

امرناتھ پہاڑ پر ایک چشمہ ہے۔ اس کا پانی واڑون کی طرف بہہ نکلتا ہے۔

## شیشرم ناگ

پہلگام سے تین میل دور (۱۹۴) اُوپر دچھن پارہ پہاڑوں میں ایک ہیبت ناک چشمہ ہے۔ اس میں کافی پانی رہتا ہے اور لمبودری ندی (۱۹۵) میں شامل ہو جاتا ہے۔

## زامتر ناگ (۱۹۶)

شیشرم ناگ سے ملا ہوا چشمہ ہے۔ جس کا پانی شیشرم ناگ کے پانی سے مل کر لمبودری ندی میں شامل ہو جاتا ہے۔ عوام اسے زامتر ناگ کہتے ہیں۔ زامہ تر کشمیری زبان میں داماد کو کہتے ہیں۔

اطلاع: راز ترنگنی کا مؤلف لکھتا ہے کہ راجہ نر (۱۹۷) کے زمانے میں ہوشناک نامی ایک عبادت گذار برہمن، جس نے جادو کے زور سے جنوں کی قوم کو مغلوب کیا تھا، ایک روز صبح کو نہانے کے ارادے سے دریائی بہت کی طرف جا رہا تھا۔ اچانک اس نے پازیب کی آواز سنی اور دیکھا کہ چاند سی صورت والی دو لڑکیاں درختوں کے نیچے بیٹھ کر گلا سڑا میوہ کھا رہی ہیں۔ ہوشناک نے ان سے سڑا ہوا میوہ کھانے کے بارے میں پوچھا۔ لڑکیوں نے کہا کہ ہمارا باپ شیشرم ناگ ہے۔ اگر آپ میلے کے دن جیٹھ بدی ماہ کی بارہویں کو پرگنہ وہو میں زیون (۱۹۸) نامی چشمے پر جائیں گے تو وہاں ان علامتوں کے ساتھ آپ ہمارے باپ کو دیکھیں گے اور اسی کی زبان سے اس راز سے آپ واقف ہو جائیں گے۔ چنانچہ برہمن اس مذکورہ دن کو چشمہ زیون پر پہنچا اور ان علامتوں کے مطابق جوان پری چہرہ لڑکیوں نے اسے بتائی تھیں شیشرم ناگ کو پہچان لیا۔ برہمن نے اس سے اس کی دو بیٹیوں کے گلا سڑا ہوا میوہ کھانے کے بارے میں سوال کیا۔ اس نے کہا کہ فلاں درخت کے نیچے ششوپال نامی ایک عابد برہمن رہتا ہے جو غلہ و اناج کا رکھوالا ہے۔ اس کا طریقہ یہ ہے کہ نئے پختہ میوؤں اور اناج کو وہ پہلے برہمنوں کو کھانے کیلئے دیتا ہے پھر خود کھاتا ہے۔ اس لئے غیب کی دنیا کے رہنے والوں کو نئے پختہ میوؤں اور اناج کے کھانے کا کوئی موقع حاصل ہوتا ہی نہیں۔ اس لئے اگر آپ اسے برہمنوں سے پہلے نئے پختہ اناج اور میوؤں میں سے کچھ کھلائیں گے تو ہمیں پختہ اور نشو ونما والے میوؤں اور اناج کے کھانے کا موقع میسر آسکتا ہے اور اس محنت کے عوض میں آپ کو اپنی بیٹیوں میں سے آپ کی پسند کی ایک بیٹی دوں گا۔

ہوشناک نے یہ سنکر ششوپال کو غفلت میں ڈال کر برہمنوں کو کھلانے سے پہلے اسے نیا پختہ کھانا کھلایا اور اس کے کھاتے ہی اس قدر اولے برسے کہ اکثر نئی فصل تباہ ہوگئی۔

شیشرم ناگ نے اپنے مقصد کے پورا ہونے پر چندرلیکھا نامی اپنی بیٹی کو ہوشناک کے حوالے کرکے کافی مال و متاع کے ساتھ رخصت کیا۔ چندرلیکھا کے حسن و جمال کی شہرت دُور دُور تک پھیلی۔ چنانچہ یہ خبر سنتے ہی راجہ نر نے زور سے اس لڑکی کو حاصل کرنے کا ارادہ کیا۔ ہوشناک نے سراسیمگی اور سینہ کوبی کی حالت میں شیشرم ناگ کے پاس جاکر شکایت کی۔ اس نے ایک خوفناک اژدہا کی صورت میں سخت غصے میں اور انتقام لینے کے لئے شہر پر چند زہر آلو سانسیں پھونک کر آگ کی بارش برسائی اور سارے شہر کو، شہر کے لوگوں کو، راجہ کو اور راجہ کے تمام رشتہ داروں کو خاک کے ساتھ برابر کردیا اور اپنی بیٹی اور داماد کو ہمراہ لے کر اپنے نزدیک ان کے رہنے کی جگہ مقرر کردی۔ اسی بنا پر مذکورہ چشمے کو زامتر ناگ کہتے ہیں۔

## تارسر

پرگنہ پھاک میں رامہ ڈچ پہاڑ کے متصل ایک خوشنما چشمہ ہے۔ اس کا پانی لمبودری دریا کا منبع ہے۔

## مارسر

پرگنہ پھاک کے ٹھنڈے علاقے میں تارسر کے متصل واقع ہے۔ جس کے درمیان میں رامہ ڈچ کا سار پہاڑ حایل ہے۔ راچیگام کے راستے سے اس کا پانی جھیل ڈل میں مل جاتا ہے۔

از بہر دو چشم بت کشمیر نژادی
شد تار سر و مار سر از گریہ دو چشم

(ایک کشمیری نژاد محبوبہ کی دو آنکھوں کے غم میں میری دونوں آنکھیں روتے روتے تارسر اور مارسر ہو گئی ہیں)

## چندرہ سر

تارسر کے شمال میں واقع ہے۔ اس کا پانی لدر ندی میں آ کر بہتا ہے۔

## ملک کشمیر کے چشمے

وادی کشمیر کی وسعتوں میں بڑے ہی دلکش اور بے نظیر چشمے اور سر چشمے جنگلوں اور پہاڑوں کے جیب و دامن میں ہر طرف موجود ہیں۔ جن کا کوئی بھی آدمی شمار نہیں کر سکتا۔ البتہ ان چشموں کی سیرابی کی برکت سے گلستانِ کشمیر کی شگفتگی و تازگی بے اندازہ شہرت رکھتی ہے۔ ان میں سے بعض مشہور چشموں کا، جن کے بارے میں اگلے بادشاہوں اور سیاحوں نے خصوصیات ضبط کر کے ان کو کسی نہ کسی نام سے یاد کیا ہے، ذیل میں ذکر کیا جا رہا ہے۔

# ویرناگ

پرگنہ شاہ آباد (۱۹۹) میں بانہال پہاڑ کے دامن کے نیچے ایک مشہور ومعروف چشمہ ہے۔اس کی گہرائی گویا پندرہ گز ہے اور اس کے محیط کا دور چالیس گز ہے۔ پانی کی کثرت کے لحاظ سے قدرت کا ایک عجوبہ ہے۔ کہتے ہیں اس میں سے ستر پن چکیوں کو چلانے کے برابر پانی نکلتا ہے۔اس میں مچھلیوں کی بھی کثرت ہے۔قدیم زمانے میں اس کا پانی چند مختلف جگہوں سے پھوٹ پڑتا تھا۔حیدر ملک نے (۲۰۰) جہانگیر بادشاہ کے حکم سے اس کے پانی کو برنالوں کی راہ سے ایک ہی جگہ اکٹھا کر کے آٹھ پہلوؤں کا پتھروں سے تراشا ہوا ایک حوض تعمیر کرایا اور اس کے اردگرد کمال مضبوطی کے ساتھ اُونچی عمارتیں اور قلعہ بند دیوار میں چوبیس محرابین بنوائیں۔ایک محراب کے اندر یہ عبارت پتھر پر کندہ کر کے موجود ہے:

''پادشاہِ ہفت کشور! عدالت گستر! ابوالمظفر نورالدین جہانگیر (۲۰۱) ابن اکبر پادشاہ غازی بتاریخ ۱۵رسنہ جلوس، درین چشمہ فیض آئین نزولِ اجلال فرموند۔

تاریخ

از جہانگیر شاہ اکبر شاہ — این بنا سر کشیدہ برافلاک

بانیٔ عقل یافت تاریخش — ''قصر آباد و چشمہ ٔورناگ'' (۲۰۲)

(سات ملکوں کے بادشاہ! انصاف کو عام کر دینے والے ابوالمظفر نورالدین جہانگری فرزند اکبر بادشاہ غازی نے پندرہ سنہ جلوس کی تاریخ کو اس فیض بخش چشمے پر تشریف آوری

فرمائی ے

اکبر شاہ کے (فرزند) جہانگیر شاہ سے

یہ عمارت آسمان کی بلندیوں تک پہنچی

عقل کے بانی نے اسکی تاریخ یوں دریافت کی

شاہی محل آباد رہے اور چشمۂ ویرناگ بھی

اسکے بعد ملک حیدر (۲۰۳) نے شاہجہان بادشاہ (۲۰۴) کے عہد میں سال ۱۰۳۵ھ میں اس کے قریب اُونچی عمارتوں کے ساتھ باغ شاہ آباد بنوایا اور اس باغ میں حیدر ملک نے بڑی دلربا اور عمدہ وعجیب آبشار اور پانی کی ندی تعمیر و آراستہ کرائی۔ جس کی تعمیر کیئے جانے کی تاریخ موٹے حروف میں کندہ کروا کے اس کی دیوار میں لگا دی گئی ہے ے

حیدر بحکمِ شاہ جہاں پادشاہِ دہر
شکر خدا کہ ساخت چنین آبشار وجوی
این جوی دادہ است زجویِ بہشت یاد
زین آبشار یافتہ کشمیر آبِ روی
تاریخ آب جوی بگفتا سروشِ غیب
''از چشمہ بہشت (۲۰۵) برون آمداست جوی''

(ترجمہ: حیدر نے پادشاہِ زمانہ شاہجہان کے حکم سے، خدا کا شکر ہے کہ ایسی آبشار اور ندی تعمیر کی۔ اس ندی نے جنت کی ندی کی یاد دلائی ہے اور اس آبشار سے کشمیر نے آبرو پائی ہے۔ فرشتۂ غیب نے آب جوی کی تاریخ یوں کہی: ''بہشت کے چشمے سے ندی نکل آئی ہے)

جو لوگ ویری ناگ (۲۰۶) کو نیلہ ناگ خیال کرتے ہیں، وہ محض ایک بہتان ہے۔ ذائقہ رکھنے والے حضرات ویری ناگ کے پانی کی مٹھاس اور اس کی خوشگواری کو قبول نہیں کرتے۔

## اچھہ بل

برنگ کوٹھار پرگنہ میں پہاڑوں کے نیچے ایک محبوب چشمہ ہے اور کثرت سے پانی کے پھوٹ نکلنے کی وجہ سے نادرہ روزگار ہے۔ کہتے ہیں کہ برنگی دریا کا پانی (۲۰۷)، جو وان دیولگان گاؤں سے پہاڑ کے نیچے غائب ہو جاتا ہے وہی پانی اچھہ بل چشمے سے اُبل کر نکلتا ہے۔

## مچھ بون

پرگنہ مارتند میں مٹن ٹیلے (۲۰۸) کے نیچے دامن میں ایک عمدہ چشمہ ہے۔ جسے ہندو لوگ متبرک مانتے ہیں اور اسے ساری دنیا میں موجود تمام چشموں سے بلکہ گیا جی چشمے (۲۰۹) سے بھی بڑھ کر مانتے ہیں اور مہاتم کی کثرت یعنی اسکی اخوت کی فصیلت کی خاصیت کی وجہ سے اسے سورج کے برابر مانتے ہیں۔ ماہ لود میں جسے ملہ ماس (۲۱۰) بانہ ماس کہتے ہیں ہندو وہاں جا کر اپنے مردوں کی روحوں کی نجات کیلئے شرادھ (۲۱۱) چڑھاتے ہیں اور سر اور داڑھی منڈواتے ہیں۔

## اننت ناگ

قصبہ اسلام آباد میں مٹن ٹیلے کے نیچے دامن میں ایک چشمہ ہے۔ اس میں کافی پانی ہے اور اسکے ارد گرد بے شمار چشمے ہیں۔ بادشاہ عالمگیر کے عہد سلطنت میں اسلام خان (۲۱۲) نے مذکورہ چشمے کو پتھروں سے تراشے ہوئے حوضوں اور دلکش فواروں، آبشاروں اور دل پسند دالانوں سے آراستہ کر کے ایک وسیع باغ آباد کیا اور اس کا نام اسلام آباد رکھا۔ مہاراجہ رنبیر سنگھ نے اسکی مرمّت کی۔

## لوکھ بوَن

پرگنہ برنگ (۲۱۳) میں ایک چشمہ ہے، جو پانی کی کثرت میں مشہور ہے۔ پادشاہ عالمگیر غازی کے حکم سے سیف خان (۲۱۴) نے اس کی مرمت کرا کے ایک باغ سے، جسے اورنگ آباد کہتے تھے، آراستہ کیا۔ لیکن سیف خان کا تبادلہ ہونے کی وجہ سے نامکمل رہا۔

## ککرناگ

پرگنہ برنگ میں واقع بندوزلن گام نامی گاؤں میں ایک چشمہ ہے جو چشمہ ویرناگ

سے بھی پانی کی بہتات میں زیادہ مشہور ہے۔اس کا پانی نہایت ہاضم اور خوشگوار (۲۱۵) ہے۔ جو کئی جگہوں سے فوارے کی طرح پھوٹ پڑتا ہے۔ حاکموں میں سے کسی ایک نے بھی اس کی مرمت نہیں کی جسکی وجہ سے بکھر گیا ہے۔اس کا پانی برنگی دریا میں بہتا ہے۔

## پانزت ناگ

پرگنۂ دیوہ سر میں (۲۱۶) واقع پانزت گاؤں میں ایک مشہور چشمہ ہے، جو پانی کی فراوانی میں ویری ناگ کے برابر ہے۔اس کے اردگرد بہت سے چشمے اُبل رہے ہیں اور اس کے پاس ہی چار اور بے نام چشمے ہیں۔اس کا پانی وتھ وترو میں بہتا ہے۔

## واسک ناگ

پرگنہ دیوہ سر (۲۱۷) میں ولہ ٹینگ نامی گاؤں کے متصل پہاڑ کے دامن میں ایک عجیب چشمہ ہے۔جاڑے کے چھ مہینوں میں سوکھ جاتا ہے۔اور چھتر مہینے کی تیسری تاریخ کو وہاں کے لوگ ادھر جا کر نذر و نیاز اور خیرات کر کے عاجزی وانکساری کا اظہار کرتے ہیں۔ اور اسی روز چشمے سے بہت سا پانی پھوٹ پڑتا ہے۔ بہادُون مہینے کے آخر میں جبکہ شالی پک جاتی ہے،اس کا پانی پھر سے غائب ہو جاتا ہے۔ کہتے ہیں دنگ کے علاقوے میں گویل نامی گاؤں میں جاڑے کے چھ مہینوں میں بہتا رہتا ہے اور جس دن وہاں سے غائب ہو جاتا ہے، اسی دن اس جگہ پر ظاہر ہو جاتا ہے۔ جس روز یہاں سوکھ جاتا ہے، اسی روز وہاں

پھوٹ نکلتا ہے۔ اَلعِلمُ عِندَاللہ ! اس کا پانی نہایت میٹھا، پاکیزہ اور ہاضم ہے۔

## پھلوناگ

پرگنہ دیوہ سر میں پہلونامی گاؤں میں ایک چشمہ ہے۔ اس کا پانی سفید نما لیکن گدھلا پھوٹ نکلتا ہے۔ اگلے مؤرخوں نے لکھا ہے کہ قدیم زمانے میں لوگ رومال میں چاول باندھ کر چشمے میں رکھ دیتے تھے اور وہ پک کر غذا بن جاتے تھے۔ اس میں وہ تاثیر نہیں رہا (۲۱۸)۔

## چشمہ رزُلو

پرگنہ دیوسر میں رزُلو نامی گاؤں میں ایک سرچشمہ ہے جو ایک لجن زار کی طرح پانی اور کیچڑ سے بھرا ہوا ہے۔ مؤرخوں نے لکھا ہے کہ اس میں بھوت رہتے ہیں جو حادثوں کے واقع ہو جانے کے وقت آپس میں لڑتے ہیں۔ مجھ نامہ نگار نے تحقیق کر کے بھی کوئی ایسی چیز نہیں دیکھی لیکن وہاں کے باشندوں سے سنا کہ کبھی کبھی اس چشمے سے آوازیں سنائی دیتی ہیں جیسے کہ بھوت پریت چلّا رہے ہیں لیکن آنکھوں سے کسی نے ان کو دیکھا نہیں۔ اتنا ضرور ہے کہ مذکورہ چشمہ اُلٹ پلٹ کی حالت میں رہتا ہے اور پانی اور کیچڑ ملتے رہتے ہیں جیسے کہ اندر کوئی جانور حرکت میں ہے۔ کہتے ہیں تین چار گز گہرا ہے۔

## ملک ناگ

قصبہ اسلام آباد (۲۱۹) میں ایک چشمہ ہے جو پانی کی افراط کی وجہ سے معروف ہے اور سارے قصبے کو سیراب کرتا ہے۔ جاڑے کے موسم میں یہ چشمہ گرم ہوتا ہے اور اس سے گندھک کی بو آتی ہے اور ہاتھ دھوتے وقت چاندی کی انگوٹھی زرد ہو جاتی ہے۔ اس چشمے کے علاوہ مذکورہ چشمے میں اور بھی بہت سے چشمے موجود ہیں۔

## چشمہ وتھ وترو

پرگنہ شاہ آباد (۲۲۰) میں بمنوہ سادی وارہ کے متصل ایک چشمہ ہے، جس سے بہت کم پانی اُبلتا ہے۔ ہندو اسے دریائے بہت کا منبع مانتے ہیں۔ چشمہ وتھ وترو سے ذرا نیچے ہفت رکھشیر ان نامی چشمہ ہے۔ ان چشموں کا پانی وتھ ورتر وندی میں بہتا ہے۔

## چشمہ کانو (۲۲۱)

پرگنہ شاہ آباد میں نوپورہ جانے والے راستے میں یہ ایک چشمہ ہے۔ اگلے مورخین نے لکھا ہے کہ مذکورہ چشمے میں پہلے تمام مچھلیاں اندھی تھیں جس کی وجہ سے اسے کانو (۲۲۲) کہتے تھے یعنی ایک آنکھ کا۔ مجھ نامہ نگار کو صرف ایک مچھلی اندھی نظر آئی باقی ساری مچھلیاں ٹھیک تھیں۔

# سُند براری

پرگنہ برنگ کے ضلع لُہرنی میں واقع زلن گام نامی گاؤں میں یہ ایک عجیب چشمہ ہے جو جاڑے کے موسم میں سوکھ جاتا ہے۔ ماہ چھتر (۲۲۳) کے ابتدائی ایام میں اس سے پانی پھوٹ پڑتا ہے اور جیٹھ مہینے کی پندرہ تاریخ (۲۲۴) تک اس کا پانی جاری رہتا ہے۔ اس کے بعد مذکورہ چشمے کا حوض ہر روز تین بار کلی طور پر سوکھ جاتا ہے کہ اس کی تہہ میں پانی کا ایک قطرہ تک موجود نہیں رہتا ہے۔ تین بار (۲۲۵) پھر اس کا پانی پھوٹ نکلتا ہے اور حوض بھر جانے کے بعد باہر کی طرف بہتا ہے۔ یہ کیفیت ہر روز بغیر کسی تعطیل کے دن رات ماہ ہار کے آخر تک جاری رہتی ہے۔ پھر جاڑے کے موسم میں خشک ہو جاتا ہے۔ ہندو اسے ترہ سندیا کہتے ہیں اور ہر سال جیٹھ اور ہار کے مہینوں میں وہاں نہانے کیلئے جاتے ہیں۔

بیان کیا گیا ہے کہ اگلے وقتوں میں ہندو لوگ وہاں بڑی تعداد میں جایا کرتے تھے۔ دولہ ریشی (۲۲۶) نامی ایک فقیر وہاں گوشہ نشین تھا۔ لوگوں کی بھیڑ اسے خوش نہ آئی اور اس نے مذکورہ چشمے کو جو حوض اور برنالوں سے تعمیر ہوا تھا تہس نہس کر دیا۔ تب سے اس سے بہت کم پانی نکلتا ہے۔ بابا داؤد خاکیؒ فرماتے ہیں

طرفہ عینی ہست در کشمیر نامش سندہ برار
آمدورفتی عجب دارو بروز وشب سہ حال

(ایک عجیب سا چشمہ ہے کشمیر میں جس کا نام ہے سندرہ برار۔ دن رات اس میں تین عجیب حالتوں کا آنا جانا جاری رہتا ہے)

## پونہ سند

پرگنہ شاہ آباد میں واقع سڈار گاؤں کے متصل ایک عجیب وغریب چشمہ ہے جس کا پانی جاڑے کے موسم میں دو تین ماہ تک سوکھ جاتا ہے اور پھاگن اور چھتر اور بیساکھ کے مہینوں میں اس کا پانی جاری ہو جاتا ہے۔ اس کے بعد ساون کے مہینے تک انسانی سانسوں کی مانند پھوٹتا ہے یعنی زمین سے پانی کی ایک سانس پھوٹ نکلتی ہے اور اس سے ندی جاری ہو جاتی ہے۔ پھر دوسری سانس پر گویا حلق سے ہی پھر نیچے چلا جاتا ہے اور حوض سوکھ جاتا ہے۔ ہندو اس کی عبادت کرتے ہیں۔ شیخ داؤد خاکیؒ فرماتے ہیں ؂

چشمہ دیگر بہ کمر (۲۲۷) ہست نامش پونہ سند
ہست ہر دم آمدو رفتش چو انفاسِ رجال

(ایک اور چشمہ ہے کشمیر میں جس کا نام پونہ سند ہے۔ اس کا آنا اور اس کا جانا لوگوں کی سانسوں کی مانند ہے)

## لُدرہ سند

پہاڑ پر واقع منڈاغار کے نزدیک ہلر گاؤں میں، جو شاہ آباد پرگنہ میں ہے، یہ چشمہ واقع ہے۔ جیٹھ کے مہینے میں چند دنوں تک اس کا پانی پھوٹ نکلتا ہے اور وہ یوں کہ ایک سانس کے برابر پانی پھوٹ نکلنے کے بعد ایک پرنالے کی طرح یہ پانی اُونچائی سے نیچے گرتا

ہے۔ پھر چند گھنٹوں تک بند ہو جاتا ہے اور سوکھ جاتا ہے۔ اور اسکے بعد پھر پہلے کی طرح جاری (۲۲۸) ہو جاتا ہے۔ ان دنوں میں ہندو لوگ وہاں جا کر نہاتے ہیں۔ کہتے ہیں بیساکھ کی پندرہ شروع ہونے سے ہار کی پندرہ تاریخ تک اس کا پانی دن رات میں گیارہ بار اُبلتا ہے اور اس کے بعد ہمیشہ جاری رہتا ہے۔ جاڑے کے موسم میں دو تین ماہ تک خشک رہتا ہے۔

## گنگہ براری

دین سو پرگنہ میں واقع بون ہامہ نامی گاؤں میں یہ ایک چشمہ ہے، جو سال بھر خشک رہتا ہے۔ صرف بہادرون سودی مہینے کی آٹھ تاریخ کو جب کہ اس روز ہرموکٹہ گنگا کا میلہ ہوتا ہے، اس میں سے پانی پھوٹ نکلتا ہے (۲۲۹)۔ ہندو اسے گنگہ جٹن کہتے ہیں۔ اس روز وہاں جا کر نہاتے ہیں اور اس کی خصوصیت کو ہرموکٹہ گنگا کے برابر مانتے ہیں۔

## ہلدو

لار پرگنہ میں رنگنو نامی پہاڑ کے اُوپر یہ ایک چشمہ ہے جس کا پانی پتھر سے قطرہ قطرہ ٹپکتا ہے اور ایک تالاب میں جمع ہو جاتا ہے اور باہر نہیں بہتا۔ ہندو لوگ جیٹھ سودی مہینے کی گیارہ تاریخ کو وہاں جا کر نہاتے ہیں۔ مؤرخین نے اس کے بارے میں جو کیفیت بیان کی ہے وہ سراسر غلط ہے (۲۳۰)۔

## چشمۂ ہیہ مال

پرگنہ سپرہ سمن میں بلہ پور نامی گاؤں میں یہ ایک نہایت ہی دلکشا چشمہ ہے۔

## چشمۂ ناگی ارجن

باٹھو پرگنہ میں سوپن نامن نامی گاؤں میں واقع ہے۔

## چشمۂ پاھہ ہارون

کھورہ پارہ پرگنہ کے سالیہ نامی گاؤں میں مشہور چشمہ ہے۔ ہندوؤں کا عقیدہ ہے کہ اس میں نہانے سے گناہ دُور ہو جاتے ہیں۔ بروز ـــــــــ (۲۳۱)۔

## اڑپل ناگ

یہ پرگنہ اولر میں پہاڑ کے دامن میں ایک چشمہ ہے، جو پانی کی بہتاب میں ویرناگ کا ساتھی ہے اور بہت سے دیہات کو سیراب کرتا ہے۔

## مہا پدم ناگ

پرگنہ اولر میں ترال گاؤں میں واقع ہے۔ کہتے ہیں اگلے زمانے میں اس سے کافی پانی جاری تھا لیکن اب یہ ایک لجن زار دکھائی دیتا ہے۔ ہندو مؤرخ مبالغہ سے کام لے کر لکھتے ہیں کہ اگلے وقتوں میں مہا پدم ناگ چھپ گیا تھا اور سندمت نگر شہر میں پھوٹ نکلنے کے بعد اس نے سارے شہر کو غرق کر دیا۔ اس وقت اسے اولر ناگ کہتے ہیں اور پرگنہ اولر بھی اسی نام (۲۳۲) سے موسوم ہے۔

## چشمۂ زیون

یہ وہو پرگنہ (۲۳۳) میں واقع زیون نامی گاؤں میں ہے۔ ہندو اسے بہت متبرک مانتے (۲۳۴) ہیں اور جیٹھ بدی کے دوادشی (۲۳۵) کے دن یہاں ایک میلہ لگتا ہے۔

## نیلہ ناگ

چرار جانے والے راستے پر ناگام (۲۳۶) ٹیلے میں واقع ہے۔ ایک تالاب کی طرح لمبا اور کشادہ ہے۔ اس کا پانی جاری نہیں اور سال ۱۲۹۶ھ میں اچانک سوکھ گیا۔

## نیلہ ناگ دوّم

پرگنہ ناگام کے گوگجہ پتھری نامی گاؤں میں پہاڑ کے دامن میں ایک گہری اور وسیع جھیل ہے۔ اس کا اپنی ہمیشہ بند رہتا ہے اور ایک قطرہ بھی باہر نہیں بہتا۔ لوگوں نے بہت کوشش کی لیکن اس کا پانی باہر جاری نہیں ہو پایا۔ ہندو اس کی پرستش کرتے ہیں۔

کہتے ہیں کہ اگلے زمانے میں چندرہ پنڈت نامی ایک شخص دیوؤں کے ہاتھوں اس میں ڈوب گیا۔ اس نے اس جھیل کے اندر نیلہ ناگ سے نیل مت پوران کی تعلیم پائی۔

آئین اکبری میں درج ہے کہ بڈشاہ کے عہد سلطنت میں ایک برہمن اس میں اترتا تھا اور دو تین دونوں کے بعد باہر آتا تھا اور تحایف و دیگر اشیاء اپنے ساتھ لاتا تھا اور لوگوں کو دیتا تھا (۲۳۷)۔

## چشمۂ کرمیشور

یہ چشمہ پرگنۂ اچھ کے کرمیشور گاؤں میں ہے۔ جاڑے کے چھ مہینوں میں ہمیشہ خشک رہتا ہے۔ بہار کے ابتدائی دنوں میں کسان لوگ وہاں پر جمع ہو کر ایک بھیڑ کو ذبح کر کے کھانا پکاتے اور اسے تقسیم کرنے کے بعد اللہ تعالیٰ کے حضور میں عجز و زاری کرتے ہیں اور فوراً پانی جاری (۲۳۸) ہو جاتا ہے۔

## نراین ناگ

پرگنۂ بیروہ (۲۳۹) کے کھاگ نامی گاؤں میں واقع ہے۔ پانی کی ایک ندی اس کے حوض سے بہہ کر کئی دیہات کو سیراب کرتی ہے۔ اس کے نزدیک ہی چار اور بے نام چشمے ہیں۔ اس گاؤں میں اس چشمہ کے علاوہ اور بہت سے چشمے ہیں (۲۴۰)۔

اگلے مورخین نے لکھا ہے کہ اگر کوئی شخص نراین ناگ چشمے پر جا کر آواز نکالے گا تو اس چشمے کا پانی حرکت میں آ جاتا ہے اور اس سے لہریں اٹھنے لگتی ہیں۔ لیکن مجھ نامہ نگار کو نہ کوئی حرکت ہی نظر آئی اور نہ میں نے کوئی لہر ہی اٹھتی دیکھی۔

## عینُ العفونت (۲۴۱)

پرگنہ اولر میں اونتی پورہ کے متصل واقع ہے۔ یہاں گندھک کی بو آتی ہے اور ہاتھ دھوتے وقت چاندی کی انگوٹھی زرد ہو جاتی ہے۔ کھجلی والوں کیلیۓ اس میں نہانا فائدہ مند ہوتا ہے۔ (۲۴۲)

## چشمہ تتہ دان

شوپیان (۲۴۳) کے متصل دب جن نامی گاؤں میں واقع ہے۔ اس کا پانی بارہ

مہینے گرم رہتا ہے۔ کھجلی والوں کیلئے اتوار کے روز اسکے پانی سے نہانا مفید ہے۔

## گپت گنگا

پرگنہ پھاک کے ایشہ براری گاؤں میں واقع ہے۔ اس سے کم ہی پانی پھوٹ نکلتا ہے۔ ہندو اسے ایک بڑی عبادت گاہ مانتے (۲۴۳) ہیں اور بیساکھ کے پہلے روز یہاں ایک میلہ ہوتا ہے۔

## وچارناگ

محلّہ نوشہرہ میں واقع ہے۔ ہندو اس میں نہانے کو گناہوں کا کفارہ جانتے ہیں اور ماوسی چیتر (۲۴۴) کے دن یہاں ایک میلہ ہوتا ہے۔

## چشمہ کھیر بھوانی

پرگنہ لار کے تولہ مولہ نامی گاؤں میں یہ ہندوؤں کی ایک بڑی عبادت گاہ ہے۔ اس سے پانی کم ہی اُبل آتا ہے۔ اس کے پانی کا رنگ وقت وقت پر بدلتا رہتا ہے۔ کبھی گلابی، کبھی سبز اور کبھی سیاہ ہو جاتا ہے۔ سیاہ رنگ کو ہندو بُرا خیال کرتے ہیں۔ کہتے ہیں اس جگہ

راگنیا دیوی کا مقام ہے۔ ہر ماہ اشٹمی شکلہ پچھ (۲۴۵) کے دن یہاں ایک میلہ مقرر ہے اور اشٹمی جیٹھ کو ایک بڑا میلہ ہوتا ہے جس میں کافی لوگ شامل ہو جاتے ہیں۔

## وتر گنگ

پرگنہ لعل کے میگام گاؤں میں پہاڑ کے دامن میں واقع ہے۔ اس کا پانی صاف اور ہاضم ہے۔ بارش آنے کے وقت وہاں کے لوگ اتفاقاً گائے کے چمڑے کا ایک ٹکڑا چشمے کے پانی کے جاری ہو جانیوالی جگہ میں چھپا کے رکھ دیتے ہیں اور فوراً ہی بارش اور اولے گرتے ہیں (۲۴۶)۔ اس نامہ نگار نے ایک دن خود اس کیفیت کا مشاہدہ کیا اور سخت اولے گرنے کے نتیجے میں فصلوں کو تباہ ہوتے دیکھا۔ ساون سدی دوادشی (۲۴۷) کے دن یہاں پر ہندوؤں کا ایک میلہ ہوتا ہے۔

## ناران ناگ

پرگنہ لار کے وانگت نامی گاؤں میں بوتیشور پہاڑ کے دامن میں واقع ہے۔ راجہ جلوک (۲۴۸) کا بنایا ہوا بوتیشور مندر وہاں موجود ہے۔ ہر موکٹھ گنگا کے میلے سے واپسی پر ہندو لوگ اس چشمے پر آکر نہاتے ہیں اور یاترا کو یہیں پر ختم کر دیتے ہیں۔

# شنگہ پال

پرگنہ کو یہامہ میں برارود چھنہ نامی گاؤں کے متصل پہاڑ کے کمر میں واقع ہے۔شیخ بابا داؤد خاکیؒ (۲۴۹) نے وہاں ایک مسجد تعمیر کی اور چالیس چلے کاٹے اور عبادت میں مصروف رہے۔یہاں کے نظارے بڑے عجیب وغریب ہیں۔

# پچھ ناگ

پرگنہ کو یہامہ میں گرورہ نامی گاؤں میں واقع ہے۔کھجلی والوں کیلیئے اس میں نہانا فائدہ مند رہتا ہے۔

# پاپ چھن

پرگنہ کو یہامہ میں پاپ چھن نامی گاؤں میں واقع ہے۔اس سے پانی کم ہی پھوٹ نکلتا ہے۔ہندوؤں کا اعتقاد ہے کہ اس کے پانی میں نہانے سے گناہ دھل جاتے ہیں۔نئے سال کے دن یہاں میلہ ہوتا ہے۔

## چکریشور

پرگنہ کو یہامہ میں آویتھ مولہ نامی گاؤں میں واقع ہے۔ ہندو لوگ اسے متبرک مانتے ہیں۔

## زلیشور

پرگنہ زینہ گیر کے ہرون نامی گاؤں میں واقع ہے۔ یہ ہندوؤں کا مندر ہے۔

## اننت ناگ

زینہ گیر پرگنہ میں شیوہ نامی پہاڑ پر واقع ہے۔ وہاں کے دیہات میں اور بھی بہت سے چشمے ہیں۔

## لچھمن ترت (۲۵۰)

زینہ گیر پرگنہ میں لت شاٹ نامی گاؤں میں واقع ہے۔ ماوس (۲۵۱) کے دن ہندو وہاں جایا کرتے ہیں۔

## ہرناگ

زینہ گیر پرگنہ میں ہرون گاؤں میں واقع ہے اور ساتھ جگہوں (۲۵۲) میں اس کے گرد آٹھ اور چشمے موجود ہیں۔

## شیوہ ناگ

وتر پرگنہ میں ترہ گام نامی گاؤں میں ایک وسیع چشمہ ہے۔ اس میں کافی مچھلیاں ہیں اور پانی بہت صاف ہے۔

## شومہ ناگ

وتر پرگنہ میں شومہ ناگ گاؤں میں ایک وسیع چشمہ ہے۔ اس میں بہت مچھلیاں ہیں۔

## چشمہ زیتی شاہ

زیتی شاہ مستانہ (۲۵۳) کے مقبرہ کے صحن میں واقع ہے۔ اس میں بہت مچھلیاں ہیں اور پانی خوشگوار۔

## چشمہ منز ہار

وتر پرگنہ میں ایک عجیب چشمہ ہے۔اس کا پانی بالکل صاف ہے۔

## ناران ناگ

پرگنہ وتر میں مقام دردہ پورہ نامی گاؤں میں ہے۔بہت عجیب چشمہ ہے۔

## بُر ناگ

پرگنہ وتر میں جٹن نامی پہاڑ کے اُوپر ہے۔کافی فیض رسان چشمہ ہے۔

## سید گنگا

کندی وتر میں واقع ہے۔ہندو اس کی عبادت کرتے ہیں۔

## رام کنڈ، ستیا کنڈ، لچھمن کنڈ، ہنومان کنڈ

یہ چار چشمے پرگنہ وتر میں ہری علاقے میں میل پال نامی گاؤں سے ایک کروہ کے فاصلے پر وٹ کوہ کی کمر میں واقع ہیں۔ کہتے ہیں رام چندر نے وہاں ایک مندر بنایا تھا

(۲۵۴) اور ایک عرصے تک وہاں عبادت کیا کرتے تھے۔ ہندو وہاں زیارت کیلئے جاتے ہیں۔

## گوتم ریشی ناگ

پرگنہ وتر میں گزریال نامی گاؤں میں ایک عجیب سا چشمہ ہے۔ اس میں سے کافی پانی پھوٹ نکلتا ہے اور مچھلیاں بھی اس میں کثرت سے موجود ہیں۔ ہندو لوگ اسے مبارک جانتے ہیں۔

## چشمہ شاہی

شہر کے متصل کوہ شالیمار کے دامن میں واقع ہے۔ اس کا پانی نہایت شیرین اور لطیف وخوشگوار ہے۔ اس ملک کے سلطان اور امیر کمال آرزو کے ساتھ اس چشمے کے پانی کو استعمال کرتے ہیں۔ اس لئے اس کا نام چشمہ شاہی رکھا گیا ہے۔ شاہجہان نے اپنے عہد سلطنت میں یہاں پر ایک عمدہ عمارت اور دلکشا باغ بنوایا اور چشمے کے حوض کو عجیب وغریب سنگ کاری سے آراستہ کیا۔ کلیم نے اس کی تاریخ فی البدیہہ یوں کہی ؎

دوش دیدم نشستہ برکوثر  شاہ مردان (۲۵۵) علیؓ جمجاہی
لقمش السّلام گفت علیک  گفت: برگو دگر چہ میخواہی ؟
لقمش بہر چشمہ تاریخی  گفت برگوی ''کوثر شاہی'' (۲۵۶)

(کل میں نے شاہ مردان جم جاہ حضرت علیؓ کو چشمہ کوثر پر بیٹھے ہوئے دیکھا۔ میں نے

انہیں سلام کیا اور انہوں نے وعلیکم کہا۔ پھر کہا کہ کہو کیا چاہتے ہو؟ میں نے کہا چشمہ کیلئے تاریخ چاہتا ہوں۔ کہا کہ کہو: ''کوثر شاہی'' (۱۰۴۲ھ)

شیخ غلام محی الدین (۲۵۷) نے اپنے عہد میں عمارت اور حوض کی مرمت کی۔ میرزا مجرم نے اس کی تاریخ کہی۔

گفت مجرم ز روی آگاہی    سال تعمیر حال ''چشمہ شیخ'' (۲۵۸)

(مجرم نے واقفیت کی بنا پر موجودہ مرمت کا سال تاریخ چشمہ شیخ (۱۲۵۸ھ) کہا)

## نیلہ ناگ

لتراگھلر کے متصل شاورہ (۲۵۹) پرگنہ میں ایک ٹیلے کے دامن میں ہے اور بہت ہی مرغوب چشمہ ہے۔

## کپال موچن

باٹھو پرگنہ (۲۶۰) میں دگام گاؤں میں ربی آرہ دریا کے کنارے واقع ہے۔ ہندو اسکی عبادت کرتے ہیں۔

## سوکھ ناگ

پچھنار میں بلند جگہ پر واقع ہے۔ اس کا پانی لدر دریا میں گرتا ہے۔ ایک عجیب سا دلفریب چشمہ ہے۔

## کوٹھیر ناگ

پرگنہ کوٹھار میں کوٹھیر گاؤں میں ایک دلکشا چشمہ ہے۔ اسکے کنارے پر ایک قدیم مندر کی بنیاد موجود ہے۔

## چشمہ شمہ ہال

شمہ ہال پہاڑ کے دامن میں ہے۔ اس کا پانی بہت خوشگوار ہے اور یہ شمہ ہال کی کھیتیوں کو سیراب کرتا ہے۔ اس کا کچھ حصہ لادریا کے ساتھ بھی مل جاتا ہے۔ ہندو اسے تچھک ناگ کہتے ہیں اور عام لوگوں کی زبانوں پر مشہور ہے کہ حضرت امیر کبیر میر سید علی ہمدانی قدس سرہ یہاں تشریف لائے تھے بلکہ اپنی کرامت سے اس چشمے کا آشکارا کیا۔ واللہ اعلم!

## عین العفونت

وہو پرگنہ میں دین مامی گاؤں میں واقع ہے۔ یہاں سے گندھک کی بو آتی ہے۔

# کشمیر کے دریا

## ساندرن

برار بال (۲۶۱) کے پہاڑوں کے برف کا اور سر چشمہ وُیری ناگ اور شاہ آباد کے چشموں کا پانی اکٹھا ہو کر ایک دریا بن جاتا ہے جو کھیتوں کو سیراب کرتا ہو کھنہ بل (۲۶۲) کے پاس برنگی دریا اور آرہ پتی دریا میں شامل ہو کر دریائے بہت کہلاتا ہے۔

## برنگی

برنگ پرگنہ میں ہوکھ سر (۲۶۳) اور نوبوگ نے کے پہاڑوں کا برف اس کا منبع ہے اور کوکر ناگ چشمے کے پانی سے سرشار ہو کر اننت ناگ قصبے کے نزدیک ساندرن اور آرہ پتی دریاؤں میں مل کر دریائے بہت کا نام پاتا ہے۔

## آرہ پتی

ژہر ناگ اور برہمہ سر اور رودرہ سر چشموں کا پانی اس کا مخرج ہے اور

مرگن (۲۶۴) کے پہاڑوں کا پانی اچھہ بل اور بون اور اننت ناگ کے چشموں کے پانی سے مل کر برنگی اور ساندرن دریاؤں کے پانی کے ساتھ کھنہ بل (۲۶۵) کے مقام پر ایک ہو جاتا ہے اور ایک گہرائی کے ساتھ دریائے بہت کے نام سے موسوم ہو جاتا ہے۔

## لدریا لمبودری

پرگنہ لار کے جنوبی پہاڑوں اور امرناتھ (۲۶۶) پہاڑ کا برفانی پانی چار ندیوں کے ذریعہ سے ایک جگہ پر جمع ہو جاتا ہے۔ ایک گوپہ بری کی راہ سے، دوسرے وارہ داس پہاڑ کی راہ سے، تیسرے پرگنہ پھاک کے ٹھنڈے مقام مارسر چشمے کا پانی اور چوتھے شیشرم (۲۶۷) ناگ چشمے کا ہمیشہ نکلتا ہوا پانی، مجموعی طور پر اکٹھے ہو کر ایک دریا بن جاتا ہے جو دچھن پارہ کی کھیتیوں کو سیراب کرتا ہوا چار جگہوں پر چار حصوں میں بٹ جاتا (۲۶۸) ہے اور دریائے بہت میں مل جاتا ہے۔

## ویشو

اس کا اصلی منبع چشمہ کوثر ناگ ہے۔ نیز ہمالیہ پہاڑوں کے برفانی اور کوثر سر اور ژہر سر اور دوسرے چشموں کے پانی کے مل جانے سے اس میں ایک بڑی شان وشوکت پیدا ہو گئی ہے اور وٹونامی جگہ کے نزدیک اہرہ بل کے مقام پر اس دریا کا پانی ایک چھوٹی سی تنگ

جگہ کے درمیان میں سے تین چار سو گز کی بلندی سے پانی کی ایک چادر کی مانند نیچے گرتا ہے۔ ہوا کے ڈھلنے اور مقام کی اُونچائی کی وجہ سے پانی سے گرد اٹھتی ہے جو ماحول کا نمناک بنا دیتی ہے اور قدرت الٰہی کا ایک عجوبہ تماشا کی صورت میں دکھائی دینے لگتا ہے۔ مغل بادشاہ سیر و تماشا کرنے کیلئے وہاں جایا کرتے تھے۔ چنانچہ اس کی صفت میں شاعروں نے مثنویاں بھی لکھیں۔

ظفر خان احسن نے کہا

زجنّت چند گوئی ای سخنور ندارد آبشاری مثل آہر
یکی دریای بی پایان ذخّار زاوجِ کوہ می غلطد بہ یکبار
چو گرددداز فراز کوہ راہی شود کر از خروشش گوشِ ماہی
یقینم شد ازین گردندہ دولاب کہ گردو آسیایِ چرخ زین آب
نگہ دارد تماشای نظر را کہ پالغزد از آن نُورِ بصرا

(ای سخن شناس! کب تک جنت کی سناتے رہو گے۔ اس میں اہرہ بل کی آبشار کہاں؟ یہ ایک بے انتہا عظیم دریا ہے جو ناگاہ پہار کی بلندیوں سے گر کر آتا ہے۔ جب پہاڑ کی اُونچائی سے چلنے لگتا ہے تو اس کے جوش و خروش سے مچھلیوں تک کے کان بہرے ہو جاتے ہیں۔ مجھے تو اب یقین ہو گیا ہے کہ رہٹ کی طرح گھومنے والی اس آبشار کے پانی سے تو آسمان کی چکی بھی گھوم سکتی ہے۔ اس کا تماشا نظر کو روک دیتا ہے ورنہ آنکھوں کی روشنی کے پھسل جانے کا اندیشہ ہے)

اس کے بعد بہت سی نہروں اور چشموں اور بوشی دریا کا پانی، جو دیوہ سر پہاڑوں سے آتا ہے، اس میں شامل ہو جاتا ہے۔ وتھ وترو نہر، جس کا منبع وتھ وترو نامی چشمہ بمنوہ

گاؤں کے قریب ہے، سندرہ نارو غیرہ ندیوں کے پانی سے معمور ہو کر ہابلش کے مقام پر دریائے ویشو کو ایک آبرومند دریا بنادیتے ہیں اور رنبی آرہ دریا کے رہے سہے پانی سے نائینہ کے مقام پر بلندی پا کر دیوہ سراور آڈون اور اننت ناگ کے پرگنوں کو سیراب کرتے ہوئے سنگم نامی جگہ پر دریائے بہت میں مل جاتا ہے۔ اس سے بارہ بڑی ندیاں نکلتی ہیں جن میں سے چار مشہور ہیں۔ ایک سونہ من جو جمہ نگری گاؤں سے نکل کر آرون پائین کو شگفتہ بنانے کے بعد پھر اپنے منبع کے ساتھ جڑ جاتی ہے۔ کہتے ہیں اس نہر کی کھدائی راجہ سودران نے کروائی تھی۔ دوسری باڑ نامی نہر جو وٹو گاؤں سے علیحدہ ہوتے ہوئے آڈون کے دیہات کو سیراب کر کے ناوپورہ کے مقام پر اپنے منبع کے ساتھ مل جاتی ہے۔ تیسری ٹونگر نہر جو لکھیر پورہ سے نکل کر کولگام ضلع کے دیوہ سر میں سے گذر کر کیموہ گاؤں سے ہوتے ہوئے ویشو دریا میں شامل ہو جاتی ہے۔ چوتھی ناندی نہر جو ہابلش نامی جگہ سے نکل کر پرگنہ اننت ناگ کے ناندی ضلع میں بیج بہاڑہ تک جا کر دریائے بہت کے ساتھ مل جاتی ہے۔ کہتے ہیں نندی ایک بدکار عورت تھی اور اسی نے اس نہر کو بنوایا تھا۔

## رنبی آرہ

(۲۶۹) اس کا منبع نندن سراور چندن سر کا پانی اور روپڑی اور دارہ ہال اور پیر پنچال کے پہاڑوں کا برفانی پانی ہے۔ یہ ہیرہ پور کی راہ سے چل نکلتا ہے اور اس سے کئی نہریں جاری ہو جاتی ہیں۔ ایک سن گلو جو ژوگام نامی گاؤں سے آتی ہے اور آڈون اور زینہ پور کے پرگنوں میں کھیتوں کو سیراب کر کے وچی کے مقام پر پھر اپنے منبع میں مل جاتی ہے۔ دوسری ناٹھوندی جو پائین ژوگام سے نکل کر ترنز نامی گاؤں میں سے سن گلوندی میں شامل ہو جاتی

ہے۔ تیسری لاڑ نہر، جو سپرہ سمن کی کھیتیوں اور شکروہ کے پرگنہ اور چھراٹ کے چند گاؤں کو سیراب کرتے ہوئے ٹوکنہ اور ٹھب گاؤں سے گذر کر گوری پورہ چکش نامی جگہ پر گام پورہ تیلے کی لجن زار کے پانی اور لل ہار نامی گاؤں سے رتنی پورہ نالہ کے پانی کو، جو خود رنبی آرہ دریا کا پانی ہے، اپنے ساتھ ملا کر دریائے بہت کے پانی میں مل کر اس کی شان کو بڑھا دیتی ہے۔ چوتھی نہر...... (۲۷۰) نامی گاؤں سے جدا ہو کر کھیتیوں کو سرسبز کرتی ہوئی کاوہ ونی نامی گاؤں سے گذر کر دریائے بہت میں شامل ہو جاتی ہے۔ دریائے رنبی آرہ خود شاورہ پرگنہ میں سے گذرتا ہے اور کھیتیوں کو سیراب کرتا ہوا نا ینہ نامی گاؤں میں سے چل کر ویشو دریا میں مل جاتا ہے۔

## رامشی

اس کا منبع رامہ سر چشمے کا پانی اور شوپ کوری اور کاژہ گلہ وان وٹ (۲۷۱) نامی پہاڑوں کا برفانی پانی جانا جاتا ہے اور دانِ زب نامی مقام پر اس کے تین حصے ہو جاتے ہیں۔ ایک مامشی نہر، جو پکھر پورہ کے راستے سے چرا قصبے تک جاتی ہے۔ دوسری خامشی نہر جو خام پورہ ٹیلے کو سیراب کرتی ہے اور تیسری رامشی ندی، جو چھرات کے ٹیلے میں سے گذر کر کھیتیوں کو سیراب کرتے ہوئے کاکا پورہ کے مقام پر دریائے وتستا (۲۷۲) میں مل جاتی ہے۔

## لولہ برین ندی

اس کا منبع ہے چکش (۲۷۳) اور چرار اور پکھر پورہ کے ارد گرد پہاڑوں کا پانی جو قیصر مولہ کی راہ سے کھیتوں کو تازگی بخشتے ہوئے وتھ نار کے گاؤں میں سے دریائے بہت میں شامل ہو جاتی ہے۔

## دُودھ گنگا

اس کے نکلنے کی جگہ دودھ سر چشمہ اور سنگ سفید اور کاژہ گلہ (۲۷۴) نامی پہاڑوں کا برفانی ااور اس کے گردو واقع چشموں کا پانی ہے۔ آری گام اور نا گام کے بیچ کے دیہات کی چند راہوں سے کھیتیوں کو شگفتگی بخش کر چھچھ بل کے مقام پر دریائے بہت سے مل جاتا ہے۔ اس کا پانی انتہائی لطیف اور خوشگوار ہے۔

## آہج دریا

اس کا منبع راہ یار نامی پہاڑوں کا برفانی پانی ہے۔ اطراف میں واقع چشموں کا پانی جمع ہو کر مانچھہامہ اور دین سو گاؤں کو سیراب کرتے ہوئے بمنہ کے لجن زار میں داخل ہو کر باکورسر کے پانی کے ساتھ مل جاتا ہے۔

## کانہامہ دریا

اس کا منبع ایک توسکھ ناگ کا اور بیروہ کے پہاڑوں کا برفانی پانی ہے اور دوسرا پالس نامی پہاڑ اور پرگنہ بانگل میں توسہ میدان کے پہاڑ کا برفانی پانی ہے، جوکئی نہروں سے جاری ہوکر کھیتیوں کو تروتازہ کردیتا ہے۔ اس دریا سے تین نہریں نکلتی ہیں۔ پہلی کانہامہ میں، دوسری ہانجی ویرہ کے راستے سے اور تیسری سلطان پور کے راستے سے پماسر نامی جھیل میں شامل ہوتے ہوئے نایدکھے سے نکل کر ہارتار کے مقابل میں واقع جھیل اولر میں مل جاتی ہے۔

## ننگل دریا

اس کا منبع ایلہ پتری کا چشمہ اور افروٹ کے پہاڑوں کا برفانی پانی ہے۔ گل مرغ کے درمیان سے نکل کر اور دوسرے پہاڑوں کے پانی سے خاصی قوت پا کر کروہن پرگنہ کو سیراب کرتے ہوئے تارزو کے مقام پر اولر میں شامل ہوجاتا ہے۔

## ہارون دریا

اس کا منبع جھیل مارسر اور پھاک کے پہاڑوں کا برفانی پانی ہے، جو داچھی گام کے

درمیان سے تیل بل کے راستے جھیل ڈل میں جا ملتا ہے۔ اس سے کئی ندیاں الگ ہو جاتی ہیں۔ راجہ بک (۲۷۵) نے ناگہ پورہ گاؤں سے ایک نہر کھدوا کر پھاک پرگنہ کے شمالی حصے کو تر و تازگی بخشی تھی۔ اسے ماؤس نہر کہتے ہیں۔ بادشاہ جہانگیر نے ہارون گاؤں سے ایک نہر نکال کر شالیمار باغ کو رشک جنت بنایا۔ آصف جاہ خان نے اس سے ایک اور نہر نکال کر نشاط باغ کو شگفتگی بخشی۔ جناب خواجہ شاہ نیاز نقشبندیؒ کی کوشش سے ہارون سے اُوپر پہاڑ کے دامن میں ایک نہر جاری ہوئی جس سے برین گاؤں کی کھیتیاں سرسبز ہوتی رہیں۔

دریائے ہارون کا پانی جھیل ڈل کے پانی کے ساتھ مل کر دو راہوں سے باہر نکلتا ہے۔ ایک نالہ مار سے خواجہ یار بل کے مقام پر جہاں جھیل ڈل سے ایک نہر الگ ہو کر برار نمبل میں شامل ہو جاتی ہے اور وہاں سے نالہ مار کے بیچ میں سے، جسے سلطان بڈشاہ نے شہر کے شمالی حصے میں کھدوایا ہے، موسم گرما کے آٹھ مہینوں تک جاری رہ کر اچھن کی کھیتیوں کو سیراب کرتی ہے۔ اس سے کئی ندیاں نکلتی ہیں۔ ایک سید بزرگ شاہ (۲۷۶) کی ندی جسے جناب سید بزرگ شاہ قادریؒ نے کھدوایا ہے۔ دوسری دولت کول جیسے دولت چک نے اپنی حکومت کے ایام میں اپنے گھر کے صحن کے بیچ میں سے گزارا تھا اور بعد میں کھارہ بازار میں آگ کی واردات میں یہ نہر منہدم ہو گئی اور خواجہ شاہ نیاز نقشبندی (۲۷۷) نے سات ہزار روپے خرچ کر کے پھر سے اسے جاری کر دیا۔ تیسری کاوڈارہ ندی جو مرجان پور کے راستے سے خوشحال سر میں مل جاتی ہے۔ چوتھی تارہ بل ندی جو اشرف کول سے الگ ہو کر خوشحال سر میں سے گذر کر آنچار سر میں شامل ہو جاتی ہے۔

جھیل ڈل کے پانی کا ایک دوسرا حصہ ژونٹی کول کی راہ سے درگجن پل سے نکل کر شیر گڈھی کے پاس دریائے بہت میں (۲۷۸) شامل ہو جاتا ہے۔

## امراوتی

دچھن پارہ پہاڑوں اور امرناتھ پہاڑ کا برفانی پانی جمع ہو کر دریا کی صورت میں پہاڑی دروں سے گذرتا ہے جن کی مٹی خاصی سفید ہے۔ پانی چڑھنے کی طغیانی کے دوران یہ سفید مٹی پانی کے ساتھ مل کر پانی کو سفید دودھ کی طرح بنا دیتی ہے اور سونہ مرگ کے نیچے سندلار میں مل جاتا ہے۔

## کرانکہ ندی

ہرموکٹہ گنگا اور کولوسر وغیرہ جھیلوں اور ہرموکھ پہاڑوں کا برفانی پانی جمع ہو کر ایک دریا کی صورت اختیار کر کے کنگن گاؤں سے سندلار میں مل جاتا ہے۔ کہا جاتا ہے کہ اس دریا کا پانی انتہائی لطیف اور خوشگوار اور ہاضم ہے۔

## سندلار (۲۷۹)

وگہ سگن نامی جھیل زوجہ بال پہاڑ کے اُوپر واقع ہے۔ اس کا پانی دو حصوں میں بٹ جاتا ہے۔ ایک حصہ مشرق کی طرف چلا جاتا ہے اور دوسرا مغرب کی طرف۔ البتہ مشرقی

حصہ دراس کے حدود میں پہاڑوں سے آنے والی کئی نہروں کے پانی میں شامل ہو کر ایک دریا بن جاتا ہے۔ اس کے بعد یہ وکھ نامی دریا میں شامل ہو کر کرگل کے علاقے سے شمال کی طرف کو پار کرتا ہے اور وہاں سے دریائے کھلرشئی، جورودک اور چان تھان اور گردوک وغیرہ نامی پہاڑوں سے کمال شور و قوت کے ساتھ بہہ کر آتا ہے، مل کر اباسند دریا کے نام سے اسکردو اور ہونزہ اور نگری اور گلگت اور داردو وغیرہ جگہوں کے پہاڑوں کے درّوں کے بیچ میں سے گذر کر قلعہ اٹک کے نیچے دریائے اٹک کے نام سے موسوم ہو جاتا ہے اور کابل کے پہاڑوں سے آنے والا دریائے لنڈا اس میں شامل ہو کر ملتان کے نیچے بہنے والے پنجاب کے دریاؤں کو متلاطم کرتا ہوا سمندر میں مل جاتا ہے۔

جہیل کا دوسرا حصہ مغرب کی طرف بہتا ہے اور یہ اپنے دائیں بائیں پہاڑوں کے ندی نالوں کے پانی سے قوت پاتا ہے اور دچھن پارہ کے پہاڑوں سے بہہ کر آنے والے دریائے امراوتی کے پانی سے اس کی شان دوبالا ہو جاتی ہے اور دریائے سندلار کے نام سے موسوم ہو جاتا ہے۔ اس کے بعد سورہ فراد سے نیلہ گرار ندی اور کنگن گاؤں سے کرانکہ ندی اس میں شامل ہو جاتی ہیں اور پھروسن نامی گاؤں سے برہمہ سر ندی کو اپنے ساتھ شامل کر کے پرگنہ لار کو سیراب کرتا ہے اور ہرن گاؤں سے منتشر ہو کر اس کا پانی کئی راستوں سے آنچار سر میں مل جاتا ہے۔

اگلے زمانے میں سندلار نامی دریاسہہ پور کے راستے سے شہاب الدین پورہ نامی گاؤں سے دریائے بہت میں شامل ہوتا تھا لیکن عبداللہ خان (۲۸۰) دُرّانی کے عہد میں دریائے سند میں طغیانی آگئی اور اس نے خود بخود آنچار کی طرف راستہ بنالیا اور حاکموں کی غفلت کی وجہ سے دو تین سال تک بے لگام رہا اور لار کے دیہات کی کھیتوں سے تقریباً ایک

لاکھ خروار (شالی ۲۸۱) کو برباد کر دیا۔ سردار عظیم خان (۲۸۲) کے عہد میں علی قلی خان کے اہتمام سے اس کی درستی و مرمت میں لوگوں کو بڑی تکلیف پہنچی اور دو تین مہینوں کے بعد اس میں پھر طغیانی آ گئی اور مضبوط بند کو راستے سے ہٹا کر آنچار سر کی جھیل کو سیلاب زدہ بنا دیا۔ آج تک یوں ہی ہوتا چلا آ رہا ہے۔

سند لار کا پانی امراوتی دریا کے پانی میں مل جانے کی وجہ سے گرما کے زمانے میں دودھ کی مانند سفید اور گدلا ہوتا ہے۔ قدسی کہتا ہے

چو کشمیر افتخار ہر دیار است　　بہشت و سلسبلیش آب لار است

قضا از سیم نا بش آفریدہ　　بغیر از موج گل طوفان ندیدہ

ندیدہ دیدۂ افلاک بارے　　زجوی شیر زین سان آبشارے

(کشمیر پر چونکہ ہر ملک فخر کرتا ہے اسکی جنت اور اس کا سلسبیل دریائے لار ہے۔ قدرت نے اسے خالص چاندی سے بنایا ہے اور پھولوں کی لہروں کے بغیر اس نے کسی اور طوفان کی لہریں نہیں دیکھیں۔ بہر حال آسمان کی آنکھ نے بھی دودھ کی ندی کی اس طرح کی آبشار کہیں نہیں دیکھی)

اور سند لار کے پانی سے کئی نہریں جدا ہو کر کھیتوں اور باغوں کو سیراب کرتی ہیں۔

اول لارکول کی نہر جو وہن گاؤں سے جدا ہو کر شمالی پہاڑ کے دامن میں واقع دیہات کے کھیتوں کو تر و تازگی بخشتی اور سایر المواضع (۲۸۳) پائین کو فیض پہنچاتی ہے۔ چونکہ یہ مذکورہ نہر راجہ لارک چند کی بنوائی ہوئی ہے۔ اس لئے اس کا نام لارکول پڑ گیا ہے اور اگلے زمانے میں یہ نہر وونद ہامہ تک جاتی تھی اور وہاں سے راجہ جیاپیڈ (۲۸۴) نے ایک نہر کھدوا کر اس کا پانی اندرکوٹ تک پہنچایا تھا۔ اس وقت صرف بادام پور گاؤں تک چلتی ہے اور راستے میں

زمین کے نیچے ایک سرنگ سے بھی گذر جاتی ہے۔

جب سلطان زین العابدین کشمیر کا بادشاہ تھا، اس نے دریارہ لری پہاڑ کے دامن کے نیچے لاری نہر جاری کروا کے صفا پور وغیرہ دیہات کو آباد کیا۔

دوسری ڈب کول نہر جو میگام گاؤں سے کھیتوں کو سیراب کرتی ہوئی ڈب نامی گاؤں تک جاری ہے۔ تیسری آرہ کول نہر جو پرنگ گاؤں سے جدا ہو کر جنوب کے پہاڑ کے دامن کے نیچے سے بارہ کروہ پر پھیلے سنگلاخ کو چیرتی ہوئی پرگنہ پھاگ کے کھیتوں کو سیراب کرتی ہے۔ کہتے ہیں راجہ آری رائے (۲۸۵) نے یہ نہر کھدوائی تھی۔ لشکر خان نے جو چغتائی (۲۸۶) عہد میں کشمیر کا حاکم تھا، اس نہر کی مرمت کروائی اور بٹہ پورہ گاؤں سے اسے اپنے گلشن کے لئے طراوت بخش بنا دیا۔

چوتھی زکور کول نہر جو وایلو گاؤں کے نزدیک سند سے الگ ہو جاتی ہے اور آرہ کول کے ساتھ ساتھ پھاک کے دیہات کی کھیتیوں کو شاداب وسرسبز بنا دیتی ہے۔ اس نہر کا بانی کہتے ہیں راجہ زشک تھا (۲۸۷) جس نے زکورہ گاؤں کو آباد کرنے کیلئے اسے جاری کر دیا ہے۔ سلاطین دہلی کے عہد پادشاہی میں یہ نہر باغِ عیش آباد اور نسیم باغ اور دولت آباد اور افضل آباد (۲۸۸) تک رواں تھی۔

پانچویں نہر شاہ جوئے نہر جو وایلو گاؤں سے الگ ہو جاتی ہے۔ سلطان زین العابدین نے اس نہر کو آروی پرگنہ اور باغات اور شاہی دولت خانہ کی آبادی کے لئے کھدوایا تھا۔

جلال ٹھاکور کی بیوی لچھمہ خاتون نے شاہ جوئے نہر سے ایک الگ نہر نکالی اور اسے جامع مسجد تک پہنچایا۔ اسی لئے اس نہر کا نام لچھمہ کول کے نام سے مشہور ہے۔

چغتائی بادشاہوں نے اپنے عہد میں شاہ جوئے نہر کی ترمیم وتوسیع بڑی عمدگی کے ساتھ کی اوراس کے پانی کو باغ الٰہی اور باغ بحرآرا اور باغ گلشن اور درشنی باغ اور باغ عنایت اورظفرآباد میں پہنچا کرانہیں رشک بہشت بنادیا۔سیف خان نے باغ سیف آباد کی شادابی کیلیئے شاہ جوئے نہر کے پہلو میں ایک علیحدہ نہر بنوائی تھی جواب گم ہو چکی ہے۔آخوند ملاشاہ نے اپنے باغ کورونق بخشنے کی خاطر ورند گاؤں تک ایک اورنہر بنوائی تھی لیکن اس وقت اس کے نشانات موجودنہیں ہیں۔موجودہ زمانے میں مہاراجہ رنبیرسنگھ نے شاہ جوئے نہراورزکورکول کو ملاکر باغ سیف آباد میں شالی کوٹنے اورریشم سازی کے کارخانوں کے لئے جاری کردیاہے۔

## ارنی دریا (۲۸۹)

اس کا منبع شیراسراورکئی اورجھیلیں ہیں، جو ہرموکھ پہاڑ وغیرہ کے پانی سے مل کر پرگنہ کو یہامہ کے نادی ہل نامی درے سے گذرکرتین راستوں سے جھیل اولر میں شامل ہو جاتاہے۔اوراس سے تین ندیاں نکلتی ہیں۔دوندیاں آرگام ضلع میں بہہ کروہاں کی کھیتیوں کو سرسبزکرتی ہیں اورایک ندی شمالی پہاڑ کے دامن کے نیچے سے گذرکردیہات کی فصلوں کوآباد کرتی اورباندی پور کے گاؤں میں شالی کوب کے کارخانے کو چلاتی ہے۔

## مدمتی

اس کا منبع ہرموکھ کے شمالی پہاڑ کا برفانی پانی اورنیلہ سراوربونارندی کا پانی ہے۔

فصلوں کو سرسبز کرتے ہوئے تانتھ پورہ کے گاؤں میں سے بہہ کر جھیل اولر میں مل جاتا ہے اور اسکی تین شاخیں جو اُوپر سے الگ ہو جاتی ہیں، ایک بانڈی پور کی راہ میں، دوسری وٹ پورہ کی اور تیسری قاضی پورہ کی راہ میں فصلوں کو سیراب کرتی ہوئی اولر میں چلی جاتی ہیں۔ شمالی پہاڑ کے دامن میں قدیم زمانے سے دو نہریں کھدوائی گئی ہیں جو آلوسہ گاؤں تک اکثر دیہات کی فصلوں کو سیراب کرتی ہوئی اولر میں مل جاتی ہیں۔ مدمتی دریا کا پانی بہت ہی خوشگوار اور ہاضم ہے۔

## نالہ پہرو

یہ کامراج کی وادی سے گذرتا ہے اور اس کا منبع لولاب کے پہاڑوں کا پانی اور لولاب کے چشمے ہیں۔ یہ پہاڑی، برفانی اور چشموں کا پانی پرگنہ وتر سے کھمبل نہر کی صورت میں جس کا منبع ستہ کل ناگ ہے، آدت کولہ نامی جگہ پر شامل ہو کر اتنا گہرا ہو جاتا ہے کہ اس پر سے بھاری کشتیاں چلتی ہیں۔اس کے بعد گردونواح کے چشموں اور نہروں کے پانی سے پُر ہو کر کپوارہ گاؤں کے ماور دریا جس کا مخرج کاجی ناگ سے اور حمل ندی کے دوکلہ بل جس کا منبع گورچن ناگ ہے اور تمام ندیوں نالوں سے، جو کاجی ناگ پہاڑ سے آتے ہیں، بھر جانے کے بعد دوآب گاہ (۲۹۰) کے مقام پر دریائے بہت میں مل جاتا ہے۔ بڈشاہ نے اپنے زمانے میں پہرو نالے کو پہرو نامی مقام پر اسکے جاری ہونے کی جگہ پر بند کر دیا تھا اور اس کے فیض بخش پانی سے زینہ گیر پرگنہ کو آباد کر کے وہاں عجیب وغریب قسم کی عمارتیں اور دل کش باغات تعمیر کئے تھے۔اس کی تاریخ ''جوی خرمؔ'' کہی گئی ہے (۲۹۱)۔سلطان کی

وفات کے بعد اس کا بنایا ہوا بند منہدم ہوا اور پہرو نالہ اپنی راہ پر پھر سے جاری ہوا۔ اس کے بعد مغل بادشاہوں نے بھی اسے بند کرنے کی کافی کوشش کی لیکن کامیاب نہ ہوئے۔

## کرشنہ گنگا

چونکہ اس کا منبع کرشنہ سر جھیل، جس کا ذکر ہو چکا، کے دریا کا پانی ہے، اس لئے اس کا نام کرشنہ گنگا دریا بتایا گیا ہے۔ اس کا پانی وشنہ سر اور پرنگ سر اور دوسرے مشہور سر چشموں کے ساتھ باب نار کی راہ سے شمال کی طرف بہتا ہے۔ اس کے بعد یم سر اور گاڑھ سر اور شمالی پہاڑوں کا پانی تلیل، دیوہ سر، برزہ بال، گوریس اور کو یہامہ، لولاب، وتر، شاردا اور کرناہ وغیرہ کے شمالی علاقوں کے پہاڑوں اور اطراف و جوانب کے علاقوں سے ندیوں کی صورت میں اکھٹے ہو کر ایک ٹاٹھیں مارتا ہوا دریا بن جاتا ہے، جو مظفر آباد کے مقام (۲۹۲) پر کشمیر کے دریا سے ممتاز ہو کر دریائی جہلم کے نام سے پکارا جاتا ہے۔

## ساندرن دریا

یہ شاہ آباد کی وادی اور پرگنہ برنگ کے پہاڑوں سے اُترتی ہوئی برنگی ندی اور کوٹھار کے پہاڑوں سے آنے والے آرہ پتی نالہ سے اننت ناگ قصبے کے پاس ایک دوسرے سے مل جاتا ہے۔ پھر اننت ناگ کے چشموں کے پانی کو اپنے ہمراہ لے کر کھنہ بل کے مقام پر

گہرا ہو جاتا ہے اور پھر ہموار زمینوں سے آہستہ آہستہ خالص مٹی پر سے گذرتا ہے۔ چنانچہ ایک گھنٹے میں آدھ میل سے تین میل تک کا فاصلہ پانی کی کمی و کثرت کی وجہ سے طے کرتا ہے۔ کھنہ بل سے اس کا دریا کا نام شاستر (۲۹۳) کی زبان میں وتستا، فارسی زبان میں بہت اور کشمیری زبان میں ویتھ ہو جاتا ہے۔ اس کے بعد نہروں، ندیوں اور چشموں کے پانی سے بھر جانے کی وجہ سے اس میں خاصی وسعت پیدا ہو جاتی ہے۔ اور شہر سرینگر کے بیچ میں بہہ کر لوگوں اور کھیتیوں کو سیراب کرتا ہے۔ اس کا پانی جاڑے کے معمولی درجے سے موسم گرما میں چار گز کی بلندی تک بڑھ جاتا ہے۔ اس سے زیادہ بڑھ جانے سے کناروں کو پھاند کر سیلاب لے آتا ہے۔ کھنہ بل سے لمبودری دریا پہلے تو چار جگہوں سے دریائے بہت میں مل جاتا ہے، اول کھنہ بل سے نیچے، پھر منز گنڈ، اور پھر گورہ ویرا اور اسکے بعد کرٹہ ٹینگ میں۔ پھر ویشو دریا سنگم کے مقام پر اور رنبی آرہ ندی دو جگہوں پر ایک کاوہ ونی گاؤں اور دوسرے للہ ہار میں اور اولر کے پہاڑوں کا پانی چشموں کے پانی سمیت چرٹسو میں اور وھو پرگنہ کے بڑے بڑے چشموں کا پانی اور بالہ ہامہ نمبل کا پانی پان پور (۲۹۴) میں اور رامشی دریا کا پانی کاکا پور، ناگام دریا کا پانی وتھ نار میں اور دریائے تیل بل اور جھیل ڈل کا پانی شیر گڑھی کے سامنے اور دودھ گنگا دریا کا پانی چھتہ بل میں اور آچھیچ ندی کا پانی بمنہ کی نمبل کے پانی سمیت پارم پورہ میں اور سندلار کا پانی آنچار سر کے پانی، خوشحال سر اور تولہ مولہ کے پانی سمیت شہاب الدین پورہ میں اور مان سر کی جھیل کا پانی ننی نارہ میں جگہ جگہ دریائے بہت میں مل جاتا ہے اور ان کے ملنے سے دریا پُر موج اور متلاطم ہو کر بانہ یاری کی راہ سے اولر جھیل میں داخل ہو جاتا ہے۔

اگلے زمانے میں حاجن کا نچلا علاقہ اولر جھیل سے مل جاتا تھا۔ سال ۱۲۴۰ھ میں

بانہ ایری نالے، جسے سورج بھان نے کھدوایا تھا، کی راہ سے جاری ہونے لگا اور جب سے ویسے ہی چل رہا ہے۔ اس کے بعد دریائے بہت کا پانی اولر جھیل کے پانی اور کو یہامہ وغیرہ کے پہاڑوں کی ندیوں کے پانی کے ساتھ مل کر مغرب کی طرف بہہ نکلتا ہے اور ننگل کے اپنی اور پماسر ندی سے جڑ کر سوپور کے قصبے (۲۹۵) سے نکلتا ہے اور دوآب گاہ کے مقام پر پہرو نالہ کو شامل کر کے بارہمولہ کی حدود تک آہستہ اور نرم روی سے بہتا ہے اور وہاں پر بہت یا وتستا کا نام اس پر نہیں رہتا ہے۔ کھنہ بل سے بارہمولہ قصبے (۲۹۶) تک چھوٹی بڑی کشتیاں اس میں سے جاڑے اور بہار کے موسموں میں گذرتی رہتی ہیں۔ اس کا فاصلہ کھنہ بل سے بارہمولہ تک مع اس کے پیچوں اور ٹیڑھے میڑھے راستوں کے تقریباً ایک سو میل ہو جاتا ہے اور بارہمولہ قصبہ سے مغرب کی جانب تنگ درّے میں سے انتہائی جوش و خروش سے بہہ نکلتا ہے اور دچھنہ کھاورہ علاقوں کے پہاڑوں کے پانی سے وسعت وافزونی پا کر مظفر آباد (۲۹۷) کی حدود تک اسے دریائے کشمیر کے نام سے پکارتے ہیں۔ وہاں سے شمال سے آنے والے دریائے کرشنہ گنگا کے ساتھ مل کر جہلم کے مبارک نام سے یاد کیا جاتا ہے۔ مظفر آباد سے جنوب کی طرف ڈھلتے ہوئے کنہار دریا، جو پھکلی سے آتا ہے، پہاڑوں کے درّے کے بیچ میں سے میر پور کے چامک کی حدود تک بہہ نکلتا ہے۔ اس کے بعد پنجاب کے وسط میں سے لوگوں کو سیراب کرتا ہوا دریای چناب اور رادی اور بیاس اور اٹک کے دریاؤں میں شریک ہو کر بحر اعظم (۲۹۸) میں گرتا ہے۔

## کٹہ کل

دریائے بہت سے شیر گڑھ کے قریب ایک نہر نکالی گئی ہے، جو گرمیوں کے موسم میں شہر کے جنوبی حصے کو سیراب کرتی ہوئی صفاکدل کے پاس بہت کے ساتھ مل جاتی ہے۔

## سونر کل

سید منصور صاحبؒ کی زیارت کے پاس کٹہ کل سے ایک نہر الگ ہو کر دودھ گنگا ندی کے ساتھ مل جاتی ہے۔

## نالہ شادی پور

دریائے بہت سے شادی پور کے مقام پر ایک نہر جدا ہو کر ہاکورسر اور پماسر کے پانی کے ساتھ شامل ہو کر جھیل اولر میں مل جاتی ہے۔

# کشمیر کی جھیلیں

## جھیل اولر

یہ ایک گہری (۲۹۹) اور وسیع جھیل ہے۔ تکونی شکل اور مختلف اضلاع والی، جو سرینگر سے شمال کی جانب ۲۵ ر میل کے فاصلے پر ہے۔ مشرقی ساحل سے سوپور قصبہ تک اس کی لمبائی اندازاً بارہ میل، جنوب سے شمال تک اس کی چوڑائی آٹھ (۳۰۰) میل ہے۔ اعتدال پر ہونے کے وقت اس کے احاطے کا دور اندازاً چالیس میل ہے۔ اس کے مشرقی اور شمالی کناروں پر پرگنہ کو یہامہ، زینہ گیر اور جنوب میں سایرالمواضع پائین سے وابستہ دیہات آباد ہیں۔ اور اسکے ٹھیک درمیان میں مشہور اولر ناگ چشمہ ہے (کشمیری زبان میں اُولر اس سوراخ کو کہتے ہیں جس سے پانی پھوٹ نکلے)۔ چونکہ اس چشمے کا پانی زمین کے سوراخ میں سے پھوٹ نکلا تھا، اس لئے اس چشمے کو اولر ناگ کہا گیا ہے۔

کہتے ہیں کہ قدیم زمانے میں پرگنہ لار کے پہاڑوں سے ستھ سر چشمے کا نصف پانی راسہ بل کے پہاڑوں کے پانی میں مل کر کرشنا گنگا میں چلا جاتا تھا۔ کہتے ہیں کہ کسی وقت وِگنی پہاڑ بھاری برف کی وجہ سے عاجز آ کر مع بوجھ اور بوجھ والے (یعنی مع برف اور خود) کے لڑھک کر دریا کی گذرگاہ کی روک بن گیا اور اس طرح سے ایک جھیل وجود میں آگئی جسے ستھ سر کہتے تھے اور اس زمانے میں جوگنیاں یعنی پریاں کشتی میں سوار ہو کر اس میں سیر کیا

کرتی تھیں۔ چنانچہ وِگنی پہاڑ پر ابھی تک کشتیاں باندھنے کی جگہیں (۳۰۱) موجود ہیں۔ بہت مدتیں گذرنے کے بعد سندمت نگر کے لوگوں نے ذلیل کام اور شرمناک اعمال کئے اور راہ راست کو ترک کیا تو خداوند قہار کے قہر سے اندھیری رات میں شہر کے درمیان کی زمین ایک عظیم بھونچال سے پھٹ گئی اور ایک سوراخ وجود میں آگیا اور اس سوراخ سے ستی سر جھیل کا پانی فوارے کی طرح اُبل کر پھوٹ نکلا اور طوفان برپا کر کے اس شہر اور اسکے لوگوں کو نابودی کے بھنور میں فنا کر دیا (۳۰۲)۔ تب سے وِگنی پہاڑ کے دامن کے نیچے ستی سر جھیل کا دریا ایک غار کے منہ میں داخل ہو کر اولر جھیل کے چشمے سے پھوٹ نکلتا ہے۔

چنانچہ اگلے راجاؤں میں ایک راجا نے شالی کا بھوسہ راسہ بل ندی میں ڈال دیا جو اولر جھیل میں نمودار رہوا۔ اُوپر ذکر کئے گئے شہر کے ڈوب جانے کا قصہ راجہ سندر سین (۳۰۳) کے ذکر میں تفصیل سے بیان ہوگا۔ شہر مذکور کی عمارتوں کی بعض علامتیں ابھی بھی لوگوں کو دکھائی دیتی ہیں۔ چنانچہ محققین میں سے ایک محقق نے مشرقی ساحل کے پاس دریا کی گہرائی میں پتھروں کی ساخت کے ایک پل کے پایوں کو دیکھا۔ جھیل کے ہانجیوں (۳۰۴) (کشتی بانو) کا کہنا ہے کہ شیرہ کوٹ پہاڑ کے روبرو پانی کی گہرائیوں میں سے ایک محل کی کھڑکیاں دکھائی دیتی ہیں اور اس کے متصل ان ملاحوں کو ایک بڑا درخت بھی نظر آتا ہے۔ مورخین لکھتے ہیں کہ اس زمانے کی تعمیرات میں سے ایک بت خانہ تھا جس کے کنگرے جاڑے کے موسم میں دکھائی دیتے تھے۔

سلطان زین العابدین نے اس عظیم بت خانے کے اُوپر ایک کشتی نصب کی اور اس پر مٹی اور پتھر ڈلوادیئے اور ایک جزیرہ تعمیر کیا جس کی لمبائی شمال سے جنوب تک ایک سو گز اور چوڑائی "پچھتر" گز ہے اور اس پر دلکش اور خوبصورت درخت اور پھول لگوائے۔ اس کے شمالی

گوشے میں تین آشیانہ (۳۰۵) (یعنی تین طبقوں والی) ایک سنگین عمارت اور ایک رنگین مسجد بنوائی جواب تک موجود ہے۔ دو سونے کے بت جو مذکورہ بت خانے سے غوطہ خوروں کو ملے تھے جشن شاہی میں لوگوں میں داد و سخاوت میں تقسیم کیئے گئے۔ لنک کی تاریخ (۳۰۶)

این بقعہ چو بنیاد فلک محکمہ باد    مشہور بہ زین ڈینب در عالم باد

شہ زین عباد تا کہ درو جشن کند    پیوستہ چو تاریخ خودش ''خرّم باد'' (۳۰۷)

(یہ مکان آسمان کی بنیاد کی طرح محکم رہے اور زین ڈینب کے نام سے مشہور! پادشاہ زین عباد (زین العابدین) تا کہ اس میں جشن مناتا رہے ہمیشہ اپنے عہد کی مانند (خوش) آباد رہے)

عمر رسیدہ بوڑھے لوگوں کا کہنا ہے کہ پہلے تو چشمہ اولر کا پانی سطح آب سے ایک گز بلند فوارے کی صورت میں پھوٹ پڑتا تھا، اب تو ہمارے موجودہ زمانے میں بس بلبلے نظر آتے ہیں۔ چشمہ اولر کے ساتھ ہی ایک اور چشمہ ہے جسے پدم ناگ کہتے ہیں۔ اس کے بلبلے کم ہی ہیں۔ اس کے علاوہ جھیل اولر میں بہت سے چشمے موجود ہیں۔ جھیل کے درمیان میں پانی صاف اور متلاطم ہے۔ اس کے کناروں پر سنگاڑھے کی پیداوار ہر طرف بڑی کثرت سے ہوتی ہے۔ جو پیداوار اس کے مشرقی اور شمالی کناروں پر اُگتی ہے، وہ بڈشاہ کے زمانے سے اب تک عام لوگوں کیلئے وقف ہے اور جو مغرب اور جنوب کے علاقے میں ہوتی ہے، وہ قدیم زمانے سے سرکار کے حق میں ضبط ہے۔ اس جھیل میں مچھلیوں، راج ہنسوں اور مرغابیوں کا خوب شکار ہوتا ہے۔ ہزاروں چھوٹی چھوٹی کشتیوں میں شکاری لوگ نکل کر پرندوں اور مچھلیوں کا شکار کیا (۳۰۸) کرتے ہیں۔ کہتے ہیں اگلے زمانے اولر تال (۳۰۹) بہت گہرا تھا، جو زمانہ گزرنے کے ساتھ ساتھ اُونچا ہوتا گیا۔ اب شیرہ کوٹ

پہاڑ میں گہرا ہے اور دوسرے اطراف میں کم۔ ہوا کے زور میں اس کا پانی بہت سخت متلاطم ہو جاتا ہے اور اس وقت کشتیوں کا گذر ممکن نہیں ہے۔

اور گرمیوں کے موسم میں دو پہر دن میں کوئی بھی اسے عبور نہیں کر سکتا۔ بڈشاہ کے عہد تک جھیل اولر اشم نامی گاؤں تک متلاطم رہا کرتا تھا۔ چنانچہ بڈشاہ نے لنک کی تعمیر، جو جھیل کے بیچ میں کی، تب سے جھیل کی پستی دن بہ دن بلند ہوتی گئی اور دریا کا گذرگاہ لمحہ بہ لمحہ پست ہوتا رہا۔ یہاں تک کہ ہانجن اور نایدکھے وغیرہ دیہات وجود میں آ گئے۔ اب بہت میں طوفان کی وجہ سے جھیل اولر پانی سے بھر جاتا ہے اور اشم کے گاؤں تک سیلاب آ جاتا ہے۔

## جھیل ڈل

شہر کے متصل مشرق میں واقع ہے۔ گگری بل سے تیل بل تک اس کی لمبائی اندازاً تین میل اور خواجہ یار بل سے نشاط باغ تک اس کی چوڑائی تقریباً دو میل اور اس کا دور اندازاً دس میل ہے (۳۱۰)۔ مورخین کے بقول قدیم زمانے میں یہ وتالنی مرگ نام کا ایک میدان تھا۔ راجہ پرورسین (۳۱۱) نے دریائے بہت کو ناوہ پورہ سے بند کر کے کوہ ماران کے دامن کے نیچے سے شہر کے وسط میں جاری کروایا۔ ایک زمانہ گذر جانے کے بعد راجہ درلب وردن (۳۱۲) کے زمانے میں دریائے بہت میں طغیانی آ گئی جس سے مذکورہ میدان میں سیلاب آ گیا اور ایک جھیل وجود میں آ گئی۔ اس زمانے کے فرمان رواؤں نے اس کی درستی کرنے اور سنبھالنے کی طرف کوئی توجہ نہیں کی اور وقت گذرنے کے ساتھ یہ گہری ہوتی چلی

گئی۔ سلطان سکندر بت شکن (۳۱۳) نے نایدیار سے نشاط باغ تک ہندوؤں کے کتاب خانوں کی بھاری کتابوں کے ذخیروں سے ایک مضبوط راہ تعمیر کی اور اس کے اُوپر چھ پل پتھروں کے بنوائے۔ اس کے بعد سیف خان نے خواجہ یار بل سے عیش آباد کے باغات تک آنے جانے کیلئے ایک راستہ بنایا جس کی وجہ سے مذکورہ جھیل کے تین حصے ہو جاتے ہیں۔ پہلا بڑی جھیل (بڑاڈل) جو حضرت بل کے سامنے ہے۔ دوسرا چھوٹی جھیل (چھوٹاڈل) جو سلیمان پہاڑ سے نشان باغ تک ہے اور تیسرا حصہ سدرہ کھون ہے، جو کوہ ماران کے سامنے ہے اور بہت گہری پائی گئی ہے۔ ان تینوں حصوں میں نندہ پورہ گاؤں کے جزیرے لوگوں کی کثرت سے معمور اور موجود ہیں۔ ان میں سے بعض جزیرے زمین کے برابر ہموار کر دیئے گئے ہیں۔ بعض کو اپنی پر بچھا دیا گیا ہے کہ جہاں چاہیں کھینچ کر لے جاتے ہیں اور ان جزیروں پر خربوزے، تربوزے اور سبزیاں، جو شہر کے لوگوں کیلئے کافی ہوتی ہیں، اُگائی جاتی ہیں۔ کنول کی جڑیں اور اسکے بیج اور جیور اسکی پیداوار ہے۔ جھیل کے کناروں میں لوخ نامی گھاس (۳۱۴) اُگتی ہے، جو حیوانوں کو کھلانے اور چٹائیوں کا فرش بنانے کے کام آتی ہے۔ جھیل کا پانی میٹا اور خوشگوار ہے اور وقت گذرنے کے ساتھ گندہ نہیں ہوتا۔ پانی کے صاف ہونیکی وجہ سے اس کی گہرائی تک کی مچھلیاں بھی نظر آتی ہیں۔ جھیل کے درمیان میں چار جگہوں سے چار چشمے اُبلتے ہیں، جو ملاحوں کو دکھائی دیتے ہیں۔ بڑی جھیل میں حضرت بل کے رُوبرو سونہ لنک نامی جزیرہ سلطان زین العابدین کا بنایا ہوا ہے۔ جس میں اس نے تین طبقوں کا شاہی محل بنوایا تھا، جو بھونچال کے حادثے سے ٹوٹ گیا۔ اس کے بعد مغل بادشاہوں نے وہاں ایک نظارہ گاہ تعمیر کیا۔ امیر خان (۳۱۵) نے اسکی مرمت کی اور رہٹ سے چناروں تک پانی کھچوا کر عمارت کے صحن میں روح کو خوش کرنے والے فوارے نصب

کروائے اور ان کا نظارہ کرنے میں بھی وقت گذارتا تھا۔ اس وقت اس کی عمارت ویران ہے۔ چھوٹی جھیل میں روپہ لنک نامی جزیرہ ہے جسے سلطان حسن شاہ (۳۱۶) نے تعمیر کیا تھا۔ یہ عمارت سکھوں کے زمانے میں تباہ ہوئی۔ قدیم عہد میں جھیل کا پانی حبہ کدل کے پاس دریائے بہت کے ساتھ مل کر چلتا تھا۔ بڈشاہ نے وہاں پر اسے بند کر دیا اور مار نالہ شہر کے درمیان کھدوا کر ڈل جھیل کے پانی کو اچھن پرگنہ کی کھیتی کیلئے جاری کیا، جو ابھی تک گرمیوں کے موسم میں نالہ مار کی راہ سے جاری ہے اور جاڑے میں چونٹی کل کے راستے سے بہت میں مل جاتا ہے۔

## آنچار سر

شہر کے قریب شمال میں ایک جھیل ہے، جس کی لمبائی اندازاً بر یہ وار سے بیہ ہامہ تک چار میل اور اس کی چوڑائی صورہ سے بڈوڈر تک دو میل ہے۔ اس کے اطراف میں کثرت سے لوخ زار، نے زار اور بہت سی انواع کی گھاس اُگتی ہے۔ اس کے درمیان میں میلوں تک صاف اور لہریں مارتا ہوا پانی ہے۔ یہ جھیل پہلے زیادہ چھوٹی تھی۔ سال ۱۳۰۰ھ (۳۱۷) میں سندلار دریا میں طغیانی آگئی اور وہ اپنے منبع سے ہٹ کر آنچار سر میں داخل ہو گیا اور زرعی زمینوں کو ہر طرف سے خراب کر کے جھیل کی وسعت کو تین گنا بڑھا دیا۔ اس کے بیچ میں راجہ جیا پیڈ (۳۱۸) نے ایک بند بنوایا تھا جسے موستھو کہتے ہیں۔ اب وہ پانی کے سیلاب سے ویران ہو چکا ہے۔ اس کا پانی شہاب الدین پورہ کے مقام پر دریائے بہت کے ساتھ مل جاتا ہے۔ اور اس میں پرندوں اور مچھلیوں کا شکار فراوان ہوتا ہے۔

## خوشحال سر

یہ ایک جھیل ہے، شہر کے شمالی اضلاع میں۔ جس کے مشرقی ساحل پر جڈی بل کا محلّہ اور مغرب کی طرف عید گاہ واقع ہے۔ اس کے محیط کا دور چار میل ہے۔ اس کے اطراف میں لوخ گھاس بڑی مقدار میں پیدا ہوتی ہے۔ جس میں سے نصف حصہ جامع مسجد کی چٹائیوں اور دوسرا نصف ماتم سرائے اور جڈی بل کی خانقاہ کی چٹائیوں کیلئے لے جاتے ہیں۔ اس میں پرندوں کا بہت شکار ہوتا ہے۔ اور اس کا پانی آنچار سر میں داخل ہوتا ہے۔

## مانسر (۳۱۹)

بیضوی شکل کی بہت گہری جھیل ہے اور سرینگر سے شمال کی جانب ۱۵ ر میل کی دُوری پر واقع ہے۔ اس کے محیط کا دور اندازاً چار پانچ میل ہوگا۔ اس کے شمالی کنارے پر صفاپور گاؤں ہے اور جنوبی کنارے پر چونہ پکانے والوں کی بھٹی۔ مغرب کا حصہ لوخ زار ہے۔ نن نارہ کی راہ سے اس کا پانی دریائے بہت میں چلا جاتا ہے۔ نیز اس کے شمالی کنارے پر باغ صفا کی ان تعمیرات کے کھنڈرات موجود ہیں جو نور جہاں کے حیرت انگیز شاہی محلات تھے۔ مان سر کے اطراف وسواحل سراپا دل کشا، خوش نما اور سیر ونشاط کی جگہیں ہیں۔ چونہ پکانے والوں کی بھٹی کے سامنے مان سر کے منبع کا چشمہ اُبلتا رہتا ہے، جو یخ جم جانے کے موسم میں بھی بند نہیں ہوتا۔ اس کے ساتھ ہی ایک اور چشمہ ہے جس کا پانی نہایت گرم ہے۔ مان سر کے ارد گرد میں بہت سے چشمے ہیں، جو یخ جم جانے کے موسم میں ہی دکھائی دیتے ہیں۔

## ہا کورسر

شہر سے دو میل کے فاصلے پر مغرب کی جانب ہانجک ٹیلے کے دامن میں ایک جھیل ہے۔ اس کی سطح جزیروں اور لوخ زاروں سے ڈھکی ہوئی ہے۔ ہانجک گاؤں کے قریب میلوں تک اس کی صاف اور موج خیز سطح نظر آنے لگتی ہے۔ اس کے پانی کی سطح پر پھیلے ہوئے بعض جزیرے ہواؤں کی حرکت سے ادھر اُدھر بکھر جاتے ہیں اور بعض کا پانی مکھامہ نہر کے ساتھ پماسر میں چلا جاتا ہے اور بعض کا پانی دروازہ کی راہ سے دریائے بہت کے ساتھ مل جاتا ہے۔

## پماسر

ایک کشادہ جھیل ہے۔ شہر سے پندرہ میل کے فاصلے پر پٹن کے قصبے کے ساتھ۔ اس کے بیچ میں لوخ زار بھی ہیں اور سنگاڑھے بھی پائے جاتے ہیں۔ اکثر جگہوں پر پانی موج خیز اور صاف ہے۔ اس کا پانی نایدکھے گاؤں سے شاردا پورہ کے نالے میں مل کر اولر جھیل میں سے گذر جاتا ہے۔

## تان سر

چھوٹی سی جھیل ہے۔ جس کا دور ایک میل ہے اور مانس بل گاؤں کے قریب واقع ہے۔ اس کے کنارے پر ایک پرانے بت خانے کی تعمیرات پائی جاتی ہیں۔ سنبل پل سے اس کا پانی گذر کر دریائے بہت میں مل جاتا ہے۔

## کشمیر کے بطائح

کشمیر زبان میں بطیحہ کو نمبل کہتے ہیں اور بطیحہ یعنی نمبل ایک ایسی زمین ہے جس کا ایک حصہ پانی اور ایک حصہ مٹی کے ساتھ مل کر ہمیشہ گیلا رہتا ہے۔ اور بعض جگہوں پر ایسی ہوتی ہے کہ چوپائے اس میں دھنس کر مر جاتے ہیں۔ بعض جگہوں پر یہ سخت بھی ہوتی ہے۔ ایسی زمین کسی جگہ قابل کاشت بھی ہوتی ہے اور کسی جگہ نا قابل کاشت۔ قابل کاشت جگہ کو کسان لوگ بیلچوں سے اس کی زمین کھود کر شالی کی تخم ریزی کرتے ہیں اور بعض جگہوں پر جہاں زمین کم ہی سخت ہوتی ہے، پانی میں ہل جوت کر دانہ ڈالتے ہیں اور جو زمین نا قابل کاشت ہوتی ہے، اس میں کثرت سے گھاس، لوخ زار اور نے اُگتی ہے۔

## بمنہ نمبل

سرینگر کے جنوبی حدود میں بٹہ مالنہ کے قریب ایک وسیع میدان ہے۔ بعض حصہ قابل کاشت اور بعض نا قابل کاشت اور اس میں چشمے اور پانی کے حوض بھی ہیں۔ لوخ اور طرح طرح کی گھاس اس میں پیدا ہوتی ہے۔ خریف کے موسم میں لوگ اس کی زمین کو کھود کر گھاس کی بیجوں کو، جو آپس میں لپٹ چکی ہوتی ہیں، نکال کر سکھاتے ہیں اور خشک گوبر کی جگہ کھانا پکانے میں استعمال کرتے ہیں۔ اس کے پانی کی کم مقدار شالہ ٹینگ کے اُوپر سے

پل کے راستے سے دریای بہت میں مل جاتی ہے۔

## برار نمبل

شہر کے درمیان شمالی حصے میں واقع ہے۔ کہتے ہیں گذشتہ زمانے میں اس کا پانی صاف اور لہرانگیز تھا۔ اب اس وقت لوخ زار بن گیا ہے۔ اور بعض جگہوں پر پانی کے چھوٹے چھوٹے حوض بھی اس میں پائے جاتے ہیں۔ گرمیوں کے موسم میں اس کا پانی جھیل ڈل کے پانی سے مل کر نالہ مار کی راہ سے نکلتا ہے اور جاڑے کے موسم میں خشک رہتا ہے۔

## تولہ مولہ نمبل

ایک وسیع نمبل ہے، جس کے کناروں پر کھیتی ہوتی ہے۔ اس میں لوخ اور نے زار ہیں اور اس کے بیچ میں تولہ مولہ گاؤں آباد ہے۔ اور کھیر بھوانی کا مشہور چشمہ ہے۔ اگلے وقتوں میں اس میں سے کئی نہریں نکال کر اسکی زمین کو لائق کاشت بنایا گیا تھا۔ اب انقلاب زمانہ کے ہاتھوں نہریں مٹ چکی ہیں اور لوخ زار وجود میں آ گئے ہیں۔ کشمیر کے عجائبات کے ضمن میں مورخوں نے لکھا ہے کہ تولہ مولہ کی زمین سے مچھلیاں پیدا ہوتی ہیں۔ دراصل حقیقت یہ ہے کہ مذکورہ بطیحہ میں بعض جگہوں پر زمین پانی کے اُوپر پھیلی ہوئی ہے۔ اسی پانی، جو دوسری نہروں سے متعلق ہے، کی گہرائیوں میں مچھلیاں آتی رہتی ہیں۔ چنانچہ شکار کرنے

والے زمین کے فرش میں سوراخ کر کے لکڑی کے آلے کو، جو اس ملک کے ماہی گیروں کا مخصوص آلہ ہے، سوراخ کے اندر اُتار دیتے ہیں اور اسی سوراخ سے مچھلیوں کو لوہے کے پنجے میں پھنسا کر پانی سے باہر نکال دیتے ہیں۔ اس نمبل کی گہرائی میں بہت چشمے موجود ہیں۔ ان کا پانی سندلار کے دریا کے ساتھ مل کر شاردا پور سے دریائے بہت میں شامل ہو جاتا ہے۔

## مال گام نمبل

صفا پور کے شمال کی جانب میں ایک وسیع اور کشادہ نمبل ہے۔ اس کے کچھ حصے قابل کاشت ہیں اور اس کے بیچ میں لوخ زار اور نے زار ہیں۔ پرندوں کا خاصا شکار کیا جاتا ہے۔ اجس کے نالے سے اس کا پانی جھیل ولر میں مل جاتا ہے۔

## در نمبل

سوپور سے جنوب کی طرف ایک وسیع نمبل ہے، جو گرمیوں کے موسم میں پر آب اور جاڑے میں خشک ہوتی ہے۔ اس میں سنگاڑے پیدا ہوتے ہیں۔ اس کا پانی دریائے بہت میں مل جاتا ہے۔

## نمبل کانسپور

یہ کروہن پرگنہ کے دلنہ گاؤں کے قریب نمبل ہے، جو ہمیشہ لوخ کی گھاس سے ڈھکی رہتی ہے اوراس کے کنارے اکثر آباد ہیں۔ گورس بونی کے پاس اس کا پانی بہت میں شامل ہو جاتا ہے۔

## پت گام پور نمبل

سایرالمواضع بالا پرگنہ میں واقع ہے۔ کاکاپور سے ذرا اُوپر۔ ایک فراخ نمبل ہے۔ جو گھاس سے ڈھکی رہتی ہے۔ کچھ حصے اس کے قابل زراعت ہیں۔ اس کا پانی بہت کے ساتھ مل جاتا ہے۔

## بالاہامہ نمبل

یا کونہ بل۔ پانپور سے مشرق کی جانب واقع ہے۔ گھاس سے ڈھکی ہوئی۔ اس کا پانی دریای بہت میں چلا جاتا ہے۔

## ایٹھ کھرو نمبل

لار پرگنہ میں چھندنہ گاؤں کے متصل سند کی راہ سے اس کا پانی دریای بہت میں شامل ہو جاتا ہے۔

## مرہامہ نمبل

دچھن پارہ پرگنہ میں مرہامہ گاؤں کے نزدیک۔ اس کا پانی دریائے بہت کے ساتھ مل جاتا ہے۔

## کشمیر کی پیداوار

ملک کشمیر کے پہلے زمانے کے لوگوں نے، جو اولین عہد میں ہندو تھے، ایسی کتابیں ترتیب نہیں دی ہیں جو اشیاء کی خصوصیات اور ناموں کی شرح و تفصیل بیان کرتیں۔ یا اگر اتفاق سے ترتیب دی بھی ہوں تو حوادث روزگار کی وجہ سے باقی نہیں رہی ہیں۔ اس لئے کشمیر کے لوگ اس سرزمین کی نباتات کی خاصیتوں سے جو حد سے زیادہ ہیں، لاعلم رہے اور دوسرے ممالک کے اطباء و حکماء کی کتابوں کے توسط سے ہی اس جگہ کی مشہور اُگنے والی چیزوں کی خاصیتوں سے خبردار ہو گئے اور ان کو علاج و معالجہ اور تجارت میں استعمال کیا۔ اور جن اشیاء کی کیفیتوں سے لاعلم رہے ان کی طرف کوئی توجہ نہیں کی۔

راقم الحروف یہاں پر اس ملک میں موجود بعض ان چیزوں کا اختصار کے ساتھ ذکر کرے گا جن کی خاصیتوں کا بیان طبی کتابوں میں آیا ہے۔

## کشمیر کی ادویات

| نمبر شمار | دوا | فارسی یا ہندی میں | کشمیری میں | طبیعت | کیفیت |
|---|---|---|---|---|---|
| ۱ | ابوخلسا | رتن جوت (ہندی) (۳۲۰) | کوڑ | گرم و خشک بدرجہ (۳۲۱) | بعض محققین اسے یل سمجھتے ہیں |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۲ | اطریلال | کاک چکنی (ہندی) | کاوہ کھور | گرم وخشک بدرجہ ۳ر | بعض محققین کے خیال میں اسم با مسمیٰ ہے |
| ۳ | احریص | کوسم (ہندی) | کوسم پوش | گرم وخشک (۳۲۲) درجہ ۲ر | |
| ۴ | اساروں (۳۲۳) | تکر (ہندی) (۳۲۴) | موست | گرم وخشک (۳۲۵) درجہ ۳ر | |
| ۵ | اسطوخدوس (۳۲۶) | دہار (ہندی) (۳۲۷) | کل وٹو | گرم وخشک درجہ ۲ر | اسکی کیفیت طبی لغات کے مطابق نہیں ہے۔ شاید اسم سے مسمیٰ ہے |
| ۶ | اسقوردیون (۳۲۸) | موسیر (فارسی) | وَن رَوڈھَن | گرم وخشک (۳۲۹) | |
| ۷ | اُسلنج (۳۳۰) | | دپھ ٹانگل (۳۳۱) | گرم وخشک | |
| ۸ | اسل (۳۳۲) | | پیزھ | | اس سے چٹائیاں بناتے ہیں (۳۳۳) |
| ۹ | کندش (۳۳۴) | بیخ گاذران (فارسی) | ساور | گرم وخشک | اسکی کیفیت کتاب سے نہیں ہے۔ شاید کوئی اور چیز ہو (۳۳۵) |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۱۰ | افتیمون | امل بیل (ہندی) | کوگلہِ پوٹ | | اسکی جڑ کو کسی نے نہیں دیکھا (۳۳۶) |
| ۱۱ | افتنین | شتارو (ہندی) (۳۳۷) | | گرم وخشک (۳۳۸) | |
| ۱۲ | افیون | افیم (ہندی) | تریاک | سرد وخشک (۳۳۹) | |
| ۱۳ | اقحوان | بابونۂ گاؤ چشم (فارسی) | یکہ ٹبٹھ وِبن | گرم وخشک (۳۴۰) | |
| ۱۴ | انجبار | | مانزُ رَن | سرد وخشک (۳۴۱) | |
| ۱۵ | انجرہ (۳۴۲) | ٹنگن (ہندی) | سویے | اول سوم؟ گرم وخشک | |
| ۱۶ | ایرسا | بیخ بنفشہ (فارسی) | سوسن منڈ | در آخر دو، گرم وخشک | سوسن کی ایک قسم جس کے پتے نازک ہوتے ہیں (۳۴۳) |
| ۱۷ | بابونج | بابونہ (فارسی) | | در دوم گرم و خشک (۳۴۴) | |
| ۱۸ | بصل | پیاز (فارسی) | پران | در سوم گرم و خشک (۳۴۵) | |
| ۱۹ | بادرنجبویہ | | گند سَوے | گرم وخشک بدرجہ اوسط (۳۴۶) | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۲۰ | بادنجان بری | (۳۴۷) | وَن واَنگن | درسوم گرم وخشک | اس کی کیفیت طبی لغات کے مطابق نہیں پائی جاتی ہے (۳۴۸) |
| ۲۱ | پرسیاوشان | کالی چھانپ (ہندی) (۳۴۹) | رِگیوّ وتھیر | معتدل بہ گرمی خشکی | |
| ۲۲ | بزرالنج | بھنگ | بنگِ بَیّول | | |
| ۲۳ | برنجاسف | بوی ماوران (فارسی) | تَگ۔ بعض مونگا لو کہتے ہیں | (۳۵۰) | قیصوم کی مادہ کی قسم ہے |
| ۲۴ | بستان افروز | تاج خروس (۳۵۱) | مول | سرد وخشک۔ قابض اور روادع (۳۵۲) | |
| ۲۵ | بصل الفی | | وَن پراَن | بہت گرم (۳۵۳) | |
| ۲۶ | بندال | | اِلچ | | (۳۵۴) |
| ۲۷ | بنفسنج | | مہند | اول میں سرد، دوم میں تر (۳۵۵) | (۳۵۶) |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۲۸ | بیش | | مہند | چہارم میں گرم و خشک (۳۵۷) | مہند کشمیری پانچویں قسم بہت ملتی ہے |
| ۲۹ | بنج | بجر بنگ (ہندی) | بازر بنگ | سرد و خشک | |
| ۳۰ | بھنگرہ | بھنگرہ (ہندی) | | | یہاں تیسری قسم ملتی ہے۔ ضیعف العمل ہے (۳۵۸) |
| ۳۱ | تشمیزج | چاکسو (فارسی) (۳۵۹) | اندر تاچ | گرم و خشک دوم | |
| ۳۲ | تنباکو | تماکو (ہندی) | تموک | گرم و خشک، سوم | بر یہ واری (۳۶۰) میں طاقتور ملتا ہے |
| ۳۳ | | | پتر | گرم و خشک | ہندو پوجا میں کام میں لاتے ہیں ہمیشہ سبز رہتی ہے |
| ۳۴ | | اشطابری (ہندی) | رنگ راچ | | لوگ اسکی جڑ کو اُبال کر چائے کی جگہ پیتے ہیں۔ ہوا کو دُور کرتی ہے۔ ابو خلسا کی ایک قسم ہے۔ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۳۵ | جنجاث | | ہاپت داٰن لدر | (۳۶۱) | |
| ۳۶ | سعد | موتھ (ہندی) | بھٹہ موست | دوام کے آخر (۳۶۲) میں گرم اور خشک | |
| ۳۷ | جنطیانا | پکھان بید | ردیل | اول سوم میں گرم اور خشک | |
| ۳۸ | جوز ماثل | دھتورہ | دُتُر | اول چہارم (۳۶۳) میں سرد اور خشک | |
| ۳۹ | حب النیل | زرکے (ہندی) | تخم عشق پیچان | سوم میں گرم و خشک (۳۶۴) | |
| ۴۰ | | | نیلہ کھرن | | |
| ۴۱ | حرمل | سپند | اسبند | گرم وخشک (۳۶۵) | |
| ۴۲ | حزار المصحر | گل سنگ (فارسی) | پَل مائنز | سرد وخشک | (۳۶۶) |
| ۴۳ | خسک | گوکھر (ہندی) | ہڑری گنڈی | گرم وخشک بدرجہ اول | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۴۴ | حصرم | غورہ (فارسی) | غورہ | سرد وخشک (۳۶۷) | |
| ۴۵ | حلتیت | ہنگ (۳۶۸) (ہندی) | ینگہ | گرم وخشک | |
| ۴۶ | حلفا | پیزر (۳۶۹) (ہندی) | بُد | گرم وخشک اول میں | چٹائیاں بنتے ہیں |
| ۴۷ | خبہ | خاکشی (فارسی) | ژرلِژھجہ بیُول | اول دوم گرم (۳۷۰) | |
| ۴۸ | خربق اسود (۳۷۱) | گنگی (ہندی) | مارنیر | آخر سوم گرم و خشک | |
| ۴۹ | خربق ابیض | | زَوُ نیر | وسط سوم میں گرم وخشک | |
| ۵۰ | خرقطان | | اَلچ کی ایک قسم | سرد وکشک (۳۷۲) | درخت کے تنے پر ہوتا ہے |
| ۵۱ | خروع | بیدانجیر (فارسی) | ارینٹھ | آخر دوم گرم و خشک | |
| ۵۲ | خشخاش | خشخاش | خشخاش | سرد وخشک درجہ دوم میں | خشکی کا ایک قسم۔ بستانی ایک قسم |
| ۵۳ | خطمی | خطمی (فارسی) | سَز پوش | سرد وتر درجہ دوّم میں | |
| ۵۴ | شیح | دُرمنہ | مرن | گرم وخشک درجہ سوم میں | گوریز پرگنہ میں بہت اُگتا ہے |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۵۵ | شقاقل | (۳۷۳) | ژرِکانگل | گرم وتر (۳۷۴) | |
| ۵۶ | وبق | (۳۷۵) | آولن | آخر دوم میں گرم وخشک | |
| ۵۷ | ڈُوب (۳۷۶) | | درمن | سردی مایل | |
| ۵۸ | دوقس | | ہاپت زِیور | گرم وخشک درجہ سوم میں | |
| ۵۹ | رایتانج (۳۷۷) | گندھ بہروزہ (ہندی) | رُب کلم | آخر سوم میں گرم خشک | |
| ۶۰ | راوند (۳۷۸) | | پُنبہ ژالَن | اول دوم میں گرم وخشک | اسکے پتے ربیاس کہلاتے ہیں اور کشمیری میں پمہ ہاک کہتے ہیں |
| ۶۱ | سورنجان (۳۷۹) | بربری (ہندی) | یورکم موٗنڈ | گرم وخشک | |
| ۶۲ | شاھترج | پت پاپرہ (۳۸۰) (ہندی) | شہتر | درجہ دوم میں گرم وخشک (۳۸۱) | قوی مرکب |
| ۶۳ | شِبت | سویہ (ہندی) | سَویے | درجہ دوم میں گرم وخشک (۳۸۲) | اس کا تخم دالان خورد کہلاتا ہے |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۶۴ | شجرۂ ابی مالک | | بَبہ گز بس | آخر دوم میں گرم و خشک | اسے لباس دھوتے ہیں۔ اسکی کیفیت کتاب کے مطابق نہیں۔ |
| ۶۵ | شوکران (۳۸۳) | | مور کچھ | چہارم اور سوم میں خشک | |
| ۶۶ | شونیز | کلونجی | سیاہ دانہ | سوم میں گرم و خشک | |
| ۶۷ | شَبرم | گاؤں کشک (فارسی) | دُرہامہ | آخر دوم میں گرم و خشک (۳۸۴) | |
| ۶۸ | طحلب | سِوال (۳۸۵) | منگادِھل | درجہ دوم میں سرد و تر | |
| ۶۹ | عاقر قرحا (۳۸۶) | آکر کرا (ہندی) | عاقر قرہ | آخر سوم میں گرم و خشک | اس کا شجر طرخون کہلاتا ہے اور گل مرغ میں پایا جاتا ہے |
| ۷۰ | عسل النحل | شہد (فارسی) | مانچھ | درجہ دوم میں گرم (۳۸۷) و خشک | |
| ۷۱ | قطران (۳۸۸) | زفت (فارسی) | کِلَم | کِلَم | آخر سوم میں گرم و خشک |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۷۲ | فُوہ | مجیٹھ (ہندی) | مزیٹ | سوم درجہ گرم و خشک | فقط پانپور اور نا گام کے ٹیلوں پر اسکی کاشت ہوتی ہے |
| ۷۳ | قرطم | تخم مُعصفر | کوسم بیُول | درجہ دوم میں گرم وخشک (۳۸۹) | |
| ۷۴ | قسط | کوشنہ (فارسی) | گوٹھ | سوم درجہ میں گرم وخشک | |
| ۷۵ | قصب | نے (فارسی) | نَر | سرد وخشک | |
| ۷۶ | قصب الذریرہ (۳۹۰) | چراہتہ (ہندی) | چرایت | آخر دوم میں گرم وخشک | |
| ۷۷ | قراسیون | | ترُوپر | آخر دوم میں گرم وخشک | |
| ۷۸ | قطن (۳۹۱) | بنولہ (ہندی) | ٹوٗ | سرد وخشک دوم درجہ میں | |
| ۷۹ | قنب (۳۹۲) | بھنگ (ہندی) | بنگہ | سرد وخشک | |
| ۸۰ | قیصوم | (۳۹۳) | پھل گاسہ | سوم میں گرم و خشک | |
| ۸۱ | کالاکوٹ (۳۹۴) | شب افروز (فارسی) | تیلہ وانن | اُونچے پہاڑوں پر ہوتا ہے | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۸۲ | کچنار | کچنار (ہندی) | کچنال | دوم درجہ میں سرد وخشک | دچھنہ اور کھاورہ کے پہاڑوں میں ہوتا ہے |
| ۸۳ | کرفس | (۳۹۵) | پکھ زیر | اول دوم درجہ میں گرم وخشک | |
| ۸۴ | کشوت | | کوکلہِ پوٹ کی دوسری قسم | اول درجہ میں گرم وخشک | |
| ۸۵ | لاغیہ | | کاچن | آخر درجہ سوم میں گرم وخشک | |
| ۸۶ | لبلاب | | عشق پیچان | درجہ دوم میں سرد وخشک | |
| ۸۷ | لسان الثور | سنگا ہولی (ہندی) | کاہ زبان | درجہ دوم میں گرم وتر | گیلانی گاؤزبان کے ساتھ اسکی کوئی مشابہت نہیں۔ بعض محقق اسے اسم بے مسمّٰی جانتے ہیں |
| ۸۸ | لسان الحمل | بارتنگ (فارسی) | گُلہ | درجہ دوم میں سرد وخشک | |
| ۸۹ | ماذریون | | | | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۹۰ | مامیران | ممیری (ہندی) | مامیران | گرم وخشک | لار کے ٹھنڈے علاقے میں اُگتا ہے۔ ضعیف العمل ہے |
| ۹۱ | موصلے | موسلی | لڈرمُول | درجہ دوم میں گرم وخشک | دچھنہ کے پہاڑ پر پایا جاتا ہے |
| ۹۲ | نان خواہ (۳۹۶) | جوین | جاوند | اول درجہ میں گرم وخشک | |
| ۹۳ | نیلوفر | نیلوفر | بُنبہ پوش | دوم درجہ میں سر دوتر | |
| ۹۴ | وج | بجہ (ہندی)(۳۹۷) | وی | دوم درجہ میں گرم وخشک | |
| ۹۵ | ہرپی (۳۹۸) | ہرلی | ہرب | درجہ سوم میں گرم وخشک | |

# کشمیر کی سبزیاں (الف)

| نمبر شمار | سبزی کے یونانی نام | ہندی یا فارسی نام | کشمیری نام | طبیعت | مقدار | کیفیت |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ۱ | اسفاناخ | پالک (ہندی) | پالک | سرد اور تر | بدرجہ دوم (۴۰۲) | |
| ۲ | اطریفلین | ...... | ژکل | ,, | ,, | |
| ۳ | بقلۂ یمانی | چولائی (ہندی) | لِسہ | ,, | ,, | |
| ۴ | بقلۂ حامفہ | ساگ چوک (۴۰۳) (ہندی) | ژکہ لڈر | سرد و خشک | بدرجہ اوّل (۴۰۴) | |
| ۵ | بقلتہ الحمقا | (۴۰۵) | ٹُر | سرد و تر | بدرجہ سوم | |
| ۶ | حُلبہ | میتھی (ہندی) | مِیتھی | گرم اور خشک | بدرجہ سوم | |
| ۷ | خَرشف (۴۰۶) | کنکر | گَرژھ | گرم اور خشک | درجہ اوّل | |
| ۸ | حمّاض | چوکا (ہندی) (۴۰۷) | اوُنج | سرد و خشک | ,, | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ۹ | خُبازی | سُونچل (ہندی) | سوُرُل | سردوتر | (۴۰۸) | |
| ۱۰ | خس | کاھو | کاھو | ,, | | |
| ۱۱ | خندریلی | | پوشہ ھند | سردوخشک | بدرجہ دوّم | |
| ۱۲ | سِلق | چقندر (ہندی و فارسی) | چغندر | معتدل | مرکب القوی (۴۰۹) | |
| ۱۳ | فطر (۴۱۰) | گچّو (ہندی) | کنہ گچ | سردوتر | درجہ دوّم | |
| ۱۴ | قطف | بھوا (ہندی) | دوستہ ہا کھ | ,, (۴۱۱) | ,, | |
| ۱۵ | قنابری (۴۱۲) | موشِ دندان (فارسی) | ووپل ہاکھ | گرم دراوّل | خشک دردوم | پہاڑوں میں خودرَو |
| ۱۶ | قنبیط (۴۱۳) | گوبھی (ہندی) | گوپی ہاکھ | گرم وخشک | دراوّل | |
| ۱۷ | کراث (۴۱۴) | گندنا | رُوھن ہاکھ | خشک درسوم | گرم درسوم | بری اور بستانی ہوتی ہے |
| ۱۸ | کرنب (۴۱۵) | کلم (ہندی) | کرم ہاکھ | دراوّل گرم | دردوّم خشک | یہاں کے لوگ سال بھر کھاتے ہیں۔ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ۱۹ | کمات (۴۱۶) | کھینی (ہندی) | ھندھ | سرد اور تر | در دوّم | بعض نہیں کھائی جاتی۔ |
| ۲۰ | ہندبا (۴۱۷) | کاسنی (فارسی) | وارِھند | ,, | ,, | |
| ۲۱ | ہندبای برسی | کاسنی دشتی (فارسی) | سازھند | سرد (۴۱۸) وخشک | بدرجۂ دوم | |
| ۲۲ | | ولہ کٹ (ہندی) | دودہاکھ | ,, | ,, | |
| ۲۳ | | | پمہ ہاکھ | | | |
| ۲۴ | | | ڈیڈ | | | |
| ۲۵ | | | ڈھ کرم | | | |
| ۲۶ | | | داندہاکھ | | | |
| ۲۷ | | | ژرہاکھ | | | |
| ۲۸ | | | بزن ہاکھ | | | |
| ۲۹ | | | چھترہاکھ | | | |
| ۳۰ | | | چونچیر | | | |

# کشمیر کے گرم مصالحہ جات

| نمبر شمار | یونانی۔عربی نام | فارسی۔ ہندی نام | کشمیری نام | طبیعت | مقدار درجہ | کیفیت |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ۱ | زعفران | کیسر (ہندی) | کونگ | درددوّم گرم | دراوّل خشک | بے نہایت خوشبو والا تحفے کے طور اطراف میں جاتا ہے۔ |
| ۲ | کمون | زیرہ (ہندی) | زِیورُ | گرم و خشک (۴۱۹) | درسوم | |
| ۳ | کزبرہ (۴۲۰) | دھنیا (ہندی) | دانہِ وَّل | سردوخشک | درددوّم | |
| ۴ | بصل | پیاز | پران | گرم و خشک | درسوم | اس کی دوسری قسم کو گنڈ پران کہتے ہیں۔ |
| ۵ | اسقیل | (۴۲۱) | آربزن | " | " | |
| ۶ | فلفل السودان (۴۲۲) | لال مرچ (ہندی) | مرژواگن | " | " | کیفیت کتاب کے مطابق نہیں رکھتا ہے۔ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ۷ | فلفل الماء | | کریر | " | دردوم | سالن میں استعمال ہوتا ہے (۴۲۳) |
| ۸ | سعتر | ساتر (ہندی) | آوند | " | " | (۴۲۴) کیفیت اس کی کتاب کے مطابق نہیں ۔شاید اسم بے مسمی ہو۔ |

# کشمیر کے ریاحین

| نمبر شمار | یونانی۔عربی نام | فارسی یا ہندی نام | کشمیری نام | طبیعت | مقدار درجہ |
|---|---|---|---|---|---|
| ۱ | بادروج | تلسی جنگلی (ہندی) | وَن یَر | گرم و خشک | دردوّم |
| ۲ | ریحان | تدبو | یَر | " | دراول |
| ۳ | شاہسفرم (۴۲۵) | تلسی (ہندی) | تلسی | " | " |
| ۴ | فرنج مشک | رام تلسی (ہندی) | وِبہ | " | درسوم |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۵ | حاشا | | وَن پُدنہ | گرم وخشک | دردوّم |
| ٦ | فودنج (۴۲٦) | پودینہ نہری (فارسی) | پُدنہ | ،، | ،، |
| ۷ | نعناع | پودینہ باغی (فارسی) | پُدنہ | ،، (۴۲۷) | ،، |
| ۸ | سیسنبر | | وِبنہ کی دوسری قسم | ،، | درسوم |

# کشمیر کے کدوُ اور مولیاں

| نمبر شمار | یونانی نام | فارسی یا ہندی نام | کشمیرنام | طبعیت | مقدار درجہ | کیفیت |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ۱ | بادنجان | | وانگُن | گرم و خشک | | |
| ۲ | بادنجانِ روّمی | | رُوّوانگُن | | | باغوں، بوستانوں میں خود بہ خود اُگتا ہے۔ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ۲ | قرع خراسانی | | اَل | سرد و تر | | |
| ۴ | قرع کشمیری | | کاٴشراَل | ,, | | |
| ۵ | قرع فرنگی | | فرہنگی اَل | ,, | | |
| ۶ | قرعِ مشہدی | | مشاٴ دِی اَل | ,, | | |
| ۷ | قرعِ کِدمیہ | | کوبلیٔ اَل | ,, | | |
| ۸ | قثاء الحمار | | کریلہ (۴۲۸) | گرم و خشک | | |
| ۹ | طریلا | | طریلہ | ,, | | |
| ۱۰ | خیار وقثاء (۴۲۹) | | لأر | سرد و تر | | |
| ۱۱ | بطیخ (یعنی خربزہ) | خربوزہ (فارسی) | خَربُز | گرم و تر | | |
| ۱۲ | بطیخ ہندی | | ہیندوند | سرد و تر | | |
| ۱۳ | شلغم | | گوگجی | گرم و تر | | |
| ۱۴ | فجل | | مُج | ,, | | |
| ۱۵ | جزر | | گازر | ,, | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ۱۶ | شوندر | فرھنگی ہاکھ | | | | ،، |
| ۱۷ | آلوی فرنگی | | آلو (اَلو) | ،، | | |

# کشمیر کے پھول

| نمبر شمار | یونانی نام | کشمیری نام | طبیعت |
|---|---|---|---|
| ۱ | وَردِ احمر | گولاب | سرد وخشک |
| ۲ | وَردِ احمرِ برگی | رنگہ وَل | سرد وخشک |
| ۳ | وردِ ابیض | مَس وَل | ،، |
| ۴ | وَردِ اصغر | زرد وَل | ،، |
| ۵ | نسرین | آروَل | گرم وخشک |
| ۶ | یاسمین | ھِی آسمانی | گرم خشک |
| ۷ | ظیان | ہِی | ،، |
| ۸ | نازبُو | خیری | ،، |
| ۹ | شقایق | گُلالہ | ،، |
| ۱۰ | جعفری | جافر | ،، |
| ۱۱ | عباسی | ابآسی | ،، |
| ۱۲ | احریص | کوسم پوش | ،، (۴۳۰) |
| ۱۳ | خطمی (کئی قسم کے) | سَز پوش | سرد وتر |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ۱۴ | گُلِ داؤد | گُلِ داؤد | گرم وخشک |
| ۱۵ | گل مہندی | مائزِ پوش | گرم وتر |
| ۱۶ | کلہار | پمپوش | سرد وتر |
| ۱۷ | سنُبلِ فارسی | سوُنُبل | |
| ۱۸ | ابرون | ہمیشہ بہار (کئی قسم کا) | گرم وخشک |
| ۱۹ | نرجس | پمبرزَل | گرم وخشک |
| ۲۰ | ارغوان | ارغوان | اعتدال کے ساتھ گرم |
| ۲۱ | سوسن | سوسن | گرم وخشک |
| ۲۲ | سوسنِ آزاد | زنبق | گرم وخشک |
| ۲۳ | بلاطینی | پرانک | " |
| ۲۴ | آذریون | گُلِ آفتاب | " |
| ۲۵ | | گل آفتاب | " |
| ۲۶ | | خطاٰی (کئی قسم کا) | " |
| ۲۷ | | شب بو | |
| ۲۸ | زن دُور | | |
| ۲۹ | | گلِ اشرفی | |
| ۳۰ | | شب تاب | |
| ۳۱ | | گل عنبرین | |
| ۳۲ | | گلِ فرنگ | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | نسترن | | ۳۳ |
| | مرجان | | ۳۴ |
| | نافرمان | | ۳۵ |
| | گلِ یارقند | | ۳۶ |
| | سَونہری | | ۳۷ |
| | الیگزنڈر | | ۳۸ |
| | مجملی | | ۳۹ |
| | نیلہ کنٹ | | ۴۰ |
| | لجالو | | ۴۱ |
| | اَچھ پوش | | ۴۲ |
| | گلِچین | | ۴۳ |
| | لالہ ہزارہ | | ۴۴ |
| | گلاب انگریزی | | ۴۵ |
| | سدا گلاب | | ۴۶ |
| | | گل رعنا | ۴۷ |
| | | وربینا | ۴۸ |
| | | پیٹونیا | ۴۹ |
| | | لڈر | ۵۰ |

# کشمیر کے پہاڑوں کے بے پھل درخت

| نمبر شمار | یونانی | کشمیری | طبیعت |
|---|---|---|---|
| ۱ | ابہل | رِی | لایق تعمیر |
| ۲ | عرعر | پوسٹل | قابل تعمیر |
| ۳ | سرو | سرو | ...... |
| ۴ | دیودار | دِودَور | لایق تعمیر |
| 5 | بقس (یعنی شمشاد) | وَٹل | لایق تعمیر |
| ۶ | صنوبر | | آٹھ اقسام |
| ۷ | کچھل | یار | سنگل |
| 8 | پتون | بُدن | رائِھل |
| ۹ | | لشہِ یاَر | اُونچے درخت ہمیشہ پُر بہار ہوتے ہیں۔ |
| ۱۰ | خَور | برزُج | اس کی کھال بھوج تپر کی ہوتی ہے۔ |
| ۱۱ | | مویل | اس کا میوہ بے مزہ ہوتا ہے۔ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ۱۲ | | ہان | حیوان اس کا پھل کھاتے ہیں۔ |
| ۱۳ | | براری | چران |
| ۱۴ | شیطان | اَرکھور | |
| ۱۵ | | املوک | |
| ۱۶ | | کنزل | |

## کشمیر کے چمن زاروں کے بے پھل درخت

| نمبر شمار | یونانی | کشمیری | فارسی |
|---|---|---|---|
| ۱ | خلاف | ویر | بید |
| ۲ | خلاف بلخی | (برڑی) بیدمشک | بیدمشک |
| ۳ | بیدمُولہ | گیرو | ربیس |
| ۴ | صفصاف | بِرُن | بیدسیاہ |
| ۵ | بیدمجنون | مُشکہ ویر | بیدمجنون |
| ۶ | دردار | پھرس | سفیدار |
| ۷ | دُلب | بُونی | چنار |
| ۸ | ...... | برمج | پشہ خانہ |

# کشمیر کے پھل

| نمبر شمار | یونانی | ہندی یا فارسی | کشمیری | طبیعت | کیفیت |
|---|---|---|---|---|---|
| ۱ | تفاح | سیب | اَنبری ژُونٹھ | گرم وتر | اطراف میں ہدیہ کے طور پر اور تجارت کیلئے لے جاتے ہیں۔ سیب کی قسمیں ۴۷ سے زیادہ ہیں۔ باغوں اور جنگلوں سے کھٹے، کڑوے، بے مزہ اور اور کھٹے میٹھے ہوتے ہیں۔ |
| ۲ | زعرور | (۴۳۱) | --- | سرد وخشک | |
| ۳ | کمثری | ناشپاتی | ناگ ٹنگ | درجہ دوم میں تر | تحفہ وتجارت کیلئے اطراف میں لے جاتے ہیں۔ |
| ۴ | کمثری حامض | | سربہ ٹنگ | سرد وخشک | |
| ۵ | کمثری بری | | نانچہ | سرد وخشک | میدانوں اور ٹیلوں پر بہت سی اقسام میں پائی جاتی ہیں۔ |
| ۶ | کمثری جبلی | | دہ ٹانچہ | سرد وخشک | پہاڑوں اور ٹیلوں پر بہت سی اقسام پائی جاتی ہیں۔ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۷ | خوخ | آڑو (ہندی) | ژُنُنن | سرد و تر دوسرے درجہ میں | |
| ۸ | شمش | زرد آلو | ژیر | '' | میٹھی گری کی خوبانی ہوتی ہے۔ اس کے بغیر کڑوی بھی ہوتی ہے۔ |
| ۹ | فرصاد | توت | ٹُل | گرم و تر | تین قسم کے پیوندی ہوتے ہیں، اسکے بغیر جنگلی بھی ہوتے ہیں۔ |
| ۱۰ | تُوتِ شامی | | شاہ ٹُل | سرد و تر | |
| ۱۱ | عنب | انگور (فارسی) | دچھہ | گرم و تر | اسکی ۱۹ر قسمیں گنی گئی ہیں۔ان میں سے اعلیٰ قسم کی کشمش، حسینی ،صاحبی، مسکہ، کرم گامی ہیں جن کو تحفہ کے طور پر اطراف میں لے جاتے ہیں۔ راجہ رنبیر سنگھ نے حال ہی میں ولایتی انگور لگوائی ہے۔ |
| ۱۲ | اُجاص | آلوچہ (فارسی) | اَر | سرد و تر | یہاں اسکی بہت قسمیں موجود ہیں۔ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۱۳ | شاہ لوچ | آلوچہ | آشہ آلوچ | سرد وتر | اُجاص کی ایک قسم ہے |
| ۱۴ | | | سبزہ | سرد وتر | |
| ۱۵ | | | گوردول | | |
| ۱۶ | قراصیا | آلوبالو (فارسی) | گلاس | گرم وتر درجہ دوم میں | اسکی تین قسمیں ہیں۔ شیرین ترش وشیرین اور ترش۔ |
| ۱۷ | آلوچہ سلطانی | آلوچہ (فارسی) | اُلچ | گرم وتر | بہت کھٹی ہوتی ہے۔ |
| ۱۸ | لوز | بادام (فارسی) | بادَم | سرد وخشک | مرکب القوی |
| ۱۹ | عناب | عناب (فارسی) | بُریئے | معتدل | یہاں اعلیٰ قسم کی نہیں ہوتی۔ |
| ۲۰ | تین | انجیر (فارسی) | انجیر | گرم وتر | اس کا درخت بڑھتا ہے اور پھل نہیں دیتا۔ |
| ۲۱ | فستق | پستہ (فارسی) | پستہ | گرم وخشک | بس کل ایک درخت ناوپورہ میں موجود ہے۔ |
| ۲۲ | بندق | فندق (فارسی) | وِرنی | گرم وخشک | |
| ۲۳ | میسن | ...... | رِنگہ | سرد وخشک | جنگلی عفص میوہ اور زعرور کی ایک قسم ہے۔ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۲۴ | جوز | اخروٹ (فارسی) | ڈُون | گرم وخشک | |
| ۲۵ | رُمان | انار (فارسی) | داَن | سردوتر اول درجہ میں | تین قسموں کا ہے میٹھا، کٹھا میٹھا اور تلخ۔ |
| ۲۶ | سفرجل | بِہی (فارسی) | بَم ژُونٹھ | سردوتر اول درجہ میں | دوقسموں کا ہے۔ میٹا اور کٹھا |
| ۲۷ | ...... | ...... | کل مانچ | سردوتر اول درجہ میں | کٹھا میٹا جنگلی میوہ ہے۔ طبی لغات میں ملانہیں۔ |
| ۲۸ | غُلیق | | چھانچ | اعتدال کے ساتھ سردو خشک | جنگلی دوقسموں کا ہوتا ہے۔ |
| ۲۹ | انبر بالیس | زرشک (فارسی) | کاوِدَچھ | سردوخشک | زرشک کی ایک قسم ہے جوزیادہ مقوی نہیں ہوتی ہے۔ |
| ۳۰ | کنار دشتی | | بارہ | سردوخشک | |
| ۳۱ | | | باری | سردوخشک | |
| ۳۲ | عبیرا | | گانہ | سردوخشک | جنگلی میوہ سے کھٹا میٹھا |

# کشمیر کے غلّہ جات

| نمبر شمار | یونانی | ہندی یا فارسی | کشمیری | طبیعت | کیفیت |
|---|---|---|---|---|---|
| ۱ | شلتوک | شالی | دانہ | معتدل اور مرکّب القوی درجہ اول میں گرم اور درجہ دوم میں خشک | اس ملک میں شالی بکثرت پیدا ہوتی ہے اس کی ۹۶؍ قسمیں گنی گئی ہیں جن میں ۵؍قسمیں افضل مانی گئی ہیں ۔پانزن سے کنور بن سے کاٹھ چھان، لار سے انزن، سالور سے گوڈ کر دھُن، تیل بل سے چغل جس کی چاول بے حد ملایم اور میٹھے ہوتے ہیں۔ |
| ۲ | حطہ | گیہوں | کنک | دوّم میں گرم وتر | زیادہ بڑھتا اور میٹھا نہیں ہوتا |
| ۳ | شعیر | جو (فارسی) | وُشکہ | درجہ دوم میں سرد وخشک | دو قسموں کی پیدا ہوتی ہے۔ |
| ۴ | خندروس | ذُرّہ (فارسی) | مکائیے | درجہ دوم میں خشک۔معتدل الحرارت ہے | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۵ | دخن | کنگنے (ہندی) | پنگہ | سرد وخشک | |
| ۶ | جاورس | چینا (ہندی) | شالُو | سرد وخشک | |
| ۷ | حماحم | سیول (ہندی) | گنگہار | سرد وخشک | بستان افروز کی ایک قسم ہے، اس کی کیفیت کتاب کے مطابق نہیں۔ |
| ۸ | حبّ القلت | سرجومک (ہندی) | کورتھ | گرم وخشک | |
| ۹ | باقلا | | بأ گلہ | درجہ دوم میں سرد و خشک | |
| ۱۰ | حمص | نخود (فارسی) | چَنہ | گرم وتر | |
| ۱۱ | سنگارہ (۴۳۲) | سنگاڑہ (ہندی) | گأر | گرم وتر | بانڈی پورہ، حاجن اور سوپور بلکہ پائین علاقے کے سارے لوگ اور غریب آبادی آش بنا کے کھاتے ہیں۔ |
| ۱۲ | شلیج | ...... | کڈو | گرم وتر | |
| ۱۳ | ...... | ...... | شوت | سرد وخشک | |
| ۱۴ | عدس | مُسور (ہندی) | مُسُر | | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۱۵ | کرسنہ | مٹر (ہندی) | کر | درجہ دوم میں گرم و خشک | |
| ۱۶ | لوبیا | لوبیا (ہندی) | رازمَہہ | گرم وتر درجہ دوم میں | اس کی چار قسمیں ہیں، سرخ سفیدا سے رازمہہ کہتے ہیں۔ دوسری خالدارا سے پیغمبری کہتے ہیں۔ تیسری خا کی رنگ کی اسے موٹھ کہتے ہیں ۔چوتھی سیاہ جسے وارِ مُٹھ کہتے ہیں۔ |
| ۱۷ | ماش | مونگ (ہندی) | مونگ | معتدل۔ خشکی مائل | دو قسموں کی ہے۔ مونگ اور دوسری ماش سیاہ |
| ۱۸ | ...... | ترنبہ (ہندی) | ترونبہ | ...... | طبی لغات میں پایا نہ گیا |

## کشمیر کے روغنی حبوبات

| نمبر شمار | یونانی | فارسی یا ہندی | کشمیری | طبیعت | کیفیت |
|---|---|---|---|---|---|
| ۱ | حرف باہلی | سرشف | تِلہ گوگُل | درجہ دوم میں گرم وتر | کتک ماہ میں اس کی کاشت ہوتی ہے۔ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ۲ | حرف ابیض | سرسُوں (ہندی) | سنزِر | درجہ سوم میں گرم وخشک | پوہ کے مہینے میں چھیتر مہینے تک کاشت ہوتی ہے۔ |
| ۳ | جرجیر | نرسر (ہندی) | تارتیر | " | |
| ۴ | حرف | ہالم (ہندی) | ہالِن | " | |
| ۵ | خردل | رائی (ہندی) | آسُر | " | |
| ۶ | حرف مشرقی | تارامیرا | تارزُو | " | |
| ۷ | سِمسم | گُنجد | تیل | گرم وتر | |
| ۸ | کتان | اَلسی | اَلِش | سردوخشک | |
| ۹ | تخم شلغم | | گوگجہِ بیُول | گرم وتر | |
| ۱۰ | تخم کرنب | | کرم بیُول | گرم وخشک | |
| ۱۱ | مغزِ جوز | | ڈوُنی گوجہِ | " | |
| ۱۲ | مغزِ زرد آلو | | ژیر کھاَلی | " | |

# کشمیر کے پرندے

| نمبر شمار | یونانی | کشمیری | کیفیت |
|---|---|---|---|
| ۱ | باز | پأز | |
| ۲ | باشق | باشہِ | |
| ۳ | ببغا | طوطہ | |
| ۴ | بلبل | کستور | |
| ۵ | چغد۔ بوم | راتہ منگل | |
| ۶ | حبارا | حداۃ | |
| ۷ | جرج | نیلہ کراش | |
| ۸ | حداۃ | گانٹھ | |
| ۹ | حمام۔ کبوتر | کوُتر | |
| ۱۰ | حواصل | دود براگ | |
| ۱۱ | خطاف | کتج | |
| ۱۲ | خفّاش | راتہ کریل | |
| ۱۴ | دجاج | کوُکر | |
| ۱۵ | دُرّاج | تیتر | |
| ۱۶ | ذمج | وارِیوُل | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ۱۷ | شجرزر | ہاگُر | |
| ۱۸ | مالک الحزین | بوتیمار | |
| ۱۹ | صفراغون | کولہ ٹونٹ | |
| ۲۰ | سودانی | کل ٹھوک | |
| ۲۱ | عصفُور | ژُر | |
| ۲۲ | عقاب | پٹہ ہار | |
| ۲۳ | عقار | برُگ | اس کے پروں سے کلغی بناتے ہیں |
| ۲۴ | غذاف | کاوِنی | |
| ۲۵ | غراب | دِوکاو | |
| ۲۶ | فاختہ | کُکِل | |
| ۲۷ | قمری | رِکمُیور | |
| ۲۸ | قنبیرہ | بجہ بُل | تین رنگوں کا ہوتا ہے |
| ۲۹ | نغر | جَل | |
| ۳۰ | نسر | گُرَد | |
| ۳۱ | زرزور | دِوَر | |
| ۳۲ | سایرہ | سہرہ | |
| ۳۳ | شارک | ہاَر | |
| ۳۴ | تذرو | سُونل | |
| ۳۵ | ہُدہُد | سَتہ وُت | |
| ۳۶ | ہزارداستان | گورمکھش | |

## کشمیر کے آبی پرندے

| نمبر شمار | یونانی | کشمیری | کیفیت |
|---|---|---|---|
| ۱ | اوز | ائنز | |
| ۲ | واق | کورپچھو | |
| ۳ | شقراق | ہارواتچ | |
| ۴ | زربق | گاڈکھاو | |
| ۵ | مُرغِ آبی | | غالباً جھیلوں میں پچاس قسم کی ہوتی ہیں۔ |
| ۶ | بط | بطکُ | |
| ۷ | ماہی | گاڑ | چھوٹی بڑی ۱۳۰ قسم کی ہیں۔ بڑی مچھلی آٹھ اقسام سے زیادہ نہیں۔ |

## کشمیر کے حیوانات

| نمبر شمار | یونانی | کشمیری | کیفیت |
|---|---|---|---|
| ۱ | اسد | سہہ | اس ملک میں پلنگ کی قسم موجود ہے |
| ۲ | دُب | ہاپت | |
| ۳ | ذئب | رامہ ھُون | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ۴ | کلب | ھُون | |
| ۵ | خنزیر | سَور | |
| ۶ | ثعلب | ھُون | |
| ۷ | کلب برسی | شال | |
| ۸ | ابن عرس | نُول | |
| ۹ | سنور | برور | |
| ۱۰ | قِرد | وَاندرُ | |
| ۱۱ | بُوزینہ | پونز | |
| ۱۲ | گوربہ شغال | پچھ | |
| ۱۳ | | لاش | گربہ شغال کی ایک قسم |
| ۱۴ | | سہہ برار | گربہ شغال کی ایک قسم |
| ۱۵ | شرزہ | گران | |
| ۱۶ | تبرغان | درن | |
| ۱۷ | یربوع | وژھ گگُر | |

## کشمیر کے کیڑے

| نمبر شمار | یونانی | کشمیر | کیفیت |
|---|---|---|---|
| ۱ | افعی | گُنس | اس کا ڈنک قاتل ہے |
| ۲ | تنین | اژدہا | بعض اُونچے پہاڑوں پر |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ۳ | جبہّ | سُرُف | اس کا ڈنک قاتل ہے |
| ۴ | عقرب | بچھو | زیادہ موذی نہیں |
| ۵ | اُرضہ | اُٹھر | |
| ۶ | برغوث | پِیُوش | |
| ۷ | فسافس | ژَر | |
| ۸ | قراد | ماگُن | |
| ۹ | خصا | گھی کیوم | |
| ۱۰ | جراد | ہالوؤ | |
| ۱۱ | حربا | ووٹہ کریل | |
| ۱۲ | نمل | ریے | |
| ۱۳ | موش | گگُر | |
| ۱۴ | خلد | اُنہ گگُر | |
| ۱۵ | خراطین | بُمہ سنی | |
| ۱۶ | حیاحب | زِتش | |
| ۱۷ | اربع اربعین | ہتہ زوُنگ | |
| ۱۸ | | پُہر | افعی کی ایک قسم |
| ۱۹ | | وہ ڈگر | |
| ۲۰ | | ترا اُمر | |
| ۲۱ | | بیرنُوج | |
| ۲۲ | | مُہر | |

## کشمیر کے کاٹنے والے کیڑے

| نمبر شمار | یونانی | کشمیری | کیفیت |
|---|---|---|---|
| ۱ | ذباب | مُچھ | |
| ۲ | زنبور | تُلر | |
| ۳ | ذراویح | (۴۳۳) | |
| ۴ | عنکبوت | زَلُر | |
| ۵ | نحل | مانچھ تلر | |
| ۶ | بق۔پشہ | مَوُہ | |
| ۷ | سگ مگس | ھُونی مچھ | |
| ۸ | پانکہ | دینچو | |

## کشمیر کے آبی کیڑے

| نمبر شمار | یونانی | کشمیری | کیفیت |
|---|---|---|---|
| ۱ | ضفدع | مِن | |
| ۲ | زلو | درک | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ۳ | خبرُدوک آبی | کولہ نائِید | |
| ۴ | حیّہ | کرالہ سرف | |
| ۵ | تمساح (۴۳۴) | وَودُر | |
| ۶ | ناقہِ | بِکریم | |
| ۷ | موش آبی | آبہ گُگر | |
| ۸ | | نندکاو | |
| ۹ | | منہِ گاڈ | |

# کشمیر کے جنگلی جانور

| نمبر شمار | یونانی | کشمیری | کیفیت |
|---|---|---|---|
| ۱ | غزال | رُوس | اس کا نافہ تھوڑا خوشبودار ہے |
| ۲ | ایل۔گوزن | ہانگل | |
| ۳ | ارنبِ برّی | خرگوش | رنبیر سنگھ نے پالا تھا |
| ۴ | ضب | کینکہ لٹ | دچھنہ پہاڑ پر پائی جاتی ہے |
| ۵ | مارخور | مارخور | حصورہ میں ہے |
| ۶ | ...... | رام | |
| ۷ | ...... | کیل | |

# کشمیر کے پالتو جانور

| نمبر شمار | یونانی | کشمیری | کیفیت |
|---|---|---|---|
| ۱ | جاموس | گاومائُش | |
| ۲ | جمل | وُونُٹ | رنبیر سنگھ نے پالا تھا |
| ۳ | بقر | گاو | |
| ۴ | ضان | تیِر | |
| ۵ | ماغر | ژھاوُل | یہاں اس کا گوشت اچھا نہیں ہوتا |
| ۶ | فرس | گُر | |
| ۷ | حمار | خَر | |

## کشمیر کے راستے

کشمیر کے ملک سے پہاڑوں کے دروں میں سے دوسری جگہوں اور دیگر ممالک کو بہت سے راستے جاتے ہیں جو دشوار گذار سنگلاخ راستے ہونے کی وجہ سے بہت سخت اور مشکل راستے ہیں۔

شیخ ابوالفضل نے کشمیر کے راستوں کی تعداد ۲۶ر لکھی (۴۳۵) ہے۔ وہ بعض دوسرے پہاڑوں کی راہوں سے، جہاں لوگ نہیں رہتے، بے خبر تھا۔ ہم لوگوں کے حق میں مفید اور چند مشہور راستوں کی تفصیل بیان کریں گے۔

## مظفر آباد کا راستہ

یہ راستہ دچھنہ علاقہ میں سے دریا کے دائیں کنارے سے مظفر آباد تک اور وہاں سے ہزارہ، پکھلی، راولپنڈی اور پشاور کو جاتا ہے۔ چغتائیہ بادشاہوں کی طرف سے مرمت کئے جانے کی وجہ سے آسان ترین راستہ ہے جو سال بھر جاری رہتا ہے اور اس میں کوئی ٹیلہ اور پہاڑ بیچ میں نہیں آتا۔ ایک منزل تک برف باری ہوتی ہے جو کوئی رکاوٹ پیش نہیں کرتا۔ گھوڑوں وغیرہ کی بار برداری کا کام بغیر کسی دشواری کے عمل میں آتا رہتا ہے۔

| نمبر شمار | منازل | میل | جگہ کی اونچائی | کیفیت |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| ۱ | سرینگر | | ۵۲۰۰ (۴۳۶) | راہ ہموار۔ پل ہارہ ترٹ |
| ۲ | پٹن | ۱۷ | (۴۳۷) | پستی و بلندی |
| ۳ | بارہمولہ (۴۳۸) | ۱۴ | | دریا کے شمالی کنارے پر |
| ۴ | گنل (۴۳۹) | ۱۸ | (۴۴۰) | دریا کے کنارے پہاڑ کے دامن میں |
| ۵ | شاہدرہ | ۱۴ | (۴۴۱) | سنگلاخ۔ اونچی جگہ کارمست |
| ۶ | کھٹائیی | ۱۲ | (۴۴۲) | کچا قلعہ۔ چند دکانیں |
| ۷ | کھانڈا | ۱۲ | (۴۴۳) | دوپٹہ قلعہ۔ چند دکانیں |
| ۸ | ہٹیاں | ۱۱ | (۴۴۴) | پستی و بلندی |
| ۹ | مظفر آباد | ۱۷ | (۴۴۵) | ایک چھوٹا سا شہر ہے بلندی پر اور عبور کرشنہ گنگا کے پل پر سے |
| ۱۰ | گڑھی (۴۴۶) | ۱۹ | (۴۴۷) | سڑک پر |
| ۱۱ | مان سیر (۴۴۸) | ۱۹ | (۴۴۹) | یہاں سے دوسرا راستہ الگ ہو جاتا ہے |
| ۱۲ | ایبٹ آباد | ۱۳ | ۲۲۰۰ (۴۵۰) | ایک آباد قصبہ ہے |
| ۱۳ | مار گلے | ۱۴ | | پہاڑ پر چڑھنا ہے |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ۱۴ | ڈونگا گلی | ۸ | (۴۵۱) | (۴۵۲) |
| ۱۵ | گوڑا گلی | ۱۱ | | |
| ۱۶ | کوہ مری | ۹ | (۴۵۳) | (۴۵۴) |
| ۱۷ | راولپنڈی | ۴۰ | | |

کل میزان=۲۴۹ میل

# مان سیر سے راولپنڈی تک

دوسرا راستہ

| نمبر شمار | نام منازل | تعداد میل | جگہ کی اونچائی | کیفیت |
|---|---|---|---|---|
| ۱۱ | مان سیر | ۱۳ | | |
| ۱۲ | سلہڈ | ۱۴ | | |
| ۱۳ | ہری پور | | | |
| ۱۴ | خان پور | | | |
| ۱۵ | خیرہ گلی | | | |
| ۱۶ | راولپنڈی | | | |

# کوہ مری کا راستہ

کھاورہ کے راستے سے سرینگر سے کوہ مری تک کا راستہ تمام سال جاری رہتا ہے۔ بغیر کسی دشواری کے بار برداری ہوتی ہے۔ اس راستے سے شاہی سڑک کی تیاری ہو رہی ہے۔

| نمبر شمار | نام منازل | تعداد میل | جگہ کی اونچائی | کیفیت |
|---|---|---|---|---|
| ۱ | سرینگر | | | |
| ۲ | پٹن | ۱۷ | | |
| ۳ | بارہ مولہ | ۱۴ | | دریا کے بائیں کنارے چلنا پڑتا ہے |
| ۴ | رام پور | ۹ | (۴۵۵) | یہاں ایک قدیم مندر ہے |
| ۵ | اوڑی | ۱۴ | (۴۵۶) | کچا قلعہ اور کچھ دکانیں ہیں |
| ۶ | چکوٹھی | ۱۶ | (۴۵۷) | پہاڑ کے دامن میں دریا کے کنارے |
| ۷ | ہٹیاں | ۱۵ | | ,, |
| ۸ | گڑھی | ۱۵ | | ,, |
| ۹ | ٹنڈالی۔ تنالی | ۱۳ | | ,, |
| ۱۰ | راڑا | ۱۳ | | دریا جنوب کی طرف جاتا ہے |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ۱۱ | چھتر گیلاس | ۱۲ | | |
| ۱۲ | گھالن | ۹ | | یہاں ایک مضبوط پل کو پار کرنا ہے |
| ۱۳ | دیول | ۹ | | آہستہ آہستہ پہاڑ چڑھنا پڑتا ہے |
| ۱۴ | مری | ۱۲ | | مشہور ہے |
| ۱۵ | راولپنڈی | ۴۰ | | کل میزان = ۱۶۳/میل |

## تیسرا راستہ

## پونچھ سے جموں تک

یہ راستہ بارہمولہ کی راہ سے اوڑی تک (کوہ مری کے راستے کو شامل کر کے) جاتا ہے۔ یہاں سے جنوب کی طرف نکل کر پونچھ کو چلا جاتا ہے۔

| نمبر شمار | نام منازل | تعداد میل | جگہ کی اونچائی | کیفیت |
|---|---|---|---|---|
| ۱ | سرینگر سے اوڑی | ۵۴ | | جنوب کی طرف پہاڑ پر چڑھنا ہے |
| ۲ | حیدر آباد | ۱۰ | (۴۵۸) | برفانی پہاڑ |
| ۳ | علی آباد | ۷ | (۴۵۹) | " |
| ۴ | کہوٹہ | ۸ | (۴۶۰) | " |
| ۵ | پنوچھ | ۹ | (۴۶۱) | " |
| ۶ | سورن | ۱۴ | | پونچھ کا علاقہ |
| ۷ | تھنہ (۴۶۲) | ۱۶ | (۴۶۳) | پونچھ علاقہ کے متصل |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ۸ | راجوری | ۱۴ | ۳۹۴(۴۶۴) | (۴۶۵) |
| ۹ | سیال سوی | ۱۴ | (۴۶۶) | |
| ۱۰ | دھرم سالا | ۹ | (۴۶۷) | |
| ۱۱ | ٹھنڈا پانی | ۹ | (۴۶۸) | |
| ۱۲ | چوکی چور (۴۶۹)(الف) | ۱۳ | ۲۱۵۰(۴۶۹) (ب) | |
| ۱۳ | اکھنور (۴۷۰) | ۱۳ | ۱۱۴۲ | (۴۷۱) |
| ۱۴ | جموں | ۱۸ | ۱۲۰۰(۴۷۲) | کل میزان=۲۰۰/میل |

# چوتھا راستہ

## شوپیان کا راستہ

یہ راستہ پیر پنچال کی راہ سے گذرتا ہے۔ مغل بادشاہوں نے علی مردان خان (۴۷۳) کے اہتمام سے ہر منزل پر بڑی مضبوط سرائیں بنوائی تھیں۔ جاڑے میں ہمیشہ بند رہتا ہے۔

| نمبر شمار | نام منازل | تعداد میل | جگہ کی اونچائی | کیفیت |
|---|---|---|---|---|
| ۱ | سرینگر | | ۵۲۰۰ | ہموار راستہ |
| ۲ | خام پور | ۱۲ | (۴۷۴) | رامشی ندی اور رنبی آرہ کے پل |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ۳ | شوپیان | ۱۵ | ۱۵۷۶ (۴۷۵) | معروف قصبہ ہے |
| ۴ | ہیر پور | ۸ | (۴۷۶) | سوکھ سرای۔ لال غلام۔ پیر پنچال۔ بہرام گلہ |
| ۵ | علی آباد (۴۷۷) | ۱۲ | (۴۷۸) | پیر پنچال کی چوٹی سے سرائے کو عبور کرنا ہے |
| ۶ | پوشانہ | ۱۱ | (۴۷۹) | ندی کے کنارے پر |
| ۷ | بہرام گلہ | ۸ | (۴۸۰) | رتنہ پنجال |
| ۸ | تھنہ | ۱۰ ۱/۲ | | ہموار راستے پر |
| ۹ | راجوری | ۱۴ | | پرانا قصبہ ہے |
| ۱۰ | چنگس | ۱۴ | (۴۸۱) | پرانا قصبہ ہے |
| ۱۱ | نوشہرہ | ۱۳ | (۴۸۲) | کمان کے گوشے کی مانند قصبہ ہے |
| ۱۲ | سید آباد | ۱۲ ۱/۲ | (۴۸۳) | کاجی دارہ پہاڑ |
| ۱۳ | بھمبر | ۱۵ | (۴۸۴) | پرانا قصبہ ہے |
| ۱۴ | کوٹلہ | ۷ | (۴۸۵) | (۴۸۶) |
| ۱۵ | گجرات | ۱۴ | | کل میزان=۱۶۶/میل |

# پانچواں راستہ

## بانہال سے جموں تک

اس راستے سے گذر دشوار ہے۔ جاڑے میں زیادہ تر بند رہتا ہے۔ رنبیر سنگھ نے

اسے مناسب مرمت کے ساتھ ٹھیک کر کے بانہال کے ٹیلے پر ہواؤں کے گذرگاہ پر تیرہ برجوں سے آراستہ کیا اور جگہ جگہ چٹانوں کو ہٹا کر چندر باگا دریا پر ایک مضبوط پل تعمیر کرایا اور منزل بہ منزل مکان اور دکان بنوائے اور ضرورت کی چیزیں مہیا رکھیں۔ اب سارے سال مسافر اور تاجر لوگ اس راستے سے آتے جاتے ہیں۔ سخت برف و باران میں کل ایک دو روز تک بند رہتا ہے۔ رام بن پل پر آ کر اس راستے کے تین حصے ہو جاتے ہیں۔ پہلا ڈوڈی اور کشتواڑ جاتا ہے، دوسرا پل کو پار کر کے چنانی کی راہ سے اودھم پور پہنچ کر جموں جاتا ہے اور تیسرا الار پہاڑ اور لاڑ پہاڑ سے گذر کر جموں تک چلا جاتا ہے۔

| نمبر شمار | نام منازل | تعداد میل | جگہ کی اونچائی | کیفیت |
|---|---|---|---|---|
| ۱ | سرینگر | | ۵۲۳۵ (۴۸۷) | ہموار سطح پر |
| ۲ | پانپور | ۱۰ | ۵۳۵۰ (۴۸۸) | دریای بہت سے عبور |
| ۳ | بیج بہاڑہ | ۲۰ | ۵۶۰۰ (۴۸۹) | بہت اور اسلام آباد |
| ۴ | ویری ناگ | ۲۰ | ۶۰۰۰ (۴۹۰) | ٹیلے پر چڑھنا اور اترنا ہے |
| ۵ | دیوہ گول | ۱۵ | ۵۵۸۰ | پہاڑ کے درّہ کمر میں |
| ۶ | رام سُو | ۱۴ | ۴۰۷۰ (۴۹۱) | پہاڑ کے کمر میں |
| ۷ | رام بن | ۱۹ | ۳۵۳۵ (۴۹۲) | پل کو پار کرنا ہے |
| ۸ | چندر کوٹ | ۱۴ | ۴۰۰۰ | آہستہ آہستہ چڑھائی |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ۹ | بٹھوتی | ۱۵ | ۵۳۰۰(۴۹۳) | چڑھنا اور اترنا |
| ۱۰ | چھنانی | ۱۲ | ۴۰۵۰ | نہر کی راہ پر |
| ۱۱ | اودھم پور | ۲۰ | (۴۹۴) | کنڈبال سے چڑھنا ہے |
| ۱۲ | انشال | ۱۴ | ۴۰۱۸(۴۹۵) | وکجہ بال سے عبور |
| ۱۳ | جموں | ۱۷ | ۱۲۰۰(۴۹۶) | کل میزان=۹۰ میل |

# چھٹا راستہ

## لدّاخ کا راستہ

زوجہ بال کو عبور کرنے کی وجہ سے ایک دشوار گذار راستہ ہے۔ جاڑے میں بند رہتا ہے۔ کرگل کے مقام پر اس کی دوشاخیں ہو جاتی ہیں۔ پہلی اسکردو کی طرف نکل جاتی ہے اور دوسری لداخ کو۔ لداخ سے اطراف واکناف میں گیارہ راہیں جاتی ہیں، جن میں سے پانچ یارکند، ایک گرد، ایک اسکردو، ایک شملہ پہاڑ کی جانب اور ایک راہ کلو کے راستے سے ہندوستان میں اور دو راہیں کشتواڑ کو جاتی ہیں۔

| نمبر شمار | نام منازل | تعدد میل | جگہ کی اونچائی | کیفیت |
|---|---|---|---|---|
| ۱ | سرینگر | | ۵۲۳۵ | |
| ۲ | گاندربل | ۱۲ | ۵۲۳۰(۴۹۷) | وُسن پل سے عُبور |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ۳ | کنگن | ۱۲ | (۴۹۸) | سنبل پل اور وِگنہِ وَن سے عبُور |
| ۴ | گنڈ سیر سنگھ | ۱۴ | (۴۹۹) | کلن پل اور ازل پل سے عُبور |
| ۵ | گگنہ گیر | ۹ | | سنگاخ۔ میر بن پل سے عبُور |
| ۶ | سونہ مرگ | ۱۰ | ۸۶۵۰(۵۰۰) | سِند پل سے عبُور |
| ۷ | بال تل | ۱۰ | (۵۰۱) | زوجہ بال ٹیلے پر چڑھنا ہے |
| ۸ | مٹاین | ۱۶ | (۵۰۲) | ندی کے کنارے پر |
| ۹ | ٹس گام | ۱۵ | ۹۳۹۶ | پل سے عبور |
| ۱۰ | چھانہ گنڈ | ۱۸ | ۸۶۷۵ | ندی کے کنارے پر |
| ۱۱ | کرگل | ۶ | ۸۷۸۷(۵۰۳)) | پل سے عبور |
| ۱۲ | شرگول | ۲۰ | ۱۰۲۹۰ | چھ دفعہ دکہ دریا کو پار کرنا ہے |
| ۱۳ | کھرب | ۱۸ | ۱۱۸۹۰ | فتح اللہ پہاڑ کو عبور کرنا ہے |
| ۱۴ | لاموریر | ۱۶ | ۱۱۵۲۰(۵۰۴) | ون پورہ دریا کو چار بار پار کرنا ہے اور کھلچی دریا کو بھی عبُور کرنا ہے |
| ۱۵ | نوراللہ | ۱۸ | | دریا کھلچی کے ساحل پر |
| ۱۶ | سس فُل | ۱۷ | | دریا سے الگ ہو جاتا ہے |
| ۱۷ | نیمنہ | ۱۳ | | آہستہ آہستہ چڑھنا ہے |
| ۱۸ | لدّاخ | ۱۸ | ۱۱۵۰۰ | کل میزان = ۲۴۲ میل |

# یارقند کا راستہ

لداخ قلعہ سے یارقند کو پانچ راہیں نکلتی ہیں۔ایک لداخ سے قراقرم کے راستے سے یارقند تک ۳۵ر پڑاؤ ۵۱۵ر میل۔صرف تین چار ماہ تک کھلی رہتی ہے۔گیاہ پڑاؤں تک گھاس اور ہیزم کا ملنا بعیداز امکان ہے۔بار برادری کے لئے گھوڑے خوشی سے چلتے ہیں۔ دوسرا راستہ لداخ سے یارقند تک چنگ چمنو کی راہ سے ۴۵ر پڑاؤ ہے اور ۶۲۰ر میل دور۔ واپسی کے سفر میں فورساتھ صاحب اسی راستے سے آئے تھے۔تین چار پڑاؤ تک گھاس اور ہیزم معدوم ہے۔جاڑے میں بند رہتا ہے۔تیسرا راستہ لداخ سے قراقرم کی راہ سے ۳۶ر پڑاؤ ہے اور جاڑے میں بند رہتا ہے۔چوتھا راستہ چنگ چمنو کی راہ سے یارقند تک۔اسے مسٹر بورڈ صاحب نے کھولا ہے۔۳۶ر پڑاؤ کا راستہ ہے اور ۵۴۶ر میل فاصلہ۔پانچواں راستہ چنگ چمنو کی راہ سے یارقند تک مشرق کی جانب جاتا ہے ۴۳ر پڑاؤ کا ۶۲۸ر میل دور۔ان راستوں میں سے آسان راستہ جہاں سے لوگوں کی آمدورفت زیادہ رہتی ہے پہلے نمبر کا راستہ ہے۔اسکی تفصیل درج کی جاتی ہے۔

| نمبر شمار | نام منازل | تعداد میل | جگہ کی بلندی | کیفیت |
|---|---|---|---|---|
| ۱ | لداخ | | | |
| ۲ | مقام | ۱۲ | ۱۵۵۰۰ | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ۳ | کھردرنگ (۵۰۵) | ۱۵ | ۱۳۵۰۰ | |
| ۴ | کھرچو (۵۰۶) | ۱۲ | ۱۰۴۳۰(۵۰۷) | |
| ۵ | مگرو | ۱۳ | ۱۰۰۳۰ | |
| ۶ | پانی شکر | ۱۴ | | |
| ۷ | جونگ ٹونگ | ۱۳ | ۱۱۵۰۰ | |
| ۸ | ٹوٹپلک (۵۰۸) | ۱۳ | ۱۳۰۰۰ | |
| ۹ | سرحوض خوجہ | ۱۳ | ۱۵۵۰۰ | |
| ۱۰ | برنگ سنمبر | ۹ | ۱۵۴۰۰ | |
| ۱۱ | ٹلکہ مرکٹی | ۲۲ | ۱۵۱۰۰ | |
| ۱۲ | برجی | ۱۲ | ۱۶۰۰۰ | |
| ۱۳ | قزل انگور (۵۰۹) | ۱۱ | ۱۶۷۰۰(۵۱۰) | |
| ۱۴ | دولت پیسگلائی | ۱۸ | ۱۷۲۰۰ | |
| ۱۵ | برنگ سا (۵۱۱) | ۲۳ | ۱۶۵۰۰(۵۱۲) | |
| ۱۶ | وہاب جلکا | ۱۹ | ۱۶۰۰۰ | |
| ۱۷ | ملک شاہ (۵۱۳) | ۱۵ | ۱۵۳۰۰(۵۱۴) | |
| ۱۸ | چیرا | ۱۲ | ۱۶۴۸۰(۵۱۵) | |
| ۱۹ | سوگیت | ۱۸ | ۱۳۰۰۰(۵۱۶) | |
| ۲۰ | شہیداللہ | ۱۳ | ۱۱۵۰۰(۵۱۷) | |
| ۲۱ | یارقند | ۲۴۰ | شہیداللہ سے یارقند تک ۱۶/میل | کل میزان=۵۱۷/میل |

# لداخ کے راستے سے اسکردو تک

| نمبر شمار | نام منازل | تعداد میل | جگہ کی بلندی | کیفیت |
|---|---|---|---|---|
| ۱ | لداخ | ۱۵ | ۱۱۵۰۰ | |
| ۲ | نمو | ۱۸ | | |
| ۳ | تاروج | ۱۰ | | |
| ۴ | نمس گام | ۱۷ | | |
| ۵ | کھلسی (۵۱۸) | ۱۰ | | (۵۱۹) |
| ۶ | سکر بچن | ۱۶ | | |
| ۷ | کوٹا ھنو (۵۲۰) | ۱۷ | | |
| ۸ | مقام | ۱۰ | | |
| ۹ | پیون | ۲۱ | (۵۲۱) | |
| ۱۰ | داؤ | ۹ | | |
| ۱۱ | سرمود | ۱۰ | | |
| ۱۲ | کھپلو (۵۲۲) | ۷ | (۵۲۳) | |
| ۱۳ | کھرکونہ | ۸ | | |
| ۱۴ | گُرو | ۱۶ | | |
| ۱۵ | کرس | ۹ | | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ۱۶ | نرہ | ۱۴ | ۷۴۴۰ (۵۲۴) | |
| ۱۷ | اسکردو | ۱۷ | | کل میزان=۲۰۹ میل منزل=۱۶ |

## لاسہ کا راستہ

## وہ راستہ جو لدّاخ سے گر کو جاتا ہے

اس کی تفصیل یہ ہے:

| نمبر شمار | نام منازل | تعداد میل | اونچائی | کیفیت |
|---|---|---|---|---|
| - | لداخ | | ۱۱۵۰۰ | |
| ۱ | جوشوٹ | ۱۰ | | |
| ۲ | خواجہ لونگ | ۱۲ | | |
| ۳ | گیا | ۱۳ | ۱۳۵۰۰ | |
| ۴ | دیب رنگ | ۱۶ | | |
| ۵ | تھوکچی | ۱۴ | ۱۴۹۰۰ | |
| ۶ | مقام | ۱۲ | | |
| ۷ | پوگا | ۱۳ | | |
| ۸ | نئی یا | ۱۳ | | |
| ۹ | نمو | ۱۲ | | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ۱۰ | مقام | ۱۷ | | |
| ۱۱ | مقام | ۱۷ | | |
| ۱۲ | ڈورا | ۱۰ | ۱۳۸۰۰ | |
| ۱۳ | تشی گومک | ۵۵ | | |
| ۱۴ | گر | ۳۰ | | میزان کل=۲۹۸/میل |

## ساتواں گلگت کا راستہ

یہ بہت ہی دشوار راستہ ہے اور اس میں ایک خوفناک جگہ ہے، راز دان آنگن پہاڑ اور دوسری جگہ ہے برزبال پہاڑ۔ برزہ بال پہاڑ سے راستہ دو حصوں میں بٹ جاتا ہے، ایک اسکردو کی طرف جاتا ہے اور دوسرا شمال کی طرف حصورہ، گلگت، یاسین، چترال، دلیل، بدخشان سے گذر کر خوقند، شگستان اور ترکستان تک چلا جاتا ہے۔ جاڑے میں ہمیشہ بند رہتا ہے۔ کہتے ہیں راجہ للتادت (۵۲۵) فوج و خدم کے ساتھ اسی راستے میں تباہ و برباد ہوا۔

| نمبر شمار | نام منازل | تعداد میل | اونچائی | کیفیت |
|---|---|---|---|---|
| ۱ | سرینگر | | ۵۲۳۵ | |
| ۲ | سنبل | ۱۷ | ۵۲۰۰ (۵۲۶) | اونچ نیچ |
| ۳ | بنڈپور | ۱۸ | ۵۳۰۰ (۵۲۷) | پہاڑ پر چڑھنا ہے |
| ۴ | تراگ بل | ۹ | ۹۱۶۰ (۵۲۸) | راز دان آنگن پہاڑ ۱۱۸۰۰ |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ۵ | زڈکسو | ۹ | پہاڑ کے کمر میں | |
| ۶ | قزل ون | ۶ | | (۵۲۹) |
| ۷ | گوریز | ۱۱ | ۷۸۰۰ (۵۳۰) | مشہور علاقہ ہے |
| ۸ | بنگلہ | ۱۰ | ۸۷۲۵ | یہاں سے ایک اور راستہ حصورہ کو جاتا ہے |
| ۹ | مپٔن | ۹ | | |
| ۱۰ | برزل کوٹھی (۵۳۱) | ۹ | | اسکردو کو ایک اور راستہ |
| ۱۱ | کوٹھی صمد خان | ۱۰ | | |
| ۱۲ | داس گھرم | ۷ | | |
| ۱۳ | گودی | ۱۲ | (۵۳۲) | |
| ۱۴ | نوگام | ۷ | | |
| ۱۵ | حصورہ (۵۳۳) | ۱۲ | ۷۸۵۳ | معروف قصبہ ہے |
| ۱۶ | ہرچُو | ۱۱ | ۶۷۰۰ | |
| ۱۷ | وشکن | ۸ | | |
| ۱۸ | وونی (۵۳۴) | ۸ ۱/۲ | ۸۷۲۰ | |
| ۱۹ | رام گھاٹ (۵۳۵) | ۱۲ | | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ۲۰ | بھونجی | ۹ | ۴۶۴۰ | (۵۳۶) |
| ۲۱ | جگر کوٹ | ۱۲ | ۴۲۶۰ | |
| ۲۲ | منادر | ۱۵ | (۵۳۷) | |
| ۲۳ | گلگت | ۱۱ | ۴۸۰۰(۵۳۸) | |
| ۲۴ | شاکیاٹ | ۸ | ۵۵۶۰ | |
| ۲۵ | سنگل | ۱۵ | ۵۷۷۰ | |
| ۲۶ | گاہ گوچ | ۸ | ۶۹۲۰ | |
| ۲۷ | روشن پر | ۱۹ | | |
| ۲۸ | یاسین | ۱۹ | ۷۷۶۵ | |

## گوریز قلعہ سے حصورہ تک ایک اور راستہ

| نمبر شمار | نام منازل | تعداد میل | اونچائی | کیفیت |
|---|---|---|---|---|
| ۷ | گوریز | | | |
| ۸ | بنگلہ | ۱۱ | ۹۳۷۰ | پہاڑ کے کمر میں |
| ۹ | مہنہ داس | ۱۲ | ۱۳۱۶۰ | |
| ۱۰ | مقام | ۱۱ | | |
| ۱۱ | پوکر کوٹ | ۱۱ | ۹۰۰۰ | |
| ۱۲ | چہ گام | ۱۲ | ۵۸۶۰ | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ۱۳ | گورکوٹ | ۱۳ | ۸۰۸۵ | |
| ۱۴ | حصورہ | ۷ | ۷۸۷۳ | (۵۳۹) |

# آٹھواں راستہ

## اسکردو کا راستہ

گلگت کے راستے کی دوسری شاخ جو بُرزبال سے اسکردو کو جاتی ہے یہ ہے:

| نمبر شمار | نام منازل | تعداد میل | اونچائی | کیفیت |
|---|---|---|---|---|
| ۱۰ | برزل کوٹھی | ۹۹ | ۱۰۷۴۰ | |
| ۱۱ | سکھ بٹھ | ۱۵ | ۱۳۱۶۰ | |
| ۱۲ | لال پانی | ۱۳ | ۱۲۵۰۰ | |
| ۱۳ | اوسرمر | ۱۲ | ۱۳۹۷۰ | |
| ۱۴ | ارکان پور | ۱۶ | ۷۶۳۶ | |
| ۱۵ | اسکردو | ۳ | ۷۴۴۰ | (۵۴۰) |

پوشیدہ نہ رہے کہ مندرجہ بالا راستے اپنی جگہوں سے برابر مشہور مقامات وممالک کی طرف جاتے ہیں اور سلاطین وحکام اور سیاحوں، تاجروں اور مسافروں کی آمد ورفت کی وجہ سے خاصے جانے پہچانے اور مشہور ہو گئے ہیں۔

ان کے علاوہ اور بھی دشوار گذار اور سخت مشکل راستے ہیں، جو اپنی جگہوں سے نکل کر دوسرے راستوں کے ساتھ مل جاتے ہیں، جن کی تفصیل پیش کی جاتی ہے۔

# نواں راستہ

## توسہ میدان کا راستہ

سرینگر سے بانگل پرگنہ میں سے توسہ میدان پہاڑ کے اُوپر سے پونچھ کو جاتا ہے۔ وہاں سے اس کی تین شاخیں ہو جاتی ہیں۔ پہلی شاخ کھاشیال کی راہ سے کوہ مری کو۔ دوسری کوٹلی کی راہ سے چومک میرپور اور جہلم کو اور تیسری راجور کے راستے کے ساتھ مل جاتی ہے۔ تین چار ماہ تک جاری رہتی ہے۔

| نمبر شمار | نام منازل | تعداد میل | اونچائی | کیفیت |
|---|---|---|---|---|
| ۱ | سرینگر | | | |
| ۲ | لال پورہ | ۱۵ | | |
| ۳ | توسہ میدان | ۲۰ | (۱۴۱۵) | |
| ۴ | پنوچھ | ۲۲ | ۳۳۳۰ | |
| ۵ | سپیرا | ۱۶ | | |
| ۶ | کوٹلی | ۱۴ | | |
| ۷ | سنسار | ۱۵ | | |
| ۸ | بیاری | ۱۴ | | |
| ۹ | میرپور | ۱۰ | ۱۲۸۶ | |
| ۱۰ | چھچا | | | |
| ۱۱ | جہلم | ۱۱ | ۸۲۷ | |

## دسواں راستہ

## دُبجن کا راستہ

یہ راستہ شوپیان قصبہ سے دیجن کی راہ سے شوپ کوہ (۵۴۲) پر چڑھ کر پونچھ کو جاتا ہے۔ سرینگر سے شوپیان تک ۱۹ر میل (۵۴۳) اور شوپیان سے پنوچھ تک ساٹھ میل (۵۴۴) کا فاصلہ بہت دشوار گذار اور سخت ہے۔ چار ماہ تک جاری رہتا ہے۔

## گیارہواں راستہ

## دارہال کا راستہ

یہ راستہ ہیرہ پور سے جنوب کی طرف دار ہال پہاڑ کے اوپر سے، نندن سر کے مرغزار اور ہستی ونز کے درمیان سے گذر کر راجور قصبہ میں شوپیان کے راستے کے ساتھ مل جاتا ہے۔

سال ۱۲۳۴ھ میں رنجیت سنگھ (۵۴۵) کی فوج اس راستے پر آ چکی تھی لیکن شکست کھا کر لوٹ گئی۔ اس کا فاصلہ شوپیان سے راجوری تک تقریباً ۸۵ر میل ہے۔

## بارہواں راستہ

## بدلی (۵۴۶) کا راستہ

بے انتہا تکلیف دِہ، دشوار اور جان گھلا دینے والا راستہ ہے۔ سلاطین اور راجاؤں

میں سے کوئی بھی اس راستے سے نہیں جاتا اور برف کی وجہ سے آٹھ ماہ تک غائب رہتا ہے۔

سرینگر سے شوپیان تک ۲۷ میل (۵۴۷)، ناظم گڈھی ۱۱ میل، ڈیلی ۲۴ میل (۵۴۸)، بدلی ۱۱ میل (۵۴۹)، بھگولی ۵ میل، نارو ۸ میل، چیل ۱۲ میل، باولی ۸ میل، اکھنور ۸ میل جموں تک ۱۸ میل۔

بدلی سے راجوری کی طرف ایک دوسرا راستہ جاتا ہے۔اس کا فاصلہ ۴۰ میل ہے۔

## تیرھواں راستہ

## ھمسان کا راستہ

یہ راستہ شوپیان قصبہ سے جنوب کی طرف وٹو منز گام گاؤں (پرگنہ دیوہ سر) سے فتون پنچال پہاڑ کے اوپر جا کر گنگ وٹن کی راہ سے ھمسان گاؤں میں پہنچتا ہے۔وہاں سے بدلی میں چلا جاتا ہے۔

اس راستے کا فاصلہ سرینگر سے بدلی تک............(۵۵۰)۔

## چودھواں راستہ

## کھڑی کا راستہ

یہ راستہ شوپیان سے جنوب کی طرف دیوہ سر پرگنہ سے زوجہ مرگ کی راہ سے نکل کر

ریاسی میں چلا جاتا ہے اور وہاں سے جموں۔

| نمبر شمار | نام منازل | تعداد میل | اونچائی | کیفیت |
|---|---|---|---|---|
| ۱ | سرینگر | | | |
| ۲ | شوپیان | ۲۷ | | |
| ۳ | کھڑی | ۱۰(۵۵۱) | | تارہ بل پہاڑ۔ ویشو دریا سے عبور |
| ۴ | زجہ مرگ (۵۵۲) | ۱۰ | | پنچال پر چڑھنا اُترنا |
| ۵ | گلاب گڈھ | ۱۰ | | اونچ نیچ |
| ۶ | دیول | ۱۰ | | نونچہ پہاڑ |
| ۷ | نارہچہ | ۲۰ | | چڑھنا اور اُترنا |
| ۸ | جام نار (۵۵۳) | | | چڑھنا اور اُترنا |
| ۹ | ارناس | | | چندر باگا سے عبور |
| ۱۰ | ریاسی | | | پرانا قصبہ ہے |
| ۱۱ | گُورتلاو (۵۵۴) | ۲۴ | | مکروٹ کی راہ سے (۵۵۵) |
| ۱۲ | جموں | | | |

بعض اوقات تجارتی مال بھی اس راستے سے جاتا ہے۔

## پندرھواں راستہ
## کھل نارہ واوٗ کا راستہ

یہ راستہ شوپیان سے بانہال کی طرف نکل کر ویشو دریا کو عبور کرتا ہوا بیس کُروہ کی دُوری طے کرنے کے بعد کھل نارہ واوٗ پہنچتا ہے اور وہاں اس کے دو حصے ہو جاتے ہیں۔ پہلا حصہ دِنو گاؤں (۵۵۶) سے دس میل کا فاصلہ طے کر کے پنچال دیدمی سے گذرنے کے بعد مربل پہنچتا ہے۔ وہاں سے بارن ہال تک ۲۴ میل اور وہاں سے دیول تک سنگلاخوں اور دشوار گذار درّوں میں سے گذر کر دس میل کی مسافت طے کرنے کے بعد کھوری کے راستے کے ساتھ مل جاتا ہے۔

دوسرا حصہ دَنو سے مہو کے پہاڑوں پر چڑھ کر ۳۲ میل کی مسافت کے بعد آدمی مہور میں رات بسر کرتا ہے اور پھر دوسرے دن کاون گاؤں سے بیس میل کے فاصلے کو طے کرنے کے بعد رام سو میں بانہال کے راستے کے ساتھ مل جاتا ہے اور جموں پہنچ جاتا ہے۔

یہ راستہ بہت دشوار گذار ہے۔

## سولھواں راستہ
## ڈوڈی (۵۵۷) کا راستہ

کشمیر کا دشوار ترین راستہ ہے۔ ویری ناگ سے برارِ بال پہاڑ کے اُوپر سے دشوار

گذار چٹانوں کے درمیان سے گذر کر ڈوڈی میں سے چلا جاتا ہے۔ کل چار مہینوں تک جاری رہتا ہے۔ سرینگر سے ویرناگ تک چار (۵۵۸) منزل، ویری ناگ سے ڈوڈی تک ۵۴/میل، غیر آباد جگہوں کے درمیان میں سے پانچ منزل، ڈوڈی سے رام بن تک ۶۰/ میل، رام بن سے جموں تک چالیس میل اور ڈوڈی سے بھدرواہ (۵۵۹) تک ۲۴/میل۔

## ستر ھواں راستہ

## مربل کا رستہ

یہ راستہ اننت ناگ سے برنگ پرگنہ میں سے مربل پہاڑ، جس کی اُونچائی ۱۱۵۷۰/ فٹ انگریزی ہے، کے اُوپر لہرنی درّہ کے درمیان میں سے گذر کر مرو پرگنہ کے سنگ پور گاؤں میں پہنچتا ہے۔ یہاں سے کشتواڑ اور بھدرواہ کو جاتا ہے۔

کل چار مہینوں تک کھلا رہتا ہے۔ اس کی مسافت سرینگر سے اننت ناگ تک ۳۶/میل۔ وہاں سے لہرنی تک دو منزل ۲۴/میل، لہرنی سے سنگ پور تک دو منزل ۲۴/میل، وہاں سے کشتواڑ تک ۳۰/میل، وہاں سے بھدرواہ تک تین منزل ۵۰/میل۔ سنگ پور سے ڈوڈی تک ہایہ داران پہاڑ کے اُوپر سے ۶۰/میل، وہاں سے رام بن تک ۴۰/میل۔ وہاں سے جموں۔

## اٹھارھواں راستہ

## فامر کا راستہ

یہ راستہ اننت ناگ سے برنگ پرگنہ کے دوس (۵۶۰) گاؤں میں سے ہوکھ سر پہاڑ، جس کی اُونچائی ۱۵۶۰۰ فٹ انگریزی ہے، کے اُوپر سے فامر مرغزار سے گذر کر مرو کے علاقہ سے نکلتا ہے اور کل چار ماہ تک جاری رہتا ہے۔ اس کا فاصلہ سرینگر سے اننت ناگ تک ۳۶/میل، وہاں سے مروتک ۴/منزل ۶۰/میل۔ وہاں سے کشتواڑ تک ۳۵/میل۔

## انیسواں راستہ

## تھمرن کا راستہ

یہ راستہ دشوار اور سخت گذر ہے۔ اننت ناگ سے کوٹھار پرگنہ میں سے مرگن پہاڑ، جس کی بلندی بحر محیط سے ۱۱۶۰۰/فٹ انگریزی ہے، کے اُوپر نوبوگ نے درّے کے درمیان سے تیرہ کروہ کی بلند مسافت سے گذر کر واروَن میں آنشن گاؤں میں پہنچ جاتا ہے۔ اس کا فاصلہ اسلام آباد سے شانگس تک ۱۰/میل، وہاں سے نوبگ نے تک ۱۲/میل، وہاں سے مرگن تک ۱۲/میل بلند۔ مرگن کی اُوپر کی سطح مسطح ہے اور ہموار چار میل ہے اور اترائی چار میل۔ انشن گاؤں تک ۴/میل۔ کل نوے میل۔

واڑون میں پہنچ کر اس راستے کو دو حصے ہو جاتے ہیں۔ پہلا حصہ مشرق کی طرف سے لداخ اور اسکردو کو جاتا ہے اور دوسرا حصہ کشتواڑ اور بھدرواہ کو۔

## بیسواں راستہ

## مرگن کا راستہ

یہ راستہ دشوار اور سخت گذر ہے۔ اننت ناگ سے کوٹھار پرگنہ میں سے مرگن پہاڑ، جس کی بلندی بحر محیط سے ۱۱۶۰۰ رفٹ انگریزی ہے، کے اُوپر نوبوگ نے درّے کے درمیان سے تیرہ کروہ کی بلند مسافت سے گذر کر واروَن میں آنشن گاؤں میں پہنچ جاتا ہے۔

اس کا فاصلہ اسلام آباد سے شانگس تک ۱۰ رمیل، وہاں سے نوبگ نے تک ۱۲ رمیل، وہاں سے مرگن تک ۱۲ رمیل بلند۔ مرگن کی اُوپر کی سطح مسطح ہے اور ہموار چار میل ہے اور اترائی چار میل۔ انشن گاؤں تک ۴ رمیل۔ کل نوّے میل۔

واڑون میں پہنچ کر اس راستے کو دو حصے ہو جاتے ہیں۔ پہلا حصہ مشرق کی طرف سے لداخ اور اسکردو کو جاتا ہے اور دوسرا حصہ کشتواڑ اور بھدرواہ کو۔

## اکیسواں راستہ

## امرناتھ کا راستہ

یہ راستہ اننت ناگ سے مشرق کی طرف دچھن پارہ پرگنہ میں سے گذرتا ہے۔ بہت سخت گذر اور مشکل راستہ ہے۔ اس کا فاصلہ سرینگر سے اسلام آباد تک ۳۴ رمیل، عیش مقام

۱۴/میل ، پہلگام ۱۲/میل ، چندن وار ۸/میل ، شیشرم ناگ ۷/میل ، پنجہ تری ۱۳/میل ، امرناتھ جی ۲ 1/2/میل ، سوکھ ناگ ۱۴/میل ، وارون ۱۴/میل ۔ وہاں سے دوشاخوں میں بٹ جاتا ہے ایک جموں کو اور دوسری لداخ کو جاتی ہے۔

## بائیسواں راستہ

## تلیل کا راستہ

یہ راستہ بہت مشکل راستہ ہے۔ سرینگر سے شمال کی طرف لار پرگنہ میں سے مہالشہ پہاڑ کے اُوپر ہرمکٹہ گنگا کے چشمے سے سیراب ہوکر پہاڑوں کے اُوپر سے گذر کر تلیل پہنچتا ہے۔ کل چار ماہ تک جاری رہتا ہے۔

تلیل سے اس کی دوشاخیں ہوجاتی ہیں۔ پہلی شاخ اسکردو کی طرف جاتی ہے۔ دوسری شاخ گوریز، گلگت اور حصورہ کو۔ اس کا فاصلہ سرینگر سے گاندربل تک ۱۲/ (۵۶۱) میل ، چھترگل ۸/میل (۵۶۲)، مہالشہ (۵۶۳) ۱۲/ (۶۶۳) میل ، راسہ بل ۱۶/میل ، بڈگام (تلیل علاقہ) ۳۰/میل ، گمرن ۱۲/میل ، کاوہ بال ۱۰/میل ، کڑلوگی ۱۲/میل ، بوٹہ کولن ۱۰/میل اور مشک (اسکردو علاقہ) ۱۱/میل۔

## تیئسواں راستہ

## چیلاس کا راستہ

یہ راستہ سرینگر سے شمال کی طرف سوپور قصبے سے کلاروس تک کچھ دونہ پہاڑ پر چڑھ

کرشاردا کی سرحد تک پہنچتا ہے۔ وہاں سے دروں، سنگلاخ چٹانوں اور پہاڑوں کے بیچ میں سے سخت دشواری کے ساتھ چیلاس تک چلنا پڑتا ہے اور اس کا فاصلہ سرینگر سے پٹن تک ۱۷ر میل، سوپور ۱۳ر میل، چاگل (۵۶۴) ۱۲ر میل، کلاروس ۱۶ر میل، وہاں سے شاردا تک تین منزل ۴۰ر میل۔ وہاں سے چیلاس تک ۶۰ر میل۔

## چوبیسواں راستہ
## کرناہ (۵۶۵) کا راستہ

مذکورہ راستہ سرینگر سے شمالی اور مغربی گوشے کی جانب نکل کر سوپور سے شیوہ پور تک دیہات کی آبادی سے گذرتا ہے اور نستہ چھنہ کے ٹیلے سے چل کر کرناہ میں جا پہنچتا ہے۔ فاصلہ اس کا سرینگر سے سوپور تک ۳۰ر میل، وہاں سے چاگل تک ۱۲ر میل، منزگام ۱۴ر میل، ہڑی ۱۰ر میل، وہاں سے کرناہ ٹیلے تک کا فاصلہ ۱۶ر میل ہے اور وہاں سے مظفر آباد تک کرشنہ گنگا کے ساحل پر سے چلنا پڑتا ہے۔

## پچیسواں راستہ
## دراوہ کا راستہ

سوپور قصبے سے کامراج کی آبادی میں سے گذر کر مرگن گاؤں میں سے اشائی پہاڑ اور تریل ڈبرو کے اُوپر سے نکل کر دراوہ میں پہنچتا ہے۔ کل چھ ماہ تک جاری رہتا ہے۔ اس کا

فاصلہ سرینگر سے سوپور تک ۳۰ رمیل ۔ وہاں سے مرگن تک دومنزل ۳۳ رمیل ، وہاں سے دراوہ تک پہاڑ کے اُوپر سے دومنزل ۳۰ رمیل ۔ وہاں سے کرشنہ گنگا کے کنارے سے مظفر آباد تک ۔

## چھبیسواں راستہ

## گل مرغ کا راستہ

یہ راستہ سرینگر سے نکل کر بانگل پرگنہ کی آبادی میں سے گل مرغ میں جا پہنچتا ہے۔
وہاں سے مغرب کی طرف میں اُتر کر دمری کے راستے کے ساتھ مل جاتا ہے۔
اس کا فاصلہ سرینگر سے لعل پور تک ۱۵ رمیل ۔ وہاں سے گل مرغ تک ۱۵ رمیل ، وہاں سے اوڑی تک ۲۴ رمیل وہاں سے کوہ مری تک ۔

## ستائیسواں راستہ

## فیروز پور کا راستہ

سرینگر سے لعل پور تک ۱۵ رمیل ۔ وہاں سے فیروز پور تک ۸ رمیل ۔ وہاں سے بلن تک ۱۲ رمیل ۔ وہاں سے کھوٹہ تک ۱۴ رمیل ۔ وہاں سے پونچھ تک ۲۰ رمیل ۔ کل ۶۹ رمیل ۔

## کشمیر کے مضافات

کشمیر کے اردگرد بے شمار پہاڑ دور فاصلوں تک ہر طرف میں واقع ہیں۔ چنانچہ مشرقی پہاڑوں کا سلسلہ یارقند اور لاسہ تک نہیں ٹوٹتا اور شمالی سرحدوں کے پہاڑوں کا اتصال تو تاشقند اور خوقند تک برابر چلا جاتا ہے اور مغربی پہاڑوں کا تسلسل ہزارہ اور جہلم تک گیا ہے اور اس کے جنوبی سرحدوں میں واقع ٹیلے جموں کے علاقے اور ہندوستان کے حدود تک نہیں ٹوٹ پاتے۔

ان پہاڑوں کے اندر کثرت کے ساتھ درے اور میدان موجود اور نمایاں ہیں۔ بعض وسیع اور بعض تنگ۔ اور ان میں بہت سے دیہات اور قصبے آباد ہیں، جو کبھی کبھی کشمیر کے حکام کے زیر تسلط وفرمان رہے تھے اور گاہی وہاں کے باغی راجے خود حکومت کا انتظام چلاتے تھے۔ ان میں سے ہم بعض مقامات کی تفصیل کو بیان کریں گے۔

## تبت کلان

کشمیر کے لوگ اسے بُوٹن کہتے ہیں۔ اس کا دارالحکومت لداخ یا لیہہ ہے، جو کشمیر کے مشرق اور شمال میں ۲۶۰ میل کے فاصلے اور گیارہ ہزار پانچ سو فٹ کی بلندی (۵۶۶) پر (بحر محیط کی سطح سے) واقع ہے۔ اور یہ ہندوستان اور ترکستان کے ساتھ تجارت کی بندرگاہ

ہے۔ چنانچہ ہر سال درآمد و برآمد کی تجارت یہاں غالباً تیس لاکھ تک ہوتی ہے۔ اس میں شامل اور محروسہ پرگنوں کے نام ہیں یاسمین، ٹانجی، نوبراہ، روگشو، چچوٹ، دراس، کرگل اور سُور۔

یہاں کے پہاڑ سنگلاخ ہیں، جہاں سبزی کا کوئی نشان تک نظر نہیں آتا۔ اس کے بیچ میں سے کھلچی دریا یا سنگی گھاٹ گذرتا ہے۔ یہاں کی ہوا سیاہ رنگ ہے اور نفس کی تنگی پیدا کرتی ہے۔ یہاں کی کاشت دوسرے درجے کی جو ہے، جسے بہار کے موسم میں بویا جاتا ہے اور گندم، ترنبہ، گال (باجرہ) اور ارزن (چینا) ہے۔

یہاں کے لوگ بدشکل، بدزیب، گندے مزاج کے، غیر مہذب اور قد کے چھوٹے ہیں۔ چنانچہ یہاں کے مردوں کا قد اکثر ۵/فٹ ۲/انچ کا اور عورتوں کا چار فٹ آٹھ انچ (۵۶۷) تک ہوتا ہے۔ بعض محمدیؐ دین پر ہیں لیکن اکثر بدھ مذہب کے ہیں جن کا پیشوا لامہ ہوتا ہے۔

کہتے ہیں کہ یہ گورو لامہ لوگ زیادہ تر صاحب ریاضت، محتاط، عالم اور مافوق العادت ہوتے تھے اور ان میں سے بعض تنہائی اور اکیلے پن میں رہ کر بہت عرصے تک کچھ نہیں کھاتے تھے اور کبھی بکثرت کھایا کرتے تھے اور ایک مدت تک بول و براز پھیرنے کی ضرورت تک محسوس نہیں کرتے تھے اور مرتے وقت اپنے شاگردوں کو خبردار کرتے تھے کہ فلاں گھر میں فلاں عورت کے شکم سے جنم لیں گے۔ بارہ سال گذر جانے کے بعد شاگرد وہاں جاتے اور علامتوں اور نشانیوں سے پہچان کر اسے اپنی جگہ میں لے آتے۔ وہ ہر ایک سے اپنا مال و جائیداد وصول کر لیتا اور اس پر قابض ہو جاتا تھا۔

بدھ مذہب کے لوگ غیر مذہب کے لوگوں کے ہاتھ کا کھانا کھاتے ہیں (۵۶۸)

اور ایک بھائی کی شادی کو دوسرے بھائیوں کے لئے کافی جان لیتے ہیں (۵۶۹)۔ سلام کی جگہ جو کہتے ہیں۔

ان کے فرقے میں چار قومیں مشہور ہیں: (۱) جررک یعنی راجپوت، (۲) جیرکھ یعنی جاٹ، (۳) مہرھ یعنی شودر اور (۴) تولبہ رکھ یعنی رذیل قوم۔

لداخ قلعہ میں غالباً پانچ چھ سو گھر پہاڑ کے دامن میں آباد ہیں۔ خانقاہ کبرویہ بھی وہاں موجود ہے اور قدیم زمانے سے بت خانہ بھی معمور ہے جسے گونپہ کہتے ہیں۔

تبت کا دارالحکومت یہیں ہے۔ وہاں سے یارقند کو پانچ راستے جاتے ہیں۔ ایک راستہ لاسہ کو اور چار ہندوستان، ایک کشمیر اور ایک اسکردو کو جاتا ہے۔

یہ ملک اکثر اوقات کشمیر میں شامل رہا ہے۔ بعض اوقات ترکستان کے تصرف میں اور اتفاقاً حکومت کشمیر میں فتنہ و آشوب رونما ہونے کے اوقات میں یہاں کے راجے سرکش ہو کر خود ہی حکمران ہو جاتے تھے۔ گاہے اسکردو کے راجے بھی حکومت کرنے کی غرض سے قابض ہوئے تھے۔

سال ۱۸۹۶ بکرمی (۵۷۰) (۱۲۵۵ھ) میں راجہ گلاب سنگھ نے زور آور سنگھ کلوریہ (۵۷۱) وزیر کو بارہ ہزار پیادہ فوج اور فتح پلاٹن سے پچاس قواعددان سپاہی ساتھ دے کر کشتواڑ اور زانسکار (۵۷۲) کی راہ سے تبت کو تسخیر کرنے پر مامور کیا۔ مذکورہ وزیر سُور پرگنہ، دراس اور کرگل پر قابض ہو کر لداخ پہنچ گیا۔ لداخ کے راجہ پونچھک چرنگ نے خود میں مقابلہ کرنے کی طاقت نہ دیکھ کر پچیس ہزار (۵۷۳) روپے نذرانہ کے طور پر پیش کر کے فرمانبرداری کا طوق گردن میں ڈال دیا۔

اسی اثناء میں اسکردو کے حکمران احمد شاہ کے فرزند محمد شاہ نے اپنے باپ سے سرکشی

کر کے کرنیل میاں سنگھ (۵۷۴) کی حمایت میں تلیل میں پناہ لی تھی اور مدد کرنے کی خواہش کے سلسلے میں لداخ آ گیا اور وزیر نے راجہ لداخ کے حوالے کر کے خود جموں کی طرف واپسی کا کوچ کیا۔ وزیر کے جانے کے بعد راجہ لداخ نے فرمانبرداری کا لباس اُتار دیا اور احمد شاہ والئی اسکردو کے ساتھ متفق ہو کر بغاوت کا علم بلند کیا اور محمد شاہ باپ کے ہاتھ لگ گیا اور ننگے پاؤں اسکردو پہنچ گیا۔ چنانچہ برف میں اس کے پاؤں جل چکے تھے۔

یہ خبر سن کر ہی وزیر حملہ آور ہو کر لداخ پہنچ گیا اور مذکورہ راجہ کو محبوس کر کے مور تنجین کو راجگی کا مستقل منصب عطا (۵۷۵) کیا اور وہاں کا انتظام اپنے دل کی خواہش کے مطابق کرنے کے بعد جموں واپس چلا گیا۔ کچھ عرصہ گذرنے کے بعد وزیر کو تیسری بار لداخ جانے کا خیال آ گیا۔ راستے میں اس نے خبر سنی کہ دراس کا کاردار نیدان سنگھ (۵۷۶) کرتاشک کے حکمران راجہ علی شیر کے ہاتھوں قتل ہو گیا اور رحیم خان پشکومہ دراس سے فرار ہو کر احمد شاہ کی پناہ میں آ گیا ہے۔

وزیر با تدبیر نے وہاں سے قلعہ اسکردو پر، جو افراسیاب خان پُشکی کا بنایا ہوا اور قلعہ اہرمن کے نام سے جانا جاتا تھا، حملہ کیا اور قلعہ اہرمن کو محاصرہ میں لے لیا۔ علی شیر نے اپنی تقصیرات کی معافی چاہی اور پناہ میں آ گیا۔ احمد شاہ نے اپنے فرزند (جس کا ذکر ہو چکا) محمد شاہ کو سفارش کیلئے وزیر کے پاس بھیج کر امان چاہی۔ وزیر نے راجہ احمد شاہ اور ملک کے اکابرین سے شایان شان نذرانہ حاصل کر کے انہیں معاف کر دیا اور رحیم خان پشکومہ کو گلا گھونٹ کر مار ڈالا (۵۷۷)۔

وہاں سے مدین شاہ کو سپاہیوں کی ایک جماعت کے ہمراہ حصورہ قلعہ کو فتح کرنے پر مقرر کر دیا۔ اس نے وہاں کے حکمران جبار خان کو قلعہ بند کر کے بیس دنوں تک اس کا

محاصرہ کیا۔ چونکہ راجہ حصورہ میاں سنگھ کے عہد میں راجہ لاہور کا اطاعت گذار ہو چکا تھا، اس وجہ سے راجہ لاہور کی طرف سے گلاب سنگھ کو سخت تشدد سہنا پڑا۔ اس لئے راجہ حصورہ بدستور اپنی حکومت پر قائم رہا۔

پس وزیر باتدبیر نے لداخ کی طرف کوچ کیا اور ضروری اشیاء کو روانہ نہ کرنے کی تہمت لگا کر مور تنجبین کو قید کر کے لداخ کو اپنے انتظام میں لے آیا (۵۷۸)۔

۱۸۹۸ سمہ میں راجہ گلاب سنگھ نے قواعد دان سپاہیوں کی ایک پلٹن اور تین ضرب توپیں لداخ پہنچا دیں اور وزیر کو پیش قدمی کرنے کا فرمان بھیج دیا۔ اس لئے وزیر زور آور سنگھ پندرہ ہزار سپاہیوں کی سوار اور پیدل فوجیوں کی جماعت کے ہمراہ لاسہ پر حملہ آور ہونے کیلئے چل پڑا اور بارہ منزلیں طے کر کے گھر کے مقام پر، جو لاسہ کی سرحد تھی، مخالفین کے ساتھ نبرد آزما ہوا۔ مان سنگھ کا بیٹا مع چند افسروں کے مارا گیا۔ شدید جنگ وجدل کے بعد مخالفین کو شکست ہوگئی اور کافی مال ومتاع وزیر کے قبضے میں آ گیا۔

وہاں سے آٹھ دنوں کی راہ کو چار دنوں میں طے کر کے مان تالاب (۵۷۹) میں پہنچ گیا اور ایک ہی حملے میں گردنک قلعہ کو مسخر کر لیا۔ پورنگ قلعہ کو بھی فتح کیا اور ایک ماہ کے عرصے میں وہاں نیا قلعہ تعمیر کروا کے مان تالاب لوٹ آیا۔ اسی دوران چھجکوٹ، لاسہ سے بھاری لشکر کے ساتھ آ کر گوردنگ قلعہ پر قابض ہو گیا۔ وزیر نے اپنے عیال کو لداخ بھیج دیا ورخود دشمن کے مقابلے میں ڈٹ کر رہا۔ اسی حال میں ہوا کہ سردی اور بارشوں نے قیامت ڈھائی اور جنگ کی سختی ومصیبت میں وزیر داد ودلاوری دے کر پوری لشکر سمیت ۱۸ ر مگھر ۱۸۹۸ سمہ بکرمی کو جنگ میں قتل ہو گیا اور اس کے سپاہیوں میں سے کل پچیس آدمی جان بچا کر لداخ واپس پہنچ گئے۔

مہتہ بستی رام، جو پورنگ قلعہ کا تھانہ دار تھا، الموڑہ کی راہ سے جموں (۵۸۰) چلا گیا۔اس کے بعد لاسہ کی فوج نے لداخ پر حملہ کیا۔ مور تنجین اور والئی اسکردو احمد شاہ اور وہاں کے زمینداروں نے لاسہ کی فوج کے ساتھ اتفاق کر کے کمیدان پہلوان سنگھ اور گوراں دتا کی پلٹن کو محاصرہ میں لے لیا۔اس خبر کی چنگاری ۱۲/ماہ پھاگن کو مہاراجہ کے کان تک پہنچی۔اس نے فی الفور دیوان ہری چند اور وزیر رتنوں کو موسم سرما میں چھ ہزار سپاہیوں کی جمعیت کے ساتھ دشمن کی مدافعت پر مامور (۵۸۱) کیا اور شیخ غلام محی الدین (۵۸۲) صوبہ کشمیر کے حاکم کی حیثیت سے آ گیا اور اس نے پندرہ دنوں میں دس ہزار کسانوں کو جمع کر کے فوج کی بار برداری کے لئے فوج کے ساتھ کر دیا۔

مہاراج کی فوج جب کرگل پہنچی تو مخالفین کے ساتھ جنگ کی اور پہلے ہی حملے میں مخالفین کے سپاہیوں کے تین سو آدمیوں کو قتل کر ڈالا اور تین ہزار سے زائد آدمیوں کو دریا میں غرق کر دیا۔

دیوان نے وہاں سے کوچ کیا اور لداخ پہنچ گیا۔مخالفین نے محاصرہ توڑ کر فرار کیا۔ راستے میں بخشی اچھنجوٹ اور کرن شاہ نے ایک ہزار کی جمعیت کے ساتھ استقامت دکھائی اور چمراہ گونپہ میں قلعہ بندی اختیار کی۔ادھر سے دیوان نے یورش کی اور مخالفوں کو محاصرہ میں لانے کی طرف متوجہ ہوا اور ٹیلے کے اُوپر توپ پہنچا کر گولہ باری کرنے لگا اور وہ پانی کی ندی بھی اُوپر سے بند کر دی جو قلعہ میں جاری تھی۔محصورین پانی کی عدم موجودگی سے بے قرار ہو کر تڑپنے لگے اور امان کے آب زلال کے خواستگار ہوئے۔پس اچھنجوٹ اور کرن شاہ کثیر جماعت کے ساتھ گونپہ سے باہر آ گئے اور ان کو حفاظت کے ساتھ لداخ میں رکھا گیا۔نو دنوں کے بعد انہوں نے اپنے محافظین کو قتل کر ڈالا اور بھاگ نکلے۔دیوان کی فوج

نے ان کا پیچھا کیا اور راستے میں جنگ ہوئی۔ مخالفین کے ایک سو سپاہی قتل ہوئے اور چار سو قید ہو گئے۔

کچھ عرصہ بعد بخشی چھکجوٹ نے چھ ہزار سپاہیوں اور ایک ضرب توپ کے ساتھ پھر سے حملہ کیا اور لداخ سے تیس میل کے فاصلہ پر چھاؤنی تشکیل دی۔ دیوان نے بہادر فوجیوں کے ساتھ چڑھائی کی اور مخالفین پر رات کو شبخون کر کے چار گھنٹوں تک جنگ کی آگ بھڑکائی۔ جنگ آٹھ دنوں تک جاری رہی۔ محصورین نے بارود کے چھوٹے نیزے آگ لگا کر دیوان کی فوج میں پھینکے۔ مجا سنگھ کمیدان تین سو جوانوں کے ساتھ اس آگ کی نذر ہو گیا۔ آخر دیوان باتدبیر نے اُوپر سے ندی کا پانی کھول کر مخالفین کی چھاؤنی میں سیلاب لے آیا اور دشمن پانی کی بہتات سے تنگ آ کر امن کا خواستگار ہوا اور سلاح و سامان چھوڑ کر بھاگ گیا۔

بخشی اچھنجوٹ اور کرن شاہ کو گرفتار کر کے مہاراجہ کے پاس نسیم باغ میں بھیج دیا گیا۔ مہاراج نے مصلحت سے کام لینے کو افضل سمجھتے ہوئے مذکورہ افسروں کو بیش قیمت خلعت پہنچا دیئے اور اس طرح سے سرفراز کر کے ان کو لوٹ جانے کی اجازت بخشی۔ دیوان ہری چند وہاں سے اسکردو چلا گیا اور راجہ احمد شاہ کو گرفتار کر کے جموں بھیج دیا۔ اس کے بعد وہاں کا انتظام اور بندوبست خاطر خواہ طریقے پر انجام دیا اور اطراف کے باغیوں کو سزا دے کر اقتدار و اعتبار پایا اور مہاراج کے حکم پر لاسہ کے افسروں کے ساتھ مصالحت کے اقدامات کیئے اور آپس میں عہدنامہ کرنے کی توثیق کر دی۔

# یہ ہے عہد نامہ کی نقل

''ہم افسران لاسہ، ایک کلون اور دوسرا بخشی ہیچون (۵۸۳)، خاقان چین کے افسر، اور دوسری طرف مہاراجہ صاحب بہادر گلاب سنگھ جی کے دو افسر ایک دیوان ہری چند اور دوسرا وزیر رتنوں، صلح اور عہد و پیمان کی اس مجلس میں ایک دوسرے کے ساتھ متفق ہو کر اور جانبین کی صاف باطنی اور نیک نیتی کے ساتھ دوستی کے روابط کے طریقے اور قونچق صاحب کے قسموں کو یاد کر کے قرار داد کو یوں مقرر اور متعین کیئے دیتے ہیں کہ مہاراجہ صاحب بہادر اور خاقان چین اور لاسہ والا لامہ گورو صاحب کے صفای باطن کے ساتھ صلح وصلاح اور ایک ہی گھرانے جیسے روابط ابدالدہر تک قائم اور مضبوط رکھیں گے۔ قونچق صاحب کے حضور میں کسی طرح کا کوئی فرق اور قصور نہیں ہوگا اور قدیم زمانے سے لداخ کی جو حدیں مقرر ہیں ان کے ساتھ کبھی بھی نہ کوئی واسطہ رہے گا نہ کوئی عرض۔ شال کا اُون اور چائے آئین قدیم کے مطابق لداخ کی راہ سے جاری رہیں گے۔ لداخ کے تاجر، جو ہمارے ہاں آتے رہتے ہیں، ان سے ہم کوئی مزاحمت نہیں کریں گے۔

اس بارے میں سر مو مخالفت نہیں کریں گے۔

اس قول و قرار پر گواہ ہیں قونچق اور قاطری اور لپسی اور میاں خوشحال چوہ۔ فقط (۵۸۴) بتاریخ ۲ ماہ اسوج ۱۸۹۹ بکرمی''۔

تب سے جموں کا راجہ ملک لداخ پر کمال آزادی سے قابض ہے اور تجارت کو خوب ترقی دی ہے۔ سال ۱۹۴۹ء میں لداخ میں برٹش گورنمنٹ کی طرف سے جوائنٹ کمشنر مقرر

ہو چکا ہے اور تجارت کی آمد و رفت اور سفارت یارقند کو خوب ترقی ملی۔

## تبت خورد

یعنی اسکردو جسے کشمیر زبان میں ژیرہ بُٹن کہتے ہیں۔ خطۂ کشمیر سے مشرق اور شمال کے درمیان ۱۵۱ر میل کی دوری پر ایک وسیع درے میں دل کشا آب و ہوا کا ایک ریگستان ہے۔ سطح سمندر محیط سے اس کی بلندی سات ہزار اور چوبیس فٹ ہے۔ شالی کی کل فصل یہاں قریب ایک سو خروار، اور گندم، جو باجرہ، چینا اور ترنبہ بکثرت ہوتے ہیں۔ زرشک، سنجد، توت، زیرۂ سیاہ کی بہتات ہوتی ہے۔ اور میٹھی گری کے خوبانی کو کثرت سے سکھا کر اطراف میں بھیج دیتے ہیں۔

دریائے اباسِند اس کے بیچ میں سے گذرتا ہے۔ برف تھوڑی ہوتی ہے۔ یہاں کے باشندے پہلے سب کے سب سنی تھے۔ سال ۹۰۰ھ میں میر شمس عراقی (۵۸۵) کی ترغیب و صلاح سے نوربخشی شیعہ مذہب کے ہو گئے ہیں۔ ان کی اکثر عورتیں بدکار ہیں۔ جس پر شوہروں کی طرف سے انہیں کوئی ممانعت نہیں۔ لداخ کے لوگوں کے ساتھ تھوڑی سی فرق کے ساتھ ہم زبان ہیں۔ اس میں یہ پرگنہ جات شامل ہیں: شگر، کرس، کھپلو، تولٹی، خرمنگ، رُوند اور پرکوٹ۔

قدیم زمانے سے یہاں مسلمان راجے، جو خود کو سلطان سکندر کاشغری (۵۸۶) کی اولاد جانتے ہیں، حکومت کرتے تھے اور بعض اوقات کشمیر کے راجوں کے زیر فرمان بھی رہتے تھے۔ سلاطین کشمیر کے عہد میں یہ اطاعت گذاری کا طوق گردن میں ڈال کر ان کے

باجگذار ہو گئے تھے اور چک بادشاہوں کے زمانے میں باغی ہو گئے لیکن مغل بادشاہوں کے وقت میں پھر (۵۸۷) سے تابع کشمیر ہو گئے اور افغانوں کے عہد میں پھر سے خود ہی حکومت کرنے لگے (۵۸۸)۔

سال ۱۲۵۳ھ میں یہاں کا حکمران راجہ احمد شاہ تھا۔ اس کا دوسرا بیٹا محمد شاہ باپ سے سرکش ہو گیا اور کرنیل میاں سنگھ کی پناہ میں چلا گیا اور میاں سنگھ نے اسے تللیل پرگنہ جاگیر میں دے دیا۔ جب وزیر زور آور سنگھ نے لداخ پر قبضہ کیا، محمد شاہ تللیل سے بھاگ گیا اور وزیر کے پاس لداخ پہنچ گیا۔ یہ خبر سنتے ہی احمد شاہ نے لشکر کشی کر کے اپنے منحوس بیٹے کو گرفتار کر لیا اور ننگے پاؤں اسکردو میں لے آیا۔ زور آور سنگھ کو غیرت آ گئی اور اس نے بھاری لشکر کے ساتھ حملہ کر کے اسکردو پر قبضہ کر لیا (۵۸۹) اور احمد شاہ کے گھر کو غارت کیا اور کثیر نذرانے کی رقم کو جرمانے کے طور پر اخذ کر کے احمد شاہ کو حکومت پر بدستور بحال کر دیا اور خود لداخ لوٹ گیا۔ احمد شاہ کے دو بیٹے اور جیو اور محمد علی خان جو مدد کی اُمید پر کشمیر میں میاں سنگھ کے پاس بھاگ کر آئے تھے، میاں سنگھ نے دونوں بھائیوں کو قیدی بنا کر راجہ گلاب سنگھ کے پاس جموں بھیج دیا۔

جب وزیر زور آور سنگھ مان تلاو کا عزم کر رہا تھا اور اسکردو کے مقتولین کو تھانہ دار نے قلعہ سے نکال کر قید میں ڈال دیا اور ان کے اسلحہ وساز وسامان کو لوٹ کر خود ملک میں دو تین ماہ تک حکومت کی، تو یہ خبر پاتے ہی راجہ گلاب سنگھ نے کوہامہ کی راہ سے بڑی زبردست فوج روانہ کر دی اور ملک میں جوش وخروش بپا کر دیا۔ شیخ غلام محی الدین نے بھی اپنی فوج کو کھکھ اور بمبہ راجوں کی فوج کے ساتھ ان کی مدد کرنے کی خاطر ہمراہ اور پانچ چھ ہزار کشمیری کسانوں کو فوج کا سامان اُٹھانے کیلئے ساتھ کر دیا۔ جب یہ حملہ کرنے کیلئے

اسکردو میں پہنچ گئے دیوان ہری چند بھی لداخ سے چڑھائی کر کے فوراً ہی اسکردو پر قابض ہو گیا اور مخالفین کو قتل کر کے احمد شاہ کو مع عیال جموں بھیج دیا گیا اور قلعہ اہرمن کو مسمار کر دیا گیا۔ احمد شاہ کی جموں میں وفات ہوگئی اور اس کے بیٹے محمد شاہ کیلئے معیشت کی رقم مقرر کر دی گئی اور ملک کا انتظام خود انہوں نے اپنے ہاتھوں میں لے لیا۔

## گوریز اور تلیل

دو پرگنے ہیں۔ دو چھوٹے درّوں میں ۲۵ میل کی مسافت پر اور کشمیر کے شمال میں ستر میل کی دوری پر۔ محیط سمندر کی سطح سے ۸۰۰۷ فٹ بلندی پر واقع۔ چھ ماہ تک برف سے معمور۔ نہایت سرد علاقہ جس کی وجہ سے جو اور گندم کی پیداوار نہیں ہو پاتی ہے۔ صرف ترنبہ، چینا اور باجرے کی کاشت ہوتی ہے۔ دریائے کرشنہ گنگا درمیان سے گذرتا ہے۔

ہمیشہ کشمیر میں شامل رہے ہیں۔ لوگ سنی ہیں اور کشمیری زبان میں بھی گفتگو کرتے ہیں۔

## حصورہ

ایک پرگنہ ہے کشمیر کے شمال میں ۱۴۷ میل کی دوری پر۔ بحر محیط کی سطح سے ۸۵۴۷ فٹ بلند۔ گوریز کے مقابلے میں یہاں برفباری کم ہوتی ہے۔ جو اور گندم کی کاشت ہوتی ہے۔

یہاں کے لوگ مفلس، محنت کش، گندے ہیں۔ سنّی مذہب کے ہیں۔ سابق تعمیرات میں ایک کچا قلعہ موجود ہے۔ حصورہ کے نواحی میں کوہ الوند یعنی ننگا پربت جس کی بلندی ۲۶۳۰۰ رفٹ لکھتے ہیں، ہمیشہ برف سے پُر رہتا ہے۔ اس پرگنہ کی اپل نامی ایک جگہ کے درمیان سے رپل دریا گذرتا ہے، جو ابا سند دریا میں مل جاتا ہے۔ یہ ملک اکثر اوقات کشمیر میں شامل رہا ہے۔ کبھی اسکردو کے راجا کے تصرف میں بھی رہا تھا۔ سکھوں کے عہد سے بدستور کشمیر میں شامل ہے۔

## گلگت اور پونیال (۵۹۰)

کشمیر سے شمال ومغرب میں ۲۳۱ رمیل کی دوری پر ابا سند دریا (۵۹۱) کے شمالی کنارے پر ایک درّے کے درمیان جس کی وسعت پانچ چھ میل ہوگی واقع ہے۔ اس کی اُونچائی بحرمحیط سے ۴۸۰۰ فٹ ہے (۵۹۲)۔ جو اور گندم اور روایتی اجناس کی فصل کے علاوہ ریشم بھی پیدا کی جاتی ہے۔ انگور، شفتالو اور توت کے میوے خوب پکتے ہیں۔ ابا سند دریا کی ریت سے، خاکشوئی کے بعد (۵۹۳) سونا حاصل کیا جاتا ہے۔ جاڑے میں برفباری نہیں ہوتی۔

یہاں کے لوگ تھوڑے صاف دل بھی ہیں اور خوش وضع بھی۔ مجموعاً سنی بھی ہیں اور شیعہ (۵۹۴) بھی۔ پہلے یہاں کے راجے (۵۹۵) ہمیشہ یہاں حکومت کرتے تھے اور قلعوں میں رہتے تھے اور بغاوت ولوٹ مار میں خود کو بہادر جانتے تھے۔ بعض اوقات مغلوب ہو کر کشمیر کے حکمران کی طرف رجوع کرتے تھے۔ چنانچہ چغتائی بادشاہوں کے عہد

میں صوبہ کشمیر میں شامل ہو گئے تھے اور افغان دور میں باغی ہو گئے اور لاہور کے سکھوں (۵۹۶) کے زمانے میں محمد خان یہاں حکومت کرتا تھا۔

یاسین کے حاکم سلیمان شاہ نے محمد خان پر حملہ کر کے اسے ہٹا دیا اور گلگت پر قابض ہوا۔ اسکے بعد پونیال کے حاکم آزاد خان نے سلیمان شاہ کو قتل کر کے گلگت کو اپنے تصرّف میں کرلیا۔ پھر اس کے بعد نگری کے حکمران طیر شاہ نے آزاد خان کو جان سے مار کر حکومت کی دُلہن کو اپنی آغوش میں لایا اور خود بھی موت کے شبتان میں آسودگی پائی۔

اسکے بیٹے سکندر خان نے باپ کے ملک کو اپنے تصرف میں لایا۔ اسے سلیمان شاہ کے فرزند گوہر امان (۵۹۷) نے قتل کر کے گلگت کی حکومت اپنے ہاتھوں میں لے لی۔

۱۲۵۸ھ میں سکندر خان مقتول کے بھائی کریم خان نے کشمیر کے حاکم غلام محی الدین کی طرف رجوع کیا اور بھاری فوج کے ساتھ نطوشاہ (۵۹۸)، متھر اداس اسکی مدد کیلئے گلگت روانہ ہو گئے۔ اور جنگ وجدال کے بعد گوہر امان پونیال سے بھاگ گیا اور کریم خان گلگت کی حکومت پر مسلط ہو گیا۔ نطوشاہ قلعہ دار اور مددگار کی حیثیت میں وہیں پر رہا اور متھر اداس لوٹ آیا۔ اسکے بعد حکمت عملی سے کام لے کر نطوشاہ نے اطراف کے راجاؤں کے ساتھ باہمی اتحاد و یگانگت کے روابط قائم کئے اور خود گوہر امان کی بیٹی کے ساتھ عقد نکاح کیا اور ہونزی اور نگری کے راجاؤں کی بیٹیوں کو اپنے بیٹوں کیلئے نامزد کیا اور اس طرح سے امن و اعتبار کی فضا قائم کی (۵۹۹)۔

۱۲۶۱ھ میں سکھوں کی حکومت کے انقلاب کے وقت نطوشاہ نے کریم خان کی مدد سے اپنے تھانہ دار کو گلگت میں رکھ کر خود پنجاب کا رُخ کیا اور مہاراجہ گلاب سنگھ کے پاس اپنی ملازمت کے روابط استوار کر لئے اور دو انگریز (۶۰۰) صاحبان کے ساتھ حکومت گلگت کے

لئے گلگت پہنچا۔ انگریز صاحبان کو ساتھ لانے کی وجہ سے ہونزی کا راجہ نطو شاہ سے رنجیدہ خاطر ہو گیا اور اس نے مع کریم خان کے دونوں کو تلوار کی نذر کر دیا (۶۰۱) اور گلگت کے چند دیہات کو بھی غارت کر کے انہیں مٹا ڈالا۔

گوہر امان نے، جو پونیال اور یاسین کا حکمران تھا، صبح کے وقت گلگت کے پرگنہ دلیل (۶۰۲) پر قبضہ کیا۔ جموں (۶۰۳) کے مہاراجہ نے کشمیر سے فوج کی دو قطاریں بھیج دیں اور حصورہ اور اسکردو سے افواج اکٹھا کر کے گوہر امان کو گلگت سے بھگا دیا (۶۰۴)۔ کچھ عرصہ کے لئے فساد و عناد ختم ہوا۔

گلگت میں بھوپ سنگھ (۶۰۵) فوج کا کماندار اور سنت سنگھ تھانہ دار تھا۔ اس دوران میں گوہر امان کے بیٹوں (۶۰۶) ملک امان، میر ولی، میر غازی اور پہلوان بہادر نے دارڈو اور ہونزی وغیرہ کے لوگوں کے ساتھ متفق ہو کر نیلہ دار پہاڑ پر بھوپ سنگھ کو اپنے درمیان میں تین چار روز کیلئے روک کے رکھنے کے بعد گیارہ سو فوجیوں کی جماعت کے سمیت موت کے گھاٹ اُتار دیا اور دو سو سپاہیوں کو گرفتار کر کے انہیں مسلمان بنانے (۶۰۸) کے بعد بیچ ڈالا۔ صرف گائے کی دم پکڑ کر ایک عورت دریائی اباسند کو پار کر کے بھونجی پہنچی (۶۰۹)۔ گوہر امان نے گلگت میں حکومت کا علم لہرایا اور مہاراج کی فوج بھونجی میں وقت کے انتظار میں رہی (۶۱۰)۔

۱۲۷۳ھ (۶۱۱) میں گوہر امان کی وفات کے بعد جموں کے حکمران نے بھاری فوج ساتھ دے کر جنرل دیوی سنگھ کو اس ملک کی تسخیر کیلئے بھیج دیا۔ وہاں کے سرکش مقابلے کی تاب نہ لا کر بھاگ گئے۔ دیوی سنگھ نے یاسین تک کی حدود کو فتح کر کے سلیمان شاہ کے فرزند عظمت شاہ کو یاسین کی حکومت پر بیٹھا دیا اور عیسیٰ بہادر کو پونیال کی حکومت دیدی اور خود

لوٹ آیا۔

۱۲۷۶ھ میں گوہرامان کے فرزند (۶۱۲) نے پھر سے بغاوت کا جھنڈا بلند کیا اور مسٹر ہیپٹ صاحب کو قتل کر دیا۔ مہاراج رنبیر سنگھ نے جنرل ہوشیار کی افسری میں فتح مند افواج بھیج کر یاسین کے باشندوں کا قتل عام کر ڈالا۔ ملک امان چترال کی طرف بھاگ گیا اور جنرل ہوشیار بکمال جوش وخروش اور اقتدار کے ساتھ لوٹ آیا (۶۱۳)۔

مزید، گلگت کے مشرق میں ایک سنگلاخ درّے میں دو اور علاقے ہیں، ایک ہونزی ابا سندھ کے شمالی کنارے پر، اور دوسرا نگری اسکے جنوبی کنارے پر۔ دشوار گذار راستہ ہونے کی وجہ سے یہاں کے باشندے ہمیشہ سرکش اور رہزنی وقزاقی میں چالاک ہوتے ہیں۔ یارقند کی راہ کو اکثر لوٹ لیتے ہیں اور سب شیعہ ہیں۔ مہاراجہ رنبیر سنگھ نے ان کے ساتھ نرمی، الفت اور صلح وصفائی برت کو اپنا مطیع بنا دیا۔

مزید، گلگت کے مغرب میں دلیل نامی ملک واقع ہے، جہاں کے سب باشندے سنی مذہب ہیں۔ مہاراج رنبیر سنگھ نے ۱۲۸۳ھ (۶۱۴) میں وزیر زور آور سنگھ اور کرنیل بی، جی، سنگھ کی افسری میں ایک زبردست فوج اس علاقے کو فتح کرنے کیلئے بھیج دیا۔ مخالفین نے اپنے اندر مقابلہ کرنے کی طاقت نہ پا کر راہ فرار اختیار کی۔ کینہ کش بہادر دیہات کو غارت کر کے لوٹ آئے اور لوٹتے وقت برفباری کی وجہ سے لشکر جرار کو سخت تکلیف اُٹھانا پڑی۔

مزید، گلگت سے شمال میں دو پرگنہ جات (۶۱۵) اور ہیں، ایک یاسین اور دوسرا چترال۔ یہاں کے لوگ ہمیشہ باغی تھے اور لوٹ مار میں نیز بردہ فروشی میں ممتاز۔ ہمیشہ گلگت اور حصورہ وغیرہ اطراف میں غارتگری کر کے لوگوں کو بیچ ڈالتے تھے ۱۹۱۶ء

میں مہاراج رنبیر سنگھ نے یاسین پر قبضہ کر لیا اور آخر میں چترال کے حکمران ملک امان کے ساتھ صلح وصفائی اور عہد و پیمان کیئے جس کی وجہ سے مراعات دے کر یاسین کا ملک گوہر امان کے بیٹوں کے تصرف میں چھوڑ دیا گیا اور تب سے غارتگری، بردہ فروشی اور بغاوت وعناد کا قلع قمع ہو گیا۔

## دراوہ اور کرناہ

کشمیر سے شمال مغرب میں دو درّوں کے درمیان ایک پرگنہ میں واقع ہیں۔ دریائے کرشنہ گنگا ان کے بیچ میں گذرتا ہے۔ ان جگہوں میں زیرہ اور مکی اور کم قلیل شالی کی پیداوار ہوتی ہے۔ یہاں کے لوگ سنی ہیں اور کچھ ہندو بھی ہیں۔

پہلے یہ دنوں علاقے ہمیشہ کشمیر میں شامل تھے۔ چنانچہ چغتائی عہد میں ان جگہوں کا خراج کشمیر کے صوبہ داروں کی تنخواہ کیلئے مقرر تھا۔ دُرّانی بادشاہوں نے دونوں علاقے مظفر آباد کے حاکم محمود خان کی جاگیر میں دے دیئے اور محمود خان کے بیٹے ناصر علی خان نے اپنی ساری عمر میں یہاں حکومت کی۔ اس کے بعد اس کے بیٹوں منصور خان اور معزّ الدّین خان نے پوری آزادی کے ساتھ حکومت کے دن گذارے۔

سکھوں کے عہد میں منصور خان کے بیٹے شیر احمد خان نے گھوڑی کے معرکہ میں حسین خان کی مدد سے بغاوت کی زِرہ پہن لی تھی۔ آخر عاجزی وانکساری کے ساتھ فرمانبردار اور اطاعت گذار بن گیا اور کثیر ھدایا اور یرغمالیوں کی جماعت کو پیش کش کر دیا اور سکھوں کے زوال کے بعد مہاراجہ گلاب سنگھ کی اطاعت کا طوق گردن میں ڈال دیا۔ لیکن

ایام نحوست کے اثرات کے تحت ۱۲۸۱ھ ( ۱۹۲۱ بکرمی ) میں اس نے مہاراج کے ایک ملازم کے ساتھ نرمی کا برتاؤ نہیں کیا جس پر ایک زبردست فوج اسے سزا دینے کیلئے بھیج دی گئی اور اس کم ہمت نے راہ فرار اختیار کی اور اس کا ملک کشمیر میں شامل ہو گیا۔

کچھ عرصہ بعد شیر احمد خان پنجاب کی (۶۱۶) حکومت کی وساطت سے امان کی پناہ میں آ گیا اور مہاراج رنبیر سنگھ نے اس کی خطا کو عطا میں بدل دیا اور دیوہ سر پرگنہ میں چند گاؤں اس کی جاگیر کے لئے مقرر ہوئے۔

## شاردا

ایک چھوٹی جگہ ہے کرشنہ گنگا کے کنارے پر دراوہ پرگنہ سے مشرق میں، اور کشمیر سے ایک سو میل کے فاصلے پر شمال مغربی گوشے میں۔ ہندو اسے متبرک جانتے ہیں۔ قدیم وقت سے یہاں شاردا مندر موجود ہے۔

## دارِدُو

بلند پہاڑوں کے درمیان ایک وسیع ملک ہے۔ شاردا سے لے کر اباسند کے کنارے تک، غالباً دو سو میل کے فاصلے پر۔ یہاں باشندے وحشیوں کی مانند پہاڑوں کی چوٹیوں پر زندگی بسر کرتے ہیں اور رہزنی و غارتگری کرنے میں معروف۔ سب متعصب سنّی

ہیں۔ اپنے عالموں کی پیروی کرتے ہیں اور یوسف زئی قبیلے کے لوگوں کے ساتھ خود کو منسوب کرتے ہیں۔ نیلے رنگ کے لباس کو پسند کرتے ہیں۔ اس ملک میں چیلاس، تنگیر، پٹن، فولی، گور، تلیجا، سپالس، کاغان وغیرہ مشہور جگہیں ہیں۔ مغل بادشاہوں نے اپنے عہد میں ان کو نرمی و مدارات کے ساتھ مطیع بنالیا تھا اور افغان دور میں باغی ہو کر غارتگری کرنے کیلئے لڑتے رہے۔

مہاراج گلاب سنگھ نے سال ۱۲۶۷ھ (۶۱۷) (۱۹۰۷ بکرمی) میں دیوان ہری چند وغیرہ افسروں کو ایک کثیر فوج کے ساتھ چیلاس کے قلعہ کو جو ایک سخت، مضبوط پہاڑ پر بنا ہے، فتح کرنے کیلئے بھیجا۔ مہاراج رنبیر سنگھ خود سوپور میں رہا۔ تمام کسانوں کو بار برداری کیلئے ساتھ لے کر قلعۂ چیلاس کا محاصرہ کیا۔ کافی جنگ وجدل کے بعد قلعہ والے پانی کے بند ہو جانے کی وجہ سے مجبور ہو گئے اور امان کی پناہ میں آ گئے۔ ہری چند ظفریاب اور فتح مند ہو کر لوٹ گیا۔ تب سے چیلاس کے قلعہ میں مہاراج کا تھانہ دار متعین ہے اور مقررہ وقت پر سال ہا سال معمول کے ہدایات پہنچائے جاتے ہیں۔

اور داردو کے ملک میں اکثر جگہوں پر اباسند دریا وغیرہ کے کناروں کی ریت سے سونے کے ذرّے نکالتے ہیں۔ دراصل دارڈو کے پہاڑوں میں کسی بھی راجہ کشمیر اور اطراف کے راجاؤں نے کامل آزادی کے ساتھ حکومت نہیں کی ہوگی۔

## دچھنہ (۶۱۸) اور کھاورہ

کشمیر کے پرگنوں میں سے ایک پرگنہ ہے مغرب کی طرف۔ کیونکہ کشمیر کا دریا

بارہمولہ کے تنگ درّے سے مظفر آباد تک مغرب کی طرف سے ہی گذرتا ہے اور اس کے شمالی کنارے پر مظفر آباد سے بارہمولہ تک دچھنہ علاقہ واقع ہے اور جنوبی کنارے پر کھاورہ کا علاقہ مشہور ہے۔ اس درے کا فاصلہ بارہمولہ سے مظفر آباد تک ۹۴ میل ہے۔ یہاں کے لوگ اکثر سنی ہیں۔ بعض ہندو بھی ہیں۔ سب مسلح جنگجو اور سرکش۔ اس ملک کی زبان پہاڑی ہے۔ کشمیری سے بھی کم وبیش واقف ہیں۔

دچھنہ کے حدود میں بمبہ راجے ہمیشہ رئیس رہے ہیں اور کھاورہ کے نواحی میں کھکھ اور ہاتمال مشہور ہیں۔

## دچھنہ کے راجے

ان کو بُمہ کہتے ہیں اور بُمہ راجے بنی امیّہ (۶۱۹) قوم کے اُن لوگوں کی اولاد ہیں جنھوں نے بارہ سومہینوں تک دمشق اور شام میں بادشاہت کی۔ ان میں سے ایک شخص آوارہ گردی کی حالت میں بدخشان پہنچا اور وہاں چند پشتیں گذار دیں۔ ان میں سے ایک آدمی ہلاکو خان کی ملازمت میں داخل ہو گیا اور ذوالقدر خان کے ہمراہ ملک کشمیر میں وارد ہوا اور جب واپس ہو کر دمتور پہنچا تو اس علاقے کے ایک رئیس نے اسے اپنا خانہ داماد بنا لیا۔ کچھ عرصہ گذرنے کے بعد داماد کے دماغ میں سرکشی کا خیال پا کر اور افراسیاب کی طرح خوف کھا کر اس نے داماد کو سیاوش کی طرح قتل کر دیا۔ چونکہ اس کی بیوی حاملہ تھی، اس نے خسرو کی مانند ایک بیٹا جنا۔ جب یہ بیٹا بالغ ہوا تو اپنے باپ کے قتل ہونے کی خبر سن کر اس کی غیرت کی چنگاری بھڑک اٹھی اور اس نے رات کے وقت اپنے ماں اور نانا دونوں کو قتل کر دیا اور

مال و دولت اور ساری جائیداد پر قابض ہو گیا۔

اس کے بعد اس کا ایک بیٹا صفدر خان، جو بہادری اور جرأت میں ایک ممتاز جوان آدمی تھا، پکھلی کے حکمران سلطان محمد خان کے پاس فوج کا سردار بن گیا۔ حسن خدمت کے صلے میں سلطان نے اسے دمتور کے علاقے میں سے چند گاؤں جاگیر میں دے دیئے۔ چونکہ یہ خود کو بنی امیہّ سے منسوب کرتے تھے، عوام بنوامیہ کو بُمو کہنے لگے، جیسے ذولقدر خان کو لوگ ذوالجو کہا کرتے تھے۔

غرض سلطان حسن شاہ کے زمانے تک یہ سلاطین کشمیر کی متابعت میں تھے اور چک بادشاہوں کے عہد میں بغاوت کا لباس پہن کر اطراف میں لوٹ مار کرنے لگے۔ ان ایام میں مظفر خان ایک نامی گرامی صاحب ثروت و شجاعت بن چکا تھا۔ اس نے ۹۶۲ سنہ (۶۲۰) میں مظفر آباد کا قصبہ اپنے نام سے آباد کیا اور اسے اپنا دارالحکومت قرار دے کر پکھلی، دمتور، کاغان، دچھنہ اور کھاورہ وغیرہ علاقوں کی حدود تک دست اندازی کی اور اپنی بادشاہی اور راجگی کا علم گاڑ دیا۔

اکبر شاہ نے راجہ بھگوان داس کی سفارش پر اور اس مدد کے پیش نظر جو یوسف شاہ کے خلاف معرکہ آرائی میں اس نے راجہ کی کی تھی دچھنہ پہاڑ سے اس کی جاگیر میں توسیع کی اور شاہانہ عاطفت سے نوازا۔ ۱۱۲۶ سنہ میں مظفر خان کے فرزند ہیبت خان نے بغاوت کے گریبان سے سر نکال کر کشمیر کے اطراف میں لوٹ مار کرنی شروع کی۔ نائب صوبہ علی محمد خان نے رئیسوں اور کشمیر کے منصب داروں کی ایک جماعت کے ساتھ اس کی گوشمالی کیلئے اس پر چڑھائی کی۔ کافی جنگ و جدل کے بعد ہیبت خان نے شاہی فوج کو شکست دی اور لشکر کے افسروں کو زندان میں ڈال دیا۔ اس جدوجہد کے نتیجے میں دیوان صوبہ عبدالعظیم

خان نے کثیر فوج کے ساتھ عہد نامہ مظفر آباد انجام دے کر ایک بڑی جماعت کو قتل کر دیا۔ آخر صلح ہونے پر ہیبت خان کے بیٹے معز الدین خان کو یرغمال بنا کے فتنہ برپا کر دیا۔ ہیبت خان کی وفات کے بعد اس کے بیٹے محمود خان نے ببر اللہ خان کے بہکانے پر بغاوت کی اور ملک کشمیر کو کئی بار غارت کیا۔ ببر اللہ کی بغاوت کے ضمن میں اس کی حقیقت بیان ہوگی۔

افغان بادشاہوں نے محمود خان کو کشمیر میں آنے جانے کی بنا پر دہلی کے بادشاہوں کی جاگیر کے علاوہ، دراوہ اور کرناہ کے علاقے اور کامراج کے علاقے سے ایک لاکھ اور پچاس ہزار روپے دے دیئے۔ کچھ عرصہ عناد و فساد سے جاگیروں کی آمدنی کھا کھا کر گذارا۔ لیکن جس وقت کریم خان کشمیر کی صوبہ داری پر مقرر ہو کر آرہا تھا تو راستے میں امیر خان بمو نے اس کی سخت مزاحمت (۶۲۱) کی لیکن کریم داد کافی تکلیف اُٹھا کر دچھنہ پہاڑوں کو عبور کر کے کشمیر میں داخل ہوا اور کشمیر میں انتظام بحال کرنے کے بعد پہاڑی باغیوں کی چارہ جوئی کیلئے کثیر فوج بھیج کر کھکھہ اور بمہ کے بہت سے لوگوں کو تہہ تیغ کر دیا۔ البتہ کلی طور پر اصلاح نہیں کر سکا۔

محمود خان کے فوت ہو جانے کے بعد اس کے بیٹوں حسن علی خان، ناصر علی خان اور اکبر علی خان نے باقی ماندہ مقبوضہ ملک کو شریکوں میں تقسیم کر دیا۔ حسن علی خان کے حصے میں مظفر آباد سے ہٹیاں تک اور پکھلی کے مقبوضہ گاؤں اور کشتی کا محصول گذر، ناصر علی خان کے حصے میں دراوہ اور کرناہ کے علاقے، اکبر علی خان کے حصے میں گھوڑی، فتح علی خان (جو مظفر خان کی اولاد میں سے تھا) کے حصے میں ہٹیاں سے کھٹائی تک علاقہ اور اسکے بھائی ابراہیم خان کے حصے میں کھٹائی سے بارہمولہ تک اور کام بخش خان کے حصے میں کامراج کی جاگیر کشمیر سے پچاس ہزار خروار آئے اور اس طرح سے انہوں نے جاگیر کو آپس میں بانٹ

دیا۔

ان کی حکومت میں زوال آنے کے بعد ان کے بیٹے یادگار کے طور پر باقی رہے۔ حسن علی خان سے زبردست خان مظفر آباد میں، اکبر علی خان سے نجف خان گھوڑی میں، معز الدین خان اور منصور خان کرناہ میں، اور کام بخش خان کا بیٹا صفدر علی خان کامراج میں۔ فتح علی خان کے بیٹے مظفر خان نے کھٹائی میں اور ہر کسی نے اپنے طور پر اپنی حکومت کا ڈول بجا کر کچھ وقت گذر دیا۔

جب ہری سنگھ (۶۲۲) کشمیر کا حاکم بن گیا تھا تو اس نے کھاورہ سے چکار تک کے علاقے پر قبضہ کر کے قلعے تعمیر کروائے اور کھٹائی کا راجہ مظفر خان اپنے شریکوں کے ہاتھوں تنگ آکر بھاگ گیا اور ہری سنگھ کی پناہ میں آگیا۔ ہری سنگھ نے اسے کھٹائی سے بارہمولہ تک کے علاقے کی حکومت دے دی اور سالانہ چند ہزار روپے بطور نذرانہ مقرر کر کے اسے کامراج کی جاگیر سے آزاد کر دیا۔ کچھ عرصہ بعد اس کی وفات ہوگئی اور اس کا بیٹا زبردست خان اس کی جگہ پر بیٹھا۔ زبردست خان بدستور مظفر آباد کا مستقل حکمران تھا۔ موتی رام کے وہاں سے روانہ ہونے پر اس (زبردست خان) سے اس کی خدمت میں کوئی قصور سرزد ہوا جس کی وجہ سے کرپا رام نے بھاری فوج کے ساتھ مظفر آباد پر حملہ کیا۔ زبردست خان نے کھکھ اور بمبہ لوگوں کی جماعت کے ساتھ اول تو خالصہ فوج کی طاقت مٹا ڈالی لیکن بعد میں گنیش پنڈت کے (۶۲۳) منصوبے کے مطابق آپس میں صلح ہوگئی اور دیوان نذرانہ اور یرغمال لے کر لوٹ آیا۔

جب میاں سنگھ کشمیر کا حاکم ہو گیا تو زبردست خان نے اپنے پوتے رحمت اللہ خان کو، جو حسن صورت میں واقعاً رحمت کی ایک نشانی تھا، تحفہ و ہدایا دے کر بطور یرغمال بھیج دیا۔

میاں سنگھ اس کی خوبصورتی اور خوش سیرتی کو دیکھ کر بہت خوش ہوا اور گوناگوں توجہات سے اسے نواز کر اپنے پاس رکھا اور کرناہ کے راجہ معزالدین خان کی بیٹی کے ساتھ اس کا عقد کر کے اس کی عزت افزائی کی۔

جب شیخ غلام محی الدین (۶۲۴) کشمیر کا حاکم بن گیا، اس نے پہاڑی راجاؤں سے ہر ایک سے یرغمالی لئے اور ضبط و ربط قائم کیا۔ سال ۱۲۶۰ھ (۱۷۹۹ بکرمی) میں سلطنت لاہور کے فتنہ کی خبر سن کر پہاڑی راجاؤں کے یرغمالیوں کو رات کے وقت خلوت میں بلا کر اس نے ان سب کو شورش و فساد کے خوف سے قید کر دیا اور رحمت اللہ جو بہت نازک مزاج تھا قید کی سختی کو برداشت نہ کرنے کی وجہ سے وفات پا گیا۔ حاکم نے اس کی میت کو مظفرآباد بھیج دیا۔ جہاں وہ اپنے آباء کے مزار میں دفن ہوا اور زبردست خان کبھی کبھی اس کی قبر پر فاتحہ پڑھنے کیلئے آتا رہتا تھا۔ حسین خان نے، جو اس کا بھتیجا تھا، اپنے چچا کو چند خواص کے ساتھ گرفتار کر کے تھانہ دار کی مدد سے حاکم صوبہ کے پاس بھیج دیا۔ جہاں حاکم کے حکم سے اسے قید میں ڈال دیا گیا۔ حسین خان کو اپنے دل کی مراد کے مطابق آزادی کے ساتھ حکومت مل گئی لیکن حاکم نے تھانہ دار کو فرمان بھیجا کہ حسین خان کی حکومت کو کوئی دقعت نہ دے اور اپنے بیٹے کو حکومت کا انتظام کرنے پر مقرر کرے۔ حسین خان نے رنجیدہ خاطر کر دینے والی یہ خبر سن کر گھوڑی کے نجف خان کے ساتھ صلاح مشورہ کیا اور بغاوت کرنے کے خیال سے قلعہ کے تھانہ دار کو بے دخل کر دیا۔ خطہ کشمیر دل پذیر کے حاکم نے اس شریر کو سزا دینے کیلئے مرزا ایوب اور پنڈت راجہ کاک کی افسری میں کثیر فوج بھیج دی اور گھوڑی کے نواحی میں فریقین کی آپس میں لڑائی ہوئی۔ مصلحت کے پیش نظر حسین خان میدان جنگ سے بھاگ نکلا اور حاکم کی فوج شادمان اور فتحیاب ہو کر بیٹھ گئی اور گھوڑی میں ایک قلعہ کی بنیاد ڈال دی۔

حسین خان اور منصور خان کے بیٹے شیر خان نے پہاڑوں کے تمام راجاؤں کے ساتھ مل کر اور نیام سے اپنی خون آشام تلواریں نکال کر حاکم کی فوجوں کا قتل عام کر دیا۔ اس جنگ و جدل میں ایک کثیر جماعت کو گرفتار کر کے بعضوں کو جبراً مسلمان بنایا اور بعضوں کے سر کے بال، داڑھی اور بھنوئیں تراش کے اور ختنہ کرا کے نیز ان کے کان اور ناک کاٹ کے حاکم کے پاس پیش کش کے طور پر بھیج دیا اور مرزا ایوب فوجی افسر کو کاغان میں قید میں ڈال دیا اور پہاڑی علاقے پر قبضہ کیا۔ شیر احمد خان نے کامراج میں بغاوت کا جھنڈا بلند کیا۔ اور تاراج کر کے لوگوں کے مال و مویشی کو لوٹ لیا اور ٹیکا رام بھان کو عید رمضان کے دن بانڈی پور سے گرفتار کر کے کرناہ میں قید خانے میں بند کر دیا۔ نطو شاہ (۶۲۵) اور سجان سنگھ نے شیر احمد خان کے ساتھ مقابلہ کرنے کیلئے کامراج میں بغاوت کی لیکن مایوسی اور نا اُمیدی کے سوا انہیں کچھ حاصل نہ ہوا۔

جب لاہور کے حکمران کے کانوں میں یہ وحشت آسا اطلاع پہنچی تو اس نے فوج کثیر کے تلف ہو جانے اور وقاحت سے معمور شرمناک خفت کے اس واقعہ کیلئے حاکم کشمیر کو قصوروار ٹھہرایا اور اس پر چار لاکھ روپے کی رقم جرمانہ کے طور پر عائد کی۔ گلاب سنگھ نے پوہ وندی کو چار ہزار سپاہیوں کی طاقت ساتھ دے کر ہزارہ کی راہ سے مظفر آباد کیلئے روانہ کیا اور غلام محی الدین کے فرزند شیخ امام الدین اور بشن سنگھ اور جھنڈا سنگھ کو پیادہ و سوار چار ہزار سپاہیوں پر مشتمل فوج کے ہمراہ پونچھ کی راہ سے پہاڑوں کے سرکشوں اور باغیوں کی سرکوبی کیلئے بھیج دیا۔

جب شیخ امام الدین (۶۲۶) پونچھ میں پہنچا تو وہاں تخت لاہور کے اُلٹ جانے اور شیر سنگھ (۶۲۷) کے قتل ہونے کی خبر سن کر خود کو بڑی عجلت کے ساتھ شہر میں پہنچا دیا۔ جھنڈا

سنگھ اور بشن سنگھ نے کامراج کے حدود میں شیر احمد خان کے خلاف جنگ کرنے میں نمایاں جانفشانی کا مظاہرہ کیا لیکن دشمنوں کو ملک سے باہر نہ نکال سکے۔ آخر کار امام الدین نے زبردست خان کو قید سے رہا کر کے خلعت سے نوازا اور پچاس ہزار روپے جرمانے کے طور پر اس سے وصول کر کے راجہ فقیر اللہ کی ہمراہی میں (جو رحیم اللہ کا فرزند تھا) مظفر آباد بھیج دیا۔ اور فقیر اللہ خان نے زبردست خان کو بدستور حکومت پر آزادی کے ساتھ برقرار رکھا اور جرمانے کی رقم وصول کرنے کیلئے خود مظفر آباد کے قلعہ میں سکونت اختیار کی اور اپنے بھائی ایوب خان، جو کاغان میں گھوڑی کے معرکہ میں قید تھا، کے محافظوں کو بہانے سے شیرینی میں دھتورہ کے بیج کھلا کر بیہوش کر دیا تاکہ ایوب خان کو باہر نکال لائے۔

کچھ عرصہ بعد زبردست خان کو اجل کے ہاتھوں کا شکار ہونا پڑا اور حسین خان کو زبردستی کئے بغیر آزاد حکومت مل گئی۔ امام الدین نے پہاڑی راجاؤں کے ساتھ حسن سلوک روا رکھا اور راجہ معز الدین کی بیٹی کو، جو مرحوم رحمت اللہ خان کی بیوہ تھی، اپنے نکاح میں لے آیا اور بمبو قبیلے کے ساتھ کامل روابط قائم کئے اور سخاوت و بخشش اور مراعات سے کام لے کر ہر ایک کو نوازا اور یرغمالیوں کو رہا کر کے شورش و فساد کے خطرات کو دُور کر دیا۔

ان ہی ایام میں (۶۲۸) مہاراج گلاب سنگھ ریاست کشمیر کا حاکم بن گیا اور اس نے پہاڑی راجاؤں کو اپنا مطیع و فرمانبردار بنا لیا اور ہر ایک کو اس کی حیثیت و وقار کے مطابق زمینیں عطا کیں۔ تب سے باغیوں اور اہل فساد کے جھگڑے اور فساد ختم ہو گئے۔

## کھاورہ کے راجے

کھکھ اور ہاتمال راجوں کی حقیقت کشمیر (۶۲۹) کی تواریخ میں کسی جگہ نظر نہیں

آئی۔ مشہور ہے کہ راجپوت قوم کے کھکھو اور ہاتھو نام کے دو بھائی نمک سار کے علاقے میں رہتے تھے اور کسی وجہ سے دونوں مسلمان ہو گئے۔ کھکھو کا نام کھکھی خان اور ہاتھوں کا حاتم خان پڑ گیا اور دونوں سلطان زین العابدین کے ملازم ہو گئے اور خراسان کے سفر میں، جب کہ وہ تیمور شاہ کا یرغمال بن گیا، دونوں نے اس کی مناسب خدمت کر کے اسے خوش کر دیا۔ اسی خوشی کی حالت میں انہوں نے اس سے جاگیر کی سند لکھ کے لے لی اور جب زین العابدین تخت شاہی پر بیٹھا تو وعدہ پورا کر کے اس نے ان کو چند گاؤں جاگیر میں دے دیئے۔ جہاں انہوں نے سکونت اختیار کر کے قوت و ثروت حاصل کی۔

چکوں کے عہد میں کیچم خان بدانتظامی کے نتیجے میں سرکش بن گیا تھا لیکن چغتائی عہد میں اس کے فرزندوں نے فرمان برداری کا طوق گردن میں ڈال کے مظفر خان بمبہ کی خیر خواہی کی وجہ سے اپنی جاگیر میں وسعت کروائی۔ تب سے دچھنہ کے راجاؤں کے ساتھ متفق ہو کے سرکشی اور بغاوت میں یکجا ہو گئے۔

اب کھکھی خان کے وارثوں کو کھکھ اور حاتم خان کے وارثوں کو ہاتمال کہتے ہیں۔ بغاوت اور بہادری میں یہ دچھنہ کے راجوں سے شجاعت میں کمتر ہیں۔ افغان دور میں کروہن پرگنہ سے کھاورہ کے جاگیر کے علاوہ انہیں بیس ہزار روپے کی جاگیر بھی ملتی تھی۔ جب ہری سنگھ کشمیر کا حاکم (۶۳۰) بن گیا تو اس نے سرافراز خان کھکھ پر جو کھاورہ کے راجاؤں کا پیشوا تھا، قابو پا کر لاہور بھیج دیا اور اس کے بھائی غلام خان (۶۳۱) کو شیر گڈھ کے جیل خانے میں جان سے مار ڈالا اور کھاورہ کے علاقے کو چکار تک اپنے قبضے میں لا کر جگہ جگہ قلعوں کو ڈھا دیا۔ مہاراج گلاب سنگھ نے ہر ایک کے حق میں بقدرِ کفاف معیشت کی رقم مقرر کر کے ان کو سرکشی اور تاخت و تاراج کرنے اور ظلم ڈھانے سے باز رکھا۔

حقیقت یہ ہے کہ کھکھ اور بمبہ حضرات نے، جو دونوں عالی نسل طبقے کے ہیں، سفاکی، بیباکی، غارتگری اور رہزنی میں خاصی جوانمردی اور پھرتی دکھائی ہے۔ چغتائی بادشاہوں، افغانوں اور لاہور کے سکھوں کے عہد میں حکومت ہاتھ میں ہونے کے باوجود انہوں نے ملک کشمیر کو لوٹنے، پامال کرنے، غارت و تاراج کرنے اور ظلم وکشت وخون کرنے میں کوئی دقیقہ فروگذاشت نہیں کیا ہے۔ بالخصوص ہندوؤں کے حق میں ان کی اذیتیں اور تکلیفیں بڑھ چڑھ کر تھیں۔ صرف مہاراج گلاب سنگھ کے عہد میں خدا کے لوگ امن وامان کی استوار فصیل میں محفوظ تھے اور رہزن لوگ عدم کے غاروں میں ساکن۔ چنانچہ اگر کسی کمزور اور ضعیف آدمی کے ساتھ ایک لاکھ روپے کی بھی رقم ہوتی تو وہ کسی کا نہ خوف کرتا اور نہ ہی پرواہ۔

## پنوچھ کا علاقہ

ملک کشمیر سے مغرب کی جانب واقع ہے۔ بحر محیط سے اس کی بلندی ۳۳۰۰ رفٹ اور سرینگر کی مسافت کے بعد بارہمولہ کی راہ سے ۸۰ ر میل اور توسہ میدان کی راہ سے کل ۴۰ ر میل دور ہے۔ کہتے ہیں راجہ للتادت کا آباد کیا ہوا ہے۔ یہاں کے باشندے ہندو اور مسلمان ہیں۔ شہر میں کم قلیل برفباری ہوتی ہے اور فوراً ہی پگھلتی ہے۔

یہاں کی ہوا برسات میں موذی ہو جاتی ہے کہ ہوا میں بدبو اور خلط صفرا کے ہیجان سے تمام جانداروں یعنی انسانوں، حیوانوں، کیڑوں اور مچھلیوں تک میں تپ لرزہ پیدا ہو جاتا ہے۔ جس کی وجہ سے یہاں کے لوگ گرما کے موسم میں پہاڑوں پر چلے جاتے ہیں۔

اگلے زمانے میں بڈشاہ کے عہد تک لوگ کشمیر میں شامل تھے لیکن چکوں کے زمانے میں سرکش ہوگئے اور ۱۰۱۹ھ (۶۳۲) میں جہانگیر بادشاہ اسے اپنے قبضہ اقتدار میں لے آیا اور حیدر ملک کے اہتمام سے جامع مسجد تعمیر کروائی۔

محمد شاہ کے (۶۳۳) وقت میں پنوچھ کے حکمران محمد ولی اور محمد زمان نے برکات خان کی تحریک پر کشمیر میں داخل ہوکر غارتگری کی اور تباہی پھیلا دی۔ آخر برکات خان کے ہاتھوں قتل ہوئے۔

افغانوں کے عہد میں رستم خان باغی ہوگیا تھا۔ سردار عبداللہ خان نے اپنے بیٹے شیر باز خان کو، وزیر رُوح اللہ خان جواُن کا مدار المہام تھا، کے ورغلانے پر، کشمیر میں قید کر کے اسے زہر دیا اور وزیر رُوح اللہ کو راجہ کا خطاب دیا۔ اسکے بعد عظیم خان کی طرف سے سکھوں کے خلاف جنگ میں روح اللہ خان نے کارہای نمایاں انجام دیکر افتخار و اعتبار پیدا کرلیا اور پھر وفات پائی۔ اور اس کی جگہ اس کا بیٹا میر باز خان ایک عرصہ تک حکمرانی کرتا رہا۔

۱۸۹۹ھ بکرمی (۶۳۴) میں مہاراجہ گلاب سنگھ نے اس ملک کو فتح کر کے تمام سرکشوں اور پہاڑی باغیوں کو موت کے گھاٹ اُتارا۔ ملی سُودن اور سبز علی سودن کی کھال اُتروا کر خدا کے بندوں کو امن وسلامتی بخشی۔ اس کے بعد کئی سال تک یہاں کا خراج جموں کے خزانے میں داخل ہوتا رہا لیکن بعد میں (۶۳۵) راجہ دھیان سنگھ (۶۳۶) کے بیٹے راجہ موتی سنگھ کی جاگیر کے حق میں بحال کیا گیا۔

## راجور کا علاقہ

کشمیر سے مغرب اور جنوبی گوشے کی جانب دریا کے دائیں کنارے بلندی پر واقع ہے۔ سطح بحر محیط سے اس کی بلندی ۳۰۹۴ رفٹ ہے۔ سرینگر سے ۹۷ رمیل کی مسافت طے کرنے کے بعد آباد عمارتوں، بازاروں، مسجدوں، مندروں، باغوں، درختوں اور پھلوں کے ساتھ خوشنما دکھائی دیتا ہے۔ مہاراجہ گلاب سنگھ نے اس کا نام رام پور رکھا ہے۔ برسات کے موسم میں پونچھ کی طرح یہاں بھی ہر کوئی تپ لرزہ میں مبتلا ہو جاتا ہے۔ یہاں کے لوگ خوش وضع ہیں جو ہندو بھی ہیں اور مسلمان بھی۔

قدیم زمانے سے راجاؤں کی ریاست رہی ہے جنہوں نے بڈشاہ کے زمانے میں دین اسلام کو قبول کیا اور صوبہ کشمیر کے مطیع ہو گئے۔ پادشاہان دُرّان (۶۳۷) کے وقت میں خودسر ہو گئے اور سکھوں کے عہد میں رنجیت سنگھ کی اطاعت گذاری کرتے رہے ۱۹۰۴ بکرمی (۱۸۴۷ء) مہاراجہ گلاب سنگھ نے مذکورہ قصبے کو اطراف کے حدود سمیت اپنے ماتحت کیا اور وہاں کے راجے وسطی ہندوستان میں بھاگ کے چلے گئے اور انگریزی حکومت (۶۳۸) سے اپنی معیشت کی رقم لیتے رہے۔

## بانہال کا علاقہ

کشمیر کے جنوب کی طرف ۶۳ رمیل کی دُوری پر واقع ہے۔ اس کی بلندی ۵۵۸۰ ر

فٹ ہے۔ لوگ ہندو اور مسلمان مخلوط ہیں۔ کشمیری زبان میں بات کرتے ہیں۔ گرما کے موسم میں تپ لرزہ کی وافر بیماری ہوتی ہے۔ علاقہ ہمیشہ کشمیر میں شامل رہا ہے۔ سکھوں کے زوال کے بعد مہاراجہ گلاب سنگھ نے اسے جموں میں شامل کر دیا ہے۔

## کھُل

ایک پرگنہ ہے بانہال کے مغرب میں پہاڑوں کے درمیان۔ یہاں کے لوگ بیشتر رہزنی اور لوٹ مار کرنے میں مشہور تھے۔ چنانچہ ذوالچو کے حادثہ کے بعد بار رہا کشمیر کو لوٹ لیا۔

یہاں کے لوگ اکثر ڈوگرہ مذہب کے ہیں۔ بعض مسلمان بھی ہیں۔ اس سے پہلے یہاں کے ہندو مسلمانوں کے ساتھ رشتے باندھا کرتے تھے لیکن اس رسم کو مہاراجہ گلاب سنگھ کے عہد میں موقوف کر دیا گیا۔ بدلی اور ٹیل اور اطراف کی دوسری جگہیں اس میں شامل ہیں۔

## مرووارڑون

ایک پرگنہ ہے کشمیر کے درّوں کے درمیان جنوب مشرقی گوشے میں ۹۶ میل کی دُوری پر۔ کشمیر میں ہمیشہ شامل تھا۔ لوگ یہاں کے مسلمان ہیں اور کشمیری زبان بولتے ہیں۔

# کشتواڑ

ایک درّے میں واقع ہے کشمیر کے جنوب میں مرو کے راستے سے ایک سو بیس میل کی مسافت پر۔ بحر محیط کی سطح سے ۵۴۵۰ رفٹ (۶۳۹) کی بلندی پر ہے۔ یہاں کی آب و ہوا اچھی ہے۔ درخت اور پھل مرغوب طبع۔ برفباری کم ہی ہوتی ہے اور فوراً ہی مٹ بھی جاتی ہے۔ یہاں کے اصلی باشندے ٹھکر گدی قوم کے لوگ ہیں۔ کشمیر کے بہت سے لوگ یہاں شالبافی کا کام کرتے ہیں۔

آج سے پہلے یہاں کی عورتیں سحر اور جادوگری میں شہرت رکھتی تھیں اور ان کو ڈائن کہتے تھے۔ مہاراجہ گلاب سنگھ نے ان کی تنبیہ کی اور ان کا صحیح تدارک کر کے ان کی عملیات کو ختم کر ڈالا۔ یہاں کے قدیم راجے راجپوت قوم کے ہمیشہ خود ہی حکومت کیا کرتے تھے۔

سال ۹۰۰ھ (۶۴۰) میں سید شاہ فریدؒ نے (۶۴۱)، جو ایک روشن دل فقیر تھے، کشتواڑ کے راجہ کو مسلمان کر کے اپنا مرید بنالیا۔ اسکے بعد مغل بادشاہوں نے اس کا احترام کیا اور عالمگیری دور میں اسے سعادت یار خان کا لقب (۶۴۲) ملا۔

آخر راجہ تیغ سنگھ (۶۴۳)، جو سیف خان کے نام سے جانے جاتے تھے، وہاں کی مسند حکومت پر استقلال کے ساتھ بیٹھ گئے۔ وزیر لکھپت رائے جوان کا خاص الخاص وزیر تھا، نے ان سے ناراض (۶۴۴) ہو کر مہاراجہ گلاب سنگھ کو کشتواڑ فتح کرنے کی ترغیب دے کر اُکسایا۔ یہاں تک کہ ۱۸۷۷ء بکرمی (۶۴۵) میں مہاراج نے لشکر جرّار کشتواڑ بھیج دی اور وہاں کا راجہ خود میں مقابلہ کرنے کی طاقت نہ دیکھ کر لاہور بھاگ گیا اور مہاراجہ گلاب سنگھ نے کشتواڑ اور بھدرواہ (۶۴۶) کے علاقوں پر کمال اقتدار کے ساتھ قبضہ کرلیا۔

# یادداشتیں

(۱) صحیح ہے ''مُلک لالہ رُخ''۔ انگریزی زبان میں لالہ رُخ شہزادی کی منظوم حکایت کو جو ایک خیالی داستان ہے، تھامس مور نے شالا مار باغ اور جھیل ڈل کے حسن کی تعریف میں بیان کیا ہے۔ سال (۱۹۰۱ء) میں یہ کتاب فریڈرک ولان نے بیڈفورڈ سٹریٹ لندن سے چھاپی ہے۔ اس تصنیف کی وجہ سے یورپی ممالک میں عام طور پر اور سارے انگلستان میں بالخصوص سارا خطہ کشمیر لالہ رخ کا ملک کے نام سے مشہور ہوا۔

(۲) ملکی تقسیم کی طرف اشارہ ہے جو اگلے حاکموں نے انتظام کی آسانی کے پیش نظر اس ملک کا کیا تھا۔ ہر زمانے میں پرگنہ جات کی تعداد مختلف ہوا کرتی تھی۔ ابوالفضل نے آئین اکبری میں ان کی تعداد ۳۳ رتک پہنچائی ہے اور قاضی علی نے ۴۱ رتک۔ سٹاین نے ''دی این شنٹ جیوگرانی آف کشمیر'' میں ان کی تعدا کے ۴۳ رنام گنوائے ہیں۔

(۳) دل، دماغ اور جگر۔

(۴) صحیح کنول ہے جو نیلوفر کی ایک قسم ہے۔

(۵) مطابق جولائی، اگست اور ستمبر عیسوی کلینڈر کے مہینے۔

(۶) مطابق اکتوبر، نومبر اور دسمبر عیسوی کلینڈر کے مہینے۔

(۷) مختلف اقسام کی سبزیوں کو سکھانے کا عمل۔

(۸) پرانی چادروں کو جب صابن میں پاؤں کے نیچے مالیدہ کرتے ہیں تو وہی کپڑا کشمیریوں میں پٹو کہلاتا ہے۔

(۹) مطابق دسمبر، جنوری، فروری عیسوی کلینڈر کے مہینے۔

(۱۰) موجودہ زمانے میں اب ایسے سخت جاڑے دیکھنے میں نہیں آئے۔

(۱۱) اس دریا کا کشمیری نام ویتھ ہے جو فارسی میں بہت ہوا۔ یہی دریا قدیم یونانی علماء کے نزدیک ہائے ڈس پس اور سنسکرت علماء میں وتستہ کے نام سے مشہور ہے۔ اُردو اور پنجابی زبانوں میں جہلم کہلاتا ہے۔

(۱۲) دریای بہت یا دریائے جہلم اور جھیل اولر بلکہ ڈل جھیل اب بھی شدت کی سردی کی وجہ سے جم جاتے ہیں۔ سال ۱۹۷۰ء سے آج تک سال (۱۹۹۱ء) اولر ڈل جھیل تین بار جم چکیں۔ جھیل ڈل کی منجمد سطح پر لڑکے فٹ بال، ہاکی اور کرکٹ بھی کھیل چکے۔ ایک بار تو اس کے اُوپر جیپ (Jeep) بھی تھوڑے فاصلے تک چلائی گئی۔

(۱۳) انگریزی سال: ۱۰۶۷ء=۱۲۵۶ء۔ ۱۱۷۷ھ=۱۷۶۳ء۔ ۱۱۹۵ھ=۱۷۸۱ء۔ ۱۲۴۸ھ=۱۸۳۲ء۔

۱۲۹۱ھ = ۱۸۷۸ء۔

(۱۴) بظاہر کاتب کی غلطی ہے۔ مصنف کی مراد ویلی آف کشمیر کے مؤلف مسٹر لارنس سے ہے۔

(۱۵) لار پرگنہ میں۔ اس کی بلندی ۱۶۸۹۰ رفٹ ہے (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ مصنف پنڈت آنند کول)۔

(۱۶) شیو یا سدا شیو۔ ہندوؤں کے ایک خدا کا نام جو ان کے خیال میں پیدا کرنے والا اور فنا کر دینے والا ہے دنیا کا۔ شیو کے بت مختلف شکلوں میں جو اس کی نرمی اور غصے کو ظاہر کرتے ہیں ہندوستان کے مندروں میں ملتے ہیں۔ شیو فرقہ آج کل کے ہندوؤں کے تین بڑے فرقوں میں سے ایک ہے۔ کشمیر شوازم کے مصنف کی تحقیق کے بموجب شو مذہب نویں صدی کی ابتدا یا آٹھویں صدی کے اختتام پر کشمیر میں داخل ہوا۔ اور "قرون وسطی میں ہندوستانی تہذیب" کے مصنف کے بقول جس شخص نے کشمیر میں پہلی بار شیو کی تعلیمات کو رواج دیا اس کا نام تھا، سومانند۔ یہ شخص دسویں صدی میں رہتا تھا اور شیو درشٹی (شیو کا نظریہ) کے نام سے اس نے ایک کتاب بھی لکھی۔ اس فرقے کے عالموں نے اب تک اس مذہب پر بہت سی کتابیں لکھی ہیں جن میں اسی کتابیں مختلف اوقات میں شیو کی تعلیمات پر حکومت جموں و کشمیر کے ریسرچ ڈیپارٹمنٹ سے چھپی ہیں۔

(۱۷) پاربتی نام ہے سدا شیو کی بیوی کا۔

(۱۸) اول پیدائش۔

(۱۹) ہرموکھٹہ گنگا دریا کا نام ہے۔

(۲۰) کون سرانی، کوثر یا ویشن پاد۔ پہاڑ کی یہ چوٹیاں جو برف سے ڈھکی رہتی ہیں بانہال درہ سے مغرب کی طرف واقع ہیں۔ انہیں برہما کی چوٹی بھی کہتے ہیں (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ مصنف آنند کول، ص ۲)۔

(۲۱) کاجی ناگ پہاڑ یا کالی ناگ اتر مچھی پورہ میں واقع ہے (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ مصنف آنند کول، ص ۲)۔

(۲۲) قدیم زمانے میں کشمیر کی موجودہ دو حصوں کامراج اور مراز میں تقسیم کیا گیا تھا۔ سنسکرت میں یہ دراصل کا مراجیہ اور مرو راجیہ تھے۔ مروجہ آراء کے مطابق مراز سے مراد کشمیر کا وہ ایک حصہ ہے جو سرینگر تک دریائے جہلم کے دنوں اطراف میں پھیلا ہوا ہے۔ اور کامراج سے مراد ہے نچلا علاقہ۔ اس طرح ان علامتوں سے جن کا صاحب راج ترنگنی نے ذکر کیا ہے اس تقسیم کی سرحد راج گڑھ کی موجودہ عمارات (سابقہ شاہی تعمیرات) متعین ہوجاتی ہے (این شنٹ جیوگرافی آف کشمیر مصنف سٹاین۔ ص ۱۳۳)۔

(۲۳) وہی لارنس صاحب جس کا ذکر پہلے ہو چکا۔

(۲۴) جموں اینڈ کشمیر ص ۲۔

(۲۵) صحیح ہے ۱۵۰۶۰ فٹ۔ مذکورہ پہاڑ واڑون پرگنہ اور برنگ کے درمیان میں واقع ہے (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ مصنف آنند کول ص ۵)۔

(۲۶) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۷۔

(۲۷) صاحب جموں اینڈ کشمیر نے مذکورہ مقام کو ڈوڈا کہا ہے۔

(۲۸) ایضاً ص ۵۔

(۲۹) صحیح ہے ۱۴۵۰۰ فٹ (ایضاً ص ۲)۔

(۳۰) صحیح ہے ۱۱۵۰۰ فٹ (ایضاً ص ۴)۔

(۳۱) ساون پورنماشی ہندوؤں کے ایک بڑے دن کا نام ہے۔ جیسا کہ اس دن کے نام سے ظاہر ہے، اس روز چاند کامل ہو جاتا ہے رات میں اور یہ مہینہ ساون کا ہوتا ہے جو انگریزی ماہ کے اگست ماہ کے برابر ہوتا ہے۔

(۳۲) پہلگام سے چار منزل مشرق کی جانب۔ اس کی بلندی ۔۷۸۹۰ فٹ ہے (جموں و کشمیر، ص ۴)۔

(۳۳) امرناتھ غار امرناتھ پہاڑ کی چوٹی پر واقع ہے اور ہندوؤں کے نزدیک برہمن مذہب کے پانچ مقدس مقاموں میں سے ایک ہے۔ باقی چار جگہیں جگناتھ پوری اڑیسہ میں، سوراشٹر کے صوبے میں دوار کا، اتر پردیش میں بدری ناتھ اور دکن میں رامیشورم ہیں۔

ساون کے مہینے میں جب چاند آسمان پر پورا ہوتا ہے تو ہندوستان کے اطراف و جوانب سے ہندوؤں کا ایک ہجوم اس غار کی طرف امڈ آتا ہے۔ ساون پورنماشی سے ایک دن پہلے زیارت کرنیوالوں کا قافلہ پہلگام میں جمع ہو کر دوسرے دن منزل مقصود کی طرف روانہ ہوتا ہے۔ یہ پہاڑ کافی بلندی پر ہونے کی وجہ سے اکثر اوقات برف سے ڈھکا رہتا ہے۔ اسی لئے زیارت کرنیوالے جیسے ایک آدمی بن کر اکٹھے سفر کرتے ہیں۔ انفرادی راہ اختیار کرنے میں بڑا خطرہ رہتا ہے۔ امرناتھ غار کی زیارت کرنے سے ہندوؤں کی مراد ہے شیو جی کے لنگ (عضو تناسل) کے مجسمے کی پرستش کرنا جو غار میں برف کے قطروں کے ٹپکنے سے خاص پورنماشی کی رات کو قدرتی ذرائع سے بنتا ہے۔ راج ترنگنی کا سنسکرت زبان کا اولین مورخ کشمیر پہلی کتاب کے ص ۲۶۷ پر لکھتا ہے کہ امرناتھ غار کی زیارت کی رسم نارا بادشاہ (۱۰۴۸ تا ۱۰۰۸ ق م) کے زمانے میں بھی تھا۔ مذکورہ کتاب کا مصنف کلہن پنڈت جو بارہویں صدی عیسوی میں تھا، اس رواج کی نشاندہی کرتا ہے (جموں اینڈ کشمیر مصنف پنڈت آنند کول سابق صدر میونسپلٹی سرینگر کشمیر ص ۱۱۳ سے ۱۱۶ تک)۔

(۳۴) قدیم پیر پنت سال (این شنٹ جیوگرافی آف کشمیر، ص ۲۶)۔

(۳۵) (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ، ص ۲) اس کتاب کے مصنف آنند کول کی روایت کے بموجب پیر پنچال وہ پہاڑ

ہے جو خطہ کشمیر کو ہندوستان کے میدانوں سے الگ کرتا ہے۔ کشتواڑ سے مظفر آباد تک اس کی لمبائی ایک سو بیس میل ہے۔

(۳۶) آنند کول اس کی بلندی نو ہزار دو سو فٹ لکھتا ہے (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۲ر)

(۳۷) مدت حکومت (۱۸۳۷ء۔۱۸۸۵ء)

(۳۸) یہ اشارہ ہے اس سیاسی تقسیم کی طرف جو قدیم زمانے میں چھوٹے چھوٹے حصوں میں کشمیر کا ہوا تھا۔ آج تک یہ نام موجود ہے۔ آصف خان کے عہد میں پرگنوں کی تعداد ابوالفضل نے ۴۱ر تک پہنچائی ہے اور این شنٹ جیو گرافی آف کشمیر کے مصنف کے بقول (ص ۲۱۹، ۲۲۰ر اور ۲۲۱) یہ تعداد ۴۲ر ہے (۲۴ر مراز میں اور ۱۸ر کامراز میں) لمبائی اور چوڑائی میں ہر پرگنہ مختلف ہے۔ مغلوں اور افغانوں کے دور میں پرگنوں کی تعداد میں کوئی تبدیلی واقع نہیں ہوئی البتہ سکھوں کے عہد میں تھوڑی کمی ہوگئی چنانچہ یہ تعداد ۳۶ر رہ گئی۔ اور ڈوگرہ راج (موجودہ) میں تو پہلے یہ تعداد ۴۳ر پرگنوں تک پہنچی لیکن اس کے بعد یہ تقسیم ہندوستان میں انگریزوں کی متابعت میں آٹھ تحصیلوں میں بدل گئی گئی (این شنٹ جیوگرافی آف کشمیر، ص ۱۲۴، ۱۳۵)۔

(۳۹) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ، ص ۵۔

(۴۰) ایضاً ص ۶۔

(۴۱) مذکورہ پہاڑ تراگ بل کے نام سے مشہور ہے (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۴)۔

(۴۲) گریز اور بانڈی پور کے درمیان (ایضاً)۔

(۴۳) گریز (ایضاً)۔

(۴۴) صحیح ہے ۱۱۹۵۰ر فٹ (ایضاً)۔

(۴۵) زوجیلا اور زوجی بل دونوں استعمال میں آئے ہیں۔

(۴۶) ایضاً۔

(۴۷) ایضاً۔

(۴۸) بابا عبداللہ گزریالیؒ مرید باصفا تھے حضرت بابا نصیب الدین غازیؒ کے۔ آپ کی کرامتیں بہت ہیں۔ ۱۱۱۷ھ میں انتقال فرمایا۔ آپ کی قبر وتر پرگنہ کے گزریال گاؤں میں ہے۔

(۴۹) یہ دریا زوجیلا پہاڑ کی طرح ہرمکھ پہاڑ اور امرناتھ پہاڑ کے درمیان میں سے گذر کر شادی پور کے پاس دریای جہلم میں مل جاتا ہے (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ، ص ۵)۔

(۵۰) انگریزی تقویم کے مطابق مئی کا مہینہ۔

(۵۱) آنند کول کی کتاب جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۴۔

(۵۲) کرناہ۔

(۵۳) ملا احمد علامہ کے نواسے ہیں جو سلطان زین العابدین کے زمانے میں تھے۔ وقائع کشمیر اور مہا بھارت کا فارسی ترجمہ آپ کی تالیفات میں سے ہیں۔

(۵۴) سلیمان ابن داؤ علیہ السلام (۱۰۳۳-۹۷۵ ق م)۔

(۵۵) کلجگ یا کل یگ۔ ہندوؤں کے خیال میں دنیا کے چار دور ہیں، ست یگ، ترتا یگ، دواپر یگ اور کل یگ۔ ہر ایک دور کی مدت بالترتیب سترہ لاکھ اٹھائیس ہزار، بارہ لاکھ چھیانوے ہزار، آٹھ لاکھ چونسٹھ ہزار اور چار لاکھ بتیس ہزار سال ہے۔ ان کے خیال میں پہلے تین دور بیت چکے ہیں اور اس وقت چوتھا دور جسے کل یگ یا کلجگ کہتے ہیں جاری ہے۔ ست یگ میں سب ہی لوگ نیک کردار تھے۔ ترتا یگ میں چار حصوں میں سے تین حصے، دواپر یگ میں چار حصوں میں سے دو حصے لوگوں میں نیک اور راست باز تھے اور موجودہ دور میں صرف ایک حصہ نیک کردار لوگوں کا ہے۔ کہتے ہیں کہ اس دور کے ختم ہو جانے کے بعد پھر سے ست یگ دور، ترتا یک دور، دواپر یگ دور اور کل یگ کا دور آئے گا اور اسی طرح یہ سلسلہ چلتا رہے گا یہاں تک کہ ہزار رہا دور ایسے ہی چلتے رہنے کے بعد دنیا فنا ہو جائے گی۔ جسے قیامت کہتے ہیں اور ہندو پرلے کہتے ہیں۔

(۵۶) راجا راما نند کا بیٹا۔ جس نے ۶۵ رسال تک حکومت کر کے وفات پائی۔

(۵۷) شمکر یا شنکر اچارج وید کے مختلف عالموں کا نام ہے۔ بالخصوص ایک ویدی عالم اور برہمن مذہب کے مبلغ کا جو ایک روایت کے مطابق ۸۲۰ء-۷۸۸ء کے درمیانی سالوں میں گذرا ہے اور ایک اور روایت کے مطابق دو سو سال قبل مسیح میں تھا۔ یہ شخص مالا بار یا کریلا کا تھا۔ شنکر اچارج نے اپنی ساری عمر بحث و مناظرہ میں صرف کی اور اس فن میں اس نے ایسی چرب زبانی اور حاضر دماغی پائی تھی کہ آج تک اپنے چیلوں میں دوسرا شیو کہلاتا ہے۔ عادت و معمول کے امور سے ماوراء چند امور کا عمل بھی آپ سے منسوب کیا جاتا ہے۔ شنکر اچارج کے چار بڑے شاگرد تھے جن کی وجہ سے اس کا نام ہمیشہ کیلئے زندہ رہا۔ ان میں سے ایک کا نام تھا پدم پاد، دوسرے کا ہستملگا، تیسرے کا سوریشور اور چوتھے کا ٹونکا۔ اس کے شاگردوں میں سے ایک شخص آنند گیری نے اس کے مباحثوں کی تاریخ لکھی ہے۔ بعض روایات سے معلوم ہوتا ہے کہ شنکر اچارج وشنو کا پیرو تھا۔

(۵۸) صحیح ہے ایک ہزار فٹ (دی ٹورسٹ گائڈ ٹو کشمیر لداخ اینڈ اسکردو مصنف آرتھر نیو، ص ۴۸)۔

(۵۹) عطا محمد خان فرزند مختار الدولہ شیر محمد خان افغان سرداروں میں سے ہے۔ تیور شاہ کے بیٹے شجاع الملک کی طرف سے کچھ عرصہ کیلئے کشمیر کا حاکم تھا۔ پھر اس کی کمزوری سے فائدہ اٹھا کر سرکش ہوگیا۔ آخر فتح محمد خان کے ہاتھوں شکست کھائی اور کشمیر چھوڑ کر مع مال ومتاع کے پشاور کی طرف چلا گیا (نگارستان کشمیر، ص ۲۳۳)۔

(۶۰) اصل میں آپ بدخشانی تھے۔ عنفوان جوانی میں متداول علوم سے فراغت پائی۔ پہلے حضرت میاں میر لاہوریؒ کی خدمت میں پہنچے اور اس کے بعد کشمیر میں وارد ہوئے اور کوہ ماران کے دامن میں سکونت اختیار کی۔ باطنی جذبہ سے مکمل طور پر فیضیاب تھے۔ اور شاہجہان بادشاہ کے بڑے فرزند شہزادہ داراشکوہ کے پیر طریقت تھے۔ آپ کا کلام تصوف سے معمور ہے۔ نزع کی حالت میں خود اپنی تاریخ کہی ۔ دادور توحید ملا شاہ جان (۱۰۷۲ھ)۔ آپ میرے (ڈاکٹر شمس الدین احمد مترجم کتاب کے) جد بزرگوار ہیں۔

(۶۱) ۲۵ رمیل انگریزی (نگارستانِ کشمیر، ص ۸۷)۔

(۶۲) ایضاً صفحہ ۸۷۔

(۶۳) بابا بام الدین کے خلیفوں میں سے ہیں۔ بے حد کرامات والے تھے۔ ناگہ نارن گاؤں میں آپ کا مقبرہ ہے۔ آپکی تاریخ وفات معلوم نہ ہوسکی۔

(۶۴) پنڈت آنند کول نے رنبوہ پہاڑ کی جگہ افروٹ پہاڑ لکھا ہے۔ ممکن ہے مذکورہ پہاڑ کا دوسرا نام رنبوہ ہوگا۔

(۶۵) کشمیر کے نچلے حصے کامراج کے علاقے میں ایک پرگنہ ہے۔ صاحب راج ترنگنی نے اسے بھانگیلا لکھا ہے (این شنٹ جیوگرافی، ص ۲۲۱)۔

(۶۶) ملک حیدر نے گلمرغ کی توصیف ان الفاظ میں کی ہے: ”ایک روز قبلہ عالم وعالمیان، بادشاہ زمین و زمانیان، خاقان ابن خاقان نور الدین جہانگیر بادشاہ کی قدسی کلام کرنے والے زبان سے جو کہ الہام کی ترجمان ہے مجھ غلام کو حکم ہوا کہ شاہ عباس کے ایلچی یادگار میرزا کیلئے میں کشمیر کے اوصاف بیان کرو۔ غلام نے عرض کیا کہ بانگل اور بارہ مولہ کے درمیان میں پونچھ جانے والی راہ پر ایک سرد مقام ہے گوری مرگ (گلمرغ) ...... چنانچہ سیر کرنے کی خاطر وہاں گل گشت ہوا اور پھولوں کو ایک بار جو مٹھی میں لیا تو دست مبارک (پادشاہ) میں ایک ساتھ ۲۵ ر پھول آگئے ۔“

(۶۷) ایضاً۔

(۶۸) صحیح ہے ۹۹۰ھ۔ اور جو متن میں آیا ہے بظاہر کاتب کا سہو ہے۔ فرشتہ کی روایت کے مطابق یوسف شاہ

چک نے ۹۸۷ھ سے ۹۹۰ھ تک حکمرانی کی۔

(۶۹) سال ۸۹۰ھ صحیح نہیں۔ سال ۹۹۰ھ صحیح ہے۔

(۷۰) مرگ دراصل مرغ ہے یعنی گ سے نہیں غین سے صحیح ہے۔ مرگ یعنی موت اور مرغ یعنی سبزہ۔ گھاس اسلئے مرگ زار کے معنی قبرستان کے ہیں اور مرغزار یعنی سبزہ زار۔

(۷۱) صاحب جموں وکشمیر سٹیٹ کے بقول لار۔ اور یہ کامراج کے علاقہ میں ایک پرگنہ ہے (این شنٹ جیو گرانی آف کشمیر، ص ۲۲۱)۔

(۷۲) کھنہ مرغ۔

(۷۳) اور پنڈت آنندکول کے بقول برتھ پہاڑ کے اُوپر لار پرگنہ میں۔

(۷۴) راج ترنگنی کے مطابق یاسرم پہاڑ اور لولاؤ دونوں کامراج علاقے میں۔

(۷۵) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۸۷۔ لیکن اس میں گریز کے ساتھ برزل کا بھی ذکر آیا ہے۔

(۷۶) ایضاً۔

(۷۷) بقول پنڈت آنندکول برتھ پہاڑ کے اُوپر جیسا کہ بیان ہوا۔

(۷۸) کرناہ۔

(۷۹) اور آنندکول کے کہنے کے مطابق پونچھ کی طرف ایک راستے پر۔

(۸۰) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ، ص ۸۷۔

(۸۱) ایضاً۔

(۸۲) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ کے مؤلف نے اسے نندہ مرگ لکھا ہے۔

(۸۳) اور مذکورہ مؤلف کے بقول واڑون کے قریب۔

(۸۴) ایضاً۔

(۸۵) ایضاً۔

(۸۶) ایضاً۔

(۸۷) وہ قصبہ جہاں حضرت شیخ نورالدین کا مزار مبارک واقع ہے۔ سرینگر سے اٹھارہ میل دور۔

(۸۸) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ، ص ۱۸۷ آستان مرگ۔ آنندکول کے بقول مذکورہ مرغ ساسکت اور پہلگام کے درمیان ایک چھوٹے سے پہاڑ کے مابین واقع ہے۔ بلندی ہے بارہ ہزار ایک سوفٹ۔

(۸۹) مراز کے علاقے میں۔ سٹاین کی روایت کے مطابق اس کا قدیم نام دکشن پارا تھا۔

(۹۰) کریوہ یا ٹیلہ یعنی پہاڑ کا ایک اُونچا پشتہ، مثال کے طور پر۔

دیداند از پس کریوہ غیب ☆ ربِ خود را بدیدۂ لا زیب (شمس اللغات)

غیب کے ٹیلے کے پیچھے انہوں نے بے شک آنکھوں سے اپنے خدا کو دیکھا ہے۔

(۹۱) اننت ناگ تحصیل میں۔

(۹۲) جون راج کے بقول متن۔

(۹۳) ملا احمد کشمیر۔ نیلہ مت پران ایک قدیم کتاب ہے جو کشمیر کے ہندوؤں کے مقدس مقامات کے احوال پر مشتمل ہے۔ قدیم کشمیر کے حالات پنڈت کلہن نے اپنی تصنیف راج ترنگنی میں اسی کتاب سے لئے ہیں۔ کشمیر کا علم الاصنام جو کشمیر کے باشندوں میں مروج ہے نیلہ مت پوران سے ماخوذ ہے۔ اس ملک کے ہندوؤں کا خیال ہے کہ نیلہ مت پوران راجہ نیلہ ناگ (چشمہ ویری ناگ) کی اس وقت کی تصنیف کی ہے جس وقت اس نے انسانی صورت میں جلول کیا تھا۔ ان کا عتقاد ہے کہ مذکورہ کتاب قدامت میں ہندوؤں کے مقدس دیدوں کے دوسرے درجہ پر ہے لیکن پروفیسر بوہلر کے خیال میں یہ چھٹی یا ساتویں مسیحی صدی کی ایک تصنیف سے زیادہ نہیں کیونکہ راز ہ ترنگنی اور مذکورہ کتاب میں کشمیر کے مقامات کے ناموں میں کوئی فرق نہیں پائی جاتی (این شنٹ جیوگرانی آف کشمیر، ص ۴۶)۔

(۹۴) ۳۰۰۵۔ ۲۹۳۶ ق م۔

(۹۵) یہ جنوبی کشمیر کے قدیم ترین آثار میں ہے۔ یہ بتخانہ اچھہ بل سے چار میل شمال کی طرف واقع ہے۔ اس کی ساری تعمیر نقش دار پتھروں کی ہے اور پچاس گز تک اس کی اُونچائی ہے۔ اس بتخانے کے پتھر لمبائی میں نو گز اور چوڑائی میں چھ گز ہیں اور حیرت ہوتی ہے کہ یہ مذکورہ پتھر کس طریقے سے یہاں لا کر نصب کئے گئے ہیں (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ۔ ص ۱۴۱)۔

(۹۶) آپ کا وصال پھکلی میں بنیر یا سوات کے مقام پر ۶/ذی الحجہ ۸۷۶ھ میں ہوا جیسا کہ اس تاریخی مصرعہ سے نکلتا ہے۔ قضا پیر کامل امیر کبیر (۸۷۶ھ)۔

(۹۷) آپؒ کے اس پر بہار وادی میں داخل ہونے کی تاریخ ۷۹۶ھ بتائی گئی ہے۔ کہتے ہیں جب آنجنابؒ کشمیر میں داخل ہوئے آپؒ کے ہمراہ سادات علماءؒ کی تین سو افراد پر مشتمل ایک جماعت تھی۔ آپؒ کی وفات منگوار کے روز ۱۷ ربیع الاول ۸۵۴ھ میں ہوئی (تاریخ حسن جلد ۳)۔

(۹۸) بونگر تحصیل اونتی پورہ (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ، ص ۸۸)۔

(۹۹) کامراج کے علاقے میں (این شنٹ جیوگرافی آف کشمیر)۔

(۱۰۰) راجاؤں کی فہرست میں ابوالفضل نے اس کا نام شامل نہیں کیا ہے۔

(۱۰۱) کرالہ (راج ترنگنی) ارڈھون (جون راج)۔

(۱۰۲) ستھو (کشمیری لفظ) یعنی بند یا سد۔

(۱۰۳) سرینگر سے چار میل دور شمال کی طرف۔

(۱۰۴) کولگام تحصیل۔ بیج بہاڑہ جنوبی کشمیر میں ایک بڑا قصبہ ہے۔ اس کی بنیاد راجہ وجے (۱۱۴-۱۰۶ ق م) نے ڈالی ہے۔ باشندوں کی تعداد چار ہزار چار سو چوبیس (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ، ص ۸۷/۱۱)۔

(۱۰۵) کولگام تحصیل (ایضا)۔

(۱۰۶) جینا پور (جون راج)۔

(۱۰۷) کولگام تحصیل۔

(۱۰۸) ناگرام (جون راج)۔

(۱۰۹) جنوبی کشمیر میں۔ آبادی دو ہزار ایک سو چودہ (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ، ص ۸۸/۱۱)۔

(۱۱۰) شاہجہان بادشاہ کے عہد میں دو بار کشمیر کا حاکم بنا۔ پہلے ۱۰۵۱ھ (۱۶۴۱ھ) اور پھر ۱۰۶۰ھ میں (۱۶۵۰ء)۔

(۱۱۱) سری پرتاپ سنگھ پورہ تحصیل۔

(۱۱۲) اس جگہ کا نام جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ میں دامودر آیا ہے۔ تحصیل ایضاً۔

(۱۱۳) اک شکا (راج ترنگنی)۔

(۱۱۴) یعنی دامودر دوم (۱۳۰۲/ ق م)۔

(۱۱۵) وڑ کشمیری لفظ ہے اور اس کے معنی ہیں ٹیلہ یا کریوہ۔

(۱۱۶) تحصیل سری پرتاپ سنگھ پورہ۔

(۱۱۷) ایضاً۔

(۱۱۸) ایضاً۔

(۱۱۹) سٹائن نے اس نام کے بارے میں خاموشی اختیار کی ہے۔ البتہ قدیم تصنیفات مثلاً آئین اکبری اور واقعات کشمیر میں یہ نام اسی شکل میں موجود ہے۔

(۱۲۰) تحصیل پرتاب سنگھ پورہ۔

(۱۲۱) ماک سرام (این شنٹ جیوگرافی)۔

(۱۲۲) تحصیل پرتاب سنگھ پورہ۔

(۱۲۳) ایضاً۔

(۱۲۴) ایضاً۔

(۱۲۵) کروہن کا پرانا نام کرودھنہ ہے جو مذکورہ تحصیل میں واقع ہے۔(این شنٹ جیوگرافی)۔

(۱۲۶) تحصیل بارہ مولہ۔

(۱۲۷) ایضاً۔

(۱۲۸) تحصیل اوتر مچھی پورہ۔ کو یہامہ کا قدیم نام کوہ یاسرم ہے (این شنٹ جیوگرافی)۔

(۱۲۹) وفات ۱۸۵۷ء۔ مہاراجہ گلاب سنگھ، مہاراجہ رنجیت سنگھ کی فوج میں سوار کے رتبہ پر فائز تھا۔ اس کے بعد جموں کا حکمران بن گیا۔ انگلستان سے ساٹھ لاکھ روپے کے عوض کشمیر کی ریاست خرید لی اور دنیا میں یہی ایک ایسی ریاست ہے جو لین دین یعنی بیچ دیئے جانے پر قائم ہوئی۔

(۱۳۰) تحصیل سرینگر۔

(۱۳۱) ایضاً۔

(۱۳۲) ایضاً۔

(۱۳۳) ایضاً۔

(۱۳۴) تحصیل پرتاب سنگھ پورہ۔

(۱۳۵) این شنٹ جیوگرافی آف کشمیر میں اس پرگنہ کا نام یوں ہی آیا ہے۔

(۱۳۶) تحصیل اونتی پور۔ دچھن پارہ کا قدیم نام دکشن پارا تھا (این شنٹ جیوگرافی)۔

(۱۳۷) ایضاً۔ ابوالفضل اسے وہی کہتا ہے۔ راج ترنگنی کے بقول اس کا پرانا نام کھڈوی تھا۔

(۱۳۸) تحصیل انت ناگ۔

(۱۳۹) جون راج نے ہندی الفاظ میں اسے جینا گیر لکھا ہے۔

(۱۴۰) سر (سین پر زبر اور ر پر سکون) یعنی بڑا تالاب۔ یہ لفظ سنسکرت لفظ سروور سے ماخوذ ہے (سین اور ر پر زبر، و پر سکون، دوسرے و پر زبر اور ر پر سکون)۔

(۱۴۱) لوخ یعنی وہ گھاس جس سے چٹائیاں بناتے ہیں۔ کشمیری میں پیٹز۔

(۱۴۲) قدیم ویر (جنوبی کشمیر)۔

(۱۴۳) تاریخ کشمیر ص ۱۰۶ ارملکیت کتابخانہ تحقیقات علمی حکومت جموں وکشمیر نمبر ۳۴۲ فہرست مخطوطات فارسی و عربی۔ اے سی سٹوری کے ببلیو گرافی آف پرشن لٹریچر حصہ دوم چھاپ لوزاک کمپنی لندن ص ۶۸۰ر کے مطابق مذکورہ تاریخ قدیم زبانوں سے لے کر جلال الدین اکبر شاہ کے عہد تک اختصار کے ساتھ کشمیر کے تاریخی واقعات پر مشتمل ہے۔ مذکورہ کتاب راج ترنگنی کا خلاصہ ہے۔ البتہ مصنف نے اس میں آخری عہد کے خاصے اضافے کئے ہیں۔ حیدر ملک چاڈورہ کی تاریخ کشمیر کی معتبر تواریخ میں شمار کی جاتی ہے۔ اس کا مصنف ملک حیدر، ملک حسن بن ملک محمد ناجی کا بیٹا تھا جو سرینگر کے مضافات میں واقع وہتھور گاؤں کے متصل چاڈورہ گاؤں (پرگنہ ماگام) کا رہنے والا تھا۔ اس کا خاندان کشمیر کے شرفا میں سے تھا۔ یہ شخص کشمیر کے آخری تاجدار یوسف شاہ چک (۹۹۳ھ۔ ۹۸۶ھ = ۱۵۸۵ء۔ ۱۵۷۸ء) کی ملازمت میں کم وبیش ۲۴ رسال تک رہا اور بنگال کی طرف اس کی جلاوطنی کے زمانے میں اس کی جاگیر میں ساتھ رہا۔ حیدر ملک تلوار کا دھنی بھی تھا۔ چنانچہ اس مہم میں جو راجہ بلبھدر کے خلاف بھیج دی گئی حیدر ملک فوج کے سردار کی حیثیت میں کامران ہوا۔ ۱۶۰۷ء (۱۰۱۶ھ) میں ملک حیدر چاڈورہ نے مہر النساء (بعد کی نور جہان) کی اس کے شوہر شیر افگن کے قتل کے بعد کامل حفاظت کی۔ جہانگیر بادشاہ نے اس کی خدمات کے صلے میں سے اُسے چغتائی اور رئیس الملک کے القاب سے نواز کر کشمیر کا حکمران مقرر کیا۔

(۱۴۴) رامانند کا بیٹا تھا۔ سندمت نگر شہر کا بانی تھا۔ ۶۵ رسال تک حکومت کرنے کے بعد مر گیا۔

(۱۴۵) دیکھئے یادداشت نمبر ۱۴۱۔

(۱۴۶) یہ آخری تینوں فرقے دنیا کو ترک کرنیوالے ہندو درویش لوگ ہیں جن کے بال لمبے اور گھنگھریالے ہوتے ہیں۔

(۱۴۷) ابوالفضل نے آئین اکبری میں مذکورہ غار کو پرگنہ کھاور پارہ کے عیش مقام میں بتلایا ہے۔ شیخ زین الدین ریشیؒ حضرت نورالدین نورانیؒ کے دوسرے خلیفہ تھے۔ آپ کی اصلی جائے پیدائش کشتواڑ کا باندر کوٹ گاؤں ہے۔ کفر کے ایام میں آپ کا نام زیا سنگھ تھا اور آپ اس ملک کے راجاؤں کے قبیلے سے تھے۔ بابا بام الدینؒ کے ہاتھ پر اسلام سے مشرف ہوئے اور استقامت کرنے کے بعد اس ملک کے عابدوں میں سے بن گئے۔ کہتے ہیں کہ بارہ سال کی ریاضت کے بعد غار کے منہ کو پتھر سے ڈھانک کر غائب ہو گئے اور آج تک آپ کا نشان نہیں مل پایا ہے۔

(۱۴۸) وید کو ہندوؤں کی الہامی کتاب بتلاتے ہیں اور یہ تعداد میں چار ہیں: رگ وید، سام وید، یجر وید اور اتھر

وید۔

(۱۴۹) کشمیر کے شمال میں ایک قصبہ ہے۔ ۱۹۴۷ء تک ہندوستان کی بھارت اور پاکستان میں تقسیم ہو جانے سے پہلے تجارتی مرکز تھا۔ لیکن اب اس میں بہت بڑا فرق آ گیا ہے۔ آبادی ۶۵۹۹ر آدمی۔

(۱۵۰) قدیم دیو اسر سا علاقہ مراز۔

(۱۵۱) واقعات کشمیر میں (ص ۶۶۸) اس کا ذکر عجائب و غرایب کشمیر کے ضمن میں آیا ہے کہ ''اور اس پرگنہ میں ایک اُونچا پہاڑ ہے ہرموکھ۔ اور جہاں تک اس پہاڑ کی چوٹی نظر میں رہتی ہے سانپ اور بچھوں وہاں نہیں ہوتے۔ حقیقت یہ ہے کہ اس کی چوٹی پر زمرد کی کان ہے اور زمرد کے کان کی خاصیت یہ ہے کہ سانپوں اور بچھوؤں کا زہر زائل ہو جاتا ہے۔

(۱۵۲) آئین اکبری جلد ۲ رمترجمہ ایچ ایس جیرٹ ص ۳۶۵ ر لیکن اس میں پدمتی کی جگہ پدمتی آیا ہے۔

(۱۵۳) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۱۰ ر لیکن اس میں فقط ذکر کان مس لکھا ہے۔

(۱۵۴) صوف جگہ کا نام ہے۔ برنگ دراصل بھرنگا تھا۔ طول زبان کی وجہ سے اس کا اصلی نام ذہنوں سے مٹ گیا ہے اور برنگ ہو گیا ہے۔ (این شنٹ جیوگرافی، ص ۲۲۰)۔

(۱۵۵) دوسرے نسخے میں ژوہن کی جگہ ژوبگ آیا ہے۔

(۱۵۶) یعنی آتش فشان پہاڑ۔

(۱۵۷) باسن یعنی برتن (مٹی کا)۔

(۱۵۸) چُقر (چ پر پیش، ق پر تشدید) ہندی میں چشمے کو کہتے ہیں (جامع اللغات اُردو)

(۱۵۹) مطلب ہے لار۔ راج ترنگنی کے بقول اس کا قدیم نام لوہارا تھا۔

(۱۶۰) ابوالفضل نے اسی روایت کو تھوڑے سے اختلاف کے ساتھ یوں بیان کیا ہے: ''لار ایک پرگنہ ہے جو تبت کلاں کی سرحد پر واقع ہے۔ اس کے شمال میں ایک اُونچا پہاڑ ہے جو کئی پہاڑوں سے گھرا ہوا ہے۔ اس کے دامن میں دو چشمے ہیں جن کے درمیان دو گز کا فاصلہ بتلایا جاتا ہے۔ حیرت ناک بات یہ ہے کہ ان میں سے ایک کا پانی بے انتہا ٹھنڈا ہے اور دوسرے کا بے انتہا گرم۔ ہندوان دونوں چشموں کو بہت زیادہ متبرک مانتے ہیں اور مردوں کی ہڈیوں کو جو جل کر خاکستر ہو چکی ہوتی ہیں ان میں ڈال دیتے ہیں''۔ آئین اکبری جلد ۲ رمترجمہ جیرٹ ص ۳۶۰۔

(۱۶۱) ہندی بہادون مہینے کی آٹھ تاریخ مطابق انگریزی کلینڈر کے اگست اور نومبر کے مہینے۔ جن میں مہتاب کا طلوع ہوتا ہے۔ قدیم ہندوستان کے لوگ قمری تقویم کے ہر ماہ کو دو برابر حصوں میں بانٹ دیتے تھے شدی اور بدی۔ پہلا حصہ پندرہ روشن دن اور دوسرا پندرہ تاریک دن۔

(۱۶۲) میلہ ہندی لفظ ہے یعنی جشن۔

(۱۶۳) اس کا منبع مذکورہ ہرموکھ پہاڑ ہے (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۶)۔

(۱۶۴) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ۔

(۱۶۵) جموں اینڈ کشمیر۔کولاسر، ص ایضاً۔

(۱۶۶) ایضاً۔لیکن جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ میں اتنی تفصیل نہیں صرف حسن بیان ہے۔

(۱۶۷) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۶/اس کا منبع ہرموکھ پہاڑ لکھتا ہے۔

(۱۶۸) مہادیو پہاڑ میں۔جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ایضاً۔

(۱۶۹) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۷/کے مطابق کرشنہ گنگا دومیل کے پاس (مغربی کشمیر کی سرحد) دریائے جہلم میں مل جاتا ہے۔

(۱۷۰) وشن یا وشنو ہندوؤں کے تین خداؤں میں سے ایک خدا کا نام ہے جو ان کے عقیدے کے مطابق مخلوقات کی پرورش کرتا ہے۔وشنو فرقہ کے لوگ خالق جان کر اس کی پوجا کرتے ہیں اور ان کے خیال میں دریائے گنگا اس کے پاؤں کے انگوٹھے سے نکلا ہے اور شیو کے سر کی چوٹی پر گر کر وہاں سے ہندوستان میں چلنے لگتا ہے۔مہابھارت میں لفظ وشنو سہسر اس کے ایک ہزار نام کی طرف اشارہ کرتا ہے۔جامع اللغات ص ۲۹۷۔

(۱۷۱) ایضاً ص ۷۔

(۱۷۲) اور وشنہ سر کی طرح گز شتہ گنگا کا جزو بن کر جہلم میں مل جاتا ہے۔دومیل کے پاس۔

(۱۷۳) مذکورہ کتاب کے مطابق گاڈسر، سیم سر، ستانی سر اور کڈوری سر چاروں کرشنہ گنگا کا حصہ بن کر دریائے جہلم میں شامل ہو جاتے ہیں۔

(۱۷۴) مراد ہے ارن جو بانڈی پور کے نزدیک ہے۔اس کا منبع ہرموکھ پہاڑ ہے۔(جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ، ص ۵)۔

(۱۷۵) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۴/کے مطابق کن سر۔

(۱۷۶) بانڈی پور کے قریب۔اس کا منبع ہے تراگہ بل پہاڑ۔

(۱۷۷) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص۔لیکن وہاں اس کا نام ست گل آیا ہے۔

(۱۷۸) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۶ کے مطابق اس کا منبع اوتر مچھی پورہ پرگنہ میں کاجی ناگ پہاڑ ہے۔دوآب گاہ کے نزدیک دریائے بہت (جہلم) میں مل جاتا ہے۔

(۱۷۹) مطلب ہے رام گنڈ، سیتا گنڈ، لچھمن گنڈ اور ھنومان گنڈ۔ تاریخ حسن قلمی نسخہ جلد ۲، ورق ۶/ر۔

(۱۸۰) ھندو راہب لوگ۔

(۱۸۱) اوڑی تحصیل میں۔

(۱۸۲) یعنی دریائے جہلم۔

(۱۸۳) کامراج کے پرگنوں میں سے ایک پرگنہ ہے۔ اس کا قدیم نام جون راج پنڈت کے بقول بہرویا تھا ۔(این شنٹ جیوگرافی آف کشمیر، ص ۲۲۰)۔

(۱۸۴) کتاب میں یہ جگہ خالی ہے۔

(۱۸۵) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۳۔ کاژگل پہاڑ پیر پنچال پہاڑ کے ڈھلوان پر واقع ہے (ایضاً ص)۔

(۱۸۶) ایضاً ص ۷۔

(۱۸۷) ایضاً ص ۳۔

(۱۸۸) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ کے بقول رامشی ندی کا منبع ہے کاژگل پہاڑ، انوٹ اور تاتا کوٹی۔ کاکا پور کے قریب دریائے جہلم میں شامل ہو جاتا ہے۔ یہ ندی دان زب کے مقام پر تین شاخوں میں بٹ جاتی ہے ہامشی، کھامشی اور رامشی کے نام سے۔

(۱۸۹) آنند کول کے بقول رنبی آرہ ندی کا منبع سلسلہ پیر پنچال کا شوپی کور پہاڑ ہے۔

(۱۹۰) نندن سر بھی چندن سر کی طرح دارہال کے پاس دریائے جہلم میں شامل ہوجاتا ہے۔

(۱۹۱) آنند کول کے مطابق (مصنف کتاب جموں اینڈ کشمیر) مذکورہ چشمہ دارہال کے نزدیک جہلم میں شامل ہوجاتا ہے۔

(۱۹۲) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۳۔ کشمیر کے دریا عنوان کے تحت۔ آنند کول کے بقول اہرہ بل کی آبشار کا منبع یہی چشمہ ہے۔

(۱۹۳) پنڈت زونہ راج۔ زینہ ترنگنی کا متن کشمیر کے ھندوؤں کی تاریخ کے آخری عہد سے سلطان زین العابدین کے عہد تک تھا۔ بقول مصنف نگارستان کشمیر مذکورہ کتاب آج نایاب ہے۔ سٹاین نے فقط اس کے حوالوں پر اکتفا کی ہے۔

(۱۹۴) اس کا منبع کونسر پہاڑ ہے اور سنگم کے پاس دریائے جہلم میں ملتا ہے (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ، ص ۳) ابو الفضل نے تفصیل کے ساتھ اس کا ذکر کیا ہے (دیکھئے آئین اکبری جلد ۳ مترجمہ جیرٹ، ص ۳۶۲)

(۱۹۵) واقعات کشمیر مولفہ خواجہ محمد اعظم، ص ۲۷۲۔ فرق یہ ہے کہ اس کتاب میں چشمے کا نام جوہر لکھا ہے۔

(۱۹۶) صحیح یہ ہے کہ شیشرم ناگ اور پہلگام کے درمیان بارہ کروہ کا فاصلہ ہے۔

(۱۹۷) یہ مذکورہ دریالدر کے نام سے بھی مشہور ہے۔ اس کا منبع کوہن ہار پہاڑ ہے اور کھنہ بل سے نیچے وگر اویرا اور ٹرٹنگ کے پاس دریائے جہلم میں مل جاتا ہے۔

(۱۹۸) کوہن ہار پہاڑ کے شمال میں مہاگنس پہاڑ کے پاس۔

(۱۹۹) راجا نر (ن پر زبر ر پر سکون) سنسکرت میں نارا۔ کشمیر کے بادشاہوں میں سے ہے۔ بدھ مذہب کی مخالفت اور اس کو تباہ کرنے میں حد سے زیادہ غلو سے کام لیا۔ چالیس سال تک حکمرانی کرنے کے بعد ۹۵۳ ق م میں وفات پائی (اینشنٹ جیوگرافی آف کشمیر، ص ۳۷۳)۔

(۲۰۰) اونتی پورہ تحصیل (اب پلوامہ تحصیل ...... جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۸۸) ابوالفضل نے اس چشمے کے تقدس اور تبرک کے بارے میں جو تفصیل لکھی ہے اس کا خلاصہ یہ ہے کہ "زیون گاؤں میں ایک چشمہ ہے جو اس ملک کے ہندوؤں کے نزدیک بہت متبرک ہے۔ لوگوں کا خیال یہ ہے کہ اس چشمے سے زعفران کے بیج نکلتے ہیں۔ زعفران کی فصل کاٹنے کے وقت ہندو لوگ اس چشمے کی پوجا کرتے ہیں اور خالص دودھ اس میں ڈال دیتے ہیں۔ اگر یہ دودھ پانی میں بیٹھ جائے تو اسے نیک فال جانتے ہیں ورنہ برا فال" (جیرٹس آئین اکبری جلد ۲ ص ۳۵۸)

(۲۰۱) تحصیل اننت ناگ۔ ابوالفضل نے آئین اکبری میں اس کی تفصیل بیان کی ہے اور اس چشمے کو دریائے جہلم کا منبع قرار دیا ہے۔ اس کی لمبائی ایک جریب ہے اور اس کے بقول اسکی گہرائی تک کوئی نہیں پہنچا ہے۔ یہ بھی معلوم ہو جاتا ہے کہ ان ایام میں اس کا احاطہ پتھروں سے کیا گیا تھا۔ اور اس کے مشرق میں بہت مندر تھے۔ مذکورہ چشمے کا نام ویری ناگ تھا جیسا کہ آج بھی ہے (جیرٹس آئین اکبری جلد ۲ ص ۳۶۱)۔

(۲۰۲) حیدر ملک چاڈورہ مصنف تاریخ کشمیر۔

(۲۰۳) ۹۷۷ھ ۔ ۱۰۳۷ھ (۱۵۶۹ء ۔ ۱۶۲۷ء)۔

(۲۰۴) ۱۰۲۸ھ۔

(۲۰۵) ملک حیدر چاڈورہ۔

(۲۰۶) صحیح ہے ۱۰۵۵ھ اور جو یہاں پر درج ہے غالباً کاتب کی غلطی ہے کیونکہ سال ۱۰۳۵ھ میں جہانگیر کی حکمرانی تھی نہ کہ شاہجہان کی۔ اثبات کیلئے دیکھئے قاموس المشاہیر جلد اول ص ۱۸۴۔ اس کے علاوہ مادۂ تاریخ چشمہ بہشت بھی اس خیال کی تائید کرتا ہے۔

(۲۰۷) ۱۰۵۵ھ۔

(۲۰۸) اشارہ ہے صاحب راجہ ترنگنی کلہن کی طرف جو چشمہ ویرناگ کو نیلہ ناگ کہتا ہے (این شنٹ جیوگرافی ص ۵۰)۔

(۲۰۹) اس کا منبع ہوکھ سر کا پہاڑ ہے اور یہ کھنہ بل کے پاس دریائے جہلم میں مل جاتا ہے (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ، ص ۵)۔

(۲۱۰) تحصیل اننت ناگ۔

(۲۱۱) گیا مندر مراد ہے جو صوبہ بہار میں ہے۔ یہ مندر دریائے گنگا کے کنارے پر واقع ہے اور بودھوں اور ہندوؤں کے سب سے مقدس جگہوں میں شمار ہوتا ہے۔

(۲۱۲) ملہ ماس بانہ ماس اس مہینے کو کہتے ہیں جو ڈھائی سال بیت جانے پر اضافہ کر دیا جاتا ہے۔ اس ملک کے ہندوان دنوں میں مذکورہ چشمہ پر جا کر مردوں کیلئے کھانا پکاتے ہیں اور مسکینوں اور محتاجوں کو کھلاتے ہیں۔

(۲۱۳) یعنی وہی کھانا جس کا اگلے حاشیہ میں ذکر ہوا۔

(۲۱۴) نواب اسلام خان کشمیر کا صوبہ دار ۱۰۷۴ھ (۱۶۶۳ء)۔

(۲۱۵) ایک اور قلمی نسخہ میں کوٹھار آیا ہے۔

(۲۱۶) سیف خان کشمیر کا صوبہ دار۔ پہلی بار ۱۰۷۵ھ (۱۶۶۴ھ) اور دوسری بار ۱۶۶۷ء سے ۱۶۶۹ء تک۔

(۲۱۷) جیرٹس آئین اکبری جلد دوم ص ۳۵۶۔

(۲۱۸) تحصیل اننت ناگ (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۸۸)۔

(۲۱۹) واقعات کشمیر خواجہ محمد اعظم، ص ۳۶۹۔ بقول سٹاین اس مقام کا پرانا نام دیوہ سرسا تھا (این شنٹ جیو گرافی آف کشمیر، ص ۲۲۰)۔

(۲۲۰) بقول صاحب تاریخ کشمیر ملک حیدر چاڈورہ ص ۱۰۵ ''دیوہ سر پرگن میں ایک چشمہ ہے۔ پہلو نام کا جہاں پر لوگ اپنی بخت آزمائی اور سعد و نحس اور طالع کی آزمائش کیلئے جاتے ہیں اور ہر کوئی برتن کو چاولوں سے بھر دیتا ہے (مٹی کے برتن کو) اور اس کو ڈھک کر اور اپنا نام اس پر کھودنے کے بعد اس چشمے میں ڈال دیتا ہے۔ پھر ایک سال کے بعد اسی موقع پر وہاں جاتے ہیں اور برتن پانی کی سطح پر نمودار ہو جاتے ہیں۔ جس کسی کے چاول خوب پک چکے ہوتے ہیں اس کیلئے سال اچھا ہے اور جس کا معاملہ برعکس ہوگا اس کیلئے سال منحوس ہوگا۔

(۲۲۱) تحصیل اننت ناگ (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ، ص ۸۸)۔

(۲۲۲) تحصیل اننت ناگ جنوبی کشمیر۔

(۲۲۳) صاحب واقعات کشمیر نے بھی اس کا نام لکھا ہے جس گاؤں میں یہ چشمہ ہے وہ لکھتا ہے ''لوکہ بون نامی گاؤں میں ایک چشمہ جس کا نام ہے کانو۔ اور اس کے معنی ہیں کانا (ایک آنکھ والا) کشادہ چشمہ ہے اور یہ نام پڑ جانے کی وجہ یہ ہے کہ اس میں جتنی بھی مچھلیاں ہیں ان کی ایک ہی آنکھ ہوتی ہے (ص ۲۷۲ رسطر ۲ر اور ۳ر)۔

موجودہ کشمیری رسم الخط میں کانو کو کون لکھیں گے اور کشمیر میں ایک آنکھ والے جاندار کو کون کہتے ہیں۔ البتہ کسی نسبت سے کون کا لفظ کائنی میں بدل جائے گا اور مثال کے طور پر یہ چشمہ کائنی ناگ کہلائے گا۔

(۲۲۴) یعنی ہندی ماہ چیت مطابق مارچ اور اپریل انگریزی کلینڈر۔

(۲۲۵) انگریزی مہینے مئی اور جون۔

(۲۲۶) واقعات کشمیر ص ۲۶۸ ر عجائب وغرایب کشمیر کے عنوان کے ذیل میں۔ اس عبارت سے روایت کا اختلاف ظاہر ہوتا ہے ''برنگ پرگنہ میں ژول گام گاؤں میں ایک سنگین تالاب ہے جسے سند براری کہتے ہیں۔ گیارہ مہینے خشک ہوتا ہے اور اول بہار میں ایک ماہ تک ہر روز تین بار پانی سے بھر جاتا ہے۔ ہر بار دو تین گھڑی کیلئے دو تین پن چکیاں چلانے کا مقدار بھر پانی اس سے جاری ہوتا ہے۔ بابا داود خاکیؒ نے اپنی تصانیف میں لکھا ہے کہ دولہ بابا ایک صالح درویش تھے۔ وہ وہاں گئے اور انہوں نے دیکھا کہ وہاں پر ہر طبقے کے ہاتھوں کفر کا عمل ہوتا ہے۔ انہوں نے اس کے پتھر ڈھا دیئے اور وہاں پر مسجد تعمیر کی۔ اس چشمے کا پانی اپنے وقت پر مسجد کے نیچے سے جاری ہو جاتا ہے۔''

لیکن حسن کی تفصیل ابوالفضل کے بیان کے مطابق ہے جو جیرٹ کی ترجمہ کی گئی آئین اکبری کی جلد دوم ص ۲۵۶ ر میں درج ہے۔ اس کا خلاصہ یہ ہے کہ ''برنگ قصبے کے پاس ایک تالاب ہے جو سات گز لمبا ہے اور گہرائی میں ایک قد آدم کے برابر ہے۔ یہ جگہ بہت متبرک مانی جاتی ہے۔ عجائبات میں سے یہ ہے کہ یہ تالاب تقریباً گیارہ مہینے تک خشک رہتا ہے اور قدرت الٰہی سے اُردی بہشت مہینے میں اس کا پانی فوارے کی طرح اُبلنے لگ جاتا ہے۔ قدیم زمانے میں یہاں پر ایک غار تھی سند براری نام کی۔ جب یہ تالاب بھر جاتا ہے اور دوسری جگہ سے ست ریشی نام کا چشمہ پھوٹ پڑتا ہے۔ ان دونوں چشموں سے مذکورہ تالاب اُبل پڑتا ہے۔ کبھی مذکورہ چشمہ متواتر تین گھنٹوں تک اُبلتا رہتا ہے اور کبھی ایک لمحے میں غائب ہو جاتا ہے۔ اس کے بعد اس چشمے کا پانی کم ہو جاتا ہے یہاں تک کہ پانی کا ایک قطرہ تک بھی اس میں باقی نہیں رہتا''۔ ملک حیدر چاڈورہ کے مذکورہ چشمے کے ابل پڑنے کی جگہ کو دیالگام قرار دیا ہے (تاریخ کشمیر قلمی نسخہ ص ۱۰۶)۔

(۲۲۷) بابا حنیف الدین کے خلفاء میں سے صاحب مجاہدہ و مشاہدہ اور ایک مرتاض بزرگ تھے۔ اکھال نامی گاؤں میں آپ کی قبر بتلائی گئی ہے۔

(۲۲۸) کمر صحیح نہیں بلکہ یہ کشمیر ہونا چاہیئے یعنی کشمیر۔ کمر سے شعر کا وزن بھی ٹوٹ جاتا ہے اور یہ صریحاً غلط

درج ہوا ہے۔

(۲۲۹) واقعات کشمیر خواجہ محمد اعظم ص ۲۷۲۔

(۲۳۰) تاریخ کشمیر ص ۱۰۶۔لیکن اس کا مصنف میلہ اور ہندوؤں کے وہاں جا کر نہانے کے بارے میں کچھ نہیں کہتا۔

(۲۳۱) لیکن خواجہ محمد اعظم کا بیان یوں ہے: ''لار پرگنہ میں رنگنو پہاڑ کے اُوپر ایک کھوکھلا پتھر دکھائی دیتا ہے۔ مقرر ہے کہ فروردین کی اٹھارہ تاریخ کو اس کے ہر پستان سے پانی جاری ہوتا ہے جب تک یہ پتھر بھر جاتا ہے اور اگر دس ہزار آدمی بھی جائیں جب بھی پانی میں کوئی کمی واقع نہیں ہوتی۔ایک دن اور رات تک یوں ہی ہوتا رہتا ہے اور پھر اس کے بعد بارہ ماہ تک خشک و خالی رہتا ہے'' (واقعات کشمیر)۔

(۲۳۲) اصل کتاب میں ایسے ہی ہے۔

(۲۳۳) اس کے بعد کتاب میں جگہ خالی ہے۔

(۲۳۴) قدیم زمانے سے اس ملک کے ہندو اس چشمے کے ساتھ بے شمار افسانے منسوب کرتے چلے آرہے ہیں۔ان میں سے ایک یہ ہے کہ مزکورہ چشمہ مہا پدم ناگ (بہت بڑا سانپ) کی رہائش گاہ تھا۔سرزمین کشمیر میں داخل ہونے سے پہلے مہا پدم نے اس ملک کے بادشاہ نیلہ مت سے رہنے کی اجازت چاہی۔اس نے اس کی درخواست کو قبول کیا اور چندر پور میں، جو اس کے بعد سندمت نگر کے نام سے مشہور ہوا، رہنے کیلئے جگہ دی۔ کہتے ہیں کہ ریشی درواسا نے جب دس داگ سو بادشاہ کی طرف سے اس کے شہر میں اپنا استقبال اچھی طرح سے نہیں ہوتا دیکھا تو اس نے بد دعا کی۔ چنانچہ اس بد دعا سے مہا پدم اپنی اصلی صورت میں آ گیا اور اس نے مذکورہ بادشاہ کو سندمت نگر کے غرق ہو جانے کی اطلاع دی۔ چنانچہ مذکورہ سانپ، مذکورہ بادشاہ مع رعایا کے سندمت نگر سے وشوگا سو پور کی طرف چلے گئے اور وہاں نئے شہر کی بنیاد ڈالی۔اس کے بعد سندمت نگر ایک بڑے چشمہ میں بدل گیا اور اب اس کا نام اولر چشمے کے نام سے مشہور ہے (این شنٹ جیوگرانی آف کشمیر، ص ۱۱۵)۔

(۲۳۵) تحصیل پلوامہ۔

(۲۳۶) آئین اکبری جلد ۲ رترجمہ جیرٹ ص ۳۵۸۔ابوالفضل کے بقول زیون ایک چشمہ ہے جس سے ہندو نیک اور بد فال نکالتے ہیں۔ چنانچہ زعفران کی فصل کاٹنے کے وقت مذکورہ چشمے میں گائے کا دودھ ڈالتے ہیں۔اگر پانی میں جذب ہو گیا تو بہتر ورنہ جان لیتے ہیں کہ اب کے سال زعفران کی فصل اچھی نہیں ہوگی۔

(۲۳۷) جیٹھ ماہ کی تاریخ بارہویں تاریخ (انگریزی کلینڈر کے مطابق جون کا مہینہ)۔

(۲۳۸) تحصیل سری پرتاپ سنگھ پورہ (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ، ص ۸۹)۔

(۲۳۹) جیرٹس آئین اکبری جلد۲رص ۳۶۳۔

(۲۴۰) واقعات کشمیر عجائب وغرایب کشمیر کے عنوان کے تحت ص ۲۶۷۔

(۲۴۱) وانگت تحصیل شہر خاص کے نزدیک (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۸۹)۔

(۲۴۲) آئین اکبری۔ ابوالفضل۔

(۲۴۳) لفظی معنی ہیں بدبودار چشمہ۔

(۲۴۴) واقعات کشمیر خواجہ محمد اعظم ص ۲۷۲۔ لیکن اس میں کھاگ کی جگہ پھاک آیا ہے جیسا کہ اس عبارت سے معلوم ہوتا ہے: ''بیروہ پرگنہ کے پھاک گاؤں میں ایک چشمہ ہے جس کا نام ہے نرائین ناگ۔ اگر باہر سے کوئی آواز ہو جائے تو اس چشمے کے پانی میں ایسا تلاطم آجاتا ہے کہ ساحلوں کے اُوپر سے اس کی موجیں گذر کر لوگوں تک پہنچ جاتی ہیں''۔

(۲۴۵) واقعات کشمیر ص ۱۷۱۔ لیکن اس میں اونتی پورہ کی جگہ رتنی پورہ لکھا ہے۔ قیاس کہتا ہے یہی آخری نام صحیح ہے۔

(۲۴۶) قصبہ ہے جنوبی کشمیر میں۔

(۲۴۷) آئین اکبری جلد۲رص ۳۶۱۔ لیکن اس میں اس چشمہ کا نام گپت گنگا کی جگہ سریاسر آیا ہے۔

(۲۴۸) سنسکرت لفظ ہے جس کے معنی ہیں چیت کے ماہ کا اختتام۔

(۲۴۹) آٹھویں روشن تاریخ۔ شکلہ پچ دراصل شکلہ پکھش ہے۔ ہندوؤں کے نزدیک جیسا کہ ذکر ہوا، ہر مہینہ دو مساوی حصوں میں بنا ہوا ہے۔ پہلے پندرہ روشن دن اور دوسرا حصہ پچھلے پندرہ تاریک دن۔ پہلے حصے کو شدی یا شکلہ پکھش (شکلہ = ش پر پیش کاف ساکن۔ سنسکرت میں روشن اور پکھشن = ب پر زبر یعنی بازو) دوسرے حصے کو بدی یا کرشن پکھش (کرشن = کاف کے نیچے زیر اور باقی حروف ساکن۔ یعنی کالا) کہتے ہیں۔

(۲۵۰) ملک حیدر چاڈورہ مصنف تاریخ کشمیر نے بھی اس مذکورہ خاصیت کو آزمایا ہے۔ چنانچہ وہ کہتا ہے: ''لار پرگنہ میں ایک اُونچے پہاڑ پر جنوب کی جانب ایک ندی بہتی ہے جس کا نام ہے اوتر گنگ۔ اگر کوئی وہاں پہنچے اور گائے کا گوشت یا مرغ پکائے تو غیر موسم ہوتے ہوئے بھی اس قدر برف گرنے لگتی ہے کہ اگر تیس چالیس آدمی بھی ہوں وہ بھی برف کے نیچے غائب ہو جائیں گے۔

(۲۵۱) ماہ ساون کی روشن بارہویں تاریخ (انگریزی تقویم کے مطابق جولائی کا مہینہ)۔

(۲۵۲) ~~۱۳۳۲ ء~~ اق م

(۲۵۳) حضرت مخدوم العارفین شیخ حمزہ کشمیریؒ کے ایک مرید ہیں۔ واقعات کشمیر کے مصنف کے بقول

صاحب حال بزرگوار تھے جو ہمیشہ دین حق کی طرف مائل تھے۔ کئی تصانیف لکھی ہیں جن میں وردالمریدین اور اس کی شرح دستور السالکین، قصیدۂ جلالیہ اور رسالہ غسلیہ مشہور ہیں۔ ۹۹۴ھ میں آخری چک بادشاہ کشمیر یعقوب چک کے عہد میں رحلت فرمائی۔ خیر مقدم سے تاریخ وفات نکالی گئی ہے۔

(۲۵۴) صحیح ہے تیرتھ (سنسکرت) اور اس کے معنی ہیں زیارت گاہ۔

(۲۵۵) کتاب میں ہفت بیرو لکھا ہے اور بیرو مہمل لفظ ہے۔ اس کے بعد مؤلف نے ''حوال آں موجود'' لکھا ہے جب کہ ''درحوالی آن موجود'' ہونا چاہئے۔ اس لئے میں نے قیاساً ''سات جگہوں میں اس کے گرد'' ترجمہ کیا ہے جو صحیح ہے۔

(۲۵۶) کرشن پکھش کا پندرہواں دن۔

(۲۵۷) کپواڑہ کے چکوں میں سے ایک مجذوب تھے جو عشق الٰہی کے جذبہ میں آوارہ عریاں پھرتے تھے۔ آپ کا مقبرہ کامراج کے علاقہ میں خاص و عام لوگوں کی زیارت گاہ ہے۔ واقعات کشمیر کے مصنف کے بقول آپ حضرت مخدوم شیخ حمزہؒ کے ہم زمان تھے اور ان کی خدمت میں حاضر ہوتے رہتے تھے۔

(۲۵۸) رام چندر اجودھیا (فیض آباد۔ ہندوستان) کا راجہ تھا۔ جس میں ہندوؤں کے عقیدے کے بموجب ذات باری نے حلول کیا تھا۔ ہندو مورخ اس کا زمانہ آج سے آٹھ لاکھ سال پہلے بتلاتے ہیں؟ (جامع اللغات اُردو)۔

(۲۵۹) شاہ مردان سے مراد ہے شاہ ولایت حضرت علی کرم اللہ وجہہ نہ کہ علی مردان خان صوبہ دار کشمیر (شاہ جہاں بادشاہ کے عہد میں) جیسا کہ نگارستان کشمیر کے مولف نے غلطی سے سمجھ لیا ہے۔

(۲۶۰) ۱۰۴۲ھ (۱۶۳۲ء)۔

(۲۶۱) سکھوں کے عہد میں کشمیر کا صوبہ دار (۱۸۴۱ء۔۱۸۴۶ء)۔

(۲۶۲) ۱۲۵۸ھ۔

(۲۶۳) سور، پرگنہ مراج میں (این شنٹ جیوگرافی آف کشمیر)۔

(۲۶۴) باٹ۔ مراج میں (ایضاً)۔

(۲۶۵) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۵۔

(۲۶۶) ایضاً۔

(۲۶۷) ایضاً۔

(۲۶۸) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۵۔

(۲۶۹) ایضاً۔

(۲۷۰) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ کے مؤلف کے بقول کوہن ہار کا پانی۔

(۲۷۱) کوہن ہار پہاڑ کے شمال کی جانب مہا گنس کے پاس۔

(۲۷۲) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۳۔

(۲۷۳) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ۔ لیکن اس میں دار ہال کی جگہ شوپ کور پہاڑ اور رائے نیار کے نام آئے ہیں۔

(۲۷۴) اصل کتاب میں ایسے ہی ہے۔

(۲۷۵) ایضاً۔

(۲۷۶) ایضاً۔ وتستا، جیسا کہ اس سے پہلے بیان کیا گیا، دریائے بہت کا سنسکرت نام ہے جو دریائے جہلم کے نام سے مشہور ہے۔

(۲۷۷) چکش (ش پر زبر اور کاف کے نیچے زیر) ہندی میں پانی کا ٹپکنا (جامع اللغات اُردو)۔

(۲۷۸) لیکن جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ نے کاژہ گل کے ذکر پر ہی اکتفا کیا ہے۔

(۲۷۹) شہر سرینگر کے مغربی حدود میں۔

(۲۸۰) راجہ بک بیٹا تھا راجہ مہر کل کا جس نے ۶۳ رسال تک حکمرانی کر کے وفات پائی۔ آئین اکبری کے مترجم جیرٹ کے بقول اس کی حکومت کا زمانہ ۵۳۲۔ق م تھا۔

(۲۸۱) سید بزرگ شاہ نیک نہاد اور سخاوت مند سید غلام شاہ کے فرزند ارجمند تھے۔ اپنے والد کے خلیفہ بابا نور الدین پانپوری سے طریقت کے آداب حاصل کر کے شہود کے درجہ پر بلندی پائی۔ ایک صاحب جود وسخا مرد تھے۔ دنیوی تعلقات کے باوجود ہمیشہ عبادت و ریاضت میں منہمک تھے۔ آپ کی وفات ۴ رر جب ۱۲۳۲ھ میں ہوئی اور اجداد کے مقبرے میں آسودہ ہوئے۔ آپ کی تاریخ وفات اس شعر سے نکلتی ہے۔

ہاتفی سجع مہر تربیت او  خواجہ سید بزرگ شاہ نہاد

(خلاصہ از تاریخ حسن قلمی نسخہ جلد ۳ رورق ۴۷)۔

(۲۸۲) خواجہ شاہ نیاز نقشبندی، خواجہ عبد الرحیم شیخ کمان کے خلیفہ الصدق تھے۔ صوری اور معنوی علوم میں صاحب کمالات تھے۔ قرآن وحدیث کے علوم میں وافر دستگاہ کے مالک تھے۔ آپ کے اساتذہ میں ملا عبد النبی مر جان پوری خاصی شہرت رکھتے ہیں۔ بخشش وعطا میں لاثانی تھے۔ آپ مشہور سیاح ولیم مور کرافٹ کے ہمزمان تھے۔ کہتے ہیں جب مذکورہ کرنل ولیم مور کرافٹ ترکستان کی سیر کر رہا تھا تو وہ راستے میں ترکمانوں کے ہاتھوں قید ہو گیا۔

باطنی توجہات سے خواجہ شاہ نیاز نقشبندی نے اسے ان سے رہائی دلوائی۔ آپ کی تصنیفات میں رسالہ چائے نامہ (تصوف پر) اور دیوان نیاز یادگار ہیں۔ دونوں کتابیں امرتسر میں مطبع مجددی سے سنگی چھاپ میں شائع ہوئی ہیں (خلاصہ از تاریخ حسن قلمی نسخہ جلد۳ ورق ۴۴)۔

(۲۸۳) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ۔

(۲۸۴) سندھ (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ)۔

(۲۸۵) افغان دور میں کشمیر کا صوبہ دار ۱۸۰۲ء۔۱۸۰۵ء۔

(۲۸۶) متن میں شالی کا لفظ نہیں آیا ہے لیکن میں نے قیاساً اسی لفظ کو ایک اہم پیداوار کے پیش نظر استعمال کیا ہے۔

(۲۸۷) افغان دور میں کشمیر کا صوبہ دار ۱۸۱۴ء۔۱۸۱۹ء۔

(۲۸۸) کامراج کے علاقے میں ایک پرگنہ (این شنٹ جیوگرافی ص ۲۲۱)۔

(۲۸۹) ۷۷ء۔۸۰۳ء۔

(۲۹۰) معجزاتی طور پر کشمیر کا حکمران بن گیا۔۲۳ ق م میں وفات پائی (تاریخ حسن قلمی نسخہ جلد۲ ورق ۲۸/ ملکیت خانقاہ معلیٰ)۔

(۲۹۱) ۱۰۸۷ھ۔۱۰۶۹ھ (۱۶۵۷ء۔۱۶۵۹ء) صاحب جامع اللغات اُردو کے بقول شاہ جہان چغتائی کے عہد میں بابر کی اولاد کو جو ہندوستان میں حکمران تھے چغتائی خاندان کے نام سے یاد کیا جاتا تھا کیونکہ ان کا جداعلیٰ امیر تیمور چنگیز خان کے بیٹے چغتائی خان کی نسل سے تھا۔

(۲۹۲) کشمیر کا ایک بادشاہ گذرا ہے جو بدھ مذہب کا تھا۔ کہتے ہیں یہ شخص کشمیر میں سلیمان کے ساتھ آیا تھا (راج ترنگنی ترجمہ اچھر چند جلد ۱ ص ۱۰۸)۔

(۲۹۳) ان کی تفصیل کے لئے دیکھئے باغات کشمیر کا عنوان۔

(۲۹۴) ارن (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ)۔

(۲۹۵) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۶۔

(۲۹۶) ۸۶۵ھ۔

(۲۹۷) پنڈت آنند کول نے مظفرآباد کی جگہ دومیل لکھا ہے اور صحیح یہی ہے۔ دومیل ایک گاؤں ہے مظفرآباد کے مشرق میں قریب دومیل کی دُوری پر۔ دومیل ہندی میں دریاؤں کے ملنے کی جگہ کو کہتے ہیں اور اسی نام کی رعایت

سے یہ گاؤں، جو کشن گنگا دریا اور دریائے جہلم کے ملنے کا مقام ہے، اس نام سے جانا جاتا ہے۔

(۲۹۸) مراد ہے سنسکرت زبان جو شمالی ہندوستان میں شاستری زبان سے بھی موسوم ہے۔

(۲۹۹) پنڈت آنند کول نے پامپور لکھا ہے۔ اس کی تحقیق کے مطابق یہ جگہ سال ۸۱۲ء اور ۸۴۹ء کے درمیان بنی ہے۔ اس کا بانی راجہ اجیت پیڈ کا وزیر پدم تھا۔ اس گاؤں کا پرانا نام پدم پور تھا۔ پانپور کا زعفران مشہور ہے۔ یہاں کی مردم شماری ۳۳۴۸ رلوگ ہیں (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ)۔

(۳۰۰) کشمیر کے بڑے قصبوں میں سے ہے۔ اس کا بانی سویا نام کا ایک آدمی تھا جو اونتی ورما (۸۵۵ء۔۸۸۳ء) کے عہد میں وزارت کے عہدے پر فائز تھا۔

(۳۰۱) اہمیت کے لحاظ سے بارہمولہ کا قصبہ تیسرے درجے پر ہے۔ بھارت اور پاکستان میں بٹ جانے سے پہلے یہ ہندوستان میں کشمیر کا ایک بہت بڑا تجارتی مرکز مانا جاتا تھا۔

(۳۰۲) یہ مظفر خان بمبہ کا تعمیر کیا ہوا ہے (۱۵۵۴ء)۔ آنند کول کے بقول اس کی آبادی ۲۴۶۲ رآدمی ہیں۔

(۳۰۳) بحر ہند۔

(۳۰۴) ناردرن بیریر آف انڈیا کا مصنف مسٹر ڈریو اس کی گہرائی بھرپور حصے میں چودہ فٹ انگریزی اور بہت جگہوں میں اس سے کم بتلاتا ہے۔ سٹاین کے نزدیک اس کی اوسط گہرائی انگریزی پندرہ فٹ ہے (ص ۱۱۶)۔

(۳۰۵) لیکن فریڈرک ڈریو (Frederic Drew) نے مذکورہ کتاب میں اس کی لمبائی دس میل اور چوڑائی کا اندازہ چھ میل کیا ہے اور سٹاین کا قول ہے کہ اس کی لمبائی بارہ میل اور چوڑائی چھ میل ہے اور کہتا ہے کہ سیلاب کے وقت اس کی لمبائی تیرہ میل اور چوڑائی آٹھ میل ہو جاتی ہے۔

(۳۰۶) نوکابندن کے معنی سنسکرت زبان میں کشتی اور اس کے باندھنے کی جگہ ہے۔ اس لئے اسکے معنی ہیں وہ سوراخ جس سے کشتی کو مضبوط باندھا جاتا ہے۔

(۳۰۷) تاریخ کشمیر نراین کول عاجز، ص ۴۷۔

(۳۰۸) رجوع کیجئے تاریخ حسن جلد ۲ رکی طرف راجہ سندر سین فرزند راجہ یندر سین کے ذکر میں۔

(۳۰۹) کشمیری لفظ ہے یعنی کشتی بان۔

(۳۱۰) آشیانہ یعنی طبقہ۔

(۳۱۱) لنک کشمیری لفظ ہے یعنی جزیرہ۔

(۳۱۲) ۸۴۷ھ (۱۴۴۳ء) بقول خواجہ محمد اعظم مولف واقعات کشمیر مذکورہ تاریخ اس کے زمانے میں ایک

پتھر پر کندہ تھی (ص ۵۰)۔

(۳۱۳) بشکرند = یعنی شکار کرتے ہیں۔

(۳۱۴) تال یعنی تالاب۔

(۳۱۵) لیکن مسٹر ڈریو نے اس کی لمبائی اور چوڑائی بالترتیب پانچ اور دو میل بتلائی ہے (ص ۱۴۱)۔

(۳۱۶) دیکھئے راجہ پرورسین تاریخ حسن جلد۲۔

(۳۱۷) ایضاً۔

(۳۱۸) ۷۹۸ھ-۸۲۰ھ۔

(۳۱۹) گھاس کی ایک قسم ہے جس سے چٹائیاں بنتے ہیں۔

(۳۲۰) یعنی امیر خان جوان شیر جو احمد شاہ اور اس کے بیٹے تیمور شاہ افغان کے عہد میں ۱۷۷۱ء سے ۱۷۷۶ء تک کشمیر کا حاکم تھا (نگارستان کشمیر)۔

(۳۲۱) ۸۸۰ھ-۸۹۳ھ (۱۴۷۵ء-۱۴۸۷ء)۔

(۳۲۲) آنجہانی مہاراجہ رنبیر سنگھ کے عہد میں۔

(۳۲۳) راجہ جیاپیڈ، راجہ سنگرام پیڈ کا بیٹا تھا۔ صاحب راج ترنگنی نے اسے متضاد صفتوں والا راجہ کہا ہے۔ اس کے بقول وہ علم دوست، بہادر اور ظالم تھا۔ شجاعت کے ضمن میں اس نے گجرات کے راجہ بھیم سین اور نیپال کے راجہ پر لشکرکشی کی۔ کہتے ہیں کہ بدھ مت کی طرف مائل تھا اور جیاپور شہر؟ میں بودھوں کیلئے تین بت خانے بنائے تھے۔ تیس سال تک حکومت کرنے کے بعد وفات پائی (خلاصہ راج ترنگنی سے جلد اول، ترنگ ۴/ترجمہ اچھر چند۔ جیرٹ کی تحقیق کی بناء پر اس کی حکومت کا عہد ۷۰۲ء-۸۰۳ء کا درمیانی زمانہ ہے۔ جیرٹس آئین اکبری جلد۲/ص ۳۷۵)۔

(۳۲۴) اب یہ مانسبل کے نام سے مشہور ہے۔

(۳۲۵) مخزن الادویہ جلد۱/ص ۲۷۔ عربی لغت میں حناء الغول اور خس الحمار اور شنجار اور فارسی میں ہوجویہ۔ مذکورہ دوائی چار اقسام میں تقسیم ہوئی ہے (ایضاً ص مذکور)۔

(۳۲۶) گرم وخشک اول درجہ میں (مخزن الادویہ جلد۱/ص ۷۲)۔

(۳۲۷) مخزن الادویہ جلد۱/ص ۷۹۔ لیکن اس کے مصنف نے اس کا ہندی نام کوسم کی بجائے کسم لکھا ہے۔ اس تحقیق کے بموجب مذکورہ خاصیت یہاں پر صحرائی احریص سے تعلق رکھتی ہے۔ لیکن بستانیا حریص کی طبیعت دوسرے درجہ میں گرم اور اول درجہ میں خشک ہے۔

(۳۲۸) اُساروں۔ یہ سریانی لفظ ہے۔ یونانی میں اسے سرابیون کہتے ہیں (مخزن الادویہ جلد ا ص ۸۹)۔

(۳۲۹) صحیح ہے تگر (ایضاً ص مذکور)۔

(۳۳۰) صاحب مخزن الادویہ کی تحقیق کے بموجب اس کی طبیعت درجہ دوم کے اواخر میں گرم اور خشک ہے (ص ۸۹)۔

(۳۳۱) صاحب مخزن الادویہ جلد ا ص ۹۱۔

(۳۳۲) دھارہا (مخزن الادویہ ص مذکور)۔

(۳۳۳) اُسقوردیون۔

(۳۳۴) درجہ سوم کے اواخر میں (ایضاً ص ۹۷)۔

(۳۳۵) صاحب مخزن الادویہ نے اسے اِسلنج لکھا ہے۔

(۳۳۶) اس کی بستانی قسم گرم ہے درجہ سوم میں اور خشک درجہ دوم میں (ایضاً ص مذکور)۔

(۳۳۷) اَسل۔ ہندی میں اسے رکسرانی کہتے ہیں (ایضاً ص مذکور)۔

(۳۳۸) ایضاً ص مذکورہ۔ مزید کہا ہے کہ اس کے اگنے کی جگہ پانی ہے یا پانی والی جگہ۔

(۳۳۹) صاحب مخزن الادویہ نے اسے کندس بھی کہا ہے (ص ۱۵۷)۔

(۳۴۰) صاحب مخزن الادویہ کے بقول اس کی خاصیت یہ ہے کہ اس کی بیج خصی کی مانند ہوتی ہے۔ اس کے پتے سبزی مائل اور جڑ زردی مائل۔ اس کا کہنا ہے کہ شام کے ملک میں لوگ اس سے کپڑے دھوتے ہیں (ص ۱۵۷)۔

(۳۴۱) لیکن صاحب مخزن الادویہ نے اس کی خاصیت (کیفیت) یوں لکھی ہے: ''نباتات کی اقسام میں سے ہے۔ رنگ اس کا سرخ اور ربیعی ہے جب تک گرما کا موسم رہتا ہے۔ اس کی شاخیں کپاس کے ریشے کی مانند یا باریک دھاگے کی طرح ہوتی ہیں۔ اس کے بیج باریکی میں خردل کے دانوں (رائی کے دانوں) کی ہم شکل ہوتے ہیں (ص ۱۰۷)۔

(۳۴۲) Absinthium۔

(۳۴۳) صاحب مخزن الادویہ نے ہندی میں اس کا نام ستارو لکھا ہے (ص ۱۱۱)۔

(۳۴۴) (Opium) لیکن یونانی طبیب چوتھے درجہ میں اسے سرد جانتے ہیں (مخزن ص ۱۱۷)۔

(۳۴۵) مخزن الادویہ جلد ا ص ۱۲۰۔

(۳۴۶) صاحب مخزن نے اس کی خاصیت تیسرے درجہ میں سرد اور خشک لکھی ہے۔

(۳۴۷) انجرہ (مخزن ص ۱۳۲)۔

(۳۴۸) مخزن الادویہ نے اسے پہاری سوسن کی جڑ قرار دیا ہے (ص ۱۴۷)۔

(۳۴۹) درجہ سوم کے آخر میں گرم اور درجہ سوم میں مع فضلیہ رطوبت کے خشک ہے (ص ۱۷۲)۔

(۳۵۰) اوسط دوم درجہ میں گرم اور خشک اور بعض کہتے ہیں اول درجہ میں معتدل اور دوم درجہ میں گرم اور خشک ہے (ص ۱۴۸)۔

(۳۵۱) ہندی میں اسے بھٹ کٹیا کہتے ہیں (ص ۱۵۳)۔

(۳۵۲) صاحب مخزن الادویہ کے نزدیک اس کی کیفیت یہ ہے کہ ایک گز لمبی نباتات ہے خاردار شاخوں والی۔

(۳۵۳) صحیح ہے کالی جھانپ (ص ۱۶۳)۔

(۳۵۴) درجہ سوم کے اول میں گرم اور خشک ہے (ص ۱۶۴)۔

(۳۵۵) فارسی میں۔ لیکن ہندی میں اس کی چھوٹی قسم کو کولوکھنی اور بڑی کو جٹادھاری کہتے ہیں۔

(۳۵۶) مخزن الادویہ ج ۱/ص ۱۶۸۔

(۳۵۷) ایضاً ۱۷۲۔

(۳۵۸) درجہ سوم میں اس کی طبیعت گرم اور خشک۔ ایک گھاس ہے جو حنا کے درخت کے گرد لپٹ جاتی ہے اور اس کے پتے تنبول (پان کے پتوں) کے مانند ہوتے ہیں۔

(۳۵۹) صاحب مخزن الادویہ کے بقول ایک گھاس ہے جو ایک بالشت یا اس سے ذرا لمبی ہوتی ہے۔ اس کی ٹہنیاں بہت باریک ہوتی ہیں۔ صورت میں حنا کے پتوں کی ہم شکل الا یہ کہ نیچے اس کے پتے کشادہ اور دونوں طرف سے گوشے والے ہوتے ہیں (ص ۱۹۲)۔

(۳۶۰) یہ یونان کے حکیموں کی رائے ہے لیکن ہندوستان کے حکیموں کی رائے اس کے برخلاف ہے۔ ان کے نزدیک اس کی خاصیت درجہ چہارم میں بے حد سرد ہے اور یہی آخر الذکر قول ترجیح رکھتا ہے کیونکہ صاحب مخزن الادویہ نے یہی خیال اختیار کیا ہے (ص ۲۰۵)۔

(۳۶۱) یعنی مائل بہ سیاہی۔ اور باقی دو قسموں میں سے اس کی ایک قسم زرد ہوتی ہے اور دوسری سفید۔ اور اس کی کیفیت یہ ہے کہ یہ ایک گھاس ہے، ایک گز لمبی اور اس کے پتے برگ انار کے ہم شکل ہوتے ہیں۔ ذائقہ میں ذرا

کڑوا اور تیز (ص ۲۰۱)۔

(۳۶۲) صحیح یہ ہے کہ چاکسو ہندی لفظ ہے۔ فارسی میں یہ چشمک اور چشوم ہے۔ اس کی کیفیت بقول صاحب مخزن الادویہ "یہ ایک دانہ ہے بہی دانہ کے برابر۔ مثلث ہے شکل میں اور سیاہی مائل (ص ۲۱۲)۔

(۳۶۳) کشمیر کے متصل ایک گاؤں ہے۔

(۳۶۴) دوم درجہ میں گرم وخشک۔

(۳۶۵) سُعد۔ مخزن الادویہ کے مصنف نے اسے درجہ دوم کے آخر میں محض خشک قرار دیا ہے (ص ۴۰۳)۔

(۳۶۶) مخزن الادویہ ص ۳۵۵۔ لیکن مصنف نے "وسط میں خشکی اعتدال کے قریب" کا اضافہ کیا ہے۔

(۳۶۷) اس کی کیفیت یہ ہے کہ گھاس کا ایک دانہ ہے لبلاب کے مانند۔ اس کی شاخیں از حد باریک ہیں اور پتے سبز رنگ کے ہیں۔

(۳۶۸) لیکن درجہ دوم میں خشک ہوتا ہے۔ اس کا تلفظ ہے حُرمل (ص ۲۸۱)۔

(۳۶۹) یہ ایک چیز ہے جو گیلے پتھروں پر اُگتی ہے۔ رنگ اس کا سبزی مائل بہ سفیدی ہے۔ اگر اسے مَل دیا جائے تو حنا کی رنگ کی ہو جاتی ہے (مخزن الادویہ جلد ا ص ۲۸۳۔۲۸۴)۔

(۳۷۰) درجہ دوم کے اول میں سرد اور اسی درجہ کے آخر میں خشک (ایضاً ص ۲۸۶)۔

(۳۷۱) صحیح ہے ہینگ۔ انگریزی نام Asafootida ہے۔ ڈاکٹری مخزن الادویہ کے مصنف نے اسے افغانستان، پنجاب، ایران اور ترکستان کی پیداوار کہا ہے۔

(۳۷۲) صحیح ہے کہ پیز رفارسی لفظ ہے۔ بقول صاحب مخزن الادویہ اس کی وجہ تسمیہ یہ ہے کہ مذکورہ دوائی حلیفہ میں جو مکہ معظّمہ کے قریب ہے بکثرت اُگتی ہے (ص ۲۹۲)۔

(۳۷۳) اس کی چھوٹی قسم کی طبیعت درجہ دوم کے اول میں گرم اور اول درجہ میں تر اور اس کی بڑی قسم درجہ دوم کے آخر میں گرم ہے (ص ۳۰۶)۔

(۳۷۴) اس کی دوسری قسم سفید ہوتی ہے۔ صاحب مخزن الادویہ کے نزدیک اس کی کیفیت یہ ہے کہ یہ جڑ ہے ایک گھاس کی جس کے پتے بارتنگ کے ہم شکل ہوتے ہیں۔ اس کا پھول سرخ اور تنا حجم میں چار انگلیوں کے برابر پیچیدہ ہوتا ہے (ص ۳۰۷)۔

(۳۷۵) مع قبض اور بعض طبیبوں نے اسے گرم وخشک قرار دیا ہے (ص ۳۱۰)۔

(۳۷۶) ہندی میں ستانی، سوالی، دودھالی اور ستاور کہتے ہیں (ص ۴۴۵)۔

(۳۷۷) درجہ اول میں گرم اور درجہ دوم میں تر (ایضاً)۔

(۳۷۸) فارسی میں مویزک عسلی۔

(۳۷۹) دوپ۔ ہندی لفظ ہے اور فارسی میں اسے مَرغ کہتے ہیں۔

(۳۸۰) Resina۔

(۳۸۱) (Rhubarb Root) بقول ڈاکٹر غلام جیلانی مصنف ڈاکٹری مخزن الادویہ، راوند سنسکرت لفظ ہے اور اس کا نام ہے فارسی میں ریوند (ص ۱۴۵)۔

(۳۸۲) Colechicum۔

(۳۸۳) اور کٹ پایزہ بھی کہتے ہیں (مخزن الادویہ اُردو جلد ا رص ۴۳۶)۔

(۳۸۴) لیکن صاحب مخزن نے خشک کا ذکر کرنے پر اکتفا کیا ہے۔

(۳۸۵) درجہ دوم کے آخر میں گرم اور درجہ اول میں خشک۔ بعضوں نے کہا ہے کہ شبت تر گرم ہے درجہ اول میں اور شبت خشک درجہ اول کے اول میں گرم ہے (ص ۴۳۹)۔

(۳۸۶) Hemlock۔

(۳۸۷) اور بقول صاحب مخزن تیسرے درجہ میں گرم اور درجہ اول میں خشک ہے۔ اس کا دودھ چوتھے درجہ کے آخر تک گرم اور خشک لکھا گیا ہے (ص ۴۳۹)۔

(۳۸۸) سِوال ہندی میں کہتے ہیں اور فارسی میں اس کا نام ہے چام خواب (مخزن الادویہ جلد ۲ رص ۸)۔

(۳۸۹) Pyrethrum Root۔

(۳۹۰) صاحب مخزن الادویہ اُردو کی اس کی طبیعت کے بارے میں یہ تفصیل ہے کہ تازہ شہد درجہ دوم میں گرم اور درجہ اول میں خشک ہے۔ اور اس کی قدیم خاصیت ہے کہ تیسرے درجہ کے اول میں گرم ہے اور دوم درجہ میں خشک (ص ۲۳)۔

(۳۹۱) Tar۔

(۳۹۲) صاحب مخزن الادویہ (جلد ۲) نے خشک کے ذکر کرنے پر اکتفا کیا ہے۔

(۳۹۳) Chiretta۔

(۳۹۴) Cotton۔

(۳۹۵) Hemp۔

(۳۹۶) فارسی برنجاسف اور ہندی گندنا۔

(۳۹۷) ہندی لفظ ہے۔ فارسی میں اسے سیاہ گل کہتے ہیں۔

(۳۹۸) آجمود (ہندی)۔

(۳۹۹) Ajnan۔

(۴۰۰) بچھ۔

(۴۰۱) ہربی، ہندی لفظ ہے۔ صاحب خلاصۃ التجارب نے لکھا ہے کہ ہربی عمدہ قسم کی ایک جڑ ہوتی ہے جو کشمیر کے پہاڑوں پر بکثرت اُگتی ہے۔ اس کی طبعیت گرم وخشک ہے چوتھے درجہ میں اور مہلک زہروں میں سے ہے۔

(الف) مطلب ہے ان سبزیوں اور ادویہ کے نام جو یونانی طب میں استعمال ہوتے ہیں۔

(۴۰۲) صاحب مخزن الادویہ اُردو نے اسے درجہ اول کے آخر میں سرد اور تر لکھا ہے (ص ۹۳)

(۴۰۳) صحیح ہے ساگ چوکا۔

(۴۰۴) مخزن الادویہ کی تحقیق کے مطابق درجۂ دوم میں سرد وخشک ہے اور بعضوں کے نزدیک اول درجہ میں (ص ۱۸۰)۔

(۴۰۵) ہندی خلقہ۔

(۴۰۶) بقول صاحب مخزن الادویہ جلد ا ص ۲۷۸ حرشف کا تلفظ ح پر زبر، ر پر سکون، ش پر زبر اور ف پر سکون ہے۔

(۴۰۸) فارسی میں ترشہ کہتے ہیں۔

(۴۰۸) اول درجہ میں اس کی طبیعت سرد اور تر ہے اور بعضوں نے کہا ہے درجہ دوم کے وسط میں اور بعض اسے سردی اور گرمی میں معتدل جانتے ہیں۔

(۴۰۹) درجہ اول میں حرارت کے ساتھ (مخزن الادویہ ص ۴۱۲)۔

(۴۱۰) ف کے نیچے زیر (اور زبر کے ساتھ بھی لکھا گیا ہے) ط ساکن۔ عربی لفظ ہے۔ فارسی میں سماروغ اور ہندی میں پھپین چتر۔

(۴۱۱) درجہ دوم میں اس کی طبیعت گرم اور درجۂ اول میں تر ہے (مخزن ص ۱۰۱)۔

(۴۱۲) ق پر پیش۔ عربی لفظ ہے اور بعضوں کے خیال میں نبطی لفظ ہے۔ فارسی میں اسے نزند کہتے ہیں (ص

۱۰۹)۔

(۴۱۳) ق پر پیش۔ فارسی میں کلم اور رومی میں کلم گرد کہتے ہیں (ص ۱۱۱)۔

(۴۱۴) کاف پر پیش۔ عربی لفظ ہے۔ فارسی اور ہندی میں گندنا کہتے ہیں (ص ۱۳۲)۔

(۴۱۵) کاف پر پیش۔ فارسی لفظ کرم کا معرب ہے اور کلم بھی لکھا گیا ہے۔

(۴۱۶) کاف پر زبر، م پر سکون اور الف وت پر زبر۔

(۴۱۷) ھ کے نیچے زیر، ن پر سکون اور د کے نیچے زیر۔

(۴۱۸) مخزن الادویہ کے بقول اول درجہ کے آخر میں اس کی طبیعت سرد اور خشک ہے (ص ۲۶۵)۔

(۴۱۹) صاحب مخزن ہے بقول درجہ دوم میں گرم اور درجہ سوم میں خشک ہے۔

(۴۲۰) گُربزہ۔ کاف پر پیش اور رب پر زبر (کاف پر زبر کے ساتھ بھی آیا ہے)۔

(۴۲۱) فارسی میں پیاز دشتی اور پیاز موش بھی کہتے ہیں کیونکہ یہ چوہے کا قاتل ہے۔ ہندی میں اس کا نام ہے کانڈھ اور کنڈی اور انگریزی میں Squill (مخزن الادویہ جلد ۱/ص ۹۷۔ مخزن الادویہ ڈاکٹری ص ۱۳۵۵)۔

(۴۲۲) صاحب مخزن الادویہ اُردو جلد ۲، ص ۶۸/ کے بقول فلفل السّودان کا منبع حبشہ اور سوڈان کے ملک ہیں۔

(۴۲۳) یعنی روٹی کے ساتھ کھائی جانے والی خوردنی۔

(۴۲۴) گیاہ کے پتے ہیں جن کی دو اقسام ہیں ایک بستانی یا بری اور دوسری پہاڑی۔ پہلی قسم کے پتے گول اور دوسری کے چپٹے اور لمبے ہوتے ہیں۔ اس کا جسم نازک اور سیاہ رنگ کا ہوتا ہے (ص ۴۶۲)۔

(۴۲۵) ریحان یا نیاز بو کی ایک قسم اور شاید اسی لئے حسن نے اسے الگ قسم خیال کیا ہے (مخزن الادویہ جلد ۱/ص ۳۶۷)۔

(۴۲۶) ف پر پیش۔ پودینہ کا معرب یا فارسی پودینک کا۔ اسی طرح مذکورہ زبان میں دال کی جگہ منقوطات میں بھی آیا ہے یعنی فوتنج (مخزن جلد ۲/ص ۷۰)

(۴۲۷) درجہ دوم کے آخر میں گرم و خشک ہے فضلیہ رطوبت کے ساتھ۔

(۴۲۸) صحیح ہے حنظل اور حسن نے غلط لکھا ہے (مخزن الادویہ ڈاکٹری ص ۱۴۸۷/Colocynthi)

(۴۲۹) ہندی میں قثاء ککڑی کو کہتے ہیں اور حقیقت یہ ہے کہ ککڑی کشمیر میں نہیں ہوتی۔ شاید حسن نے قثاء اور خیار کو مترادف جان لیا ہے۔

(۴۳۰) اس کا بری قسم درجہ سوم میں گرم اور درجہ دوم میں خشک ہے۔ اور بستانی قسم اس کا درجہ دوم میں گرم اور

درجہ اول میں خشک ہوتا ہے (مخزن الادویہ جلد ا ص ۷۹)۔

(۴۳۱) زبر کے ساتھ۔ میوہ کی ایک قسم ہے (شمس اللغات فارسی)۔

(۴۳۲) فرق یہ ہے کہ کشمیر کا سنگاڑہ ہندوستان اور پنجاب کے سنگاڑے کے مقابلے میں بہت چھوٹا ہوتا ہے۔

(۴۳۳) ذروج کی جمع۔ پیش کے ساتھ۔ ایک سرخ رنگ کا کیڑا زہریلا جس پر کالے نقطے ہوتے ہیں (شمس اللغات)۔

(۴۳۴) تمساح (ت کے نیچے زیر) یعنی نہنگ۔

(۴۳۵) آئین اکبری جلد ۲ ر ترجمہ جیرٹ ص ۳۴۸۔

(۴۳۶) صحیح ہے ۵۲۱۴ ر فٹ انگریزی......رُوٹس ان دی ویسٹرن ہمالیہ کشمیر وغیرہ جلد ۱ ر ۱۔ ص ۱۲۸ خ مصنفہ میجر کینتھ میسن مطبوعہ ۱۹۲۲ ادہرادُون۔

(۴۳۷) ۵۲۱۰ ر فٹ۔ (ایضاً ص ۳۳)۔

(۴۳۸) ۵۲۰۰ ر فٹ۔ ایضاً۔

(۴۳۹) گِنل۔ گاف کے نیچے زیر۔ ن پر زبر اور ل ساکن (ایضاً)۔

(۴۴۰) ۴۶۵۰ ر فٹ (ایضاً)۔

(۴۴۱) ۴۴۰۰ ر فٹ (ایضاً ص ۳۶)۔

(۴۴۲) ۳۶۵۰ ر فٹ (ایضاً)۔

(۴۴۳) ۳۶۵۰ ر فٹ (ایضاً)۔

(۴۴۴) ۲۷۰۰ ر فٹ (ایضاً ص ۳۱)۔

(۴۴۵) ۲۴۵۵ ر فٹ (ایضاً ص مذکور)۔

(۴۴۶) گڑھی حبیب اللہ خان (ایضاً)۔

(۴۴۷) ۲۶۵۵ ر فٹ (ایضاً ص مذکور)۔

(۴۴۸) مانسہرہ صحیح ہے۔

(۴۴۹) ۳۵۵۰ ر فٹ (ایضاً)۔

(۴۵۰) ۴۰۱۰ ر فٹ (ایضاً ص ۳۰)۔

(۴۵۱) ۷۸۰۰ ر فٹ (ایضاً ص ۲۱)۔

(۴۵۲) ایک چھوٹا سا بازار ہے اور صحت افزا مقام۔ صوبہ سرحد (پاکستان) کے حدود میں واقع ہے (ایضاً)۔

(۴۵۳) ۷۰۰۰ رفٹ (ایضاً)۔

(۴۵۴) شمالی پنجاب کا ایک بہترین گرمائی مقام ہے۔

(۴۵۵) ۴۸۴۰ رفٹ (ایضاً ص ۳۸)۔

(۴۵۶) ۴۴۵۰ رفٹ (ایضاً)۔

(۴۵۷) ۳۷۸۰ رفٹ (ایضاً)۔

(۴۵۸) ۶۳۰۰ رفٹ۔ روٹس ان دی ویسٹرن ہمالیہ کشمیر وغیرہ جلد ا رص ۴۰ رمصنفہ میجر کینتھ میسن صاحب۔ چھاپ دہرادون۔

(۴۵۹) ۶۶۷۰۔فٹ (ایضاً)۔

(۴۶۰) ۴۵۶۰ رفٹ (ایضاً ص ۳۹)۔

(۴۶۱) ۳۳۰۰ رفٹ (ایضاً)۔

(۴۶۲) تھنہ منڈی (ویسٹرن ہمالیہ، کشمیر اینڈ کمپنی ص ۱۴)۔

(۴۶۳) ۴۹۳۰ رفت (ایضاً)۔

(۴۶۴) صحیح ہے ۳۰۳۰ رفٹ انگریزی (ایضاً ص ۱۲)۔

(۴۶۵) چھوٹا سا قصبہ ہے بازار اور تحصیل پر مشتمل (ایضاً)۔

(۴۶۶) ۲۶۵۰ رفٹ (ایضاً)۔

(۴۶۷) ۲۱۰۰ رفٹ (ایضاً)۔

(۴۶۸) ۱۹۰۰ رفٹ (ایضاً ص ۱۱)۔

(۴۶۹) چوکی چوہرا (ایضاً)۔

(۴۷۰) صحیح ہے ۱۰۹۰ رفٹ (ایضاً)۔

(۴۷۱) ایک چھوٹا سا قصبہ ہے دریائے چناب کے دائیں کنارے پر اور ایک قلعہ اور بازار پر مشتمل (ایضاً)۔

(۴۷۲) صحیح ہے ۱۰۰۰ رفٹ (ایضاً ص ۱۰)۔

(۴۷۳) شاہجہان پادشاہ کے عہد میں کشمیر کا صوبہ دار۔ پہلی بار ۱۰۵۱ھ میں (۱۶۴۱ء) دوسری بار ۱۰۶۰ھ (

۱۶۵۰ء) سے ۱۰۶۷ھ (۱۶۵۷ء) تک (نگارستان کشمیر)۔

(۴۷۴) ۵۵۲۰ رفٹ (روٹس ان دی ویسٹرن ہمالیہ کشمیر وغیرہ جلد ا رمصنفہ میجر کینتھ میسن صاحب۔ چھاپ دفتر سرنگیا میٹریکل سروے آف انڈیا۔ دہرہ دون ۱۹۲۲ء)۔

(۴۷۵) صحیح بلندی کا ہے ۶۷۲۰ رفٹ انگریزی (ایضاً یہی صفحہ)۔

(۴۷۶) ۷۶۰۰ رفٹ (ایضاً ص ۵۲)۔

(۴۷۷) علی آباد سرائے (ایضاً)۔

(۴۷۸) ۱۰۰۰۰ رفٹ (ایضاً)۔

(۴۷۹) ۸۱۵۰ رفٹ (ایضاً)۔

(۴۸۰) ۶۰۵۰ رفٹ ا (ایضاً ص ۴۹)۔

(۴۸۱) ۲۴۰۰ رفٹ (ایضاً)۔

(۴۸۲) ۲۰۱۰ رفٹ (ایضاً ص ۴۸)۔

(۴۸۲) ۱۸۲۰ رفٹ (ایضاً)۔

(۴۸۳) ۲۰۱۰ رفٹ (ایضاً ص ۴۸)۔

(۴۸۴) ۲۰۶۰ رفٹ (ایضاً)۔

(۴۸۵) ۱۰۵۰ رفٹ (ایضاً ص ۸)۔

(۴۸۶) چھوٹا قصبہ ہے اور ضلع کا صدر مقام (ایضاً ص ۸)۔

(۴۸۷) اس کی بلندی کی تحقیق پہلے بیان ہو چکی۔

(۴۸۸) صحیح ہے ۳۳۴۸ رفٹ انگریزی (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۱۱)۔

(۴۸۹) صحیح ہے ۴۴۲ رفٹ (ایضاً)۔

(۴۹۰) صحیح ہے ۵۱۰۰ رفٹ (روٹس ان دی ویسٹرن ہمالیہ کشمیر وغیرہ جلد ا رص ۸۱۔ مصنفہ میجر کینتھ میسن صاحب چھاپ دہرادون ۱۹۲۲ء)۔

(۴۹۱) ایضاً۔

(۴۹۲) صحیح اُونچائی ہے ۵۱۱۶ رفٹ (ایضاً ص ۷۵)۔

(۴۹۳) صحیح بلندی ۵۱۱۶ رفٹ ہے (ایضاً ص ۷۵)۔

(۴۹۴) ۴۵۰۰ رفٹ (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۹۲)۔

(۴۹۵) صحیح بلندی ہے ۸۳۰۰ رفٹ انگریزی (روٹس ان دی ویسٹرن ہمالیہ کشمیر وغیرہ جلد ا رص ۸۰ ر مصنفہ میجر کینتھ میسن صاحب چھاپ دہرہ دون ۱۹۲۲ء)۔

(۴۹۶) اس کی بلندی کا ذکر پہلے ہو چکا۔

(۴۹۷) صحیح بلندی اس کی ہے ۵۲۲۰ فٹ (ایضاً ص ۱۱۸)۔

(۴۹۸) ۵۸۰۰ رفٹ (ایضاً)۔

(۴۹۹) ۶۸۲۰ رفٹ (ایضاً)۔

(۵۰۰) صحیح بلندی اس کی ہے ۸۷۵۰ رفٹ انگریزی (ایضاً ص ۱۱۹)۔

(۵۰۱) ۹۴۵۰ رفٹ (ایضاً)۔

(۵۰۲) ۱۱۰۰۰ رفت (ایضاً ص ۱۲۰)۔

(۵۰۳) صحیح بلندی ہے ۸۷۹۰ رفٹ (ایضاً ص ۱۲۱)۔

(۵۰۴) صحیح ہے ۱۱۴۰۰ رفٹ (ایضاً ص ۱۲۲)۔

(۵۰۵) صحیح ہے کھر دونگ۔ (روٹس ان دی ویسٹرن ہمالیہ وکشمیر وغیرہ جلد ا رص ۲۲۰)۔

(۵۰۶) میجر کینتھ صاحب نے اس کا نام کھر چار لکھا ہے (ایضاً)۔

(۵۰۷) اس کی صحیح اُونچائی ۱۰۴۰۰ رفٹ ہے (ایضاً)۔

(۵۰۸) میجر کینتھ صاحب نے اس مقام کو ٹوٹے لک لکھا ہے (ایضاً ص ۲۲۱)۔

(۵۰۹) صحیح قزل لنگر ہے۔

(۵۱۰) میجر کینتھ صاحب کی تحقیق کے مطابق اس جگہ کی بلندی ۱۶۴۰۰ فٹ ہے (ایضاً)۔

(۵۱۱) میجر کینتھ صاحب نے اس کا نام قزل لنگر سے پہلے لایا ہے۔

(۵۱۲) صحیح ہے ۱۴۹۰۰ فٹ (ایضاً)۔

(۵۱۳) میجر کینتھ صاحب کے بقول صحیح تلفظ ہے ملک سائی (ایضاً)۔

(۵۱۴) لیکن روٹس ان دی ویسٹرن ہمالیہ وکشمیر وغیرہ کے مصنف کے نزدیک (جلد اول) اس کی بلندی ۱۵۴۵۰ فٹ انگریزی ہے (ایضاً ص مذکور)۔

(۵۱۵) صحیح ہے ۱۶۴۰۰ فٹ (ایضاً ص ۲۲۴)۔

(۵۱۶) بقول میجر کینتھ اس کی اُونچائی ۱۲۳۰۰ افٹ انگریزی ہے۔

(۵۱۷) اور میجر کینتھ کی تحقیق کے مطابق ۱۱۹۰۰ افٹ انگریزی (ایضاً)۔

(۵۱۸) بقول میجر کینتھ صاحب ''کھلتسی'' (ایضاً ص ۱۷۹)۔

(۵۱۹) بلندی ۱۰۱۳۲ افٹ (ایضاً)۔

(۵۲۰) لیکن روٹس ان دی ویسٹرن ہمالیہ و کشمیر وغیرہ کے مصنف نے اس جگہ کو ''گو ماھنو'' لکھا ہے (ص ۱۸۰)۔

(۵۲۱) اس کی بلندی ہے ۸۶۵۰/ رفٹ ہے (ایضاً)۔

(۵۲۲) یا بہتر ہے چیلو (ایضاً)۔

(۵۲۳) بلندی ۸۴۰۰/ رفٹ (ایضاً)۔

(۵۲۴) اور بقول میجر کینتھ صاحب ۷۷۰۰/ رفٹ انگریزی (ایضاً ص ۱۸۲)۔

(۵۲۵) ۱۷۴۰ء سے ۱۷۵۰ء تک (حاشیہ آئین اکبری جلد ۲ مترجمہ جیرٹ ص ۳۷۵)۔

(۵۲۶) روٹس ان دی ویسٹرن ہمالیہ و کشمیر وغیرہ کے مصنف کی تحقیق کے مطابق اس کی بلندی ۵۲۰۶/ رفٹ ہے (ص ۹۶)۔

(۵۲۷) اور کینتھ صاحب کے نزدیک ۵۲۱۲/ رفٹ ہے (ایضاً)۔

(۵۲۸) صحیح ہے ۹۵۴۰/ رفٹ ہے (ایضاً)۔

(۵۲۹) کینتھ صاحب نے اس جگہ کا نام کنزل وان لکھا ہے (ایضاً) ایک گاؤں ہے دریای کشن گنگا کے کنارے پر جس کی اُونچائی مذکورہ کتاب کے مطابق ۷۷۰۰/ رفٹ انگریزی ہے (ایضاً)۔

(۵۳۰) اور میجر کینتھ کے نزدیک ۷۹۴۰/ رفٹ (ایضاً ص ۹۷)۔

(۵۳۱) صحیح ہے برزل چوکی۔ بلندی ۱۱۱۵۰/ رفٹ (ایضاً)۔

(۵۳۲) ۹۱۰۰/ رفٹ (ایضاً ص ۹۸)۔

(۵۳۳) حصورہ کو استور بھی کہتے ہیں (ایضاً ص ۹۸) بلندی ۷۸۰۰/ رفٹ (ایضاً)۔

(۵۳۴) صحیح ہے دوین۔ دال پر پیش اور ی پر زبر ہے۔ اُونچائی ہے ۷۸۰۰/ رفٹ (ایضاً)۔

(۵۳۵) اور شیطان نارا بھی کہتے ہیں۔ کینتھ صاحب کی تحقیق کے مطابق بلندی ۷۳۰۰/ رفٹ ہے (ایضاً ص ۹۹)۔

(۵۳۶) چھوٹا سا گاؤں ہے قلعہ اور بازار پر مشتمل (ص ۹۹)۔

(۵۳۷) بلندی ۴۰۰۰ ر فٹ (ص ۹۹)۔

(۵۳۸) اور بقول میجر کینتھ صاحب کے ۴۸۹۰ فٹ انگریزی (ایضاً)۔

(۵۳۹) اور میجر کینتھ صاحب اور پنڈت آنند کول بامزئی نے گوریز اور حصورہ (استور) کے درمیان ان جگہوں کا ذکر کیا ہے: (۱) کامری ۱۰۵۰۰ ر فٹ بلند (۲) کالا پانی ۱۰۸۵۰ ر فٹ بلند۔ (۳) چچری کدل یا شنکر گڈھ ۹۸۰۰ ر فٹ بلند۔ (۴) رٹو ۹۰۰۰ ر فٹ۔ (۵) گوری کوٹ ۸۰۰۰ ر فٹ۔ (۶) حصورہ (استور) ۷۸۰۰ ر فٹ (روٹس ان دی ویسٹرن ہمالیہ وکشمیر وغیرہ جلد اول ص ۱۰۰ اور ۱۰۱۔ جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۹۳ ر اور ۹۴)۔

(۵۴۰) میجر کینتھ صاحب اور پنڈت آنند کول نے برزہ بال کی راہ سے اسکردو کی طرف سے گلگت کا ذکر کرنے سے خاموشی اختیار کی ہے۔

(۵۴۱) بلندی ۱۰۲۰۰ ر فٹ (روٹس ان دی ویسٹرن ہمالیہ وکشمیر وغیرہ جلد ا ر ص ۴۴)۔

(۵۴۲) شوپ کور۔

(۵۴۳) بقول پنڈت آنند کول بامزئی ۲۶ ر میل (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۹۴)۔

(۵۴۴) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۹۴۔

(۵۴۵) یعنی مہاراجہ رنجیت سنگھ سکھ سلطنت کا بانی۔ وفات ۲۷ ر جون ۱۸۳۹ء۔

(۵۴۶) بقول آنند کول بامزئی بدل (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۹۴)۔

(۵۴۷) پنڈت آنند کول کی تحقیق کے مطابق ۲۶ ر میل (ایضاً)۔

(۵۴۸) پنڈت آنند کول کے نزدیک ۱۴ ر میل (ایضاً)۔

(۵۴۹) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ میں ۱۶ ر میل درج ہے۔

(۵۵۰) اصل نسخہ میں ایسے ہی ہے۔ پنڈت آنند کول بامزئی نے سرینگر اور بدل کے درمیان مذکورہ فاصلہ ۶۱ ر میل لکھا ہے (ص ۹۵)۔

(۵۵۱) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ کے مصنف کے نزدیک ۱۲ ر میل (ص ۹۵)۔

(۵۵۲) پنڈت آنند کول نے زجہ مرگ کی جگہ گولا مرگ لکھا ہے (ایضاً)۔

(۵۵۳) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ میں گلاب گڈھ اور ارناس کے درمیان دیول اور ناریچہ اور جام کی جگہ انگرل اور تارونام کی جگہوں کا ذکر کیا ہے۔

(۵۵۴) پنڈت آنند کول نے ریاسی کے بعد ڈھیرہ اور نگروٹہ کا ذکر کیا ہے۔

(۵۵۵) صحیح ہے نگروٹہ۔

(۵۵۶) دال پر زیر اور ن پر زبر (ایضاً)۔

(۵۵۷) بقول پنڈت آنند کول ڈوڈا (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۹۶)۔

(۵۵۸) اور پنڈت آنند کول کے نزدیک ۵۰/میل (ایضاً)۔

(۵۵۹) بھدرواہ۔

(۵۶۰) بقول پنڈت آنند کول دی سو (ایضاً)۔

(۵۶۱) بقول پنڈت آنند کول ۱/۲ ۱۲/میل (جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ص ۹۷)۔

(۵۶۲) جموں اینڈ کشمیر سٹیٹ ۳/۴ ۸ میل (ص ۹۷)۔

(۵۶۳) مذکورہ کتاب میں ۷/میل لکھا ہے۔

(۵۶۴) اور پنڈت آنند کول کی تحقیق ہے ۱۳/میل (ص ۹۷)۔

(۵۶۵) کرناہ۔

(۵۶۶) ناردرن بیریر آف انڈیا مصنفہ ڈریو، چھاپ لندن ۱۸۷۵ء ص ۲۳۶۔

(۵۶۷) ناردرن بیریر آف انڈیا، ص ۲۳۹۔ لیکن اس میں عورتوں کا قد آٹھ انچ کی بجائے ۱/۴ ۹ انچ لکھا ہے۔

(۵۶۸) یہی کتاب ص ۲۴۷۔

(۵۶۹) ایضاً ص ۲۵۰۔

(۵۷۰) لیکن کرپارام نے گلاب نامہ میں ۱۸۹۶ء کی بجائے ۱۸۹۰ء بکرمی لکھا ہے (ص ۲۵۴)۔

(۵۷۱) یہ آنجہانی مہاراجہ گلاب سنگھ کی فوج کا سرلشکر تھا۔ مذکورہ مہم کے وقت ریاسی، ارناس اور کشتواڑ کے علاقوں کا حاکم تھا (تاریخ جموں از حشمت اللہ خان ص ۳۴۴ اور گلاب نامہ از کرپارام ص ۲۴۷)۔

(۵۷۲) کرپارام نے اس جگہ کا نام جسکار لکھا ہے (س ۲۴۷)۔

(۵۷۳) کرپارام کے بقول مذکورہ رقم اصلی تیس ہزار روپے تھی جس میں سے پانچ ہزار معاف ہوئے (ص ۲۴۸)۔

(۵۷۴) صحیح ہے مہان سنگھ (گلاب نامہ ص ۲۴۹)۔

(۵۷۵) گلاب نامہ ص ۲۴۹۔

(۵۷۶) اور گلاب نامہ (۲۴۹) کے بقول ندہان سنگھ۔

(۵۷۷) گلاب نامہ ص ۲۵۰۔

(۵۷۸) گلاب نامہ ص ۲۵۰۔

(۵۷۹) بقول دیوان کرپارام مان تلاو جسے مان سر کہتے ہیں (ص ۲۵۰)۔

(۵۸۰) دیوان کرپارام نے واپس لوٹ کر آنے والوں کا ذکر کرنے اور ان کی صحیح تعداد اور تاریخ لکھنے میں خاموشی اختیار کی ہے (ص ۲۵۵)۔

(۵۸۱) گلاب نامہ کرپارام ص ۶۵۸۔

(۵۸۲) شیخ غلام محی الدین ہوشیار پوری جو لاہور سرکار کی طرف سے ان ایام میں حاکم مقرر ہوا تھا (گلاب نامہ ص ۶۵۸)۔

(۵۸۳) گلاب نامہ میں یہ لفظ سپچو کی صورت میں آیا ہے۔

(۵۸۴) کرپارام نے یہ تاریخ ۲۸/ ماہ سوج ۱۸۹۹ بکرمی لکھی ہے (گلاب نامہ ص ۲۶۸)۔

(۵۸۵) مولوی حشمت اللہ خان نے تاریخ جموں وریاست ہای مفتوحہ مہاراجہ گلاب سنگھ میں (ص ۴۹۳) اسکردو میں اسلام کی اشاعت کے بارے میں لکھا ہے کہ کشمیر میں اسلام کی اشاعت آٹھویں صدی ہجری کے آغاز میں اسلام کے بزرگان دین کی حسن سعی سے ہوئی جن کے پیشوا حضرت امیر کبیر میر سیّد علی ہمدانیؒ تھے۔ ان کے بعد ان کے بھانجے جناب سیّد محمد نور بخش ان کے خلیفہ کی حیثیت سے بلتستان میں داخل ہوئے اور اس خطہ میں مذہب محمدی کی تکمیل کی۔ سیّد محمد نور بخش کی وفات اس کتاب کے مطابق جو بقول مولوی حشمت اللہ خان بلتستان میں پائی گئی ۸۶۹ھ میں ہوئی۔ سیّد صاحب مذکور خود سنی المذہب تھے۔ لیکن جب حضرت میر شمس الدین عراقی خراسان سے اپنے عقائد کی وجہ سے ہجرت کرنے پر مجبور ہوئے تو وہ کشمیر میں محمد شاہ بادشاہ کے عہد میں ۹۰۱ھ میں داخل ہوئے۔ سیّد محمد بیہقی نے جو محمد شاہ کا وزیر اعظم تھا اسے جبراً کشمیر سے نکال کر اسکردو کی طرف جلا وطن کر دیا۔ حضرت میر شمس الدین عراقی جب اسکردو پہنچے تو انہوں نے خود کو سید محمد نور بخش کے خلیفہ کی حیثیت سے ظاہر کیا۔ ظاہر ہے کہ امامیہ مذہب کی اشاعت ان کی ہی کی مرہون منت ہے۔ سیّد محمد نور بخش کے عقائد کا مسئلہ ذاتاً مختلف فیہ ہے۔ تاریخ رشیدی کے مؤلف میرزا حیدر دوغلات کے بقول امامیہ فرقہ اور نور بخشیہ شیعوں میں یہ فرق ہے کہ مؤخر الذکر کے معتقدین اصحاب ثلاثہؓ اور ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہؓ پر سبّ پڑھنے کے عمل کو جائز جاننے کے علاوہ میر سیّد محمد نور بخش کو مہدی اور وقت کا صاحب امر جانتے ہیں (حاشیہ آئین اکبری جلد ۲/ ترجمہ جیرٹ، ص ۳۵۲)۔

(۵۸۶) غالباً مذکورہ دعویٰ اس حملے کی وجہ سے ہے جو کاشغر کے حکمران سلطان سعید خان نے ۹۳۹ھ میں اسکردو پر کیا تھا۔ چنانچہ مصنف تاریخ رشیدی نے لکھا ہے کہ سلطان سعید مذکور نے پہلے ہی حملے میں شغر کو جو اسکردو کا ایک پرگنہ ہے فتح کیا (تاریخ جموں وریاستہای مفتوحہ گلاب سنگھ ص ۴۹۸) لیکن اسکردو اور استور کے شجرۂ نسب سے ان کا یہ دعویٰ ثابت نہیں ہو پایا ہے۔

(۵۸۷) اور یہ جلال الدین اکبر کے عہد میں ہوا جب اسکردو کے راجہ علی رای نے ۹۹۴ھ میں (۱۵۸۶ء) اکبر کی خدمت میں التماس کیا کہ اس کی بیٹی شہزادہ سلیم کے عقد میں آنے کی تجویز قبول کی جائے۔ اس وقت سے اسکردو کے تعلقات دہلی کے ساتھ قائم ہو گئے (تاریخ جموں وریاستہای مفتوحہ۔ص ۵۰۴)۔

(۵۸۸) شغر کے حکمران اعظم خان کے عہد میں مذکورہ راجہ نے افغانوں کی حکومت کی کمزوری سے فائدہ اٹھا کر پہلے اسکردو پر قبضہ کیا اور پھر اس کے بعد آزادی اور استقلال کا اعلان کیا (تاریخ جموں وریاستہای ملحقہ ص ۵۷۳)۔

(۵۸۹) بقول موسیو ڈریو سال ۱۸۴۰ء میں (ناردرن بیریر آف انڈیا ص ۳۶۳)۔

(۵۹۰) اپنی تحقیق کے مطابق موسیو ڈریو نے گلگت کا اصلی نام، جیسے کہ اس جگہ کے رہنے والوں میں مشہور ہے، گلیت لکھا ہے۔ اور گلگت ہی ایک وہ لفظ ہے جو غیر قوموں مثلاً ہندوستانیوں، کشمیریوں اور فرنگیوں میں رائج ہے (ناردرن بیریر آف انڈیا ص ۴۰۶)۔

(۵۹۱) دریائے سندھ۔

(۵۹۲) ناردرن بیریر آف انڈیا۔ص ۴۰۹۔

(۵۹۳) ایضاً ص ۴۰۹۔

(۵۹۴) ناردرن بیریر آف انڈیا کا مؤلف گلگت اور استور کے باشندوں کو اپنے مذہب میں بہت کمزور قرار دیتا ہے۔ چنانچہ سال ۱۸۴۲ء تک استور کے لوگ اپنے مردوں کو ہندوؤں کی طرح جلاتے تھے۔

(۵۹۵) مولوی حشمت اللہ خان اور موسیو ڈریو کی تحقیق کے مطابق یہ راجے تراخان یا تراکان قوم کے تھے۔ گلگتیوں کی قومی روایت کے مطابق موسیو ڈریو نے اس خاندان کے مورث اعلیٰ تراکان کو ایک محیر العقول آدمی لکھا ہے۔ لیکن مولی حشمت اللہ خان کا خیال ہے کہ یہ ترکی لفظ ہے اور غالباً قدیم زمانے میں مذکورہ خاندان یارقند سے آکر گلگت میں بس گیا ہوگا (ناردرن بیریر آف کشمیر ص ۴۳۵ اور تاریخ جموں وریاستہای مفتوحہ ص ۷۶۸)۔

(۵۹۶) یعنی سال ۱۸۴۲ء میں۔ موسیو ڈریو کہتا ہے کہ اس وقت گلگت میں پانچ آدمی حکمران تھے: (۱) یاسین

میں سلیمان شاہ۔ (۲) پونیال میں آزاد خان۔ (۳) نگر میں طیر شاہ۔ (۴) یاسین میں گورحمان یا گور ہرامان اور (۵) شاہ سکندر کا بھائی کریم خان۔

(۵۹۷) ڈاکٹر لیت نر نے حسن شاہ کی رائے کے برخلاف سلیمان شاہ کو گوہر رحمان کا چچا لکھا ہے۔ اس لئے یہ نہیں کہا جا سکتا ہے کہ ان میں سے کون ایک صحیح کہہ رہا ہے "ملک ایمان کا بیٹا گوہر رحمان ایک ظالم آدمی تھا۔ موسیوڈریو نے اسے تھیوڈور حبشی سے بھی زیادہ ستمگر کہا ہے۔ کہتے ہیں کہ ایک بار اس نے ایک شیر خوار بچے کو ہوا میں اچھال کر تلوار سے دو ٹکڑوں میں کاٹ ڈالا۔ اسی طرح کہا جاتا ہے کہ اس نے ایک شخص کو قتل کر دیا اور اس کے جسم کو کتوں میں ڈال دیا اور اسے دفن کرنے کی ممانعت بھی کی" (خلاصہ ناردرن بیریر آف انڈیا ص ۴۳۷)۔

(۵۹۸) صحیح ہے نتھو شاہ۔ یہ آدمی پنجاب کے حکمران مہاراجہ دلیپ سنگھ کے عہد میں سکھوں کی فوج میں کرنیل کے عہدہ پر تھا۔ موسیوڈریو کے بقول ایک سپاہی پیشہ شخص تھا اور اسی لئے مرکز لاہور سے گوہر رحمن کے ساتھ مقابلہ کرنے کیلئے بھیجا گیا جو ان ایام میں گلگت اور نواحی علاقوں میں فساد کا مرکز تھا۔ نتھو شاہ سادات میں سے تھا اور موجودہ پاکستان کے پنجاب کے شہر گوجرانوالہ کا تھا۔

(۵۹۹) ناردرن بیریر آف انڈیا ص ۴۳۶۔

(۶۰۰) موسیوڈریو کے لکھنے کے بموجب یہ دو فرنگی آدمی بنگال کے دو انجینئر تھے ایک کا نام تھا وانز اگ نیو اور دوسرے کا ینگ۔ گلگت میں ان دونوں کے داخل ہونے کا ایک سیاسی مقصد تھا۔ ان دونوں مذکورہ سیاحوں نے ہونزہ کے راجہ سے اس کے علاقے میں سیر و سیاحت کرنے کی اجازت دینے کیلئے استدعا کی تھی لیکن راجہ نے ان کی یہ درخواست قبول کرنے سے قطعاً انکار کیا۔

(۶۰۱) ڈریو صاحب کے بقول نتھو شاہ اور کریم خان ہونزہ کے راجہ کے ہاتھوں قتل نہیں ہوئے بلکہ یہ دونوں اور گلگت کا راجہ، راجہ ہونزہ کے خلاف ایک جنگ میں قتل ہو گئے (ناردرن بیریر آف انڈیا ص ۴۴۰)۔

(۶۰۲) دریل۔

(۶۰۳) مطلب ہے آنجہانی مہاراجہ گلاب سنگھ۔

(۶۰۴) موسیوڈریو نے لفظ بھگانے یا مہزوم سے خاموشی اختیار کی ہے۔ اس بارے میں وہ کہتا ہے "کچھ جنگ وجدل کے بعد سابق سیاسی حالات کی شرائط پر فریقین کے درمیان صلح ہو گئی" (ایضاً ص ۴۴۱)۔

(۶۰۵) ڈریو صاحب نے بھوپ سنگھ کو بونجی اور استوار کی محفوظ افواج کا کماندار لکھا ہے (ایضاً ص ۴۴۱)۔

(۶۰۶) یہاں پر ڈریو صاحب کے بیانات میں تضاد ہے۔ ایک بیان کے مطابق معلوم ہوتا ہے کہ اس مہم

کی ہدایت خود گو ہر رحمٰن کر رہا تھا اور دوسرے بیان کے مطابق اس مہم کے سرغنے اس کے بھائی اور فرزند تھے۔ اس لئے نہیں کہا جاسکتا کہ ان میں سے کون سا بیان صحیح ہے۔

(۶۰۷) نیلہ دھر۔

(۶۰۸) ''مسلمان بنانے'' کے الفاظ حسن (شاہ) کے ہیں جب کہ ناردرن بیریر آف انڈیا نامی کتاب جو حسن شاہ کے مطالعات میں سے ایک ماخذ ہے اس بارے میں خاموش ہے۔ اس کتاب کا بیان ہے کہ ''کم وبیش ایک ہزار آدمی قتل اور ایک سو یا دو سو کو قیدی بنا کر غلاموں کی حیثیت سے فروخت کر دیا گیا'' (ایضاً ص ۴۴۲)۔

(۶۰۹) ناردرن بیریر آف انڈیا ص ۴۴۳۔ ڈریو صاحب نے مزید لکھا ہے کہ مذکورہ عورت کے حق میں حکومت کشمیر کی طرف سے وظیفہ مقرر کیا گیا۔

(۶۱۰) ناردرن بیریر آف انڈیا ص ۴۴۳۔

(۶۱۱) صحیح یہ ہے کہ مذکورہ واقعہ ۱۲۷۷ھ میں رونما ہوا کیونکہ موسیو ڈریو نے اس واقعہ کا انگریزی سال ۱۸۶۰ء لکھا ہے۔

(۶۱۲) ملک ایمان۔

(۶۱۳) ناردرن بیریر آف انڈیا ص ۴۴۸۔

(۶۱۴) مطابق ۱۸۶۶ء۔ بقول موسیو ڈریو مذکورہ مہم مذکورہ سال کے ستمبر مہینے میں واقع ہوئی۔ کرنل بجے سنگھ اور وزیر زور آور نور پور کے راستے سے دریل میں پہنچے۔ ملک ایمان کی طرف سے تھوڑی بہت مزاحمت ہوئی لیکن آخر شکست کھا کر بھاگ نکلا (ناردرن بیریر آف انڈیا)۔

(۶۱۵) محال کا لفظ کشمیری میں ضلع کے معنی میں استعمال ہوتا ہے۔

(۶۱۶) مولوی حشمت اللہ خان کی تحقیق کے مطابق شیر احمد خان کی تقصیرات کی معافی اس کے بیٹے عظیم خان کی وساطت سے ہوئی۔ حقیقت یہ ہے کہ جب شیر احمد خان کو مہارانہ رنبیر سنگھ کی فوج کے ہاتھوں دوسری بار شکست کھانی پڑی تو اس نے اپنے فرزند عظیم خان کی ملامت کی کہ ''بوڑھاپے میں میری تکلیفوں کا باعث بن گئے ہو۔ میں اس شورش کیلئے آمادہ نہیں تھا''۔ عظیم خان بہت متاثر ہوا اور نہانی مہاراجہ رنبیر سنگھ کے پاس گیا اور اس سے کہا کہ ''اصلی قصوروار میں ہوں۔ میرا باپ بے گناہ ہے۔'' مہاراجہ نے دونوں باپ بیٹے کا قصور معاف کر دیا (تاریخ جموں ص ۹۲۸)۔

(۶۱۷) مطابق ۱۸۵۱ء۔ مولوی حشمت اللہ خان کی روایت کے بموجب چیلاس کو فتح کرنے کیلئے ہری چند

کا تعین کیا جانا اس وجہ سے تھا کہ درد قوم نے استور پر حملہ کر کے یہاں کی ہر چیز لوٹ لی۔ اگر چہ اس مہم کا آغاز ۱۸۵۱ء میں ہوا لیکن ختم ہوئی ۱۸۵۲ء میں شدت سرما کے سبب۔ چیلاس کے مردوں اور عورتوں نے شدید مقابلہ کیا لیکن بالآخر ڈوگرہ فوجوں کے ہاتھوں جنہوں نے چیلاس قلعہ کا محاصرہ کر رکھا تھا عاجز آ کر امن کے خواستگار ہوئے۔ اس کے علاوہ اس مہم میں دیوان ہری چند کے علاوہ وزیر زور آور سنگھ کشتواڑی، کرنل بجے سنگھ، کرنل جواہر لوچن سنگھ اور دیوان ٹھاکر داس بھی شامل تھے (تاریخ جموں س ۷۸۲)۔

(۶۱۸) بارہمولہ سے نیچے دریای جہلم کے دونوں جانب دو علاقے مختلف ناموں سے مشہور ہیں۔ دائیں کنارے پر جو علاقہ واقع ہے اسے دچھنہ اور جو بائیں کنارے پر واقع ہے اسے کھاورہ کہتے ہیں (تاریخ جموں مولوی حشمت اللہ خان ص ۹۰۶)۔

(۶۱۹) تاریخ جموں و ریاستہای مفتوحہ مہاراجہ گلاب سنگھ کے مؤلف مولوی حشمت اللہ خان کا کہنا ہے: ''بمبہ قوم کا خاندان بنواُمیہ سے ہونے کا دعویٰ تاریخی لحاظ سے ثابت نہیں ہوا ہے۔'' اس بارے میں اس نے مندرجہ ذیل وجوہات پیش کئے ہیں: (۱) ویلی آف کشمیر میں موسیو لارنس قوم بمبہ کی ابتداء کا ذکر کرتے ہوئے لکھتا ہے کہ کشمیر کی قدیم جغرافیہ میں لکھا ہے کہ وشنہ وادی کے شمال میں دریائے کشن گنگا تک کھکھ قوم کی ہمسائیگی میں بومب خاندان یعنی بمبہ رہتے ہیں۔ یہ قوم اول الذکر قبیلے کے ساتھ قومیت میں شریک ہے۔ قیاس ہے کہ قدیم زمانے میں بمبہ خاندان کے لوگ کرناہ کے علاقے پر قابض تھے۔ (۲) دوسرے یہ کہ بنواُمیہ کے خاندان کا زوال ۱۳۲ھ میں ہوا اور یہ بات ناممکن ہے کہ ایک ہزار سال کے بعد ان میں سے کوئی شخص غربت میں اپنے خاندان کو زندہ کرنے والا پیدا ہوا ہوگا خاص کر جب کہ وہ خود اپنی اصلیت سے ناواقف تھا۔ (۳) مزید یہ کہ ایک ترکی کتاب میں اس قوم کا نام بام آیا ہے۔ بام ممکن ہے زمانہ گذرنے کے ساتھ ساتھ بمبہ ہو گیا ہو۔ اس کے باوجود مولوی حشمت اللہ نے اس بات سے اتفاق کیا ہے کہ بمبہ قوم کی اصلیت ہندوستان سے نہیں ہے اور ہو سکتا ہے کہ امیر تیمور کے زمانے میں ترکستان سے آ کر مظفر آباد کے علاقے میں سکونت اختیار کی ہوگی جیسا کہ جہانگیر کی توزک جہانگیری سے معلوم ہو جاتا ہے۔ جہانگیر کے عہد میں مظفر آباد کے علاقے میں رہنے والے لوگ خود کو قاربوغ قوم سے (جو ایک ترکی لفظ ہے) شمار کرتے تھے (ص ۹۰۹)۔

(۶۲۰) مولوی حشمت اللہ خان نے تاریخ جموں و ریاستہای مفتوحہ مہاراجہ گلاب سنگھ میں لکھا ہے کہ مظفر آباد قصبے کی بنیاد گیارہویں صدی کے اواخر یا بارہویں صدی کے آغاز میں پڑی۔ اس نے اپنے بیان کے اثبات میں یہ وجوہات پیش کی ہیں: (۱) خواجہ محمد اعظم اپنی تاریخ واقعات کشمیر میں لکھتا ہے کہ ۱۱۲۴ھ میں عنایت اللہ خان کی

صوبداری کے زمانے میں (شاہ عالم پادشاہ دہلی کے عہد میں) محمد مظفر نے، جو سلاطین پکھلی کے ملازموں میں سے تھا ان کی حکومت کے زوال سے استفادہ کر کے شمالی کوہستانی علاقے پر اپنا تسلط قائم کیا۔ اس کے بعد دراوہ اور کرناہ کے علاقوں پر، جو کشمیر کے کامراج پرگنہ کے علاقہ جات ہیں، قبضہ کر لیا (ص ۹۰۸)۔ جہانگیر کے روزنامچہ میں جو توزک جہانگیری کے نام سے مشہور ہے جہانگیر نے اپنے سفرنامہ میں مظفر آباد کا کوئی ذکر نہیں کیا ہے۔

(۶۲۱) اس مزاحمت میں در پردہ محمود خان کا ہاتھ تھا (ایضاً ص ۹۱۷)۔

(۶۲۲) ۱۸۲۰ء مطابق ۱۲۳۵ھ۔ ہری سنگھ سے یہاں مراد ہے سری سنگھ نلوہ جو آنجہانی مہاراجہ رنجیت سنگھ کا صوبہ دار تھا۔

(۶۲۳) بیربل پنڈت کا بھائی۔

(۶۲۴) ۱۲۶۰ھ مطابق ۱۸۴۴ء۔

(۶۲۵) نتھو شاہ۔

(۶۲۶) ۱۲۵۸ھ مطابق ۱۸۴۲ء۔

(۶۲۷) شیر سنگھ مہاراجہ رنجیت سنگھ کا دوسرا بیٹا پنجاب کا حاکم تھا۔ باپ کے مرنے کے بعد جوالا سنگھ کی مدد سے پنجاب کے تخت پر بیٹھا۔ جب یہ مہاراجہ پہلوانوں کی ورزش کا شاہ بلور نامی قصر میں (لاہور کے مشرق میں تین میل دور) تماشا دیکھنے میں مشغول تھا تو اجیت سنگھ سندھیاوالہ نے اس پر گولی چلا کر اُسے مار ڈالا (سیکرٹ ہسٹری آف دی لاہور دربار مرتبہ میجر جے کارمیکائیل سمتھ مطبوعہ ۱۸۴۷ء کلکتہ)۔

(۶۲۸) ۹/ مارچ ۱۸۴۶ء کے امرتسر کے چوتھے عہدنامہ کے مطابق، جو مہاراجہ گلاب سنگھ اور فریڈرک کری بارنٹ صاحب اور انگریزی حکومت کے سفیر میجر لارنس کے درمیان طے پایا، کشمیر اور تمام کوہستانی علاقے پچھتر لاکھ نانک شاہی سکے روپیوں کے عوض، جن میں سے پچاس لاکھ کی رقم معجّل اور پچیس لاکھ کی رقم مؤجل ہوگی۔ مہاراجہ گلاب سنگھ کو بیچ دیئے گئے۔ تفصیل کے لئے دیکھئے گلاب نامہ۔ ص ۳۶۰۔

(۶۲۹) موسیو لارنس کھکھ اور ہتمال قوموں کے بارے میں لکھتا ہے کہ قدیم سنسکرت میں اس قوم کا نام کھش تھا جو ہمالیہ کے پہاڑوں پر رہتی تھی۔ پہاڑوں کا لفظ یہاں پر مجمل طور پر استعمال ہوا ہے۔ اس لئے قاری شک میں پڑ جاتا ہے لیکن راج ترنگنی سے یہ شک بالکل دُور ہو جاتا ہے کیونکہ اس میں لکھا ہے کہ راج پوری (راجوری) کے حکمران کھش قوم سے تعلق رکھتے تھے۔ بانہال کی طرف سے چندر باگا دریا تک مذکورہ قوم کی آبادی کے نشانات ملے ہیں۔ اسی طرح ثابت ہوا ہے کہ وتستا دریا کی وادی جو بارہمولہ سے نیچے ہے اس قوم کا مسکن تھا۔ بعد میں زمانہ گذرنے

کے ساتھ ساتھ کھش، کھکھ ہوگیا (تاریخ جموں وریاستہای مفتوحہ ص ۹۳۹)۔

(۶۳۰) ۱۸۴۸ء ہری سنگھ نلوہ کی سرافراز خان کھکھ پر لشکرکشی آنجہانی رنجیت سنگھ کی مرضی کے خلاف تھی لیکن بعد میں اس خیال سے کہ کھکھ قوم کے سردار ہمیشہ ہی سکھوں کی حکومت کے خلاف لڑتے رہتے ہیں ہری سنگھ نلوہ کو حملہ کرنے کا اشارہ کیا (تاریخ جموں مولوی حشمت اللہ خان ص ۹۴۳)۔

(۶۳۱) غلام علی خان (ایضاً)۔

(۶۳۲) مطابق ۱۶۱۰ء۔

(۶۳۳) چغتائی خاندان کا آخری خودمختار تاجدار۔ اس کے عہد میں نادر شاہ دُرّانی نے دہلی پر حملہ کیا۔ ۲/۱ ۳ سال تک حکومت کی اور ۱۶/اپریل ۱۷۴۸ء (۲۷/ربیع الثانی ۱۱۶۱ھ) کو وفات پائی۔ مذکورہ محمد شاہ ہر وقت عیش و عشرت میں مصروف رہتا تھا اسی لئے تاریخ میں محمد شاہ رنگیلا (عیاش) کے نام سے مشہور ہے (قاموس المشاہیر ص ۱۹۳)۔

(۶۳۴) مطابق ۱۸۴۲ء۔

(۶۳۵) کے ایم پانیکر مصنف گلاب سنگھ (ص ۱۲۳) کے لکھنے کے مطابق پونچھ سال ۱۸۵۲ء میں راجہ موتی سنگھ کے حق میں بحال ہوگیا اور اس بارے میں دھیان سنگھ کے بیٹوں جواہر سنگھ اور موتی سنگھ نے پنجاب کی انگریزی سرکار کی طرف رجوع کیا۔

(۶۳۶) راجہ دھیان سنگھ (وفات ۱۸۴۰ء) آنجہانی مہاراجہ گلاب سنگھ کا بڑا بھائی تھا۔ سیاست اور زیرکی میں کمال رکھتا تھا۔ ساری عمر آنجہانی رنجیت سنگھ، مہاراجہ کھڑک سنگھ اور مہاراجہ شیر سنگھ کا وزیر رہا۔ آخرکار ایک سازش کی وجہ سے اجیت سنگھ سندھیاوالا کے بندوق کی گولی کا نشانہ بن گیا (خلاصہ از سیکرٹ ہسٹری آف دی لاہور دربار)۔

(۶۳۷) یعنی دُرّانیان۔

(۶۳۸) پروفیسر کے ایم پانیکر نے راجوری کے راجے کو مع جسروٹہ، رام نگر، بسوہلی اور کشتواڑ کے راجاؤں کے آنجہانی مہاراجہ گلاب سنگھ کا وظیفہ خوار لکھا ہے۔ اسکی تحقیق کے مطابق مذکورہ مہاراجہ ان پانچوں راجاؤں کو سالانہ باسٹھ ہزار روپے ہر راجہ کے حساب سے کفاف کی رقم کے طور پر دیا کرتا تھا (گلاب سنگھ ص ۱۲۰)۔

(۶۳۹) بقول مولوی حشمت علی خان تقریباً ۵۴۰۰ رفٹ اُونچا ہے (تاریخ جموں وملحقات ص ۱۳۵)۔

(۶۴۰) مطابق ۱۴۹۴ء۔ ظاہراً غلط ہے کیونکہ حضرت محی الدین اورنگ زیب عالمگیر پادشاہ غازی رحمتہ اللہ علیہ کا سال جلوس جس میں کشتواڑ کے راجہ کو سعادت یار خان کا لقب ملا سال ۱۶۵۸ء سے ۱۷۰۷ء تک تھا۔

(۶۴۱) سیّد محمد فرید الدین قادریؒ خواجہ عبد القادرؒ کی اولاد میں سے ہیں۔ ایک دن خواب میں دیکھا کہ ایک شخص آپ سے کہہ رہا ہے: ''اے فرید کشتواڑ چلے جاؤ اور وہاں اسلام کی اشاعت کر''۔ حضرت فرید اپنے چار شاگردوں درویش محمد، یار محمد، سید بہاء الدین اور سید ابدال شاہ کے ساتھ (شاہ جہان پادشاہ کے عہد میں) اس ملک میں داخل ہوئے۔ آپ کے بڑے فرزند جن کی اپنے والد بزرگوار کی زندگی میں وفات ہوئی، کا مزار ابھی تک کشتواڑ کے مسلمانوں کا مرجع ہے (خلاصہ از تاریخ جموں وکشمیر مولوی حشمت اللہ خان ص ۱۶۶۔۱۶۷)۔

(۶۴۲) صحیح یہ ہے کہ سعادت یار خان کشتواڑ کا دوسرا حکمران ہے جو اسلام کا حلقہ بگوش ہوا۔ مولوی حشمت اللہ خان کی تحقیق کے بموجب اس کا نام کیرت سنگھ تھا۔ اس ملک کے اولین راجاؤں کا باپ جے سنگھ ملقب بہ بختیار خان ہے جس نے سید فرید شاہؒ کی حسن سعی سے اسلام قبول کیا (خلاصہ از تاریخ جموں مولوی حشمت اللہ خان ۱۶۷)۔

(۶۴۳) بقول دیوان کرپارام صاحب گلاب نامہ۔

(۶۴۴) محمد تیغ سنگھ۔ ''اور مصلحت بینی وصواب اندیشی کے ساتھ گلاب سنگھ کے بلند مقام پروانہ جات وزیر لکھپت کے نام، جو کشتواڑ کے راجہ کا کارپرواز تھا، اس مضمون کے ساتھ جاری ہونے کا شرف پاتے تھے۔'' آپ کی عرضی پہنچی۔ اس کی کیفیت رائے عالی پر ظاہر ہوئی۔ آپ کو اسی طرح حضور کی خدمات کیلئے تہہ دل کے ساتھ آمادہ اور مصروف رہ کر بلند عنایات میں شامل حال جان لینا چاہئے۔'' کہتے ہیں مذکورہ وزیر اپنے آقا تیغ سنگھ کی حلال نمکی کا خیال کر کے ان تحریرات کی طرف متوجہ نہیں ہوا البتہ ان تحریروں سے اس کا مقصد راجہ کشتواڑ کے دل میں بدگمانی پیدا کرنے کے سوا اور کچھ نہ تھا۔ چنانچہ ایسا ہی ہوا کہ ایک دن گلاب سنگھ کا پروانہ عالی ایک جاسوس کے ہاتھ لگ گیا اور اس نے راجہ تیغ سنگھ کو پیش کر دیا۔ اس سے اسکے دل میں بدگمانی پیدا ہوگئی۔ اور اس نے وزیر کو قتل کر دینے کا حکم دیا۔ اگرچہ جلاد نے قتل کرنے میں کوئی کمی نہیں کی لیکن اس کی زندگی ابھی باقی تھی اور دست وبازوں پر زخم کھا کر بھدرواہ کے علاقہ جنگلوار کی طرف بھاگ نکلا۔ اس سے راجۂ مذکورہ کا انتظام کار خلل پذیر ہوگیا''۔

(۶۴۵) گلاب نامہ ص ۱۴۰ ار کشتواڑ کے بیان میں۔

(۶۴۶) بھدرواہ۔

[illegible]

76156

حاجی شیخ غلام محمد اینڈ سنز
مائسمہ بڈشاہ چوک، سرینگر کشمیر
ISBN 938401941-0
9 789384 019419
Email: hsgmbooks@gmail.com
Rs. 7995/- 7 Vols. Set I to IV